

BENGALI FAMILY LIBRARY

বাংলা বীথাল পুস্তক সংগ্রহ।

কোপান।

শ্রীযুক্ত নবকৃষ্ণদাস মুখোপাধ্যায়

কবি।

কলিকাতা ১৯০৩

অমৃতসিংহ

কলিকাতা

১৯০৩ খ্রিস্টাব্দে প্রথম প্রকাশিত।

*Printed for the Calcutta School Book and Vernacular Literature Society and sold at their Depository
No. 1, Market Lane, Calcutta.*

১৯০৩

Price 1/1 annas.

মূল্য ১০/১০ সাত্বে সাত আনা।

विष्णुपत्र

রহস্য সন্দেহ নামে বিবিধ চিত্র যুক্ত সাময়িক পত্রিকা বা পত্র
নামে এক এক বার এক এক পত্র প্রকাশ করিয়া থাকেন। উহা
নীতি গভ্র এবং ঐতিহাসিক প্রবন্ধ, পুস্তকালিখিত কাব্যাদি
ইত্যাদি, প্রাকৃতিক ইতিহাস, পুস্তকালিখিত ইতিহাস, প্রাকৃতিক
লোকবিদ্যার ভিত্তি, নতুন প্রযুক্তি, ইত্যাদি বিষয়
বিষয় সকল প্রকাশিত হয়। উহার বার্ষিক আদান মূল্য, ২ টা.
প্রতি সংখ্যা মূল্য, ১ টা। আর নানা উচ্চ ও নিম্ন
সম্পাদক জন লিখিলি সাংবাদিক নিকট কলিকাতা পুস্তকালিখিত
প্রাপ্ত হওয়া যায়, অথবা যত্নবান দ্বারা কোন কার্যক্রম
দ্বিধিলেও পাওয়া যাইতে পারে।

ਸੰਨਿਆਸੀਨ ਕਾਤਿਰ

पैथ इनाइति

ଜାତୀୟ ଫୁଟ୍ ବଲ୍ ଟ୍ରଷ୍ଟ

ମୁଦ୍ରାପତ୍ର ୧୩ ଓ ୧୪

1. ਸੁਭਿ: ੨੩, ੩:੪

} 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 10

ভূমিকা :

জেপান বিষয়ক প্রস্তাব লইয়া পৃথিবীর পশ্চিমাংশ নিবাসী লোকেরা গত দুই শত বৎসর হইল আন্দোলন করিয়াছিলেন, পোর্তুগিস ওলন্দাজ, ইংরাজ, রুশিয়, এবং আমেরিকান প্রভৃতি লোকেরা তথায় বাণিজ্য সম্পর্ক করিতে বিস্তর চেষ্টা পাইয়াছিলেন। ইহাদের মধ্যে কোনও জাতি বিস্তর ক্ষতি স্বীকার করিয়াছেন, বহু লোকের প্রাণ পর্য্যন্ত গিয়াছে, তথাপি কেহই কৃত কার্য্য হইতে পারেন নাই। জেপানী দেশীয় লোকদের প্রাচীন রাজ নিয়ম এবং দেশাচার এমন কঠোর এবং কঠিন ছিল, যে চীন দেশ ভিন্ন অন্য কোন লোকের সহিত তাহারা কোন প্রকার সং-

অব রাখি না, এজন্য ইউরোপীয় ইতিহাস লেখকেরা জেপানের কোন বৃত্তান্ত লিখিবার সময়ে রহস্য করিয়া উহাকে (তপস্বীর আশ্রম রাজ্য) বলিয়া ডাকিতেন। যে দেশ অন্য দেশীয়দের সহিত কোন প্রকার সংস্রব রাখিতে চায় না, অবশ্যই তাহাতে কোন বিশেষ গুঢ়ত্ব আছে, এই বলিয়া লোকে ভ্রমিগুঢ় বৃত্তান্ত জ্ঞানিতে সমর্থক উৎসুক হয়। বিশেষ পোর্্তুগিস, এবং ওলন্দাজেরা প্রাণে হত এবং অপমানিত হইয়াও তথায় বিস্তর ধনোপার্জন করিয়াছিল, ইহাতেই ইউরোপীয়, এবং আমেরিকান প্রধান প্রধান জাহিরী কটাক্ষ-টি জেপানের প্রতি পড়ে, তাঁহারা যত্নের ভ্রমী কেহই করেন নাই, কিন্তু উক্ত ভ্রমী শত বৎসর তাঁহাদের সকল চেফাই রূখা হইয়াছিল।

১৮৫৩ খৃঃ অব্দে কমোডোর পেরি নামা এক মহানুভব মহাশয় আমেরিকাখণ্ডের ইউনাইটেড-স্টেটস হইতে জেপান যাত্রা করিয়া কুতকাৎ হন, ইউরোপীয় লোকদের জেপান বাণিজ্যের প্রথম সূত্র এই, ইইরীই পুনর্বার জেপানের নিগুঢ় বৃত্তান্ত জ্ঞান পিয়াছে। তিনি মধ্য আমেরিকার যে সকল কিবরণ লিখিয়া পাঠাইয়াছিলেন, সে-সমুদায় সময়েই সংবাদ পত্রে তথায় মুদ্রিত হয়। ১৮৫৮ খৃঃ অব্দে

ইংলণ্ডে এই সকল বিষয় সংকলিত হইয়া জাপান প্রকাশ মাগে একখানি পুস্তক প্রকাশ হয়। পুস্তক খানি প্রকাশ হইবামাত্র বহু বিদ্যোৎসাহী লোক সমান্তর পূর্বক তাহা গ্রহণ করেন, অঙ্গদেশের মধ্যে সমুদ্র পুস্তক বিক্রয় হওয়াতে সংকলিতা দিশেষকপে উৎসাহ প্রাপ্ত হন। এই পুস্তকে সকল প্রস্তাব অপেক্ষ, আমেরিকানদিগের জাপান যাত্রা, তাহাদের ক্ষমতা এবং বুদ্ধি কৌশল দ্বারা স্বেচ্ছায় মাদন করণের কৃতকার্য হওন, জাপানীদিগের চরিত্র ব্যক্তি আদি দেশাচার রাজধান নথ্য ও বি-
দ্যা, তত্ত্বপর মানস এবং বাণিজ্য ইত্যাদি বিষয় সকল বিশেষরূপে বর্ণিত আছে। জাপান নামা এই পুস্তকখানি এই জাপান প্রকাশের অধিকাংশ অনুবাদ ইহার প্রথমভাগ কেবল অন্যান্য পুস্তক হইতে অনুবাদিত হইয়াছে। প্রায় তিন বৎসর হইল, অনুবাদক সমাজ এই পুস্তক খানি অনুবাদ করিয়া প্রস্তুত করিতে আমাদের আদেশ করেন, কিন্তু দেশীয় বিদ্যোৎসাহী লোকদিগের সাহায্য বিরহে গত বৎসর উক্ত সমাজ 'পুল্লুক' সাইটীর নিচিনা সংমিলিত হয়; তজ্জন্য মনঃক্ষোভ উৎসাহ-
ভঙ্ক এবং অপর নানা কারণ বশতঃ এতাবত কাল আমি সে কর্ম সম্পন্ন করিতে পারি নাই। এক্ষণে

যথা সাধ্য যত্ন করত পুস্তকখানি অনুবাদ ব্যায়রা
 প্রকাশ করিলাম। রচনা শক্তি তাদৃশ নাই। এতদ্বা-
 কার বলিয়া লোক সমাজে পরিচয়দি এমন বোধ্য
 পাত্তও নহি, তবে বিদ্যোৎসাহী মহাশয়েরা অন্তর্গত
 পূর্বক যদি এই পুস্তক খানি পাঠ করেন, যদি আ-
 মার রচনা তাঁহাদের মনোনীত হয়, ইউরোপে জে-
 পান প্রকাশ যেকপ গৃহীত হইয়াছে, মন্ত্রচিত জে-
 পান সেকপ না ইউক, যদি তাহার দশাংশের
 একাংশও বিক্রয় হয়, তবে আপনাকে চরিতার্থ
 বোধ করিব, এবং জেপানের ন্যায় চীনদেশের
 বৃত্তান্ত অচিরে প্রকাশ করিব।

সন ১৮৬৩ সাল

সেপ্টেম্বর

}

শ্রীমধুসূদন মুখোপাধ্যায়

জেপান ।

প্রথম অধ্যায় ।

একদা ভারতবর্ষে বহুদিনের পরিত্রিত দুইজন সৈনিক
থরুয়ের সহিত সাক্ষাৎ হইলে, শিল্পীতারের রীতানু-
ক্রমে পরস্পর কোলাকোলি করিয়া এক জন অন্যজনকে
কহিলেন, বন্ধো : প্রায় ষোড়শ বৎসর তোমার সহিত
আমার সাক্ষাত নাই, তবে ভাল আছ তো? এখন জিজ্ঞা-
সা করি, চীন দেশে যুদ্ধের পর আমিতো পৌড়া প্রযুক্ত
দেশাগমন করিলাম, তোমরা তার পর কি করিলে?
অপর ব্যক্তি কহিতে লাগিলেন, ভাই, তুমি প্রত্যাগ-
মন করিলে চীনদিগের সহিত ইংলণ্ডীয়দের আর
যুদ্ধ হয় নাই, সন্ধি হইয়াছিল, সন্ধি করিয়া চীন
রাজ্যের পূর্ববর্তী টিটসিন্ নগর হইতে আমরা
শাঙ্গাই নগরে যাত্রা করিলাম। খ্রীষ্ট প্রভৃতি যে সকল
দেশের মহাত্মারা আমাদিগকে সৈন্যদ্বারা লীহায্য করিয়া-
ছিলেন, তৎসমুদায়কে আমি ধন্যবাদ করি, বহু সৈন্য
একতীকৃত না হইলে চীনের সম্রাট কখনই আমাদের
বশবত্তী হইতেন না। হায়! এই যুদ্ধ-
হইয়াছে, কি অমলক, বী কি বনিক কি বর্ষপ্রচারক সকলেই
এখন চীন দেশে বাইরা বহু অস্ত্রপ্রেরণ লাভ করিতে
পারে, ইংলণ্ডীয় বাণিজ্য তাহাজ্জ এখন চীন দেশের
সমুদ্র তীরবর্তী বন্দরের নিকট যায় না, নদী সহ-

কারে দেশের মধ্যভাগ পর্যন্ত ঘাইয়া যুঝে বানিজ্য করে। চীন দেশের ইয়ংটুং কাইন্ নদীটি বড় পাহাড়, নদী, তাহার তীরবর্তী ভূমি সকল সাতিশয় উৎসাহে আগ্রে আমরা এভূমির বিষয় কিছুই জানিতাম না।

“চীন দেশীয় লোকেরা আনাদিগকে বড়ই ক্রোশ দিয়াছিল, আমরা তাহাদের অক্কেকের বিমোহন করিতে পারিলাম না, চীন দেশের প্রধান রাজকর্মকারী মেণ্ডাবীন্দিগকে যদি শুদ্ধকই দিতে হইল, তবে যুক্ত করিয়া লাভ হইল কি?” কলহ প্রিয় ইংলণ্ডীয় যোদ্ধা অচুরদশী লোকেরা যে এই কথা বলিয়া আক্ষেপ করে, তৎপ্রবণে আমরা হাস্য সম্বরণ করিতে পারি না। ইংলণ্ডের যে বর্ষ, অন্য় অত্যাচার কিছুই না করিয়া চীনদিগকে বধন আমরা বহু দণ্ড দিলাম, চিব চিনেব অতি-লম্বিত যে বানিজ্য কর্ম তাহ সম্পূর্ণ লাভ করিলাম, তৎকালে রাজধানী পেকিনের অধীশ্বর আগমন কর্তৃক করিয়া বধন আনাদিগের প্রার্থনায় সম্মত হইলেন। সেই বিষয়ে অবমানন স্বীকার করিয়া তিনি আমাদের সহিত সন্ধি করিলেন, সম্বাদ পত্রদ্বারা তাহা সর্বত্র প্রচারিত হইল, তাহাতে কোন রাজা ব্রিটন্ দেশের স্বরাগ বহু বিরাগ করিলেন না, তবে ইহা অপেক্ষ আর যুঝ কি? লোকে যে বস্তা কইয়া অনায়াসে পানপান পীড়ন-অথবা অপরকথা অলংকরণ করা কি রাজ দর্শন কেহ পারে? তা, তাই অনভিজ্ঞ অল্প বুদ্ধি মোকদিগের কথা শুনিয়া আনাদের তেজের হাসি কিছু মাত হয় নাই, কিন্তু তৎকালে উত্তাপ দ্বারা সম্পূর্ণ তেজোহাসি হইয়াছিল।

এ ছুই সৈনিক পুরুষের মধ্যে এক জনের নাম

পুল, শাকসব্জি ইত্যাদি চীন রাজ্যের মধ্যে সেইরূপ একটি প্রধান বাণিজ্য স্থান বলিতে হইবে। ইয়ংটস্ কাইন অর্থাৎ য়ংতস্কে চীন দেশীয়েরা সমুদ্র পথ কহে, শাকসব্জি সমস্ত নদীতীরস্থিত; তথাকার ভূমি সকল সান্তিশাং নামক সকল কাসেই তাহাতে নাম। জাতীয় সমস্ত কাসেই উৎপন্ন হইয়া থাকে; উহার পূর্বদিকে একটি নামক উপত্যকা, ঐ উপত্যকা পিকিনের উত্তর অংশে অবস্থিত। উহার বন্দর পর্য্যন্ত গিয়াছে, টিচিন নামক একটি নগর উহার পশ্চিম সীমাবর্তী। কলিকাতার উত্তর পূর্বে একটি সামান্য খাল থাকিতে সামান্য নৌকা তাহাতে আইসে এবং সামান্যরূপ বাণিজ্য কার্য হয়। কিন্তু শাকসব্জির একরূপ নহে, উহার চতুর্দিক প্রায় প্রশস্ত, খাল দ্বারা আবদ্ধ, ছোটো জাহাজ তাহাতে গমনাগমন বাইতে পারে, প্রধানত সকল জাহাজ ঐ খালের তট ন সীপবর্তী হয়; একারণ ঐ স্থানের বাণিজ্য সব্বা জন হাথে লইয়া যাইতে কিছু মাত্র ব্যাঘাত হয় না, অন্য দিকে বাণিজ্য কার্য সুন্দরিত হইয়া থাকে। তাই। টিচিনে যোগদে সন্ধি করণ দ্বারা ইংরাজদিগের কি একটি অমূল্য রত্ন লাভ হইয়াছে, আহ। সর্ব বিদ্যায় শাকসব্জি চীন সুখের বাণিজ্য স্থান।

কিন্তু ইংরাজদিগের যুদ্ধ করণান্তর নির্ভর্য্য পায় তে ~~ইংরাজ~~ তাহাদের নায় জন্য করি অ নায়ক নত্বরণ হইয়া থাকে। ইংরাজেরা এত অর্থব্যয় করিয়া চীন দিগের সহিত যে যুদ্ধ করিলেন, তাহাতে তাহাদের যুদ্ধ বাণিজ্য নষ্ট ব্যতীত আর কোন লাভ কি হইল না।

রিচার্ড সাহেব প্রত্যাহর করিলেন, বন্ধো ! হিন্দু
প্রভৃতি যে সকল জাতি বাণিজ্য ব্যবসায়ের উৎসাহিত
বুঝে না, তাহাদের মুখে তোমার একথা শুনিতে
নাগে, সাহারা বুঝে তাহাদের বল উচিত নহে, তুমি
ইংরাজ হইল, কিরূপে এমন কথা বল ? আমাদিগের
জন্ম স্থান ইংলণ্ড দেশ পূর্বে কি ছিল, এবং এখন কি
হইয়াছে, উহার উদ্যম শ্রীবৃদ্ধির মূল কারণ কি ? ইং
রাজসম্মান কথিতে গেলে কেবল দিগ্বিদিক্রূপে বাণিজ্য
ব্যবসায় সমুদায় ইংরাজের মূল কারণ বলিতে হয়।
বিজ্ঞান, শিল্প এবং বাণিজ্য ব্যাপারে প্রলিপ্ত না হইলে
ইংরাজেরা কখনো এত সমৃদ্ধ এবং শ্রীবন্ত হইত না।
বলেন : ইংরাজেরা লোকাদগকে আমবা সেক্ষণ বুদ্ধি-
মান ও গণবান দেখিতেছি, দেশীয় কুৎসিত উপায়
এবং কুৎসার পরিচালনা করিয়া আমাদিগের মাঝে
তর বা মনি এই ভিন্ন বিষয়ে প্রস্তুত হন, তবে অল্প
দিনের মধ্যে উৎকর্ষিত সর্বাঙ্গ গণ্য হইতে পারে
পরের অধীন ও পরের আকর্ষী নাহি। কাল কালে
কোন জাতি শ্রীবন্ত হইয়াছে ?

বলিতেছি, বাণিজ্যের দ্বারা বাণিজ্যের দ্বারা, কিছু লাভ
হইল না, চিন নগর শীত হইতে বাণিজ্য করিয়া, ইংরাজ
দের কি আপ লাভ হইয়াছে ? ১৮৪২-১৮৪৩-১৮৪৪
কম দিবসে ইংরাজেরা প্রথমে ঐ নগর-
আবৃত্ত করে, এক্ষণে প্রায় সোড়শ বৎসর হইল, প্রতি
সাতাহারা প্রায় ছয় কোটি মুদ্রা লাভ করিতেছে। ইংল-
ণ্ড, লণ্ডন, সিবরথল, এডরভিন, এবং নিউইয়র্ক প্রভৃতি
নগরের জাহাজ ব্যতীত, তথায় আরও অনেকাংশে

শের জাহাজ মাল্য বর্ণের পতাকা তুলিয়া বাণিজ্যার্থ যায়, কাউক, কিন্তু ব্রিটেন সিংহের অংশ গ্রহণ করিয়া থাকে, ব্রিটেনের তুলা লাভ তাহাদের কাহারই হয় না, সহস্র মাল্য উপায় দ্বারা শাক্কাই মগরীকে লোকেরা ও উৎসাহ করে বটে, কিন্তু ইহাও বাণিজ্যে তাহাদিগের বহুল অর্থোপার্জন হয়, ইউরোপীয় বণিকেরা ইউরোপের অপর সাধারণ লোকদিগের বিভিন্ন প্রভি বৎসর বিস্তর টাকার প্রয়োজন করিয়া থাকে ।

ভারতবর্ষের মধ্যে কলিকাতাকে অতি উৎকম্ভ বাণিজ্য স্থান জ্ঞান হয় বটে, কিন্তু চীন দেশের শাক্কাই ইহা অপেক্ষা কোন মতেই অপকৃষ্ট নহে । তথায় নদীদ্বীপস্থ স্থান সকলে এবং প্রত্যেক রাজ পথে বাণিজ্যের কলবৎ, মাংসানোশজীবী ঘুটিয়াদিগের কোল হুলস্থলে, শাক্কাই অবধি সন্ধ্যাপর্যন্ত কাণপাতা যায় না । স্থানীয় একটি খান শাক্কাইয়ের দরিকটে আছে, সেখানে হাতে দুই হইয়া থাকে, সে সকলগুলিই বাণিজ্যের জন্য বিদেশীয় দালাল ও বণিকেরা এই নৌকা দ্বারা চীন দেশে গমন নামাতি উৎকম্ভের বঙ্গপ্রান্তে শাক্কাই বাসা বিদেশী বণিকদিগের নিকট বাণিজ্যার্থ আসে । এই নৌকা নৌকা যে সমস্ত দিন সাপুয়া আসা কবিতেছে, তাহাও সম্ভা করা যায় । চীনাবাদী খৃষ্ট প্রতারণক বলিয়া লোক চীন দেশে ইহা বর্জন করে বটে, কিন্তু বাণিজ্য বিষয়ে তাহা কোন মতেই নিষ্পত্তীয় নহে, তাহার সর্বতোভাবে সংও সমল ব্যবহার করিয়া বিদেশীয় লোকদিগের সহিত বাণিজ্য কর্ম নিষ্পাদন করে । কারণ দ্বিতীয় প্রকারের বাণিজ্য ব্যাপারের বিষয় বিপত্তি ;

উপপান ।

ছোট কি বড়, সকল লোকেরই ইহা উত্তম উপপান
আছে।

ইউরোপ এবং চীন দেশের নাবিকের মধ্যে অনেক
প্রভেদ আমরা দেখিয়াছি; বড়বড় রনি টানা অতি প্রকা
মান্বল এবং পাইল তোলা, জঙ্গর করা, জাহাজ পরিষ্কার
বাধা প্রভৃতি কঠিন পরিশ্রমসাধ্য কৰ্ম ইহারা উভয়েই
নিষ্পাদন করে বটে, কিন্তু চীন দেশীয় নাবিকগণ ইউরো
পীয় নাবিক অপেক্ষা যে অনেকাংশে সচিবু এবং পরিশ্রমী
ইহাতে কোন সংশয় নাই। ইহারা দিবা রাত্রি ঘোরতর
পরিশ্রম করে, খাদ্যের মধ্যে কেবল শুকর মাংস লোভ
মহম, অন্ন এবং এক এক পিষ্টান্ন। চা খাইতে পার, সামান্য
মাত্রের শয়ন এবং একটুকু একটি বালিশ পর্যন্ত থাকেনা
যে ঘোর নিদ্রায় অভিভূত আছে, এমন সময়ে যদি তাহাদি
গের কর্তৃপক্ষ তাহাদিগকে ডাকে, তাহা বা অমনি উঠিয়
তাহাদিগের অভিমত কৰ্ম করে। তাহাদিগের যেতন অশি
অপ, স্বতরাং অতি সামান্য অসুস্থ মলিন বস্ত্র পরিধান ক
রিয় তাহাদিগকে কাল যাপন করিতে হয়। বন্ধো : যামি
সচক্ষে দেখিয়াছি, বড়, তুফান বিপদের সময়ে মেস্তলে
ই-প্রায় সুশিক্ষিত নাবিকেরা জাহি জাহি শব্দ করিতে
থাকে, মেস্তলে তাহা কিছু মাত্র ভয় করে না, বরং তৎ
কাল ঘোরতর পরিশ্রম সাধ্য কৰ্ম করিতে হয়। বলিয়া
ডাকার আঁহাদ সূচক শব্দ করিতে হয়। পর ১৫-
ময় এট, এতাদৃশ পরিশ্রমী লোকদিগের প্রতি তাহাদিগের
কর্তৃপক্ষ প্রদান নাবিকগণ সজ্জাবহার না করিয়, পশুবৎ
নির্দয়াচরণ করে।

হেনরী উড কহিলেন, বন্ধো রিচার্ড! তুমি শাস্ত্র-

জাপান

জাপানিরা বাণিজ্যের কথা যতই ভাবেন ততই জান কিছু
বাণিজ্যের পক্ষে উত্তম স্থান মনে। সে সকল ধর্ম প্রচারক
মিস্ত্রি সাহেবেরা জবাব দান করে, আমি তাহাদের
মুখে শুনিরাছি, এবং আপনিতও প্রত্যুত্তর করিরাছি, বৎসরের
মধ্যে আট মাস কারাবাসে বড় একটা গীড়া ঘেঁষে না।
অপর চার মাস বিদেশীরা লোকদের কথা ছুরে
ভদ্রের লোকেরাও গ্রীষ্ম ঋতু পূর্ণ তরে তাহি
শুক করিতে থাকে। গীড়া-শাস্তি দিয়া যে বৎসর গ্রীষ্মকালে
আমি কলিকাতায় কিরিয়া থাকি, সেবৎসর শাস্তি দেয় কত
লোক মতিমোহিত ও কণ্ঠ মজ্জা করা যায় না। তাই আমি
আজিও দেশে গিয়াছিলাম, কিছু দিন গিলোন উপদ্বীপে
ছিলাম, কিন্তু চীন দেশে প্রবেশ করিলে ঘেরাপ হস্তে
নিষিদ্ধ কর, এমন অনিষ্ট কর সমস্ত আমার কৃত্যপি
হয় নাহি। তাহা হইল, চীন যুদ্ধের সময় ভারত
গবর্নর জেনারেল তোমাদিগকে কিরূপ সহায়ক
করাই ছিলেন।

রিচার্ড সাহেব প্রত্যুত্তর করিলেন। চীন দেশ
যুদ্ধের সময়ে ভারত বর্মের শাসন কর্ত্তা আমাদিগকে অনেক
সাহায্য করিয়াছিলেন; তখন সহায়তা কেটেই কমে নাহি।
অধিরোদ্ধা নানিক প্রতিক্রিয়া অনেক দাপ হইল
সমস্তি বাহ্যে প্রকাশিত ছিলেন, তাহার সচিব চীনাগের
বিশেষ দ্রষ্টব্য ছিল। বিবিধ প্রকারে তাহা
গের প্রবর্ত্তা করণ আমি কিছু মাত্র ক্রটি করেন নাই, সুতরাং
এবং সৈন্যবলে শাসন কর্ত্তা মণ্ডল চীনাগের অধীন
সৈন্যদল ছিন্ন ভিন্ন করিয়াছিলেন, দেশের মধ্যে
পবেশ করিয়া সমস্ত লোকদিগকে চমকিত ও ক্রান্ত করি

শাহিলেন, তাঁহার ভয়ে সমস্ত সৈন্যসহ ব্রাহ্মণী-সহ
 করিয়া দেশান্তরবর্তী গুপ্ত স্থানে পলাইয়া প্রাণ রক্ষা
 করিয়াছিল। এই যুদ্ধে সার্ব-কোলিন্-কোষসম্পন্ন
 শক্তিশালী সৈন্যগতিস্থ কর্ণে নিযুক্ত ছিলেন, তিনি
 যুদ্ধ বিষয়ক যে বৃত্তান্তগুলি লিখিয়াছেন, তাহা পাসক
 করিতে আমাদিগকে সাদৃশ্য আশ্চর্য্যাবিত্ত হইতে
 বাধ্য। একত্রণ ছরহ কাপারে তিনি যে সৈন্যগতির উপমা
 যুদ্ধ ব্যক্তি ছিলেন তাহার কোন সন্দেহ নাই। এক্ষণে
 তেঁহার একটি সন্দেহ হইতে পারে; তীক্ষ্ণ রাজ্যের নিমিত্ত
 সন্দেহসমূহের ধন ব্যয় করা শাসন পদ্ধতি বহুদূর উচিত
 কার্য ছিল কি না? নিরপেক্ষ হইয়া দেখিলে যেখানে বোধ হয়
 কোন মতেই উচিত হয় নাই। কারণ, বাণিজ্য ব্যাপারে
 অনুরোধে যে অর্থ লাভ হইতেছে, ব্রিটিশ শাসনের উত্থান
 পক্ষে অংশ ভারতবর্ষের রাজ্যকোষে প্রত্যক্ষ হইতে
 পারে, অর্থ কল্প হইলে দুর্ভিক্ষের ভার ভারতবর্ষে বৃদ্ধি
 পাই বহন করিয়া থাকে, ব্রিটিশ রাজ্যে রাজ্য কোষ
 হইতে সে অর্থ প্রত্যক্ষই পূরণ করেন নাই। তাহা হইতে
 ভাঙে। অর্থাৎ জমি ধনেই ধন বৃদ্ধি হয়। এই যে
 একটি সন্দেহ। বলা আমরা বালক কালে শ্রবণাধীন,
 তখন দেশীয় দিগের সহিত সন্ধির পরে ইংল্যান্ডের পক্ষে
 পলাইয়া যাই। দক্ষিণ যুদ্ধাঙ্গল নির্জাত হইয়া ব্রিটিশ
 সৈন্যের সহিত ই নগরে অবস্থিতি করিতেছিল। সেই সময়ে
 আমেরিকাতে ক্রিয়া দিগের নগর জেপান উপদ্বীপে
 প্রবেশ করণার্থ ইংলণ্ড হইতে সংবাদ আসিল।

সংবাদে সন্দেহ উৎপত্তি হইল চিন্তে জিজ্ঞাসা করিলেন
 যে, 'সিডার' জেপান উপদ্বীপ কোথায়? উহা-বিক্রম

জাপান, ইউরোপীয় দিগন্তে বসতি স্থাপন করিয়াছে।
কিরা হয়?

এই রিচার্ড ক্রিস্টিয়ান লিথলেন, চীন দেশের পুকেংগু
নামক হিরসমুদ্রের দ্বীপ জাপান উপদ্বীপ আছে। পূর্বে
পৃথিবীর পশ্চিম প্রান্তে লোকের। এই উপদ্বীপের বৃত্তান্ত
কিছুই জানিত না। ১৭৭৩ খ্রীস্টাব্দে মার্কো পোলো নামে এক
বিখ্যাত ভ্রমণকারী ইহার বিষয় কিংবদন্তি লিখিয়াছিলেন।
কিন্তু তাহা পাঠ করিয়া অপর সাধারণ সবল লোকের সত্যি-
তা কৌতুহলাক্রান্ত হইয়াছিল বটে। কিন্তু তাহার সকল
কথাসত্য নহে। মার্কো পোলো বলেন, জাপান উপদ্বীপে
অর্থ বস্তু প্রভৃতি বহুমূল্য দ্রব্য অপব্যায় প্রায় হওয়ায়,
ভ্রমশীল নৃপনশ্রমের রাজ অটালিকার সমস্ত উদ্যোগ
ভাঙাই স্বর্ণ-খনিজ, তাঁহার শাসনোপদেশের আশ্রয়
গুলিও অকৃত্রিম স্বর্ণবস্তু। এই বস্তু প্রবল বন্যজাতি
করমাইখা নামক ভাড়া রাজ্য-সম্পত্তি জাপান উপদ্বীপ
স্বাধিকারভুক্ত করণে চেষ্টা পাইয়াছিলেন। কিন্তু তাহার সফল
চেষ্টা সফল হয় নাই।

ফরডিন্যান্ড মেন্ডেজ পিগা নামে এক পোর্তুগীজ নাবিক
জাপান বিষয়ক বর্ষাবৃত্তান্ত প্রসঙ্গে লিখিয়া ছিলেন। তিনি
বলেন, এক স্থানবর্তী বহু সংখ্যক দ্বীপ সমুদ্রের নামকরণ
করা। এই দ্বীপ সমূহ দক্ষিণ পশ্চিম এবং উত্তর দক্ষিণ দিকের
শান্তিকলার দ্বারা বক্রভাবে বিস্তারিত। উহা পৃথিবীর দক্ষিণ
প্রান্তের সমুদ্রের ৩১-৪৬ অংশ উত্তরে এবং পূর্ব দিকের
১২৯-১৪০ অংশ পূর্বে আছে। জাপানের দ্বীপ সমূহ
এবং দীর্ঘ প্রায় ৩০০ মাইল দৈর্ঘ্যে বিস্তৃত হয় নাট। কেবল
এক সহস্র কোটি বা তদতিরিক্ত দ্বীপে জাপান পরিগণিত

করেন, কেহ বলেন, উহার দীর্ঘতা ৩০০০, কেহ ৩০০০ ক্রোশ মিরূপিত করিয়াছেন। কতকগুলি বড়ী ক্ষুদ্র উপসাগর দ্বারা ভীপ ভূমিতে প্রায় পৃথক পৃথক কিন্তু এ সাগরগুলির পক্ষে দ্বারের দ্বারা যথেষ্ট যত্ন ভুল থাকিতে ভয় এবং অজানত পুরুষ বিদেশীয় লোকেরা ভয়ভাবেরে বার না। বিশেষ আমানিগের জন্মভূমি অত্যন্ত অপরিচিত লোকে বড় না জানিতে পারে ততই ভাল, এই বিবেচনায় জেপানীরা বিদেশীদিগকে মোকদ্দম দেখাইয়া দেয় না, বরং অনুসন্ধান করিলে কেবল ভয় এবং বিপদেরই কপ কহে, জেপান উপদ্বীপ সম্পূর্ণরূপে জল না হওয়ার মূল কারণ এই। তা বাহ্য হউক, বাণিজ্য বন্দগারে বিশেষ পুষ্ক এবং উৎসাহ থাকিতে পৃথিবীর পশ্চিম দিক দাসী লোকেরা জেপানীদিগের প্রাকমা-
 যণীয় বিষয় হইয়া নাই, জাপটো বার্মিন এবং নাইপন্ উপদ্বীপ সমস্ত উপদ্বীপ সাতিশয় উচ্চ ও বার্মিন দ্বারা
 ভূত ভাঙ্গার আবিষ্কার করিয়াছে। ভারতবর্ষের মধ্যে, য়েদুপ প্রদেশ, জেপানের মধ্যে নাইপন্ উপদ্বীপ সেই
 দিক দিক। উহার দীর্ঘতা ৩০০ ক্রোশ এবং প্রস্থ
 ১০০ ক্রোশ বিস্তারিত হয়। চীন দেশীয় লোকেরা উহাকে
 জিপানগু অর্থাৎ সমাপ্ত কহে, এই জিপানগু শব্দ হই
 তেই জেপান কথার উৎপত্তি হইয়াছে। জেপানিরা
 দাসী জাপটো, এই নাইপন্ উপদ্বীপের মধ্যবর্তী। জে-
 পান, ৩টি সমাট, কিউসিউ এবং ডিজিমা প্রভৃতি অনেক
 দীর্ঘ অনেক কারণ বশতঃ পূর্বে ইউরোপীয় লোকদিগের
 বিবিধ ছিল, য়াটসমাই উপদ্বীপে কৃষিকার্য্য কা-
 র্য্যন য়োলেইন্ ফাফের দুই বার কার্য্যকর ছিলেন,

জিঙ্গিস। উপদ্বীপে ভ্রমণকারী এই শত বৎসর বাণিজ্য করিয়াছিল।

ককেশের ন্যায় জাপান উপদ্বীপে প্রায় তিন চারি হাজার লোকসংখ্যতি করে, তাহাদিগের মধ্যে সভ্যতার চিহ্ন অনেক দেখিতে পাওয়া যায়। ইন্দুর এবং ধর্ম বিব্রাস তাহাদের সকলেই করিয়া থাকে, তন্মধ্যে কতকগুলি বিদ্যান লোক সুনিপুণ বিদ্যা-জ্যোতির প্রভাবে এক প্রকার বিদ্বান করে, ইন্দুরের অস্তিত্ব এবং পরকাল মানে এত অল্পেই অন্যান্য পূর্বদেশীয়দিগের ন্যায় বৌদ্ধমতাবলম্বী কিন্তু তাহারা ভিন্নদেশীয় লোকদিগের আচার ব্যবহার রীতি নীতি বিষয়ে সম্পূর্ণ অজ্ঞাত এবং অতিচ্ছিন্ন ছিল কারণ জাপান আবিষ্কারের উল্লেখ করিয়া পূর্বোক্ত কর-জিঙ্গিস পিওঁ। কতক কলমস আবিষ্কার খণ্ডে খণ্ডে উপস্থিত হইল, তাৎক্ষণিক সোকেসে স্থানকে অতিক্রম পুরুষ জ্ঞান করিয়া জাপান জগৎ প্রাপ্ত হইল। আমাদিগের প্রথম আগমনে সপাতিয়েবা এককপ ব্যবহার করিল। বাণিজ্যার্থ আমরা পুর্নসময়ে গিয়া ছিলাম, হঠাৎ হোরতব বড় এক রুটি হওকালে আমাদিগের জাহাজ জাপান সমুদ্রে ভটে আমাদিগের জাহাজ তাহাতে কিটসিউ উপদ্বীপের মধ্যে গেল। আমাদিগের জাহাজে আমাদিগের জাহাজে জাপানিগের আমাদিগকে অস্তুত পুরুষ জ্ঞান করিয়া ভয় প্রকাশ আমাদেব নিকটে আসিল না বটে, কিন্তু দিন বয়েক আমাদিগের আচার ব্যবহার দেখিয়া তাহাদিগের সে আশংকা দূর হইল। অজ্ঞাত অপরিচিত বিদেশী আমাদিগের সহিত তাহাদের আমোদ করিতে ইচ্ছা হইল। তদনুসারে

জাপান ও বিশ্বের দর প্রকাশ করিয়া তাহাদের প্রতি
সহানুভূতি করিতে লাগিলাম, সুতরাং তাহার কৃত-
মতা চিহ্ন স্বরূপ আমাদিগকে সেক্ষেত্রে বাধ্য করিতে
আদেশ করিল। ইউরোপীয় দ্রব্য সামগ্রীতে বুদ্ধির
পতি এবং অসংভোগ্য এমনি প্রীত হইলেন যে প্রতিবৎসর
কিউশিউ উপদ্বীপে এক এক বার পোর্তুগীস জাহাজ প্রে-
রন করণে আমাদিগের প্রতি সম্পূর্ণ অনুমতি হইল। তার-
তবর্ষের নিকটবর্তী গোরা এই মেকাউ উপদ্বীপে তৎকালে
আমাদিগের বাণিজ্য কর্ম হইত, তথা হইতে আমরা জেপা-
নীয়দিগের ব্যবহারোপযুক্ত লোম ও পট্টবস্ত্র প্রভৃতি নানা
প্রকার প্রয়োজনীয় দ্রব্য প্রতিবৎসর পাঠাইত লাগিলাম।
কতকাল মানসচিকে তাহা গ্রহণ করিয়া তৎপরিবর্তে আ-
মাদিগকে স্বর্ণ বোণা এবং তাম্র দিতে লাগিল। শেষোক্ত
দ্রব্য প্রাকৃতিক জাপান দেশে অধিক, এ জন্য সকল দ্রব্য
আমরা উহাই অধিক পরিমাণে পাঠাইতাম।

সেনরিউজ্ কহিলেন, তাই কিম্বদন্তি। ইউরোপীয় লো-
কদের ইতিহাস আক্ষেপনে তোমার বিশেষানুব্রূত দৈ-
খিতে পাই, আমি জানি পোর্তুগীস লোকেরা প্রাচীন বনিক
কিউশিউ উপদ্বীপে বাণিজ্য করিয়া তাহাদের কিরূপ উ-
ন্নতি হইল।

রিচড্ কহিতে লাগিলেন, বন্ধুগণ! ১৫৪৩ খ্রিস্টাব্দে
বোনিস্ট্রাস্ট বর্ষের নিভান্দ্রমশীভূত ছিল বসি। তৎকালে
উপদ্বীপে তাম্রদিগের এক একটি প্রাকৃতিক কয়লা, বন্য
জন্তুদিগের তল অন্যান্য ইউরোপীয় বনিকদের প্রতি জে-
পানীয়দের ত্রিসং ও যথা জন্মিয়াছিল। ১৫৬০ খ্রিস্টাব্দে
জেপান উপদ্বীপ পোর্টুগীসদিগের দ্বারা প্রথম অকালিত

ইয়। ইহার ৭ বৎসর পরে, অর্থাৎ ১৮৬৯ খৃস্টাব্দে হেনসিরো নামা এক সম্রাটের যুবক জেপানি স্বদেশে কোন গুরুতর অপরাধে ছবিতে হয়, পরে রাজদণ্ড হইতে বিমুক্ত হইবার কারণ ভবিষ্যৎবে কপালিগিরিতে হিত গোয়ানগরীর পোৰ্তুগীস লোকদিগের আশ্রয় লয়। তথায় খৃষ্টধর্মাবলম্বী রোমীয় রাজকদিগের সহিত তাহার আলাপ পরিচয় হইলে তাহার তাহাকে নানা কৌশলে ধর্মাবলম্বী করে। সূচতুর বুদ্ধিমান হেনসিরো এইরূপে রোমীয় খৃষ্টধর্ম মত অবলম্বন করিয়া পোৰ্তুগীসদিগের বিশেষ বন্ধু হয়, জেপানীয়দিগের সহিত বিরূপে আচরণ করিলে তাহারদের বিশেষ লাভ হইবে, তাহা তাহাদিগকে বলিয়া দেয়, এবং জেকুইট নামা রোমীয় খৃষ্টান রাজকদিগকে অনুরোধ করিয়া কহে, তোমরা যদি জেপানে যাইয়া খৃষ্টধর্ম প্রচার কর, তবে অনায়াসে বহু খৃষ্টান করিতে পার্বে হইবে তাহার বেলায় সন্দেহ নাই।

হেনসিরোর এই সন্দেধানুসারে পোৰ্তুগীস দেশে নানাবিধ বাণিজ্য দ্রব্য এবং উপঢৌকনের সহিত জেপান উপদ্বীপে একখানি জাহাজ প্রেরণ করিল। সূচতুর যুবক জেপানী তাহাদের কর্তা স্বরূপ হইয়া অনেকগুলি জেকুই রাজককে সঙ্গে লগুত স্বদেশে প্রত্যাবর্ত্ত হইল। এই রাজকদিগের মধ্যে ফ্রানসিস্ জেভিয়ার নামা এক মহাপুরুষ ছিলেন, বিদ্যা বুদ্ধি অধ্যবসায় কোন বিষয়ে জেভিয়ারের কোন ক্রটি ছিলনা, খৃষ্ট ধর্ম প্রচারকদিগকে যে সকল মহৎ গুণে গুণাবিত হইতে হয়, তাহার সে সকল গুণই ছিল। স্বধর্ম তাহার যুবক জেপানীকে সঙ্গে লইয়া তিনি বিশেষা গুহ ও কাশ পূর্বক ধর্ম প্রচার করিতে লাগিলেন, তাহার উৎসাহ

[illegible][illegible]

১ম বিষয়ে পোর্টফোলিওর বৈরূপ উন্নতি লাজ
বিস্তারিতরূপে বর্ণিত বিষয়েও সেই রূপ, রূপের উ-

পশ্চীমের বিপণীতে যখন যে জাহাজের আবেশাক হইত
গোয়া এবং মেক্সিকোর কুঠী হইতে তাহার আসা-
য়াসে আনিয়া দিত, পোর্টুগাল হইতে আসা আনিয়া
হইত না। এই সুবিধা অর্জিত ইউরোপদেশের বাণিজ্য
ক্রমে তাহাদিগের শতকরা শত মুদ্রা লাভ হইত। এতদ-
কিছু অঙ্গ লাভ নহে, কাইলম্বের নামে এইরূপ উদ্ভি-
বেতাকরেন, পোর্টুগীসেরা যদি এইরূপ বাণিজ্য-
আরও বিংশতি বৎসরকাল করিতে পাইত, তাহা হইলে
যেরুশালমের পূর্বতন রাজা সলমন হইতেও তাহাদিগের
অধুর ধন হইত তাহার কোন সন্দেহ নাই। একথা যথা-
যথ, অন্যান্য ইতিহাস বেদান্তে বর্ণিত হইলে, বাণিজ্য-
পোর্টুগাল তৎকালে ইউরোপের সমস্ত রাজ্যপুঙ্খা এক
অধুর যেরুশালী রাজা বর্ণিত সত্য সুবিখ্যাত ছিল।
তাহাদিগের মধ্যে অনেক ব্যক্তি খৃষ্টধর্ম গ্রহণ করিয়া
জেপানীদিগের কন্যা বিবাহ করিয়া জেপান উদ্ভব হইয়া
শেন প্রভৃতি লাভ করিয়াছিল।

বোম্বীয় যাত্রাদিগের আত্মাচারে পোর্টুগীস জাহাজ
সৌভাগ্য চন্দ্র হিম্মিৎ হইল। কিন্তু জেপান দেশের
বর্তমান এবং পূর্ব ইতিহাস অপর ২৩০০ খ্রিঃ পূঃ
দেখিতে পাওয়া যায়, যে, যেখানে বোম্বীয় জাহাজ
চুড়ী, সেইখানেই তাহাদিগের লাভ করিয়া গিয়াছে। অতএব
করে। তাহাতে তাহাদিগের ঐহিক পার্থক্য উভয় মতের
সাফল্য হইয়া থাকে। ধন এবং সুখাভিহ্ন সোভেৎ মতের
মতের জেপান জেপান উপরূপে গতিবিধি করিয়া
লাগিল। হিন্দুধর্মমতাবলম্বীদিগের ন্যায় বোম্বীয় খৃষ্ট
মেরাও জেহুইট, ডোমিনিমীয় জাপটিনীয় ও ক্যান্টিনীয়

[illegible]

অবস্থা প্রকাশ করিয়া, ধর্মোপদেশকদিগের
 এতাদৃশ অসদাচরণ দেখিয়া সকল ক্রোধে বিক্ষোভিত হইল।
 পরে হিতৈষী বোধে তাহারা প্রতিনিয়ত যে তাহাদের প্রতি
 প্রত্যাশা তজ্জি করিতেছেন, তাহা ক্রমে লোপ হইবার উপ-
 দ্রম্ব হইল। ১৮৯৬ খ্রিস্টাব্দে যে একটি ঘটনা উপস্থিত হইল,
 উদ্ভারী পোর্তুগীসেরা জাপানীয়দিগের বিশেষ ঘৃণার
 স্ফূর্ত্ত হইয়া উঠিল। বুকে নগরের প্রকাশ্য বাজপথে এক
 দিন এক পোর্তুগীস বিশপ (ধর্ম্যাধিকারক) এবং এক প্রখ্যাত
 রাজকর্মচারী পরস্পর সাক্ষাৎ হইল। জাপানী দুই জনেই
 চতুর্দোলায় ছিলেন। তাদের প্রাথমিক পরিশোধ চকু
 দৌল হইতে অবরোধ করিয়া এই ঘটনা রাজকর্মচারীকে
 সম্মান করা অতিক্রম্য ছিল। কিন্তু মিথ্যা অভিমান এবং সাহস
 সর্বাগ্রযুক্ত তিনি তাহা করিলেন না, বরং মেশাচারক বাহক
 দ্বারা তাকে দণ্ডায়মান হইলে, তিনি দুখভঞ্জন হইয়া অবজ্ঞা
 প্রকাশ করিয়া, তাহার নিকট অগ্রসর হইতে কাঁহিলেন।
 রাজা প্রগল্ভ এই বিশপ আচার ইচ্ছাপূর্ব্বক অলম্বন করি-
 ল, মনে এই আশ্রয় করিয়া, এই ঘটনা সত্যি সত্যি
 ক্ষুণ্ণচিত্তে নিজ দর্শনাধিকরণে চলিলেন। তখনই ইহা
 হার কোথের আর পরিসীমা রহিল না। বিশপের প্রাণ
 স্তম্ভিত বিষয়ক সমুদায় রক্তাক্ত হইল। তখনই পোর্তুগীস
 তত্ত্ব সম্রাট টাইকোর নিকটে প্রেরণ করিলেন। মহাবাহু
 টাইকো বদেশীর প্রাণীকরণ ও বান্ধাদির বিশেষ
 সাংলী ছিলেন, কৃত্রিম বিদেশীলোক তত্ত্বজন করিয়া
 দেশ এবং রাজার অপমান করিবে ইহা তিনি সহ্য
 কতে পারিলেন না। কিসে পোর্তুগীসেরা দণ্ডিত হইল।
 দিগের উদ্ভাবনা কিসে অবনত হইল। ১৮৯৭ খ্রিস্টাব্দে

মনোবাংকো ইহারই সুযোগ করিতে আরম্ভ করিলেন। প্রজামাত্রেই রাজপ্রস্তাবে অনুমোদন করিল, তাহাতে পোর্টুগীসদিগের জেপান উপদ্বীপে যে যে প্রভু হইয়াছিল, সকলই ক্রমে শিথিল হইয়া গেল। ইহার কিছুদিন পরে জাপান একটি ঘটনা হয় তাহাতে পোর্টুগীসদিগের পূর্বাশ্রয় অরুণ বিঘ্ন বিপন্ন হইল।

লিস্বন পোর্টুগালের রাজধানী, পূর্বদেশ হইতে একখানি জাহাজ ঐ লিস্বনে বাইতাইল, পথে ওলন্দাজেরা উহা জব্দ করিয়া বাধিকার করে, জাহাজের উপর উহাদের মধ্যে তাহাজ্জির কয়েক খান রাজবিশ্বাসঘাতক পত্র প্রাপ্ত হয়। মোরো নামে এক জন বর্তমান জেপানী সম্রাটের বিরুদ্ধে পোর্টুগীস তুপালতে পত্র লিখিত ছিল। ঐ মোরো রোমীয় খৃষ্ট ধর্মের বিশেষ উৎসাহী এবং জেপান বাসী পোর্টুগীস বণিকদিগের এক জন প্রধান কর্মচারী এবং বন্ধু ছিল। ছুরাখা-বিশ্বাসঘাতক স্বার্থপর নৃশংস হইয়া এই ভাবে ঐ বিদেশী রাজাকে লিপি প্রেরণ করে, নৃশংস! আপনি যদি কিয়ৎ সম্রাট সৈন্য এবং জাহাজ পাঠাইয়া নেন, তবে অনায়াসেই জেপান উপদ্বীপ পোর্টুগীস জাতির লব্ধ হইতে পাবে। কি দেশী কি বিদেশী আনয়। সমুদায় খৃষ্টান একবাক্য হইয়া এ বিষয়ের সম্মত করিতেছি, আপনি সাহায্য করিলেই কৃতকা-র্য হইতে পারিব, কোন সংশয় নাই।

ওলন্দাজেরা তৎকালে খৃষ্ট এবং বাণিজ্য বিষয়ক বৈষম্য ভাব হেতু পোর্টুগীস দিগের বিষম বিদ্বেষী ছিল। মোরোবো রাজবিশ্বাসঘাতক এই সকল পত্র প্রাপ্ত হইলে, তাহার আশঙ্কায় বিলম্ব করিল না, জেপান গবর্নমেন্টে তা-

বৎসরান্তে একেবারে অবগত করিল। অত্যাতে জেপান
অধীশ্বরের ক্রোধের আর ইয়ত্তা রহিল না, তিনি একে-
বারে দেশে প্রদেশে গ্রামে গ্রামে রাজআজ্ঞা দাব খোদ
করিয়া গেলেন, পোর্ভুগীসেরা সমস্তিকাল বিলম্বে পূত্র কন্য
দাস দাসী প্রভৃতি সমস্ত পরিবার এবং সমস্ত ভবা সামগ্রী
সঙ্গে নইয়া চলি কালের নিমিত্ত জেপান পরিত্যাগ করিবে
জেপান দেশীর কোন ব্যক্তিই জেপান ব্যক্তি স্বদেশ প
রিত্যাগ করিয়া ভিন্ন দেশে গাইবে না, এবং বিদেশে প্রবা-
সী কোন ব্যক্তিই স্বদেশে আসিবে না, কিংবা অতঃ
বে কোন ব্যক্তি এই কয়েক রাজআজ্ঞার অন্যায়ত্ব ক
রিবে, জেপান সরকারই তাহা তাহার প্রাণ দণ্ড করি-
বে, ইহার আর প্রমর্শিতার হইবে না। বিদেশীয় সামগ্রী
জেপান রাজআজ্ঞার বিক্রয় হইবে না, যদি হয়, কেতা এবং
বিক্রেতা দুইয়েরই বিশেষ দণ্ড হইবে। বিদেশী আর
কোন ব্যক্তির জেপান ভ্রমি স্পর্শ করিবে না, যদি কোন
স্বদেশীয় রাজারও বাসিতে এরূপ পত্র প্রাপ্ত হইবে, তবে
সে স্বদেশীকে নিম্ন প্রাপ্ত হইবে। কোন ব্যক্তি জেপান
পানে গাউ দণ্ড প্রচার করিবে না এবং খুন্দা দণ্ড প্রচার
করিবে না, যদি করে কঠিন দণ্ড পাইবে।
কি বিদেশী জেপান গবে, জেপান ব্যক্তি উপ নিম্ন
ব্যক্তিকে বে কহ ধরিয়। নিম্নে পারিবে, গবর্নরমেট
হাকে বিশেষ পুরস্কার প্রদান করিবে।

জেপানাধিপতি চাইলেন, কতক এই ভাষার দণ্ড কন
সঙ্গে সমস্ত নুপ্রচারিত হইলে, পোর্ভুগীসেরা আগ্রহ
চলিত বদেলবর হইল। তাহার কালবিলম্ব করিল না, এ
কন্য। সঙ্গে নইয়া কেহ একে বারে জেপান পরিত্যাগ করিল।

একটি ভয়ঙ্কর ব্যটিকা স্বরূপ সম্রাট্ মহাশয়ের জেপান অ-
 ন্যে শাস্ত্র হইবে, এই বিবেচনায় জেপানের জনিত ভয়ে
 একটি উপদ্বীপের খুঁটিতে পোর্তুগীস জাতিও আশ্রয় লইল।
 বিশ্বাস ভঙ্গ এবং রাজ বিদ্বেষ জনিত জেপান সহসা শাস্তি
 হইবার নহে, তাহাৎপাটন করিতে সম্রাট দৃঢ়প্রতিজ্ঞ হই-
 লেন। অতঃপর তাহাদিগকে সমস্ত বাণিজ্য অব্যাহত
 রাখিও তাড়াইয়া দিলেন। ইতো অকস্মাতে নষ্ট, অতি
 লোভে পোর্তুগীস দিগের জেপান উপদ্বীপে বাণিজ্য এবং
 ধর্ম-প্রচার উভয়ই নষ্ট হইল, সুতরাং যত তাহারা অপ-
 মানিত হইয়া স্বদেশে প্রত্যাবর্তন করিল। এখানে জেপান-
 ের খৃস্টানিত লোকদিগের খুঁটিবর্গের প্রতি দৃঢ় বি-
 শ্বাসের কথা উল্লেখ না করা সত্যিই অসুচিত রোধ হই-
 তেছে। “খৃস্টধর্ম পরিভ্রমণ করিয়া স্বদেশীয় প্রাচীন ধর্ম
 মতাবলম্বী হইলাম,” একবার একথা যুগে বলিলে জেপান
 গবর্নমেন্ট তাহাদের সকলেরই প্রাণ রক্ষা করিতেন। কিন্তু
 তাহাদের সামান্য দ্বন্দ্ব করিয়া পরকাল তরে তাহাদের স-
 কল সহস্র ব্যক্তি ভ্রমেও একথা বলে নাই, তাহাতে নৃশংস
 কার্যের চুরিকা অধীশ্বর তাহাদিগকে বিষম যন্ত্রণা দিয়া তাহা-
 দের প্রাণ বধ করত ইন্দুর এবং লোক সমাজে স্বনাম কল-
 হার করিয়া আসিত করিয়াছিলেন। ইতিহাসে পাঠ করা যায়
 যে জেপান লোকদিগের মধ্যে অর্ধেক স্ত্রী এবং বাকী
 অর্ধেক পুরুষের ওহারা কাঁড়কাঁড় হইয়া টাইগারের দ্বারা
 খাওয়া হইত। তাহাদের দুহাজির ইহাকাল টাইকো! অসংখ্য
 পাপের দায় করিয়া, কাহাঙ্গীর ইন্দুর এ পাপীদের প্রাণ
 বধ করিত।”

দ্বিতীয় অধ্যায় ।

উদ্ভাসিত হইলেন, সুখের রিচার্ড! সে জনগণের
তোমার সহিত আজি আমার যোগাৎ হওয়াতে ১৮৪৭
কর হইল। কথ্য প্রসঙ্গে পোর্চুগীস দিগের কৃত্য সত্য
তুমি আমার অনেক জ্ঞান জন্মিলে। এখন শিক্ষা
করি, ওলন্দাজ এবং পোর্চুগীস জাতির মধ্যে
কোন কোন? পোর্চুগীসদের সময়ে জেগায়ে ওলন্দাজ
দিগের কোন সংগ্রহ ছিল কি না? যদি থাকে, এই সংগ্রহ
কি প্রকারে হয়?

রিচার্ড কহিলেন, বন্ধু! অমৃত পান্ন
কদিগের যত্ন না লভেই হয়, তোমার কথা স্মরণ
হেতু অধিক লুপ্ত হইল। তত্পূর্ব ইতিহাস অল্প
রিতে আশ্রিত হইলবাসি, শ্রবণ কর। পুর
নে ওলন্দাজদিগের বাণিজ্য বিষয়কে সম্পর্ক ছিল, ইত
দিগের সহিত। তাহার মূল কারণ। বোম্বের যত
নামাভিধেয় লোক বড় যেখানে আছে, সেখানে
পোপেই তাহাদিগের একমাত্র অধীশ্বর; কিরাত
জা এই অভিশালী পোপের তুলা লোক ইউরো
মাই। এখন আর ততটা নাই, পূর্বে পোপের এতদূর
ক্ষমতা ছিল, তিনি ইচ্ছাক্রমে রাজনন্দাদিগকে সিংহাসন
রূপ সিংহাসনচ্যুত করিতে পারিতেন, ইউরোপের সমস্ত
দেশই তাহার বৃত্তস্থাবীনে ছিল। বোধ হয় তুমি তখন
ইউরোপের দক্ষিণে স্পেন এবং পোর্চুগাল নামে দুইটি
দেশ আছে। পৃথিবীর পশ্চিম এবং পূর্ব
বাণিজ্য করিতে যোগ এই দুই দেশের লোকদিগকে অল্প

জেপান।

মহিপত্র মিহি ছিলেন। রাণিজা দ্বারা প্রভূত ধন উপার্জন
করিয়া তাহারা অতি বিক্রমশালী লোক হইয়াছিল, তাহা-
লীগের নাবিক সৈন্য এবং অস্ত্র শস্ত্র ও প্রভৃৎ পদবিমাণে ছিল,
যদি স্থানে পোপ আনাদিগকে বাণিজ্য করণের অনুমতিপত্র
দিতেন, সেস্থানে টেক্সেস বাসী অন্য কাহারও বাণিজ্য
করণের অধিকার নাহি। এই বিবেচনা করিয়া, তাহারা
এক কম্পিত স্বাধিকার সর্বো অন্য কোন জাতিকে প্রাদিভে
দিত না, আসিলে বোধেটির অর্থাৎ সমুদ্র তরুর বলিয়া তাহা-
লীগের সমস্ত জ্ঞা সামগ্রী অপহরণ করিত, নাবিকদিগকে
নিহত করিয়া দিত।

একদা এবং ইংরাজেরা প্রণীড়িত হইয়া নায়গরতা-
অসমায় এবং পোর্ভুগীস লোকদিগের দণ্ড বিধানের
প্রতি দৃষ্টি লাগিল। তাহারা অতীব অভাবশালী
পোপের অসন্তোষ তাজল হইবার ভয় কিছু মাত্র কবিল না,
উক্ত জাতিতে থাকা হইয়া ন. ন. নিম্ন যুদ্ধাঙ্গধারী সৈন্যের
মহিমা অস্ত্র সমুদ্রে জাহাজ প্রেরণ করিতে আরম্ভ করি-
ল। ইতিমধ্যে অনেক বার পূর্ণোক্ত দুই জাতির সহিত তা-
হাদের তুমুল যুদ্ধ হইয়াছিল, উভয় দলের সমস্ত সমস্ত
লোক হত ও আহত হইয়া ছিল, তথাপি তাহারা 'কছুমাত্র'
পাত তয় নাই। এই নিদাক্ষণে গোণিগণের মনঃ ইংল-
ণ্ড ইতিজাৰেখ নামা মহাবীর কর্তৃক দৃষ্ট হইল, তা-
হাদের রাজত্বেরই অবসান হইল, ওলন্দাজেরা জেপান যাত্রা
করিল। তাবতবর্ষের অধিপতিও, ইফুইগুয় কোম্পানী নামে
ইংলণ্ডে কোম্পানী একটি বণিক সমাজ আছে, ওলন্দাজদিগের
দলিত হইয়া ইফুইগুও এরূপ এক দল বণিক সমাজ নার ছিল
তাহারাই ১৫৯৮ খ. অব্দে ২৪শে জুন দিবসে জেপানে

জৈপোরে পাঁচখানি জাহাজ পাঠানো হয়। নিয়ম অনু-
সারে নামা এক ব্যক্তি ও করেক হাজার টাকা দশক
রূপে নিযুক্ত হইয়াছিল। জাহাজের অতি বুদ্ধিমান
কর্তা জেনারেল, ইংল্যান্ডের জাহাজের অতি দক্ষ
কর্তা ব্যক্তি, সেই জাহাজের অতি বুদ্ধিমান নামক
নগরে তাঁহার কক্ষ হইয়াছিল, তাহাতে বাজারকালাবধি দে-
খিয়া আসিয়া সাহসিক করিয়া দেখে তাঁহার এক প্রকার অ-
ভিজ্ঞতা ছিল। তিনি, আফ্রিকা ও ভারতবর্ষের
প্রধান নগরের বণিক সমস্তের অধীনে তিনি দ্বাদশ বৎসর
পারিতোষ করিয়া আসিয়াছেন, ইহাতে তাঁহার অভিজ্ঞতা
এবং কক্ষ নৈমিত্তিক বুদ্ধি পরিপূর্ণ ছিল। তিনি যে কক্ষে
নিযুক্ত হইলেন তাহার বে.খোপনুক্ত ব্যক্তি, ইহাতে
কোন সংশয় নাই।

মুন্সী সাহসিক করিয়া যতই বিজ্ঞ হউক, দৈবদৃষ্টি নাই। ই-
নে এতদধিক অভিজ্ঞতা কোন প্রকারে প্রকাশ করিতে পারে না।
তাহার পীড়া, যত এবং তুফানে আসিয়াসের অনেক সাহসিক ও
অসহ্য মরিল, সুকোত্তর পীড়া পানি জাহাজের মধ্যে
হইয়াছিল। তাঁহার শত্রুগণ তাঁহাকে হীনবল দেখিয়া
পথে যুদ্ধ করত তাঁহার এক খানি লুটিয়া লইল, অতএব তা-
দমন্ নিজে যে জাহাজের কর্ণধার স্বরূপ ছিলেন, কেবল
সেইখানি রক্ষা পাইল। এইসকল দুর্ভাগ্যকর বসতঃ সময়ে
তাঁহার দুই বৎসরকাল অতিবাহিত হইল, অনন্তর তিনি জে-
পোলের সরিকটবর্তী কিউসিউ উপদ্বীপের রাজধানী বুঙ্গ-
নগরের বন্দরে উপস্থিত হইলেন। বুঙ্গের রাজা বিশেষ
সমাদর করিয়া তাঁহাদিগের সম্মান রাখিলেন, সমস্ত
ইহা তাঁহাদিগের আগমন বৃত্তান্ত অবগত করিয়া বসন্তকাল

নিরুপণ করিয়াছিলেন। তাৎকালিকের অন্য সামগ্রী যেন চোরে অপহরণ না করে, পাণ্ডিত লোকেরা যেন কষ্ট না পায়, আহার ও শরণোপবেশনাদির যেন অসুবিধা না হয়, এ সমুদায় অভাব বুজের রাজা যথা বিধানে নিবারণ করিলেন।

নেগাসকাই নামক নগরে তৎকালে পোতুগিসের বাসস্থান ছিল। ওলন্দাজদিগের অধ্যক্ষ আদমস জেপানে বাণিজ্য করিয়া পাছে প্রতিপত্তি লাভ করেন, এই ভয় তাহাদের মনে উদয় হইলে, তাহার কত প্রকারে তাহাদের অনিষ্ট চেষ্টা করিল তাহা বলিয়া উঠা যায় না। আদমসকে বোম্বেটিয়া বলিয়া অভিহিত করিয়া জেপান অধীশ্বরের নিকট অভিযোগ করিল। আদমসের আগমন কেবল জেপান রাজা লওন জনা বানিতোর জন্য নহে, এই সংবাদ জেপান উপহীপের সর্দার প্রচার করিল। তাহাতে বুজের শান্তি বন্ধক রাজবিশ্রোহী বলিল। হঠাৎ আদমস এবং তদনুগামী লোকদিগকে আক্রমণ করিলেন। কোন বিচার হইল না, একদা-রিংগং দিবস ওলন্দাজের কারাবাসে পড়িল। দুই কালব্যাপন করিতে লাগিল। যে অধীশ্বর তাহাদের তাহাদের সর্দার নীত হয়, এবং ওলন্দাজেরা তাহাদের কারাবাসে প্রাণ বিনাশ হয় বাত মজা দিয়া তাহাদের উপায় করিতে লাগিল।

একদিন জেপান অধীশ্বর আদমসকে বিচারালয়ে লইয়া গিয়া বিচার করণানন্তর স্থির বিবেচনা করিলেন, যে, সে ব্যক্তি নিরপরাধী; পোতুগিসেরা যৈষ্য নির্দাতন হেতু তাহাদের অনিষ্ট চেষ্টা করিতেছে, অতএব তিনি

সকলের সাক্ষাতে আদমস এবং তদন্তকারী লোকদিগকে
 বসানো সমাপ্ত করিল। তাহাদের শাসনিক এবং বৈজ্ঞানিক
 ব্যাপারের তত্ত্ব লইলেন। বিনাপ্রত্যক্ষ
 তাহারা যে ছাখ পাইলেন, তজ্জন্য আন্তরিক ক্ষেত্র
 প্রকাশ করিলেন। তাহাদের যে সকল সামগ্রী জেপান
 গবর্ণমেন্টে আনয়িত করিয়াছিল, তাহা পুনঃপ্রদান করি-
 লেন। রাত প্রমাদে হতভাগা ওলন্দাজদিগের এমন
 সোভাগ্য লাভ হইল, যে তাহাদের আশ্রয়স্থান শর-
 তপবেশনের নিমিত্ত কোন সামগ্রীর প্রয়োজন
 সে সকলই জেপান গবর্ণমেন্টে তাহাদিগকে তৎকালে
 দিতে লাগিলেন। কিছু দিন পরে ওলন্দাজের যে পা-
 নীষের নিকট প্রার্থন করিল "মহারাজ! জগৎস্থি
 পরিগণকরিতা আমার, বহুদিনের অসুখের, শ্রী পুত্র
 কন্যাদিগের নিমিত্ত মন অতি বিক্ষিপ্ত হইতেছে,
 অনুমতি হয় তো দ্রুত প্রত্যাপন করি। দুপাল
 ইহাতে সখ্য হইলেন না, আর দুই বৎসর কাল তাহা
 দিগকে জেপানে থাকিতে কহিলেন। কি বারে তাহা
 আবার অগত্যা তাহাদিগকে সমুদ্রে থাকিতে হইল,
 কিন্তু ইহাতে তাহারা অসুখী হইল না। তিন দিন
 জেপানীদিগের সহিত তাহাদের আলাপ করিয়া
 আহার ব্যবহার শরৎ করিতে লাগিল, ততই
 পূর্ণাপেক্ষা আপনাদিগকে সুখী বোধ করিল। অতঃপর
 আদমস রাজ সংসর্গে নিরন্তর বাস করিতেল,
 তাহার জ্ঞান বুদ্ধি অভিজ্ঞতা এবং বাক্য শ্রবণো দুপাল
 ও অন্যান্য প্রধান অপ্রধান সকল রাজ কর্মচারীই বশী-
 ভূত হইয়াছিলেন, তাহাতে ক্রমে ক্রমে তিনি প্রতি

পতি লাভ করিয়া পদে রাজ প্রসাদে "ব্রাহ্ম" পদে পদা-
 বিমুক্ত হইলেন। পুত্রের ভূপাল রাজ্য, ও পরিণামাদি
 শাস্ত্রের বিধা কিছুই জানিতেন না, অদমন অনেক
 সময় হাজার হাজার শিখাইয়া দিতেন, যাঁহা হাজার হাজার
 বছর পরিচয় করিয়া পলায়ন করিয়া
 গিয়া, কুটুম্বি অন্তি ম নাহর জাহাজ প্রভৃতি করিয়া
 দিতেন। ইহা "ত" সুন টি নভাশায়ের তিনি "মনি" হইতি
 "জান" হইলেন সে "সে" পৌর্দ, গিসে "বিবিধ" "চেষ্টা" "সংহার"
 "সর্বনাশের" উদ্যোগ করিয়াছিল, তাহাও এখন তাঁহার
 "নিকট" আসিয়া "স্বতি" "বিনতি" "ধারা" "তাঁহার" "চোখা" "মোদ"
 "বিনতি" "নাগিল" কারণ "আদম" "সহায়তা" "ব্যতিরেকে"
 "তাঁহার" "রাজ" "প্রসাদ" "নাভেব" "আর" "উপায়" "স্তর" ছিল না।

[illegible]

আগমন হইয়াছে? তাহা হইলে ওলন্দাজেরাও জাপান উপ-
দ্বীপে যেম বাণিজ্য করিতে পারে এই প্রার্থনা করিলে
সমুদ্রী বন্দরের মধ্যে দুই একবার তাহাদিগকে জেপানে
বাণিজ্য জাহাজ প্রেরণ করিতে অনুমতি দিলেন। ইহাই
ওলন্দাজদিগের জেপানে বাণিজ্য সম্পর্কের প্রথম পদ ।

* আসন্ন এক পরম প্রিয়তম ভাৰ্য্যা এবং প্রাণাধি-
ক দুইটি পুত্র কন্যাকে ইংলণ্ডে রাখিয়া জেপানে গিয়া
রাখিলেন, তাহাদিগের নিমিত্ত তাহার সম্মিলিত উৎ-
কর্ষিত থাকিত। জগদীশ্বরের এমনি প্রাকৃতিক নায়,
চিত্র চাকলা, হেতু রাজি এমন সমুদ্র জেপানের অগনি-
লীম স্মৃতিভোগেও তিনি স্মৃতি হইতেন না, ইহা! তবে
আমার প্রাণেশ্বরীর প্রিয় বদন দর্শন করিব, কন্যা ও পুত্র
কন্যাদিগকে জোড়ে লইয়া তাহাদের মুখ চুখন করিব,
দিবারাত্রি কেবল এই প্রতীক্ষা করিতেন। ওলন্দাজদি-
গের জাহাজ দেখিতে পাইয়া তাহাদের আত্মাদের আর
পরিচয় রহিল না, ইহঁর এমনি বুদ্ধি আমার নবোদগ-
ম করিলেন, এই বিবেচনা করিয়া তিনি স্তম্ভিত নিমিত্ত
হল, জেপান দ্বীপের সমীপে যদংশ গমনের অনুমতি
প্রার্থনা করিয়া কহিলেন, মহাশয়! পোন্সুগিরেরা
জাহাজ লইয়া উত্তরোপে কতদূর গিয়াছে ও বর্তমান
তাহার আশাকে লইয়া যাইতে ইচ্ছা করিয়া করিয়াছেন।
কিন্তু পাছে শত্রুপক্ষীয় লোক এমনি অশ্রুতি
হয়, এই ভয়ে আমি তাহাদের জাহাজে যাই নাই, বরং
আপনাকেও কোন কণা করি নাই। কিন্তু বাস্তবে যদি
প্রদেশীয় জাহাজ আসিয়া উপস্থিত হইল, তবে এই
সুযোগে একবার জাহাজকে দেশে প্রেরণ করুন, কিছু দিন

আমি পরিবারাদির সহিত সূখে কীৰ্ত্তনাপন পূৰ্ণক ভাপিত
প্রাণকে শীতল করিয়া পুনরায় প্রত্যাপন করিব।
নিষ্ঠুর সম্রাট ইচ্ছাতেও সম্মত হইলেন না, ইংলও হইতে
আদমস্কে জেপানে দ্বীপুত্র বনা আনিতে আজ্ঞা করি-
লেন। তদনুসারে হতভাগ্য আদমস আপনার সমস্ত
বস্ত্রান্ত লিখিয়া এক খানি পত্র তাঁহার প্রিয়তমা বৈণিতাকে,
আর অপর এক খানি তাঁহার পরমাত্মার একজন ইংরাজ
কে লিখিলেন বটে, কিন্তু দুই খানি পত্রের একখানিও
তাঁহার পান নাই, পাঠিলে অবশ্যই প্রতুলের আসিত।
তাঁহা! আদমসের মনকোভের কিছু প্রত্যকার হইল না।
১৮৫২ খৃ অব্দে তিনি বিংশতি বৎসর জেপানে থাকিয়া
১৮৫৩ খৃ দিবাগ করিলেন; মৃত্যুকালে তিনি এই কথা
বলিয়াছিলেন, প্রাণপ্রিয় পরিবারের দ্বারা পরিচরিত
হইয় যে ব্যক্তি মরিতে না পায় তাহার মৃত্যু অপরাধ
পতন, হ ! হেয়সী, হ ! সুদনে, হ ! সুকুমার কুমার
দমাদীগণ! আমি স্বর্গের মতন চলিলাম। আমারদের
সহিত আর আনন্দ সাক্ষাত হইল না, এই বৈরাগ্যিক
কোভ রহিল।

ওলন্দাজদিগের প্রথম কুঠী দিয়াও নামের একটি
ক্ষুদ্র উপদ্বীপে দক্ষিণে স্থাপিত হয়, তথায় অতি সামান্য
রূপ বাণিজ্য কর্ষ চলিত। মাংস একাই মৎস্যীয় পোৰ্ত্তু-
গিসদিগের বাণিজ্য কুঠী ইহা অপেক্ষা অনেক উত্তম
ছিল। পরস্পর বৈর হাব থাকতে তাহার রাজ সন্নিধানে
পরস্পর পরস্পরের অনিষ্ট চেষ্টা করণে কিছু মাত্র কুঠী
সহিত না। পূর্বে উক্ত হইয়াছে, লোভ এবং অহঙ্কার
দ্বায়ে পোৰ্ত্তুগিসেরা যখন জেপান উপদ্বীপ হইতে বহি-

ত হয়, তখন ওলন্দাজেরা সে স্থানে ছিল, "তত্ত্বৎ সময়ে
সেই নির্ধাতিত হইত তাহার। যে সকল কর্তৃ করিয়াছিল,
সে সকলই সুমতা ওলন্দাজের নামের পক্ষে ঘোষণা
তাহার কোন সন্দেহ নাই। তদ্ব্যথা জেপানীধর্মী
টাইকো পোর্তুগিসদিগকে হুঁত করিলে, রোমীয়
ধর্ম ধর্ম মতাবলম্বী অনেক জেপানী লোক সে স্থানে
কর্তৃ করিতেছিল। সম্রাট কারাকুরোহ ইত্যাদি এবং
দক্ষিণ যুদ্ধে ওলন্দাজ করিয়াও তাহাদিগকে ধর্ম ধর্ম
পরিভোগ করাইতে পারেন নাই। তত্বে দৌলত
ও তাড়না করিলে তাহারা রাজ বিক্রোহী হইয়া সাইমন
বের নামে একটি মুক্তিপত্রীতে আশ্রয় লইয়াছিল, ~~এ~~
সৈন্যগণ তাহাদের দণ্ড বিধানের জন্য নানা প্রচেষ্টা
করিয়াছিল বটে, কিন্তু কিছুই করিতে পারে নাই, ~~এ~~
গণে, চেষ্টা করিয়া বাতলে তাহার। তাহাদের সমস্ত
উদ্যোগই ব্যর্থ করিয়াছিল।

জেপানীধর্মী ইহাতে ক্রুদ্ধ হইয়া সিস ওলন্দাজ
ওলন্দাজদিগের সম্রাট প্রাথনা করিলেন। কুনিদা
নামে এক ব্যক্তি জেপানে ওলন্দাজ কুঠার কর্তৃ একপ
ছিলেন, কনব্যাকর্ডের বিবেচনা করিলেন না, রাজপ্রতিনিধি
লাভের জন্য তিনি কয়েকখান জাহাজে জেপান এবং সৈন্য
লইয়া হতভাগ্য নিবাসী খ্রীষ্টানদের আশ্রয় দিয়া
করিতে চলিলেন। আশ্রয় বন্ধার্থ ঐ খ্রীষ্টানদের সাহায্য
মর্বেয়ার চতুর্পার্শ্বে যে ভিত্তি নির্মাণ করিয়াছিল,
তোপের চোটে প্রথমে তিনি সেই ভিত্তি নষ্ট করিলেন।
আজ সৈন্য এবং রাজ সৈন্য দ্বারা এক পক্ষ তাহাদিগের
চতুর্দিক পরিবেষ্টিত করিয়া রাখিলেন, তাহাতে তাহা-

কাজে ফুৎ পিপাসায় তাহাদিগের অনেকেরই প্রাণ
 নষ্ট হইল, তথাপি তাহারা ছুরীয়া কুকিবারের
 অধীন হইল না। বরং প্রীতি স্বার্থে তাহাদিগের একান্ত
 নীচা আছে এমন অনেক চিত্র প্রকাশ করিতে লাগিল।
 প্রকৃত পক্ষে অনেক লোক মরিয়াছে জানিতে পারিয়া,
 কুকিবার কতকগুলি সৈন্য এবং ছয়টা তোপ সঙ্গে সঙ্গে
 মাএমবেরাতে প্রবেশ করিলেন, আর বধোচ্চা ক্রমে
 তোপ ছুড়িতে লাগিলেন, তাহাতে যে সকল লোক
 প্রাণহীন ছিল, তাহাদিগের অনেকেই নিহত হইল।
 জাপানীয় খ্রীষ্টানেরা এই নিদারুণ শোণিত পাতের সময়ে
 অনেকগুলি বালক বালিকা যুবকী এবং যুবকী স্ত্রীকে নগরের
 বাহ্যিক স্থানে লুকাইত করিয়া রাখিয়াছিল, অবশেষে
 তাহারাও বঁচিয়া রহিল। কিন্তু ইতারা জীবিত থাকিলেন
 মহানব সমুদ্রত বংশ দ্বারা ভবিষ্যতে জেপানের
 অনিষ্ট হইবে, এই বিবেচনায় নির্দয় টাইকেপাত
 ছেদন করিয়া তাহাদেরও প্রাণ বিনাশ করিলেন।
 কুকিবার এই ভয়ঙ্কর মিঠুরাচাবের সংগ্রহে ছিলেন
 লিয়া ইউরোপে তাহার অত্যাতিব আর পরিসীমা
 রহিল না। তাহার বদেশীয় লোক তাহাকে নৃশংস
 বাক্যসমূহ জান করিল। আশ্চর্য্য দেখা গেল যে
 অনেক কথা হলাও লিখিয়া পাঠাইয়াছিলেন কিন্তু
 ওলন্দাজের, সে কথাকে গণ্য করে নাই, এদেশীয়
 লোকের প্রতি লাভ থা সম্বন্ধে তাহারা কিছুকি সাবধানে
 সাবধান করিলেন পরদেশীয় তাহাকেও সুখী করেন না।

১৬৪২ খৃ অর্কে জেপানের সমুদ্রি ওলন্দাজদিগকে
 তাহাদের বর্ককুঠি ফিরাও ডাঙা করিয়া ডিজিমাতে

SECRET

অবস্থিতি কবিত্তে কহিলেন। ডিজিমা অতি অপকৃত
স্থান, একটি ক্ষুদ্র ক'দ' ব' স্বরূপ, পূর্ক নিবাসি ক'।
ওতে ২ চাব। স্বরূপ সঙ্কল্প সম্বোধন করিত, শোমোল
নিবাসে তাহার শতাংশের একাংশ করিতে না পারিয়া
বড়ই অনুখিত হইল। তাই শোমোল নামে এক জন জব
মেম দেশীয় ক'দ' ক'দ' নিবাসিন, সম্রাটের ভয়ে
ওলন্দাজেরা ক'বিবারে আপনাদিগের ধর্ম ক'র্ম করিতে
অসম্মত না, ধর্ম সংগীতমূলে স্থাপিত না, খ্রীষ্টানদিগকে
লক্ষ্য ক'র্ম করিতে হয়, তাহা পূরিত তাহা দিগকে সকলই
করিতে হইত। পাঠ্য ক'র্ম ক'র্মেরা যে ক'র্ম করিয়াছে,
ওলন্দাজেরা সেই ক'র্ম করে সেই ভয়ে সম্রাট তাহাদের
এতি সতত কটাক্ষ দৃষ্টি রাখিতেন, সকল বিষয়ে তাহা
দের গর্হ খর্শ করিতেন, আজি একটি ক'র্ম ক'র্ম
অনুজ্ঞ করিতেন, তাহা তাহা প'নিউ নিবাস
করিতেন, বিনাপরাধে তাহাদের ক'র্ম দিগকে অপরাধী
করিয়া কখন কখন তাহাদিগের দণ্ড বিধান করিতেন।
তথাপি, ধর্মের এমনি মোত, ওলন্দাজেরা এই সকল
অত্যাচার সহিষ্ণু ভাবে সহ্য করিত, জেপান পরিত
করিতে তাহাদের একবারও ইচ্ছা হইত না।

করমেন ইতিহাসবেদ্য আরও লিখিয়াছেন, ডিডিন, মীর্মে ৩০০ ফুট. এবং প্রস্থে ২৪০ ফুটের অধিক নয়। একটা প্রস্তরময় সংক্রম দ্বারা উহা নাগাসকাই নগরে সহিত সংযোজিত আছে। শান্তি ব্রহ্মক প্রহরী এই সঙ্গম সতত রক্ষা করে; তাহানিখের অনুজ্ঞা ব্যতিরেকে কেহ তন্মধ্যে প্রবিষ্ট অথবা তথা হইতে বস্তু গতি হইতে পারে না। এই ক্ষুদ্র উপদ্বীপের চতুঃপাশ্বে

[illegible]

১৯৪৬ সালে ডি জি ম নিয়াস একত্রে ওল্ডবাজ
কিনিসব, দেশের লোকদিগের ভাবম্বা, গণ করিয়া
হল। সে সময় পরমাথীরকে এক পত্র লিখিয়াছিলেন,
“দক্ষন” বাণিজ্যার্থে জেপানে আসিয়া কি কুর্ভিক্ষ
করিয়াছি, এখন আমাদের অপমানের কারণ গণনা

শাই। নাগাসাকি নগরের উপরিত ইইরামায় জনক-
 বেশ একটা আসির আশ্রয়গেহ, হোশী এবং অন্য না-
 যুক্তান্ত ইহা কীম মনে। ইহাও জনকগণ আসির আ-
 শ্রয় জাহাজে পিতা মাতা গণ্য। গণ্যাত্মকগণে ততো
 অনুসন্ধান করিতে লাগিল। জনকগণে বিলান, শিন-
 তন কীমমুতি ইহাও লোকখীটেধর্মের পবিত্র
 চিহ্ন একবারি ক্রমাগত লগত আমাদিগের নিত্য
 আসিয়া কছিল, তোমরা এই ক্রমের উপর পদ নিষ্কণ
 করিস। খ্রীষ্টধর্মের প্রতি যে আশ্রয় প্রকাশ করা
 করে আমাদিগকে জানাও। তত্বা রাজআজাদ গেনট
 গেনটের সর্বদা লইয়া আমাদিগকে দেশান্তরে
 কামের হইয়া। যদিও আমাদিগের জাহাজ
 কর্ম হগত তাহাই করিতে রাখা হইলেন।
 লগত দ্বারা আমাদের বাজিআদা সকল
 কামিত আমাদিগ, কিন্তু আমাদের নারিক
 আমাদের সচিব রাস করিতে পাউল ন, রাজআজাদ
 আমাদিগকে জেপান প্রচরীদিগের সচিব
 হইল। সে দিন, তৌ ঐক্যে গেল আমাদের
 চত্বাংশত লোক আমাদের আশ্রয়
 দিগের করির কর্মকর্ম। আমাদিগের
 আশ্রয় জাহাজ সকলই দিলেন। কারণ জিহাদ
 তিনি করিলেন, তাহানি না হইল। এর জেপান গণ
 আমাদের সর্বদা আমাদিগের জাহাজ
 আমাদের ইহাও আমাদিগের সর্বদা
 আমাদের প্রতি জেপানামীষবেত
 সন্দেহ, আমাদের সচিব ইহাও আমাদের

জেপান।

যদি বিশেষ প্রয়োজন হয়, রাজ্যের নিকট প্রবেশের
 বিধ জেপানের অন্য কোন স্থানে জাপানি পলিচু
 মাকিতে পাইব, এবং তৎ বলয় ভিতরে যাইবার প্রথা-
 গোপনমতে জানাইয়া আমন্ত্রণ প্রাপ্ত হইয়া যাবিবো।
 তাই! বানিজ্যে জাপানিগের যে জয়লাভ হইয়াছে
 তাই পর্বাত পর্বত পর্য্যন্ত জাপানিগের এখানে অপর
 কোন বড় মান নাই। একথা শুনিয়া আমি আশ্চর্য্যাবিষ্ট
 হইলাম। এই কথা কহিয়া জনরিচার্ড হেনরি উডকে
 সোধেন করিয়া কহিলেন, বন্ধু বর! ওলন্দাজেরাও
 জেপান লইয়া বৎসরের মধ্যে জাপানিগের সঙ্গে
 যুদ্ধের সহিত সাক্ষাত করিতে বাটাইলেন, এবং জাপানি
 গের অস্তিত্বের শেচনীয় বিষয় দেখিত হইয়াছিল। অতঃপর
 ইউরোপে লিখিয়া পাঠাইত, শুনিতে অত্যন্ত আশ্চর্য্য
 হইত। বাস্তবতায় সে সকল কথা এখন আমি তোমাকে
 বলিতে পারিলাম না, পোর্্তুগিসদের আগমনের পর
 ওলন্দাজদের জেপানবাজ্যে স্বতন্ত্র ছিল, তাহা
 কয়েক বিষয় বহন করিয়া, তদ্বারা অনায়াসে তুমি
 উপলব্ধি করিতে পারিবে, ওলন্দাজেরা এত দক্ষ
 জাপানিগের হইয়াছে যে জেপানবাজ্যে বাণিজ্য
 করিতে পারেন।

জনরি উড কহিলেন, বন্ধু রিচার্ড! পোর্্তুগিস এবং
 ওলন্দাজদিগের বৃদ্ধান্ত আমি জানি না। কিন্তু জাপানিগের
 নীতি হইলেন, জেপানের ইতিহাস শুনিতেন, অনায়াসে বড়ই
 বিস্ময়কর এবং কৌতুহল জন্মিতোছে, কতকগুলি করিয়া
 ইংরাজদিগের বিরূপে অপর কোনও সম্প্রদায় করিয়া

জেপানি

তদন্ত করি যদি আপনি আমাকে এক্ষণে বলেন তবে ব
উপকৃত হই।

জন রিচার্ড কঠিতে লাগিলেন, **জাপান**। ভাগ্যক্র
ম্ভাতি আমি তোমার মনের উক্ত প্রোক্ত সাইরাছি, ই
হাম আন্দোলন করিলে যে অসীম লাভ হয় সচরা
লোকে ইহা বুঝিতে পারে না। ইহা বদলে যে স
নিক অনুরাগ আছে ইহাতে আমি বড়ই আকর্ষ
হইলাম। শ্রবণ কর। উইনিয়াম এডামের প্রচুর
ওলন্দাজদিগের জেপান নামে যে রূপ বাণিজ্য
হয়, ইংল্যান্ডেরও সেইরূপ হইয়াছিল। বহুকাল
ইংল্যান্ডের রাজধানী লণ্ডন নগরে অতি সমৃদ্ধ
মানিক সম্প্রদায় ছিল, পূর্বাঞ্চলে তাহাদিগের বাণি
ক্য হইত, এক্ষণে ঐ বহিক সম্প্রদায় প্রসিদ্ধ
ইণ্ডিয়া কোম্পানী নামে লক্ষ্যে সুবিখ্যাত হইয়া
জেপানে অধিষ্ঠিত করে। আদমস্, তৎসংক্রান্ত
বিষয়ক ফলে পঞ্চাশিকা হস্তান্ত এই বহিক সম্প্রদায়
নিযুক্ত ছিলেন। পত্র পাঠে তাহার সাক্ষ্য
চিত্ত হইয়া ক্রোড নামে একখানি বাণিজ্য জাহাজ
খু অদে জেপানে পাঠাইয়া দেন, আর কাগুন
সেরিসকে এই জাহাজের কর্তৃত্ব পদে নিযুক্ত করে
সেরিস অতি বুদ্ধিমান ব্যক্তি, ইতি পূর্বে অনেক
দিন পূর্বাঞ্চলে গমন করিয়াছিলেন, তাহাতে পূর্বে
এবং পূর্বাঞ্চল বিষয়ে তাহার অনেক অভিজ্ঞতা
হইয়াছিল। যাইবার সময় তিনি ইংল্যান্ডের অধী
প্রথম জেনরকে অনুরোধ করিয়া ছুইখানি পত্র
কতদূরিত উপঢৌকন লইলেন, একখানি পত্র ফি

উপদ্বীপের রাজার উপর এবং অপর একখানি জেপানের সম্রাটের উপর ছিল। জেপানীয় লোকদিগের পক্ষে যে সকল সামগ্রী অত্যাবশ্যক হইত তাহা তঁহাদের অপর কোন বস্তু তিনি এই রাজ্যে লইলেন না। দুইবৎসর সমুদ্রে থাকিয়া, ১৬১৩ খৃঃ অব্দের জুন মাসে সেরিস কিরও উপদ্বীপে উপস্থিত হন, যিরগোর রাজা বিশেষ আদ্বীর্জী প্রকাশ করিয়া অধীন কর্তব্যের লোকদিগের দ্বারা সেরিসের অত্যাচার করিয়াছিলেন।

উইলিয়ম আদমস তৎকালে জেডো রাজধানীতে ছিলেন। কিরওতে উপস্থিত হইয়া সেরিস তাঁহাকে আপন আশ্রয়ন বান্ধি জ্ঞাত করিলে, তিনি তাঁহার সহিত যোগাযোগ করিতে আসিলেন। বহুকালের পরিচিত উভয়ের বিদেশে আসিয়া হওয়াতে পরস্পরের আত্মাদের প্রায় পরিসীমা রহিল না, কোলাকোলি করিয়া তাঁহারা নানাপ্রকার কথোপকথন করিতে লাগিলেন। অমন্তর আদমস বন্ধুব সহিত কিয়দিন সুখে কালচাপন করিয়া পরে সেরিস এবং অপর দশজন ইংরাজকে সঙ্গে লইয়া রাজধানীতে প্রস্থান করিলেন। ইংলণ্ডীয়ের জেপানে যেন সুখে বাণিজ্য করিতে পারে, সম্রাটের সাহিত সাক্ষাৎ করণের তাহাদের প্রদান উদ্দেশ্য এই, অতএব সেরিস রাজপ্রীতি সাক্ষাৎ স্বদেশাধিপতির প্রেরিত উপচৌকম এবং পত্র দুইখানি সঙ্গে লইলেন। প্রথমে তাঁহারা কিরওর ভূগতির সহিত সাক্ষাৎ করিলেন, রাজদণ্ড উপচৌকম এবং পত্র প্রাপ্ত হইয়া তিনি সাতিশর সন্তুষ্ট হইত সেরিসকে আপনার এক খানি অতি মনোহর বস্ত্র দিলেন, পঞ্চাশ জন দাঁড়িতে ঐ

জৈপানীরা বাহিরের লোকেরা আসন্ন লে দেশের মহা-
 শক্তি তাঁহাদের বাহিরের লোকেরা সেদিন অনেক
 আশ্চর্য্য বিষয় দেখিলেন। অনেক লোকের সহিত
 তাঁহার আলাপ পাইল। তিনি জৈপানী-
 লোকের রীতি নীতি অনেক জানিতে পারিল। সাতশর
 লোকেরা নিবসিত হইলেন। জৈপানী ক্রিওর হইতে ৫০০ ক্রোশ
 হইল, অনেক দেখিল। তিনি বাহিতে বাহিতে তাঁহাদের
 এক সমুদায় বিলম্ব হইল। অনন্তর তাঁহার রাজ্য সমিধান
 উপস্থিত হইলে সমুদায় আপন সমুদায় প্রযুক্তই হইল,
 অথবা আদমসের অনুবোধেই হউক, তাঁহাদের বিশেষ
 আভ্যর্থনা করিলেন। জৈপানী উল্লেখীয় ভূপের গম্ব এবং
 জৈপানীকনাদি প্রদান করিলেন, তিনি তাঁহাদের তাহা গ্রহণ
 করিয়া ইংরাজদিগকে জৈপানে রাজ্যে তাহা পাতাই
 দিলেন। পূর্বে যেসকল ওলন্দাজ এবং পোর্চুগিসদের
 আধমাগমের সদ্ব্যবহার করিয়াছিলেন ইংরাজদিগের
 সহিতও সেইরূপ সদ্ব্যবহার করিতে লাগিলেন।

এ দূরে বস, উভ! কেতি বস বলিলেন হইল
 আমি যে সকল রক্তান্ত বলিয়াছি, তুমি পূর্বাঙ্গের বিবে
 চনা করিয়া দেখ, জৈপানীয়েদের মঙ্গলোক নগে, দর্শনপত্রতা
 ও বিবম লোভের দশবর্তী হইয় সমুদায় পোড়ুগিসেন।
 জৈপানীদিগকে না বিরক্ত করিয়াছিল, তদবধি তাহারা
 কোন ইউরোপীয় জাতিকে অসন্মান ও অনাদর করে
 নাই। কি পোর্চুগিস, কি ওলন্দাজ, কি ইংরাজ ইতি
 পূর্বে যাহারা জৈপানে গিয়াছিল, সকলকেই তাহার
 সম্মানের সহিত সম্বর্জন করিয়াছিল। যদি বল এক
 জাতির অত্যাচার হেতু অপর ইউরোপীয় লোকের মোহ

৩য় বিবেচনা মধ্যযুগে তাহাদের প্রতি বিদ্যেব প্রকাশ কর। জেপানদিগের অকর্তব্য্য হইরাছে। তা বটে কিন্তু যরপোড়া পুরুষিন্দুর কল মেঘ দেখিয়া ভয় পায়, এই সামান্য চলিত কথাটি লক্ষ্য করিতে হইবে। স্বাধীনতা রক্ষার্থ কে না বস্তু করে? বিশেষ রূপে উপকৃত এক ইউরোপীয় জাতি কৃতঘ্নতা প্রকাশ করিয়া যখন তাহাদিগের দেশ লইতে উদ্যত হইয়াছিল, তখন অপর জাতিও অনায়াসে সেইরূপ করিতে পারিত। কেবল এই মাত্র আশঙ্কায় ইউরোপীয়দের প্রতি জেপানীদের অন্ধা ভক্ত লোপ পাইয়াছিল, নতুবা কখনই এরূপ হইত না। বিশেষ রোমীয় কাথলিক যাজকের ধর্ম পবিত্র হোক, ধার্মিকতা মানা লোকে যখন গর্হিত কথা কহিত তখন অপরাধ নির্দেশ করে অনায়াসে তদ্রূপাচরণ করিতে পারিতেন, য সম্মুখ তাহাদিগের মনে দৃঢ় রূপে জন্মিয়াছিল।

জনিবাত্তে ইংরাজদের কি হইবে তাহা বলা এক্ষণে আবশ্যক নাই। ইংরেজ রাজস্বাভা প্রাপ্ত হইয়া কিছু দিন জেপানের কথা তথ্য বাণিজ্য করিলেন, পরে ১৬১৬ খৃ. সনে সম্রাট পুঙ্ক নিয়মের কিছু পরিবর্তন করিয়া কিরও উপস্থাপে তাহাকে চিরস্থায়ী বাণিজ্য কুঠী স্থাপন করিতে আদেশ করিলেন। তদনুসারে তাহার তথ্য বাণিজ্য করিয়া বিপুল অর্থলাভ করিতে লাগিলেন, বিছুদিন পরে সেরিমের ইংলেণ্ডে অত্যাগমন করা প্রয়োজন হইলে, তিনি আপনার কর্ম ভার রিচার্ড কোক্স নামা এক ব্যক্তির উপর অর্পণ করিয়া আর আটজন ইংরাজকে তদধীনে রাখিলেন। দুইজন জেপানী উকীল এবং আর দুইজন

সামান্য কৃত্যও কুঠীতে নিযুক্ত রাখিল। উক্ত আটজন ইংরাজের মধ্যে উইলিয়ম অগাস্ট হিউস ইন্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানী এই নিয়োগে সাতিশ্বর সন্তুষ্ট হইয়া পুস্কার প্রদত্ত তাহাকে বৎসকে বেতন দিতে লাগিলেন। ওলন্দাজ কনসুল ইংরাজ উক্ত ক্রান্তি প্রদেয়ান্তে খুঁতে ধর্ম্য মহাবলম্বী হওয়ার জন্য অসন্তোষ প্রকাশ করিতে নিষিদ্ধে বাধ্য হইতে লাগিল। আর রোমীয় খৃষ্টান পোর্টুগীসেরা অজিথ্যে রহিল, ইহার সাধ্যানুসারে অপর দুইজাতির অন্তর্গত সাধমে কিছুমাত্র ক্ষতি করিত না।

ইংরাজদিগের কুঠির কর্তা কেবল সাতিশ্বর বিনয়ী এবং স্বর্ণশীল লোক ছিলেন, সঙ্গত এভাবেই ছোট বড় সকলেই তাহার বশোভূত হইল, এই ক্ষমতাপ্রযুক্ত তিনি দুইবার জেডোতে গেল, দুইবারই সম্রাট তাহার সহিত সাক্ষাত করিয়া অত্যন্ত সন্তুষ্ট হইলেন। পরন্তু জাপান দেশে ইংরাজেরা যে সকল বাণিজ্য করতেন তাহা লইয়াছিল, তাহা তদেশীয় লোকদিগের পক্ষে যথোপযুক্ত না হওয়া প্রযুক্তই ইউক, অথবা অন্য কোন কারণে বশতই ইউক, বাণিজ্য কর্ত্তে তাহাদিগের বড় একটা উন্নতি হইয়াছিল। ইন্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানি কিংও উপ-নিয়োগে যদিও চার্লিসক টাকা ব্যয় করিয়াছিলেন, তথাপি তাহাদিগকে ক্ষতিগ্রস্ত হইয়া অবশেষে বাণিজ্যবরোধ করিতে হইল; ১৬২৩ খৃঃ অব্দে ইংরাজেরা তব্ধ কুঠী ত্যাগীয়া স্বদেশে প্রত্যাগমন করিলেন। তাহাদিগের প্রতি কেহ কখন কোন বিষয়ে দোষ রোপ করিতে পারে নাই, এজন্য বিচ্ছেদ হেতু প্রণয়ন অপ্রধান মঙ্গল জাপানীই বড় অনুতাপ করিতে লাগিল। বাহা ইউক

ইংরাজেরা আর কিছুদিন থাকিলে, বোধ হয় জেপানের অস্তিত্ব ভাল বই দান হইত না, এত দিনে উহা পৃথিবীর সর্বত্র বাণিজ্য কর্য কথিত প্রচুর অর্থলাভ লাভে পারিত। সুতরাং বিষয় এই, মহত্ব মহত্ব নিরপ-
গামী খৃষ্টানদিগের শোণিত পাতের দ্বারা জেপান
সখন কলঙ্কিত হইয়াছিল, ইংরাজেরা তখন সেখানে
যায়ে নাই, তৎপূর্বেই তাহাদিগের দেশাগ্রমণ হয়।

১৬৫৩ খ্রিঃ অব্দে পুনর্বার ইংরাজেরা জেপানে বাণিজ্য
সরবরি আশায় চারিখানি বর্ণবপোত প্রেরণ করি-
য়াছিলেন, নেমাসকাই ভিন্ন অন্য কোন স্থানে বিবে-
চনীয় বণিকেরা তৎকালে বাণিজ্য করিতে গাইত না,
স্বতন্ত্র ইংলণ্ডীয় জাহাজ প্রথমতঃ ঐ স্থানে উপস্থিত
হইলে, পূর্বে তাহার যেরূপ অনুদ্বীত ও সমাদৃত হইত
সেই প্রকারে সেকথা হইল না, তাহাদিগের কর্য সিদ্ধির
আশাও ব্যর্থ হইল। এই যাত্রায় ইংরাজদিগের
অনুভব কথিত হইতনের অনেকে অনেক কারণ নির্দেশ
করিয়াছেন। তন্মধ্যে একটি প্রধান কারণ এই পূর্বে
এমবরন, সিমব, বটেভিয়া, নালোয়া, সিলোন এবং
দক্ষিণ হিন্দুস্থানের পূর্বা এবং পশ্চিম ভাগে পোতু-
গিসদিগের অনেক বাণিজ্য কুঠী ছিল। কালক্রমে তাহা-
দিগের বল বীৰ্য্য এবং ক্ষমতা লোপ হইলে, ওলন্দাজেরা
ঐ সকল স্থান অধিকার করিয়া, পূর্বাঞ্চলে অসীম ক্ষমতা-
পন্ন হয়, যাহাতে অপর লোকেরা তাহাদিগের সম্পা-
দীয় কোনস্থানে বাণিজ্য করিতে না পারে, সাধারণতঃ
নিয়ত তাহারা এই চেষ্টা করিতে, ইউরোপের দেশ-
স্বতন্ত্র বণিক তাহাদিগের সমকক্ষ হইতে পারিত।

সুতরাং তাহাদিগের কার্য সিদ্ধির অনেক সাধা হইত।
 ওলন্দাজদিগের শক্তি। প্রকৃতি হইক, অথবা, অনাক্ষম
 কারণেই হউক, জেপানে বাণিজ্য বাহিতে ন বাইয়া,
 ইংরাজেরা যদেবে পতাগমন করিল বটে, কিন্তু মধ্য
 মায়া বলিষ্ঠ সম্প্রদায় ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানী তাহা
 আর অন্য কোন উদ্যোগ করিলেন না। ইংলণ্ডদেশে
 তৎকালে প্রথম চামলম বাজ ছিলেন, রাজ কাষে
 তিনি বড় একটা বিশেষ পাদসম্বল ছিলেন না, বলিয়
 প্রজা শাসন উত্তম রূপে সাধিতে পারেন নাই। একদিকে
 রাজা এবং রাজার প্রতি এজারা তাহাকে হইয়া পক্ষস্বর
 বিবদ করিতে আরম্ভ করিয়াছিল। দেশীয় বিদ্রোহের
 নির্মাণ করিতে অনেক কাল রথ নষ্ট হইয়াছিল, তাহা
 ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর সমস্ত উদ্যোগ মিথিল হই
 যাইছিল, কারণ দেশ এবং রাজ্যের মধ্যে অস্থিরতা
 না হইলে, বাণিজ্য কখনই কোন স্থানে প্রচুররূপে বিস্ত
 হইত হইত না।

অনন্তর ১৬৭৩ খৃঃ অব্দ ইংলণ্ডীয় বণিক সম্প্রদায়
 পূনর্বার জেপান সাহা করণের উদ্যোগ করিতে লাগিল
 সেন। পূর্বে রাজ্যে বাণিজ্য বিঘ্নিত হইয়া তৎকালীন
 বিশেষ ত্রিভুজ হয়, একারণ তৎদেশীয় ভূপতি তাহা
 গকে নানাবিধ ব্যবস্থা মানগ্রী দিয়া পাঠাইলেন। তাহা
 খানিস নামে রিটরন কে'সিনেট নামে এক ব্যক্তি তাহার
 বর্ণনার রূপে প্রস্তুত হইলেন। জেপান বিদ্রোহ কে'সি
 মেটে যে সকল আশ্চর্য্য কথা লিখিয়াছেন, তৎসমস্ত নিম্ন
 লিখিত তিনটি বিষয় বড়ই ননোষাণের যোগ্য, প্রথম
 জেপানীদিগের মতর্কট ও পর্য্যবেক্ষণ, দ্বিতীয় বিদেশীয়

লোকনিগের জাপান দেশে বিশেষ তরিকা-নিগের প্রতিবন্ধকতা, তৃতীয় পোণ্ডুগিস জাতিদের সীমিত জাপানীদের বিদেশে যাত্রা-নিষেধ ইত্যাদি ।

ইংলণ্ডের অধীশ্বর দ্বিতীয় চার্লস্ পোর্টুগাল দেশের এক রাজকন্যাকে বিবাহ করিয়াছিলেন, তাহাতে হনর রাজপরিবারের সহিত তাহার বিশেষ আত্মীয়তা হইয়াছিল । এই কথা লোন্ডনের জাপানব সম্মুটকে জানায, তৎপরেই ইংল্যান্ডনিগের জাহাজ জাপানে উপস্থিত হইলে, হনর রাজকর্মচারীগণ সান্তিস্য শঙ্কচিত হইয়া অপরি-সীম মন্দে তাহানিগের প্রতি আশ্রয় করিতে লাগিল । ৩ দিনেটের অধমানে তাহার সহিত জাপানী শাসন-কারীর বিষয়ে বিস্তর কথোপকথন হইয়াছিল, তাহা-লার পরে তাহার কথা লিখিতে পারিলেন না, কেবল এই কথা বলিয়া পলায়ন করি, পোর্টুগিসনিগের কু-অ-কার তেহু ইতিপাতার সমস্ত জাতির প্রতি জাপানীদি-গের সহিত ক্রিয়াগাছিল, শাসন-কারী সকল কথাতেই ক্রান্তি-নেত হইয়া বুঝিতে পারিলেন ।

অনন্তর জাপান দেশের প্রধান রাজকর্মচারী এক ব্যক্তি ফ্রেন্সিমেটকে এইভাবে এক পত্র লিখিলেন, "ইংলণ্ডের অধীশ্বর । হোনার আগমন বৃত্তান্ত আদি সম্মুটকে জানা-ইয়াছিলাম, তিনি পত্র দ্বারা আমাকে অবগত করিয়া-ছেন, আমি উত্তররূপ বিবেচনা করিয়া দেখিলাম, ইং-ল্যান্ডনিগের জাপানদেশে বাণিজ্য করিতে দেওয়ার দান-মতেই বিহিত নহে । পোণ্ডুগিস রাজতনয়ার সহিত ইংলণ্ডাধিপতির বিবাহ হওয়া এই নিষেধের মূল কারণ-পর্য্য, অতএব বিংশতি দিবসের মধ্যে সুরক্ষা হইলেই,

যেন ইংলণ্ডীয় বাণিজ্য জাহাজ জেপান পরিত্যাগ করে, কোন প্রকারে আর এদেশে যেন প্রবেশনমত করে না। এই প্রকার রাজকর্মচারীর এই পত্রখানি প্রাপ্ত হইয়া কেবল সেট বিপদে পড়িলেন, অনেক বিনতি করিয়া প্রত্যাশা করিলেন, কিন্তু কিছুতেই কোন ফল দর্শিল না, নিয়মিত সময়ের মধ্যে অগত্যা তাহাকে সমস্ত বাণিজ্যসবোপকরণ সহিত প্রত্যাগমন করিতে হইল। তৎপরে ১৮৫৩ খৃঃ অব্দে কুডরিক নামে একখানি জাহাজ কলিকাতা হইতে জেপানে গিয়াছিল, কিন্তু রিটর্নগেণ যে দশা তাহারও সেই দশা হইল, ২৪ ঘণ্টার মধ্যে জেপানীয়েরা তাহা সমস্ত হইতে ছুরীভূত করে।

১৮৫৮ খৃঃ অব্দে অক্টোবর মাসে ইংলণ্ডীয় একখানি যুদ্ধজাহাজ কএকগুলি জাপানী যুদ্ধজাহাজের সহিত জেপানে উপস্থিত হইল। ওলন্দাজ সামরিকবিদগণ তাহাদের জেরযেরূপ বর্ণ এবং পতাকা এই জাহাজেতে দেখিয়া বর্ণ এবং পতাকা ইওয়াতে, সকলেই উদ্ভ্রাণ বোধিয়া প্রত্যাগমন হইতে প্রেরিত ওলন্দাজ জাহাজ দ্বারা নবরুদ্ধ জেপান নামে নামায়াসক এই নগরস্থিত ওলন্দাজ কনসুল একজন কর্মচারী, অপর একজন লোককে সঙ্গে লইয়া তাহাদের অভিধান করিতে গেল। যাইবামাত্র ইংলণ্ডীয় কনসুল তাহাদের উভয়কে ধরিয়া কারাবদ্ধ করিলেন। তাহাতে ওলন্দাজ কি জেপানী সকল লোকেই সাতিন্দা আশ্চর্য্যাবিষ্ট হইয়া মনে মনে বিবেচনা করিতে লাগিল, এতকর্মসামর্থ্য! ওলন্দাজ হইয়া ওলন্দাজদিগের প্রতি একরূপ ব্যবহার করে, ইহার কারণ কি। জেপানীদিগের সে সকল নৌকা তত্ত্বাবধানের নিমিত্ত এই জাহাজ পরিবেষ্টন

করিয়াছিল, তাহাদিগের ভয়ের আর পরিসীমা রহিল না, সকলই ভীরা ভ্রমুখে পলায়ন করিল। ডিয়কনানে ওলন্দাজ কঠোর আদান কর্ত্তারী অনেক বিবেচনা করণান্নে নম্বর সিদ্ধান্ত করিলেন, যে, ইউরোপে ওলন্দাজ এবং ইংরাজদিগের সহিত যে যুদ্ধ হইতেছে, সেই যুদ্ধবশতঃ ইংরাজেরা দৈবসিদ্ধি বোধে এইরূপ করিয়া জৈপানে যুদ্ধজাহাজ প্রেরণ করিয়া থাকিবে।

প্রহরীদিগের দৃশ্যে লগায় সকাই নগরের শাসনকর্ত্তা এই বৃত্তান্ত অবগত হইলে, তাহার কোথের আর ইয়ত্তা রহিল না, তিনি কট্ট কাটবা প্রয়োগ করিয়া তাহাদিগকে কহিলেন, যে ভীষণণ! হোরা! প্রহরীপদের যোগ্য নয়, আমার নিকট হইতে ছুরক, গুজমানকে সঙ্গে লইয়া যা, আসিলে আমি তোমাদের দুখাবলোকন করিব না। তৎকালে তাহারা ছুটিত হইয়া কতমোড়ে নিবেদন করিল, ধর্ম্মবতার আদানদিগকে তিরস্কার করিতেছেন কি, আদানকার হস্তে প্রীরিত সহস্র সৈন্যও পলায়ন করিয়াছে, সৈন্যের ও সেখানে নাই, আমরা কেনন করিয়া গুজমানকে প্রত্যাশন করিয়া একথা শুনিয়া তিনি আরও ক্রোধাবিষ্ট হইলেন, কত সহস্র কিছু উপায় করিতে পারিলেন না। রাতি ১০ র ঘণ্টার সময়ে কতকগুলি গুজমানে কেন স্থলোণে দ্বিধমকে একপাশে পদ লিখিয়া অবগত করিল, মহাশয়! তুর্ভাগ্যবশতঃ আমরা যে জাহাজে বদ্ধ হইয়াছি, সেখানি বন্দদেশ হইতে প্রেরিত, কাণ্ডেনের নাম পেল, „ওলন্দাজবণিকদিগকে দৃত করবার্থ পেল্লুব পূর্ব সমুদ্রে আগমন, কিন্তু উহার সতর্ক হওয়াতে তাহার মানস সিদ্ধ হয় নাই। একারণ

নাগাসাকাই নগরে আসিয়াছে, পরন্তু ইহাদের জল এবং
আহারীয় দ্রব্যের বড়ই অভাব, উহা পাইলেই আমা-
রাগকে ছাড়িয়া দিতে পারে।

এই পত্র পাইয়া ডিয়ক মনে মনে বিবেচনা করিতে
লাগিলেন, শাসনকর্তার সম্মতি ব্যতিরেকে আমি কেমন
করিয়া পেলকে জল এবং খাদ্যসামগ্রী প্রেরণ করি,
বিশেষ শক্রকে সাহায্য করা বিহিত নয়, করিলে তেজো-
হীন বলিয়া অহারা আমাদিগকে তীক্ষ্ণ বোধ করিবে,
অতএব বন্দীবিক্রম প্রকাশ করিয়া তাহাদিগের সহিত
বুঝ করাই বিধেয়। এদিকে শাসনকর্তা আপনাব একজন
কর্মচারীকে প্রেরণ করিয়া বন্দীরয়কে পুনরায় নবন
উদ্যোগ করিতে হিলেন। এমত সময়ে ডিয়ক তাহার
নিকট গমন করিয়া আপনাব সমস্ত অভিপ্রায় নিশি
করিলেন। তাহাতে তিনি শুভযোগে আর প্রবৃত্ত হই-
লেন না, ডিয়ক কতদূর পর্য্যন্ত আপনাব মানস সিদ্ধ
করিতে পারেন, তাহারই প্রতীক্ষা করিতে লাগিলেন।

পরদিন প্রাতঃকালে দেল দশ ঘটিকার সময়ে গুজ
মান ডিয়কের নিকট উপস্থিত হইয়া কহিল, অহাশয়
জল এবং খাদ্যদ্রব্য আহারার্থ কর্ণধারে পেল আমাকে
পাঠাইয়া দিলেন, এই সমস্ত দ্রব্য লইয়া সুজারি পূর্বেই
এ হতভাগ্যকে প্রত্যাগমন করিতে হইবে। না, গেলে
তিনি কল্য প্রাতঃকালে তীরে অবরোধন করিয়া, চীন
এবং জেপান জাহাজে অগ্নি প্রদান করত ইহার গু-
চিত সঙবিধান করিবেন, আর যে ব্যক্তি আমার সঙ্গে
কারাকুদ্ধ হইয়াছিল, তাহারও প্রাণদণ্ড হইবে। যদি
জল এবং খাদ্য লইয়া যাইতে পারি, তাহাঁ হইলে তিনি

সামান্যগকে নিষ্কৃতি দিবেন। গুজরান আরও বলিল,
জাহাজে প্রবেশ করিলে, এক ব্যক্তি আমাদের একজন
বাপুরুষের নিকট লইয়া গেল, সুনীলাম তিনি সৈন্য-
পাক, এই সেনাপতি সঙ্কোচবাক্যে আমাদের কহিলেন,
হে ওলন্দাজ! সত্য করিয়া বল, বন্দরে কোন ওলন্দাজ
জাহাজ আছে কি না, যদি অসত্য বলিল, এখনই
আমরা উহান তব্ব লইয়া তোব এখান বিদ্রোহ করিব।
আমি বলিলাম, বটেতিয়া হউতে একখানি জাহাজ আসি-
বার সম্ভাবন ছিল, কিন্তু এখনও তাহা আসেন নাই, বন্দরে
একখানিও ওলন্দাজজাহাজ নাই। লোক প্রেক্ষা করিয়া
এখা আসিতে তাহার আমার কথা সত্য জানিতে
পারিল, তাহাতেই আজি সন্ধ্যা হইয়া আমাদের জল
এবং আকাশীয় জ্বলার জন্য পাঠাইয়াছে।

নাগাসকাই নগরের শাসনকর্তা এই বার্তা শ্রবণ
করিয়া সাতিশর প্রোধাকন্ট হইলেন, কিন্তু ইংরাজ
জাহাজের দণ্ডবিধান করিবেন, জাহাজে কির কির করিতে
পারিলেন না, ডিয়ককে অসমর্থ জিজ্ঞাসা করাতে তিনি
বলিয়া দিলেন, যেরূপ রংসজার অসজ্জিত হইয়া ইংরা-
জের আশ্রয় আছে, তাহাদিগকে দণ্ডিত করা বড় সহজ
কর্ম নয়, জল এবং খাদ্যসামগ্রী দিয়া গুজরানকে পাঠান
হাউক, কৌশলক্রমে শত্রুর দণ্ডবিধান করা বিধেয়। খড়
পাকটি এবং শর প্রভৃতি যে কতল জাহাজে সংরক্ষিত
নাই জানিয়া উক্ত জাহাজে নৌকাতে এরূপ সকল জব্য
পরিপূরিত করিয়া ইংরাজদিগের জাহাজের নিকটে
প্রেরণ করা হাউক, দাঁড়িয়া আপনাপন নৌকাতে
অগ্নি দিয়া জলে বাপিয়া পড়িয়া সমুদ্রের দ্বারা আশ্রয়

নাদের প্রাণ রক্ষা করিবে। তিনশত নৌকার অগ্নি হঠাৎ ইংরাজেরা নির্ধারণ করিতে পারিবে না, সুতরাং প্রতিলিত অগ্নি তাহাদের বারুদ ভরা তোপে লাগিবা তাহাদের তোপেই তাহাদের মূলোৎপাটন হইবে। আর একটি উপায় এই, যে উপসাগরের দ্বারা জাহাজগকে সমুদ্রে বাইতে হইবে, সেখানে বড় বড় প্রস্তর নির্মাণ করিয়া সেই উপসাগরকে পরিপূরিত কর, বাড়ক, বাইরের সময় জাহাজে প্রস্তর লাগিলে জাহাজ ডাকিয়া যাইবে, আর তাহারা যাইতে পারিবেনা, আমরা ক্রমে ক্রমে তাহাদের সকলকে পরিয়া কারাবদ্ধ করিব, কারণ ব্রিটেন বাসী লোক দিগের জলে যেরূপ শক্তি, স্থলে সেরূপ শক্তি নাই, ইহা আমি বিশেষরূপে জানি। ডিয়কের এই সমস্ত প্রস্তাবে শাসন কর্তা সন্তুষ্ট হইলেন, ভাল এবং খাদ্য সামগ্রীর সহিত গুজরান পুনঃপ্রেরিত হইল, পেলু প্রতিজ্ঞানুরূপ বন্দী দ্বয়ের কারাদোচন করিলেন। পরন্তু ডিয়ক আপনার মামস সিদ্ধ কবিত্তে পারিলেন না, সেই রাত্রিতেই সুবাস হইলে, ইংরাজ জাহাজ ন্যাগাসকাই পরিত্যাগ করিয়া পূর্বে সমুদ্রে ছাউল, পূর্বোক্ত তরুর বিপদে তাহাজিগকে আর পড়িতে হইল না।

জেগামে একটি ভয়ানক নিয়ম আছে, বৈবর নির্ধাওন না করিতে পারিলে প্রধান প্রধান লোকেরা আত্ম হত্যা দ্বারা প্রাণ পরিত্যাগ করে। কিটস জাহাজের অধিপতি পেলুর পলায়ন রূপান্তর গ্রহণ করিয়া, ন্যাগাসকাই নগরের শাসন কর্তা অতীব দুঃখে আত্ম হত্যা করিলেন, আর ত্রয়োদশ জন প্রধান কর্মচারীও জাহাজ অনুগামী

হইল। তাহাতে জেপানে একেবারে হাহাকার শব্দ উঠিল।
পেলুর ভয়ে যে সৈন্যগণ পলাইয়া গিয়াছিল, তাহাদের
সেনাপতিকে জেপানের সমুদ্রে এক সাত দিন কারাকদ্ধ
করিয়া রাখিলেন। আর সেই পর্যায়ে ইংরাজদিগের প্রতি
তাহাদের এতদূর বিদ্বেষ জন্মিল, যে এখন পর্যন্ত পেলুর
দণ্ড হইলে তাহারা অত্যন্ত হুগা প্রকাশ করে।

এই দুর্ঘটনার পাচবৎসর পরে অর্থাৎ ১৮১৩ খৃঃ অব্দে
আমরা একখানি ইংরাজী জাহাজ ওলন্দাজদিগের নিশান
তুলিয়া জেপানে গিয়াছিল। পতাকা দেখিয়া ডিয়ক
মনে মনে বিবেচনা করিলেন, বটেভিয়া উপদ্বীপ হইতে
যে জাহাজ আমরা প্রত্যাশা করিতেছিলাম, তাহা এত
দূরে দূর আসিয়াছে। মনে মনে তিনি এইরূপ বিবেচনা
করিতেছেন, এমন সময়ে একখানি পত্র আসিয়া
পৌছিল, পত্র পাঠে তিনি জানিতে পারিলেন, যে ওয়াড
নার নামে যে ব্যক্তি পূর্বে ওলন্দাজ সৈন্য
ছিল, যাহা দ্বারা তিনি (ডিয়ক) উচ্চ পদে পদাতি-
সিক হইয়াছেন, সেই ওয়াডনার আনিয়াছেন, আর
তাহার সঙ্গে একজন চিকিৎসক এবং সেওয়ান এবং
অপর তিন জন সহকারী কর্মকর্তা আসিয়াছে। পত্র
পাঠ করিয়া ডিয়কের চক্ষুস্থির হইল, তিনি তৎক্ষণাৎ
দুইজন প্রহরীকে প্রেরণ করিয়া জানিতে পারিলেন যে
ওয়াডনার বথার্থ বটে, কিন্তু ওলন্দাজ জাহাজের সেরূপ
ভাবে জাহাজের সেরূপ ভাব নয়, সকলই যেন মৃত ন
প্রকার। প্রহরীরা কর্ণধারের নিকটে বানিজ্যানুষ্ঠি
বিষয়ক পত্র চাহিয়াছিল, কিন্তু ওয়াডনার তাহাদিগকে
তাহা দেন নাই, কেবল এই কথা বলিয়া বিদায় করিয়াছি-

জেনারেল ভোমরা এখন যাও, আমি স্বয়ং যাইয়া জিরকের সহিত
সাক্ষাৎ করতঃ পত্র প্রদান করিব। প্রহরীরা এই সবল
কথা কুটীর অধাকারে জানাইতেছে, এমত সময়ে ওয়াড
নরের জাহাজ ঘাটে আসিয়া লাগিল, দেশীয় প্রহরীদের
ঘাটের রক্ষকগণ তথায় উপস্থিত হইয়া জানিতে পারিল,
যে, জাহাজ তাহলোকেই ইংরাজী ভাষা কহে, অতঃ
এর তাহার সিদ্ধান্ত করিল যে সেখানি আমেরিক
দেশীয় জাহাজ, ওলন্দাজরা ভাড়া করিয়া বণিক
করণার্থ জাপানে পাঠাইয়াছে। এবিষয়ের সম্বন্ধে
জামিবার নিম্নিত্ত ডিরক স্বয়ং তথায় সমুপস্থিত হইলেন।
উপস্থিত হইবামাত্র ওয়াড নর তাহার হস্তে একখানি
লিপি প্রদান করিলেন। সুবুদ্ধিমান ডিরক সেখানে এ
পত্রখানি না খুলিয়া ওয়াড নর এবং তাহার দেওয়ান
সঙ্গে লওত ঘস্তানে প্রস্থান করিলেন।

পত্র পড় করিয়া ডিরক অবগত হইলেন যে ওয়াড
উপদ্রোহী ওলন্দাজদিগের আর অধীনে নাই, তাহা
এখন ইংরাজদিগের অধিকার ভুক্ত হইয়াছে। তথা
কার শাসন কর্তা সাব ফোর্সফোর্ড রাকেল, ডিরককে
পদচ্যুত করিয়া ওয়াড নর এবং তদন্তসম্পাদককে তৎপদে
পদাতিমিত্ত করিয়াছেন। অমন্তর তিনি মনে মনে
বিবেচন করিলেন, আমি ইংরাজদিগের ভািন নহি,
ইংরাজদিগের দ্বারা নিযুক্ত হইয়া আমি কিছু দেশ
আসি নাই, আমি রেকলের পত্র মানিব কেন, আমি
যাহাদের নিযুক্ত তাহার। যদি একথা ভেদন তবে অন্য
কর্তব্য। কিন্তু দূর্ভাগ্যবশত প্রযুক্ত বর্তো কিছু প্রকাশ
করিয়া করিলেন না, প্রভারণা করিয়া ওয়াড নরকে

ই কথা বলিলেন, অধীন কর্মকারী কিছু উচ্চ পদারূঢ়
 ক্ষমতির আস্থা অর্জন করিতে পারে না, বাগিত্যাদি
 সে সকল দ্বারা আপনি লইয়া আসিয়াছেন তাহা
 অবতরণ করিয়া তৎপরে তাহাদি অন্যান্য বস্তু লইয়া
 আসিও তাহা সবই জেপান পরিত্যাগ করিয়া যাইব।
 যাকিমান ওয়াডনার তাহার মনোগতি তাব বুঝিতে
 পারিলে যেদিন তাহাকে আর কোন কর্ম্য করিলেন
 না, তাহা কালে স্মৃতিভাষ হইলে জাহাজ লইয়া দ্বন্দ্বনে
 প্রস্থান করিলেন। এরূপ না করিয়া যদি তিনি ডায়কের
 উপদেশানুরূপ কর্ম্য করিতেন, তবে তাহার দুর্গতির
 প্রায় সীমা থাকিত না। কারণ ন্যাগাসকাই নগরীর মুখ
 বন্দর নব নব জাহাজ পূর তৎকালে জেডো নগরের
 এক প্রথম নাবিকর্ম্মচারী ছিলেন, পিতৃ শত্রু মনে করিয়া
 তিনি ইংল্যান্ডের বিশেষ দণ্ড দিতেন তাহার
 দান সম্বন্ধ নাই। জেপানিদিগের ইংরাজদের প্রতি
 যেরূপ প্রেম ছিল, তিজিরা নগর লইলে ও তাহা
 অগ্নি লাগাইয়া তাহাদিগকে পোড়াইয়া দিতেন এমন
 কল্পনা করিয়াছিল। এই পত্রের পর ১৮৫৮ খ্রিস্টাব্দ
 জাহাজ আর একবার উপস্থাপন পায়, কিন্তু কার্য মিষ্ট
 হইতে ইচ্ছা পায় নমোয়েদ পত্র নাহি এক নাবিক
 মনোবৃত্তি হইয়া পটন, মটরা ছল তাহা পাবে না।
 এই নাবিকের লোকদিগের সন্তানের কথা কিংবা
 এখন আরো দাঁউড, তুমি প্রবণ কদ।

সন্তান প্রথম ১৮৬৩ খ্রিস্টাব্দ, কুশিগার নিকটবর্তী জঁকি
 উপস্থাপন চড়ায় এ গান জেপান জাহাজ লাগিয়াছিল,
 তাহাতে কনিষ্ঠ লোকেরা নাবিকদিগকে হত্যা করিয়া

রাজধানী অখোউক নামে লইয়া গিয়া, আর সেব
 দশ বৎসবকাল আবদ্ধ করিয়া রাখে স্বদেশীয় প্রাচীন
 কবিগণের ন্যায় সংগ্রহ দ্বারা কবিগণের ভাষা
 যেন পরস্পর পরস্পরের ভাষা শিখা করিতে পারে,
 এবং পরস্পরের যেন সৌহার্দ্য ভাল হয়, আবদ্ধ
 করণের মূল কারণ এই, কিন্তু হিতে বিপরীত হইল,
 ১৭৯২ খৃঃ অব্দে বর্মার দেশের মহারাজা বর্মার
 এইতত্ত্বা জাপানী নাবিকদিগকে সঙ্গে দিয়া, অনেক
 উপঢৌকনের সহিত জাপান দেশে লাক্ষ্মান নামক
 এক ব্যক্তিকে পাঠাইলেন, যেসেতার নামক উপদ্বীপের
 উত্তরাংশে লাক্ষ্মান উপস্থিত হইয়া উপঢৌকনগুলি
 রাজার দিকটুকু প্রেরণ করত আপন অভিপ্রায় জানাই
 লেন, তৎকালকার শাসন কর্তা এই কথা করিয়া এক পত্র
 লিখিয়া পাঠাইলেন, “আমাদের প্রেরিত নাবিকদিগকে
 বিপদ হইতে উদ্ধার করিয়া তোমরা ভাল করিয়াছ,
 কিন্তু এতদিন তাহাদিগকে বদ্ধ রাখা তোমাদের উচিত
 হয় নাই, বোধ হয় জাপান দেশের রীতি নীতি জান
 না বলিয়া তোমরা এক্ষণ করিয়াছ, যে ব্যক্তি জাপান
 পরিভ্রমণ করিয়া অন্য দেশীয়দের সহিত সংগ্রহ করে,
 আমরা তাহাকে পুনর্বার স্বদেশে লই না। অতএব
 নাবিকদিগকে আর আমাদের প্রয়োজন নাই, আমরা
 তাহাদিগকে এবং তোমাদিগকে বিদেশী লোক বলিয়া
 গণ্য করিলানি, আমরাও দেশের বাসস্থানসমূহে তোমরা
 দাবজীবন কারাবদ্ধ হওনের শোণা, কিন্তু তোমরা
 অসম্মত নহ, আমাদের দেশের লোকের প্রতি

সহবাবহার করিয়াছে, এজন্য এই অনুমতি প্রদান করা
জেপান পরিত্যাগ করিয়া শীঘ্র স্বদেশে যাও, আর
আদিও ন, যদি কখন আইস, তবে নেগাসকীহীনগরে
আসিও।

এইরূপে নাগাসকীহীনগরে সঙ্গে লইয়া জাপান
জেপান পরিত্যাগ করিলেন। মহারাজা ককি রাইন
এই প্রকৃত্যোগ করিলেন না। ১৮১৪ খ-অর্ধে তাহার
পত্নী মহারাজ আলেকজান্ডার এবিষয়ের দ্বিতীয়বার
উদ্যোগ করিয়াছিলেন। রিসানফ নামক এক ব্যক্তিকে
দৌতা কর্মে নিযুক্ত করিয়া তিনি গবর্ণমেন্ট সংক্রান্ত
একখানি জাহাজ নেগাসকীহীনগরে পাঠাইয়া দেন।
তিনি তথায় উপস্থিত হইলে, সামান্য দেশাচার লইয়া
প্রথমেই জেপানীয়েদের সঙ্গে তাহার বিবাদ উপস্থি-
ত হয়। দেশীয় প্রধানসমূহে জেপান দেশীয় রাজ কর্ম
স্বার্থেদিগকে অনন্ত-হইয়া নন্দকার করা তাহার উচিত
ছিল, কিন্তু তিনি তাহা করণ সম্পূর্ণ অধিকার পাই-
য়াছিলেন। বিরোধের আর একটি কারণ এই, রিসান-
ফ, বাণিজ্য দ্রব্য সকল অবতরণ করিতে চাহিলেন,
জেপানীয়েরা তাহাকে অস্বস্তি পাইত না করিতে দিত,
তাহাতে তিনি অসম্মত হইয়া তদ্বিষয়ে চরিত্র-করেন,
আর ওলন্দাজ কুটির কর্মকর্তা-সিওকে এই ভাবে এক
পত্র লিখেন যে তাহা-নির্দেশ সাহায্যেই জেপানীয়েরা
তাহার প্রতি-এই রূপ অবমাননা এবং অহিতাচার করি-
তেছে, তাহাতে সুরক্ষিতান ত্রিক এমন করিয়া তৎপ্রত্যা-
স্বর করেন, যেন তিনি তাহার কোন সংশ্রবে নাই,
বস্তুতঃ তিনিই সমুদায় অনিষ্টের মূল কারণ, রিসান-

ফেরা জগন্নাথবি তিনি বড় চেঁচা করিতেছিলেন সে সকলি তাহার নিজের এবং স্বদেশীয় লোকদিগের মঙ্গলার্থ।

রিমানক এবং জিকেকে পের্পার এইরূপ পত্র লেখা লিখি চলিতেছে, একত সময়ে জেপান গবর্ণমেন্ট হইতে সংবাদ আইসে যে, কুবীয়া দেশ বাসী হুত সমস্ত বান্দিয়া জৈন জেগাস কাই নগরের বন্দরে আনিতে পারেন, কিন্তু যে পর্য্যন্ত সম্রাটের অনুমতি না হয়, তত পর্য্যন্ত তিনি কোন ক্রয় বিক্রয় করিতে পারিবেন না। এই সমাদি পাইয়া তিনি সমস্ত জবোর সহিত জাহাজ বন্দরে লাগাইলেন, তাহার বসবাসের নিমিত্ত বাবদ বেড়ার বেষ্টিত একটি গৃহ প্রস্তুত হইল, কিছুদিন সেখানে আছেন, এক দিন সম্রাট তাহার সহিত সাক্ষাত করিতে চাহিলেন। তদনুসারে তিনি নানাবিধ উপঢৌকন লইয়া রাজ ধর্মাধিকরণে বাইবার উদ্যোগ করিলেন। জেপানিয়েরা যে পথ দিয়া তাহাকে বাইতে হইবেক, সেই পথের দুই পাশে এমনি করিয়া পরদা টাঙ্গাইয়াছিল যে জেপানের মধ্যবর্তী কোন বস্তু তাহার নজর গোচর হইল না। নগরের স্থানে স্থানে ঘোষণা হইল, কুবীয়া দেশ বাসী এক বিদেশী বাণক বান্দিয়া করণাতিপ্রাপ্তে জেপানে আসিয়াছে, তিনি সম্রাটের সহিত সাক্ষাত করিবেন, অতএব লোক সকল সতর্ক হও, যদি তাহার কোন মন্দ অভিপ্রায় থাকে, আজি তোমরা রাজপথে বাহির হইও না।

এই ব্যাপার দশনে কৃশিধান হুত আশ্চর্য্যাবিষ্ট হইয়া মনে বিবেচনা করিতে লাগিলেন, বাহা শিফা-

চার বিষয়ে জেপানিদের তো কিছু জ্ঞান নেই না, তবে এ আবার কি, ইহারা এমন করিয়া আমাদের প্রতি রোদ করিতেছে কেন। সমুদ্র স্রিষ্ট হইয়াছে, যাটক পরে তা হবার তাই হবে। এইরূপ সান্ত্বনায় সন্তুষ্ট হইয়া ছুত সমুদ্রের নিকট গমন করিলে, তখন বিশেষ শিক্টিচার প্রকাশ করিয়া তাহার অভিযান পরিচালনা করিলেন, কিন্তু যে কর্মের নিমিত্ত তিনি গিয়াছিলেন, তাঁহার কোন অভ্যুত্তর দিলেন না। সেদিন তো অসম্মানিত গেল, দিনানক স্ব নিকেতনে প্রত্যাগমন করিয়া সমুদ্রের আশ্রয় প্রত্যাগমন করিলেন। কিছু দিন বিলম্ব করিয়া একজন ছুত ভূপালের দ্বারা এক খানি পত্র এদান পূর্বক তাঁহাকে কহিল, মহাশয়। এই লেটন আর বিলম্ব করিবেন না, শীঘ্র স্বস্থানে প্রস্থান করাই বিধেয়। পর পাঠ করিয়া রিসানক হত স্তব্ধ হইলেন, তাহার সকল আশাই বিফল হইল। জেপানিদের প্রত্যেক লিখিয়াছিলেন, বহুকালাবধি নিমিত্ত তাঁহাদের সঙ্গে আমরা বাণিজ্য বিষয়ক সংস্রব রাখিয়া আসিতেছি, ইহা হইয়াছে, এক্ষণে এতদেশীয়েরা নিমিত্ত দেশে না গিয়া এবং বিদেশীয়েরা এতদেশে না গিয়া, ইহাই আমাদের নিত্য বাসনা। অতএব আপনাদের সকল পরিশ্রম বৃথা হইল, কষিয়াও সন্তোষ নাই, সম্পর্ক রাখিতে জেপান গবর্ণমেন্টের কোন মতে ইচ্ছা নাই, অদ্যাবধি আর আপনাদের এদেশে কখন আসিবে না। রিসানক এইরূপ অপমানিত ও হতাশ হইয়া জেপান পরিত্যাগ করিলেন, তাঁহার ফ্রিগেট আশ্রয়িত হইল না, প্রতিকূল দিগের নিমিত্ত কাশ্যাগমকটক

নামক স্থানে তিনি গমন করিয়া তথায় যে রূপীর লোক-
দিগের দুই খানি যুদ্ধ জাহাজ ছিল, তাহার নাবিকদি-
গকে আপন ছুরবস্ত্রের কথা জানাইয়া কহিলেন। তামরা
জাপানে যাইয়া জেপানীদিগতির প্রগল্ভতার বিশেষ
সমুদ্র দেও, আমি ক্রিয়্যার অধীশ্বরকে এ সমস্ত ব্রহ্মাঙ্ক
জানাইতে চলিলাম। পথে বাইতে বাইতে রিসানকের
যুদ্ধ হইল, কামিসিকাটকা বাসী সামুদ্রিক নৌকার
যুদ্ধ জাহাজ নই। জেপানের অধিকার-সুভক্ত কিউরাইল
উপদ্বীপে উপস্থিত হইল। উপস্থিত হইয়া তত্রস্থ অনেক
লোকের গ্রানবধ করিল। অনেকে গ্রাম লুণ্ঠ পাঠ করিয়া
প্রজাদিগের সর্কারাপহরণ করিল। আর বহু গ্রামান গ্রামান
লোককে বন্দীভূত করিয়া আপনাদিগের জাহাজে তুলিয়া
লইল। এই দুর্ঘটনা ১৮০৭ খৃঃ অব্দ হইল। জেপানীদিগের
অত্যাচারের সমস্ত ব্রহ্মাঙ্ক অবগত হইয়া একেবারে
চমকিত এবং কোপে প্রজ্বলিত অনল প্রায় হইলেন।
কবীরায় সমুদ্র আলেকজান্ডারের অভিনয়ে এমোবায়া
হইয়াছে কিনা, ওলন্দাজদিগের দ্বার তহার তত্ত্বাবধা-
ন করিতে লাগিলেন, কিন্তু কিছুই হইতে পারি-
লেন না।

১৮১১ খৃঃ অব্দের মধ্যে মাসে ক্যাপ্টেন গোল্ডস্মিথ নামে
এক ব্যক্তিকে কবীরায় সমুদ্রে কিউরাইল উপদ্বীপে পাঠা-
ইলেন, ইটরপু নামক স্থানে এখানে তাহার জাহাজ
লঙ্ঘন হয়, লঙ্ঘন হইবারাত্র জেপান দেশীয় সৈন্যেরা
তাহাকে পরিস্ফুটন করিয়া এই কথা জিজ্ঞাসা
করে, যে দুরাগন! অরক্ষিত কিউরাইল উপদ্বীপের
লোকদিগের প্রতি একবার বে রূপ অত্যাচার করিয়া-

ছিলে, আবার কি সেইরূপ অভিচার করিতে আসিয়াছে ।
এই কথা বলিয়া, আমার অগ্নি লাগাইয়া তামাক তাজাজ
নক্ট করিল, বাগেন গোমেন, এমন এবং অন্যান্য নাবিক
সংসদ বন্দীভুক্ত করিয়া, জৈপান অধীশ্বরের নিকটে
দেখানো, এবং তাহাতেই ককীমদিগের জৈপান প্রাপ্তির
তথ্য এসেছে, এবং হইল। হেনরি উড সফিলেন,
বন্দীভুক্ত জৈপানে, নগরস্থ দুনিয়ত বন্দীভুক্ত, হইই-
এমন স্থানিতে আমার প্রেরণা বাড়িতেছে, ভাল জিজ্ঞাসা
কর, পদ্মগিজ ওলন্দাজ ইংরাজ এবং রুমায়, লোক ভিন্ন
আর কোন জাতি জৈপানে বাণিজ্যার্থে যেতে পাইয়াছিল
কি ন

দ্বিতীয় অধ্যায় ।

রচনা বলিলেন, বন্দীভুক্ত ককীয় জাতিদিগের পক্ষে
আমরিক খণ্ডের লোকেরা জৈপানে এসেই কখনো
বিশেষ চেষ্টা হইয়াছিল বটে, কিন্তু পক্ষমাত্র হইয়া যা
হইতে পারেন নাই অন্যান্য জাতিদের যে দশা, তখন
সেইদেখা জানা যায় যে সেই দশা, হইয়াছিল, এবং
কবি গ্রন্থে কখনো উল্লেখ আছে, জৈপানিদিগের এক
খানি জাহাজ দৈন্যে কখনো প্রবল এবং সমস্যার
লক্ষ্যে ভয় হইয়া, তাহাতে জাপানে প্যারিসের অর্থাৎ
ভিত্তময়দিগের পক্ষে, পক্ষে তৎক্ষণাত্বে প্রেরিত হইয়া
তাহা আনয়িতব্যে পক্ষের ভাটে লাগা। আমেরিকান
বন্দীভুক্ত হইয়া তাহা নাবিকদের প্রতি দিনে দশ
একশ করিয়া, তাহা দিবার উদ্ধার করণাত্মক ভাড়া
পক্ষে মেমো উদ্ধারিত পাইয়া দেখ। মোকউর ই

এরূপ আমেরিকা নিবাসীরা যত্ন পূর্বক তাহাদিগকে আশ্রয় দিয়া কিছু জিনিসে স্থানে রাখে, পরে তথা হইতে ঐ হতভাগাদিগকে জাপানে প্রেরণ করিবে, এই অভিপ্রায় করে। জেপানীয়েরা আর যে তাহাদিগকে পুনঃ গ্রহণ করিবে না, ইহা তাহারা জানি ন, মনে করিয়া ছিল। হতভাগা জেপানী নাবিকদিগের প্রতি আমরা যেরূপ সম্ব্যবহার করিয়াছি, জেপানের অধীশ্বর অবশ্যই-আমাদের প্রতি সাতিশয় মন্তুষ্ট হইবেন। আমাদের জাহাজ জেপানের কোন বাণিজ্যোপযোগী বন্দরে গেলৈ কীচিৎ তাড়িত বা দুর্বৃত্ত হইবে না।

এই বিবেচনা করিয়া আমেরিকানেরা মরিসন নামে একজন স্বদেশীয় নাবিককে জাহাজে করিয়া জেপানে প্রেরণ দেয়। পাছে জেপানীয়েরা তাহাদিগের বিরুদ্ধে অভিযুক্তি বোধ করে, এই ভয়ে মরিসন সঙ্গে কোন মস্ত শস্ত্র বা তোপাদি লইলেন না, মর্ক বিধায়ে কুশলতা প্রদর্শন করিবার নিমিত্ত, ঐ হতভাগা জেপানীদিগের সঙ্গে জন কয়েক স্বদেশীয় নাবিক লইয়া ১৮৩৭ খ্রিঃ অব্দে জেপান যাত্রা করিলেন। জেডে নামক উপমাগরে তিনি এখানে উপস্থিত হইলেন, উপস্থিত হইব। মাত্র তথাকার রক্ষক লোক সকল তাহাকে নিবস্ত্র দেখিয়া ঘৃণা প্রকাশ পূর্বক তৎপ্রতি কামান ছুড়িতে লাগিল, তাহাতে তিনি ভীত হইয়। সে স্থান পরিত্যাগ পূর্বক কিউমিউ উপ দ্বীপের নিকট নঙ্গর করিলেন, সেখানেও তাহার পূর্ববৎ দর্শন হইল। কি করেন, প্রাণভয়ে কম্পিত কলেবর হইয়। তিনি হতভাগা জেপানী নাবিকদিগকে সঙ্গে লওত মেকাউ উপদ্বীপে প্রত্যাগমন করিলেন।

১৮৪১ খৃ. অর্ধে আমেরিকা যুক্তরাষ্ট্রের ইউনাইটেড ফ্রেটস্
নামক স্থান হইতে প্রেরিত কামানবিশিষ্ট আর একখানি
যুদ্ধজাহাজ জেপানে প্রেরিত হইল। জাহাজের নাম
কমোডরবিডল্ তাহার অধ্যক্ষরূপে নিযুক্ত হই-
লেন, জুলাই মাসের আরম্ভে তিনি জেডে নামক উপ-
সাগরে উপনীত হইলে, জেপানীয়েরা স্বদেশীয় রীতানু-
সারে চাহিলত নৌকা লইয়া জাহাজ পরিবেষ্টন করিল।
কমোডর একখানি নৌকা হইতে একজন বাজকর্মচারী
তাঁহার জাহাজে উঠিয়া এক গাছি বকি তাহার জাহাজের
সম্মুখভাগে এবং অপর এক গাছি পশ্চাৎভাগে স্থাপন
করিল। কমোডর বিডল প্রথমে তাহার দর্শাবগত হইতে
পরিবেষ্টন না, অনেক বিবেচনা করণান্তর তিনি সিদ্ধান্ত
করিলেন, যে জেপানীয়েরা তাঁহার জাহাজ অধিকার
করিল, এই চিহ্ন প্রকাশার্থই বকি স্থাপন করিয়াছে।
অতএব তিনি তাহা উল্টাই ফেলিয়া দশদিনকাল ক্রমা-
গত জাহাজেই রহিলেন, তাঁহা অববোহন করিলেন না।
অবশেষে সমুদ্রে নিকট হইতে, এই জাহাজ গত্র
আইল, "ওলন্দাজ বহিঃরক্ষক অনা দেশ জাতি
আমরা জেপান দেশে যোগিয়া করিতে অচ্যুত করিতে
পারিনা।" ভয় প্রদর্শন না করিলে জেপানীয়েরা সে
সহসা কোন কর্ম করিতে পারেনা, আমেরিকাবাদী বণিক-
দিগের ইহা বিশেষ উপলব্ধি হইয়াছিল। ১৮৪১ খৃ
অর্ধে যে ঘটন হয়, তাহাতেই ইহা প্রমাণীকৃত হইয়াছে।
ইউনাইটেড ফ্রেটস্ সম্বন্ধীয় যোল জন নাবিক পূর্বসমুদ্রে
জাহাজ চালাইয়া যাইতেছিল, দৈবজুর্লিপাক বশতঃ
তরঙ্গের ঝটিকা হেতু ঐ জাহাজ জেপানসমুদ্রের চড়ায়

গিরা যাবে। জাপানীরা তাহাদিগকে কারাবাস করিয়া বহু যন্ত্রণা দেয়, কিয়দিন অজ্ঞানে রাখে, তাহাদিগের খুঁচ খুঁচের প্রধান চিহ্ন জুশ আনিয় তাহাদিগকে করে, ইতি আমাদের জাপানের কত ইহার উপর তোররা পদাঘাত কর, না করিলে আমার তোমাদের প্রাণ হস্ত করিব।

এইরূপ হুঁস্বস্থা এবং অত্যাচারের কথা আমেরিকার নেরা অবগত হইয়া, কতকগুলি তোপ এবং সৈন্য সংহত একখানি জাহাজ ঐ হতভাগা নাবিকদিগের মুক্তির নিমিত্ত পাঠাইয়া দেয়। জাহাজখানি জাপানে উপস্থিত হইলে, জাহাজকার সমুট তাহা ছুরাভূত করণের চেষ্টা করে, কিন্তু প্রধান বর্গধার ভর প্রদর্শন বাকো প্রগল্ভতা এবং মাৎসর্য প্রকাশ করিয়া সমুটিকে একখানি পত্র লিখেন, জাপানাদীপতি উচ্চর যাইবার ইচ্ছা থাকে তো আমাদেব রেজার নাবিকগণকে তুমি কারাবদ্ধ করিয়া রাখ ? আমাদের রাজা প্রজাবৎসল, প্রজার দুঃখে তিনি বড়ই দুঃখিত হন, সৈন্য অস্ত্র এবং ঐশ্বর্য্য সকল বিধিয়ে তিনি মহা বলবান এবং বিক্রমশালী, তাহার সহিত তুলনায় তুমি এক ক্ষুদ্র মশক স্বরূপ, তোমার সন্মানাশ করিয়া তিনি আপন প্রজার উদ্ধার করিবেন তাহার কোন সন্দেহ নাই। অতএব যদি মঙ্গল ইচ্ছা কর, তবে আমাদেব দেশের হত ভাগ্য নাবিক দিগকে ছাড়িয়া দাও। কর্ণধারের এই রূপ প্রগল্ভিত পত্র প্রাপ্ত হইয়া সমুটের চক্ষুস্থির হইল, তিনি অবিলম্বে তাহাদিগকে মুক্ত করিয়া কর্ণ ধারের নিকট প্রেরণ করিলেন। তাহাতে নাবিকেরা পরমাক্লাদে স্বদেশে আসিয়া সুখ সম্বন্দ ভোগ করিতে নাগিল।

আমেরিকানদের। যদ্যপিও হঠাৎ মারিকিনিগকে
 সূক্ত করণের মনে মনে বিবেচনা করিতে লাগিল, কি
 ইংরাজ কি পোর্ট গিল কি করি। ওলন্দাজ বাতীত কোন
 জাতি যখন জাপানে বাসিত করি। সিদ্ধ কাম হইতে
 পারে নাই, তখন আমরা যে হইব এমন স্থাৱণ। কি ।
 বাহা হউক আর একবার চেষ্টা করা বিধে হইয়াছে;
 বিশেষ চেষ্টা করিলে বোধ হয় কার্য সিদ্ধ হইতে পারে ।
 এই হিরু কবির। কমডোর পেরি নামক এক ব্যক্তিকে
 তাহাব। জাপান দেশে প্রেরণ করিতে অনুবোধ করিল।
 কমোডোর পেরি সাতিশর সূ-সিদ্ধ মারিক সেনাপতি,
 মধ্যে মধ্যে তাহাব পুত্র মনুজে গতি বধি ছিল বলিয়া
 তিনি জাপানের বৃত্তান্ত - অনেক অবগত ছিলেন।
 গবর্নমেন্টের অনুবোধে কমোডোর যেহা ক্রমে সেনাপতি
 এবং অধিক পদে নিযুক্ত হইয়া, যে যে বস্তু আগ্রহের
 প্রয়োজনীয় হইবে তাহার আয়োজন করিতে লাগিলেন।
 সর্বশুদ্ধ বার খানি জাহাজ প্রস্তুত হইল, তন্মধ্যে তিন
 খানি অতি প্রকাণ্ড বাল্পার জাহাজ, সৈন্য কামান অস্ত্র
 শস্ত্র এবং খাদ্য সামগ্রী দ্বারা সমস্ত জাহাজ পরিপূরিত
 করিয়া ১৮৫২ খৃ অর্থে তিনি জাপান বাতী করিলেন।
 ২৬ সে মে হুহুসাতিগার তিনি লুকু উপত্যকের প্রধান
 বাসিন্দা হাম নাকা সম্মুখে উপস্থিত হইলেন। ইতি
 হাসে এই লুকু বাটত কমোডোরের অনেক হুতাণ্ড লেখা
 আছে, বাহুলা ভয়ে সে সকল কথা এতলে বল হইল না।
 ১৮৫৩ খৃ অর্ধের জুলাই মাসে কমোডোর পেরি
 নাকা পরিত্যাগ করিয়া জাপান রাজধানীর অভিমুখে
 বাতী করিলেন। পূর্বে বাল্পার জাহাজ জাপানে কখন

এই জাপানিদের উদ্দেশ্যে জাপানি সাতিশর
 প্রাচীণাবিহীত হইল। জেডো উপসাগরের নিকটে
 জাপান নামক একটি নগর ছিল; এই নগর প্রাকৃতিক
 দুর্গ নামক পর্বতের অশ্রুতে কনোডোর জাহাজ নদর
 করিলেন। জেপানের মধ্যে কসী সাতিশর উচ্চ পর্বত,
 উহার শিখর সেরা হইতে সমস্ত জেপান স্পষ্ট রূপে দৃষ্ট
 হইয়া থাকে। জাহাজ হইতে নাবিকেরা দেখিতে পাইল,
 কুসির উপরিভাগ বেশ কিমানীতে পরিত, মেঘে ঘন
 উহার, চতুর্দিক পরিবেষ্টন বিয়া রহিয়াছে। যাত্রীদের
 উপর উঠির নাবিকগণ দূরবীক্ষণ যন্ত্রদ্বারা জেপান ভূমি
 পরিমরীক্ষণ করিতেছে, এমত সময়ে প্রকাণ্ড বারখানা
 জেপানী পোত জাহাজের অভিমুখে আসিতে লাগিল।
 বৃহৎ বহু অকরে পোতগুলার নিশানে কি লেখা ছিল,
 তদ্বশনে কনোডোর শেরি বিবেচনা করিলেন, এসকল
 গুরুত্বপূর্ণ পোত হইবে। অমাদিগের তদ্বাস্থসঙ্কামী
 হইয়া আসিতেছে।

দেখিতে দেখিতে শতাধিক ক্ষুদ্র নৌকা চারিদিক
 হইতে আসিতে লাগিল, উদ্যোগিত হুগ হইতে দুই
 তিন টি ভোপের শব্দও হইল। তদ্রূপে নাবিক সেনাপতি
 জাপানার জাহাজের কর্মচারীগণকে অন্তর্নতি করি-
 লেন, তৌমস জেপানার কোন নৌকা জাহাজের নিকটে
 আসিতে দিও না, আসিলে ছুঁর করির তাড়াইয়া দিও।
 ক্রিয়াক্ষণ বলনে জেপানায় কয়েকান নৌকা সারা
 জাপান নামক একখান আশে বকান জাহাজের সন্নিকটে
 আসিয়া জাহাজে উঠবার উপক্রম করিল, নাবিকগণ
 নিষেধ করিলে তদ্বাশ, নিষেধ মানন না, শৃঙ্খল ধরিল।

এলপূর্নক জাহাজে আনোহন করিতে চাহিল, সুতরাং পিছল এবং অমান্য অস্ত্রের সংকারে আনেকের মারি-
কেরা শাস্তিগণকে ছুতী ত করিতে বাধ্য হইল।

অনন্তর দিগবসন হইলে সর্বস্বীন প্রথমগনে
তাহারা দেখিল, বিচিত্র বর্ণ বিশিষ্ট কয়েকখান বড় বড়
বজর, আসি-ত, এক এক খান বজরাতে প্রায় দ্বাদশ-
শই নাবিক, সকালট দীর্ঘাকার বালয় পিছল বর্ণ, তাহার
প্রায় লম্বা কেবল কোটিদেশ এক একটুক বস্ত্র জড়ান
আছে। তাহাদের মস্তকের উর্দ্ধ ভাগে কেশ নাহি, কিন্তু
নিম্নের চারিদিকের কেশ লম্বমান হইয়া পড়িয়াছে,
তাহাতে কৃষ্ণ বর্ণের কলপ লাগান, মধ্যে মধ্যে এক একটি
গিব, কেশ কেশ ই গিব যুক্ত লম্বা কেশ গুলি তুলিয়া
মাথায় একটি মোটন বাধিয়াছে, কেশ কেশ তাহা
করে নাই, ধূতুর নাগ বাঁশের চিয়াড়র এক একটি
টুপি পরিয়া কেশ গুলি খুলাইয়া দিয়াছে। পোতের
মধ্যস্থী জন কয়েক লোকের পরিচ্ছদ কিছু সভ্য
চোগার মত গলদেশ আধি পদ দেশ পর্যন্ত এক একটা
ছিল। পিরাম পনিধান, তাহার আস্তীনগুলার বিচিত্র
বর্ণের ডোবা লাগান। যুদ্ধাস্ত্র ধারী উচ্চ পদাকট সৈনিক
পুরুষেরা সেরূপ স্বর্ণ ও রৌপ্যভরণ পরিধান করিয়া
থাকে, তাহারা সেতরূপ অলঙ্কারে অলঙ্কৃত হইয়াছে।
দেখিতে দেখিতে তাহারা সকলেই জাহাজের নিকটে
আসিয়া উপস্থিত হইল।

একখান বজরাতে এক জন প্রধান রাজ কর্মচারী
ছিলেন, তিনি হস্তে এক পত্র লইয়া আমিরিকান জাহা-
জের এক ব্যক্তি কর্ণধারকে কহিলেন, মহাশয়! অর্জুণ

করিয়া আমার এই লিপিখানি আপনাদিগের কর্তা
কমোডোরের পেরিকে দিউন। কর্ণধার উত্তর করিল,
তোমার এই দ্বিত্বের মর্ম্ম কি? তার তারকসত্ত্ব গ্রহণ করিতে
আমাদিগের অধাকের আদেশ নাই। আপনাদিগের
রাজ্যের মধ্যে যে ব্যক্তি অতুচ্চ পদাতিবিক্ত, তিনি যদি
আমিরা সমাটসত্ত্ব পত্র প্রদান পূর্ব্বক তাঁহার
সহিত কথোপকথন করেন, তবে তিনি আমাদিগের
জাহাজ অভিযুক্ত হইতে পারিবেন মতবা অন্য কেহ
হইবেন না। ইহাতে বড়োর একজন বর্ম্মারী ওলন্দাজ
সাহাব কর্ণধারকে কহিল, কর্ণধার! তোমার জ্ঞান নাই,
ইহাকে তুমি জাহাজে গ্রহণ করিয়া কমোডোরের সহিত
সাক্ষাৎ করাইয়া দাও, তিনি সামান্য মনুষ্য নহেন,
উরাগা নগরের নায়ের শাসন কর্তা, ইনি বাহ্য করিবেন
বা বলিবেন, প্রধান শাসন কর্তা। তদ্বিষয়ে অনুমোদন
করিবেন, তাহার কোন সম্ভেদ নাই।

এই কথা কর্ণধার কমোডোরকে জ্ঞাত করিলে, নায়ের
জাহাজের তাহার মানস সিদ্ধ করিতে সম্মত হইলেন। কণ্ঠ
নামে তাঁহার একজন নায়ের ছিল, তিনি জাহাজেই
নায়ের শাসন কর্তার সহিত কথোপকথন করিতে মনুষ্য
করিলেন। তদনুসারে জাহাজের একখান
সিঁড়ী নামাইয়া দিলে, নায়ের শাসন কর্তা কণ্ঠের কেবিন
অর্থাৎ শরনোপবেশন গৃহে উপস্থিত হইয়া তাহার সহিত
কথোপকথন করতে লাগিলেন, কমোডোর তাহার
শাসনবর্তী গৃহে বসিয়া সকল কথা শুনিতে লাগিলেন।
প্রথমতঃ চুইজনে শিটচার প্রকাশ পূর্ব্বক মিটারাপ
হইলে কণ্ঠ বলিলেন, কমোডোর আমাদিগের দেশের

[illegible]

এইরূপ কাব্যচর্চা হইতেছে, এমন সময় ভেল নৌ
কতকগুলি নৌকা আবেগপূর্ণ জাহাজের নিকট
দেখান করিল। তদনন্তর কলিট্রি নামের শ্রমিক
কহিলেন, জাহাজের নিকট প্রাপনাদিগের ভেল নৌকা
আসে, কয়েকজনের এমন আদেশ নাই, যার প্রাপন হইয়া
দিগকে দূরীভূত করুন, নতুবা আনবা বল কলিট্রি হইয়া

দিল। এই কথাতে নায়ক শাসনকর্তা নগর উঠিয়া অল্পলী
নির্দেশ দ্বারা তাহাদিগকে শান্তি করিতে করিলেন,
কিন্তু কয়েকখানি মোকা তাঁহার ইঙ্গিত না মানিয়া সেই
খানেই রহিল। ইহাতে কণ্ঠি অন্তধারী সৈন্যযুক্ত এক
খানি কুহু আমেরিকান পোত প্রেরণ করিয়া তাহাদি-
গকে স্থানান্তরিত করিলেন, ভয়ে আর একখানিও
মোকা উরাগার চতুর্দশীমার মধ্যে রহিল না, সকলই
ক্রোশাওরে পল্লইয়া গেল। এমন কি আমেরিকান সৈন্য
সমূহের দম্ব এবং বেশভূষার পরিপাটি দেখিয়া নায়ক
শাসনকর্তা পর্যাপ্ত ভীত হইয়া বিদায় লইলেন। তাহা
সময় তিনি এই কথা বলিলেন, কর্তৃপক্ষের এক
গ্রহণ বিবরে আমি কৌণিক কথা বলি, আমার এমন ক্ষমতা
নাই, বোধ হয় কল্যাণে রাজধানী হইতে বাহ্যসভা
কোন পরাক্রমশালী লোক আসিয়া আপনাদিগের পত্র
গ্রহণ করিবেন।

দ্বিতীয় দিন সময়ে কমেডোর এবং তাঁহার আর আর
প্রধান কর্মচারীগণ জাহাজের উপরি ভাগে উঠিয়া দুই
বীকণ যন্ত্র দ্বারা উরাগার প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্য অবলো-
কন করিতে চলেন, দেখিলেন, তটে তাঁরি কোলাহল
শব্দ হইতেছে, গবর্ণমেন্ট সাক্ষাৎ প্রকাণ্ড পোত সকল
জারিদিক হইতে আসিয়া একত্রিত হইতেছে, সৈন্য
সকল বেশভূষা করি। সুসজ্জিত হইতেছে। দুগ হইতে
নিশান্। তুলিয়া সৈনিক প্রকৃৎগণ দুই একটা কামানও
ছুড়িল। ভীতবিত রাজপথ প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড রক্ষার
নীতে আচ্ছন্ন চল, একাতন সমস্ত বস্ত্র স্পষ্টরূপে দৃষ্ট
হইল। তাহা হইতে যে কিছু দেখা গেল, সকল বিবরেই

বোধ হইল যেমত প্রকৃত জ্ঞান সংশোধনাদি করিয়া
সংগ্রামে প্রবৃষ্টি হইবার জন্য উদ্যোগ করিতেছে।

পরে মিস জীভাকালে একখানি জেমানী মৌকাতে জনকরেক শিল্পকার আসিয়া আমেরিকান জাহাজে সকলের প্রতিমূর্তি কইতে লাগিল। তা'র পরকণেই অর্ধাৎ বেলা সাতটার সময় তিনখানি বজঝাতে জনকরেক ভরলোক আসিয়া উপস্থিত হইল, তাহাদিগের পটবস্ত্র ও বর্ণালঙ্কার পরিধান, এবং আর আর অলঙ্কারের বিচিত্র ভাষা দেখিয়া মোহ হইল, অশ্বাই তাহারা কোন উচ্চপদস্থ ব্যক্তি হইবে। মিনিসিপাই নামক এক খানি আমেরিকান জাহাজের নিকট তাহারা আসিলে, এক ব্যক্তি ওলন্দাজ ভাষায় তৎকর্ণধারকে কহিল, আমাদেব দেশের মহান ব্যক্তি উরগির শাসনকর্তা, কথোপকথনের মহাশয়ের সহিত সাক্ষাত করিতে আনিয়াছেন। কর্ণধার বলিল, অধ্যক্ষ মহাশয় রাজমন্ত্রী ব্যক্তিরেকে অন্য কাহারও সহিত কথোপকথন করিলেন না, তাহা হইলে বায়না, তাহার প্রধান কর্মচারী কান্ট আগনা দিগের সহিত সাক্ষাত করিলেও করিতে পারেন।

এই কথা বলিয়া কর্ণপাণ্ডা যে জাহাজে কণ্ঠি ছিলেন, উরাগার শাসনকর্তাকে সেই স্থানে লইয় গেলেন। অনেক শিউচাঁর এবং মিষ্টলাপের পর কণ্ঠি ইউ-নাইটেডস্টেটসের কর্তৃপক্ষদিগের পত্রে উল্লেখ করিলে, শাসনকর্তা বলিলেন, মাগাসকাই ভিন্ন অন্য কোন স্থানে বিদেশীদিগের পত্র গ্রহণ বা তদুত্তর প্রদান করা আমাদের দেশের প্রথা নহে, অতএব আপনাদিগের সেই স্থানে যাওয়া যেন বিহিত বোধ হইয়াছে। তত্ক্ষ-

যেন ক'টি পুঁজিবই... পরিভাগ করিয়া
 কনোডোর অন্তর কোথা... এই...
 খাতিয়াই পা... এত...
 স্বর্ণমোটা উপযুক্ত গা... করিয়া গুলোটের পত্র
 গ্রহণ না করেন, তবে তিনি সসুন্দর...
 তাহাকে পত্র প্রদান...
 তীত হইয়া...
 খাতিয়াই আমি...
 চারি দিন...
 কথ...
 বলিলেন, এত...
 কাল আমার...
 এবিষয়ে...

পরদিন এত...
 জাহাজ...
 ভ্রম...
 মান...
 করিলে, খাতি...
 করিয়া...
 স্থানের...
 ব্যবহার...
 রিকান...
 সুলারে...
 রূপ...
 তেছি, অতএব...
 উচিত...

সংবাদ দিল, তিনি পলায়ন করিয়া তাঁহাদিগকে বিবেধ করিলেন। অতঃপর এই কথা লইয়া তাঁহাদের সহিত ক্রমোত্তোরের কিয়দিন তর্ক বিতর্ক হয়, তাহাতে আমেরিকান ও জেপানীদিগের সহিত ক্রমে আলাপ পরিচয় জাহাজ ব্যবহার হওয়াতে সম্ভার হয়। কিন্তু ইউনাইটেড স্টেটসের কর্তৃপক্ষ জেপান সম্রাটকে যে পত্র লিখিয়াছিলেন, তৎকালে বিষয়ে কিছুই হয় নাই, কেবল এইমাত্র প্রতিবাদ হয় বসন্তের প্রাগমাণমে ১৮৫৪ সালে জেডো উপসাগরে প্রমাণগমন করিলে সকল বিষয় নির্দিষ্ট হইল।

এই প্রথম নির্দিষ্ট হইল, ক্রমোত্তোর চীন দেশের নিকটবর্তী লুক উপদ্বীপে যাত্রা করেন, ইতিহাসে এই লুক এবং তৎপটবর্তী অনেক স্থানের বর্ণনাত্ত লেখা আছে, কিন্তু বাস্তবিক ভাবে সে সকল স্থান লেখা হইল ন। আশ্চর্য্য অসিদ্ধি সম্পাদন করিবার উচ্ছ্রাস ক্রমোত্তোর কিছু দিন তথায় থাকেন, একদিন তিনি ভারতবর্ষীয় ওলন্দাজ জাহাজের শা নন্দীদিগের নিকট হইতে জেপানীদিগের হত্যা নবান পাঠিলেন, ঐ পত্রে আরও লেখা ছিল যে সম্রাটের হত্যাতে জেপান রাজ্যের সমস্ত রাজকর্ম্ম শিথিল হইয়াছে, তাহাতে কে বহুতরাপিকারী হইয়া নিঃসঙ্গ রুদ্ধ হইবে, এমনি লইয়া গোপনযোগ হইতেছে, অতঃপর জেপানীদিগের প্রেরিত পত্রে লেখা কোন প্রত্যুত্তর দেওয়া হইবেক না, এখন উহা বিবেচনাধীন রহিল। আমেরিকা দেশীয় জাহাজ লইয়া তোমরা সম্প্রতি জেডো উপসাগরে আসিব, সুতরাং হইলেই আমি তোমাদিগকে পুনরায় পত্র লিখিব।

ওলন্দাজদিগের অধীনস্থ হইয়া পি ধানি পাইয়া
কমোড়োর সাতিশয্যে আশ্রয়িত হইয়া যান মনে বিবে-
চনা করিতে লাগিবেন, একদিন পূর্ণ দিন হইল আসি
ফেপনে রাজ্য হইতে আসিয়াছি, কলিকাতার পাড়ার
সংবাদ কিছুমান শুনি নাই, কি প্রকারে তিনি একেবারে
পরালাক প্রাপ্ত হইলেন। বোধ হয় আমাদিগের প্রতি
পত্রের প্রতিবন্ধকতা। জম্মাইবার মিমিত এই প্রকার
প্রকাশ করা হইয়াছে, সে যাহাহউক, যদিও সংবাদ সত্য
হয়, তবে কিম্বদন্তিবার প্রয়োজন কি? জে. ডা. উপস-
থিত যাহাও কি আপত্তি আছে। আমি ত এখন জাহাজ
নইয়া হইই নিব্বাতিত ব হবার প্রাপ্ত হইয়া। এই বিবে-
চনা করিয়া ১১ই ফেব্রুয়ারি দিবসে সন্ধ্যা পর্যন্ত ১০ কিস
জে. ডা. যাহা করিলেন, সেইরূপ তখন যেন দিন ভাঙ-
না। কা হইয়াছে তাহার বড় প্রাপ্ত হইল।

পরদিন সাত কালে অতি নিম্ন হওয়াতে বায়ু
স্থির হইল, বন্দীর জাহাজ উপসাগরে প্রবেশ করি
দ্বিতীয় বৈকাল। নাবিকগণ জাহাজের উপরিত
দেখাশ্রম হইয়া পূর্বাংশ দেশে, সৌন্দর্য্যবলেখন করিতে
লাগিল, দেখিল উচ্চ নিগবতুক কুশিলায়, পর্বত
আর সে ভাঙ নাট, উহার উপরভাগ অপর্যাপ্ত হিম-
নির দ্বারা পূরিভূত হইয়া রহিয়াছে। উহার চতুর্পাশ্ব
ভূমি সকলের উপরভাগে গ্রীষ্মকালে যেমন হরিদ
শোভা দৃষ্ট হইয়াছিল, এখন তাহার কিছুমান নাই,
সকাল যেন শুষ্ক মলন, এবং কৃষ্ণবর্ণ হইয়া গিয়াছে।
উচ্চ গিরি সকলের উপরভাগে যেন সকল বৃক্ষ লতা এবং
হরিদ্রণ ওলন্দাজ শাখা ও পল্লব বিস্তার দ্বারা নয়নের অগ

বিস্ময় পরিভ্রমিত করিয়াছিল, নিম্নাঙ্গ হিমালয়ের প্রাচ-
 ত্যবে সে সকল একাগ্রে শুষ্ক প্রায় হইয়া মরুভূমির
 ন্যায় নষ্ট হইয়া গিয়াছে, দুর্বলতা পর্যন্ত সকল বৈদ্য
 নিহাররূপ পরিধানে আবৃত হইয়া প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের
 দুর্বলতানোকে যেমনে বারি নিক্ষেপ করিতেছে,
 দুর্বল আত্মার আত্মতবে গাত্রে বারু লাগতে যেমন কষ্টক
 বিদ্ধ হয়। বাষ্পীয় জাহাজ ক্রমে তটের নিকটবর্তী
 হইলে দুইখানি জাহাজ যেন নঙ্গর করিয়া রহিয়াছে,
 এমন ক্ষণ দৃষ্ট হইল, পতাকা নিরীক্ষণ করিয়া তাহা
 দেখিল, যে জাহাজখানির নাম মেন্সিডোনিয়া, কি আত-
 ম্যে মেন্সিডোনিয়া সেখানে আসিয়াছে, ইহা তাহারা
 নলে মনে বসেচেন করিতে লাগল। অনতিদূরবর্তী হইলে
 তাহাদের, সকল সন্দেহ মিথ্যে হইল, জিজ্ঞাসা কল্যাণে
 মেন্সিডোনিয়ার কর্ণধার কহিলেন ক্ষুদ্র উপসাগর উদ্যাগ
 হইয়া জেডো উপসাগরে আইতে আমরা মানস করিয়া
 ছিলাম, কিন্তু বিধাতার বিড়ম্বায় আমাদের জাহাজ
 গুপ্ত চড়ায় লাগিতে একেবারে আমাদের সর্বনাশ হই-
 য়াছে, এমন পিপাকে পড়িব আমরা তাপুও বিবেচনা
 করি নাই, সহস্র কমোডোর পেরি কল্যাণের এই সকল
 খেদোক্তি শুনিয়া সাতিশর দুঃখ হইলেন, এবং কথাসাধ্য
 চেষ্টা করিয়া তাহার বিষয় উদ্ধারের চেষ্টা কাবতে
 লাগিলেন, বাষ্পীয় জাহাজের এনিমেল, রডু বন্ধন
 করিয়া বারকরেক হেঁচক। মারাতে মেন্সিডোনিয়া শীঘ্র
 জলে ভাসমান হইল, তাহাতে তাহাকে যথাস্থানে
 অবসারণ করিয়া বাতিনত নঙ্গর করা হইল।

মেন্সিডোনিয়া নামক জাহাজ চড়া হইতে উদ্ধৃত

ইইরা নির্দিষ্ট হুল এটি ইইরাহে, ইইরা দেখিয়া আমেরিকানদিগের এতি জেপানীয়দের বিশেষ প্রেক্ষাগৃহাগ
 জম্মিল, পূর্বে যত্নপ তাহাদিগের এতি সন্দেহ ইইরা-
 ছিল এখন আর সন্দেহ রহিল নাই, বাহাতে বিদেশী
 মণিকপণের প্রদর্শনটি উপচর না হয়, এখন এমন তদ্বি-
 বধান তাহার করিতে আরম্ভ করিল, আমেরিকানদিগের
 বাণীর জাহাজ প্রারম্ভকোশ ছুরে ছিল, বহুদেশজাত
 পাণ্ডুরিয়া কয়লা পাঠাইয়া তাহার ত হার সাহায্য প্রদান
 করিল। ১৩ই ফেব্রুয়ারি, দিবসের প্রাতঃকালে কমডো-
 রের সমস্ত জাহাজ জেজে উপসাগরে উপনীত হইল।
 পূর্বে একবার আসিয়াছিল বলিয়া এই বিশাল জনরাশির
 পথ তাহাদের আগোচর ছিল ন, সমস্ত পথই তাহার
 উত্তমরূপ জালিয়া অত্যন্ত নশিচন্তর জাহাজ চালাইতে
 লাগিল। উদ্যোগ ইইতে হয় কোশ দূরে তাহার নজর
 করিলে সমস্ত দুইখান বর্ণমেন্ট সংক্রান্ত পোত তাহা-
 দের অনুবর্তী হইল। সমস্ত ইইরেন নামে আমেরিকান-
 দের একখানি জাহাজ ছিল, জেপানিওদিগের দুইজন
 প্রধান কর্মচারী তদ্রিকটে উপস্থিত ইইরাহে অধী গমনে
 প্রার্থনা করিলে, জাহাজের কর্ণধার কমডোরকে সেই বার্তা
 কহিলেন, তৎপবেণে দুইজন কর্মচারীর বাড়ন হিত
 নিরবধিসারে আপনাকে গোপন কবাবন বলিয়া কর্ণ-
 ধারদিগকে সে জাহাজে গ্রহণ করিলেন না, এখন আর
 একখানি জাহাজ তাহাদিগের অতর্জন ও রতে বর্ণ-
 ধারকে কহিলেন তদনুসারে কর্ণধার বর্ণাঙ্কিত, সমস্ত
 পূর্বেক পাউটে টেন নামক একখানি জাহাজে তাহাদিগকে
 লইয়া গেলেন। জেপানি কর্মচারী জাহাজদিগের যে

সকল কথা বক্তব্য ছিল, তাহা বলিতে আরম্ভ করিল, বর্ধার বিষয় কার্যের কথা ব্যতিরেকে তাহার অপর কোন কথা কহিল না।

পাউহেটস নামক জাহাজে যে কয়েক জন জেপানি রাজকর্মচারী উঠিয়াছিলেন, তন্মধ্যে এক ব্যক্তি অভ্যুত্থানপদাভিযুক্ত মানাগুনালোক, ইংরাজী কথ্য কহিতে পারে এমন দুইজন লোক তাহার সমুত্তিব্যাহারে ছিল, পাংশুল শ্বেতবর্ণবস্ত্র তাহাদের পরিধান, প্রথমতঃ তাহার জাহাজে উঠিয়া ইতস্ততঃ জাহাজের সমস্ত ত্রব্য সামগ্রী বিশেষরূপ পর্যবেক্ষণ করিতে লাগিল, তাহাতে বোধ হইল, যে তাহারাদগণ মীর সকলবিষয়ের বেশ সংবাদ লইতে আসিয়াছে। বাহাইউক উচ্চপদস্থ জেপানি কর্মচারী জাহাজের অভ্যন্তরে প্রবেশ করিলে, তাহার তাঁহার সঙ্গে সঙ্গে গেল। পূর্বে ইজাইমেন নামে এক ব্যক্তি আমেরিকানদের সহিত সন্ধি করণ সময়ে বিশেষানুকূলা করিয়াছিল, অতএব কর্ণধার তাহারি কথা সর্বাগ্রে জিজ্ঞাসা করিলেন, তাহাতে উচ্চপদাভিযুক্ত রাজকর্মচারী উত্তর করিলেন, তাঁহার শরীর বড় একটা সচ্ছন্দ সাই, স্বপ্ন হইলেই জাপানী কমডোরের সহিত সাক্ষাতে করিবেন, তৎপরে আমেরিকানদিগের কর্ণধানি জাহাজ, তাহাদের নাম কি, কসখান আসিয়াছে এবং কর্ণধান বা আসিবেন, তাহাদের আকার কি রূপ, পবম্পর এইরূপ অনেক কথার প্রশ্ন ও প্রত্যুত্তর হইতে লাগিল, অবশেষে বিনীতভাবে জেপানীয়েক কহিল, কমডোরের সম্বন্ধনার্থ আমাদের সমুটি উবাংগাতে দুইজন প্রধান রাজপুরুষকে পাঠাইরাছেন, এবং আবণ্ড জন কয়েক লোক আসিবেন, অতএব অধ্যক্ষ মহাশয় অনুগ্রহ

করিল। যদি সে কথাকে প্রমাণ করেন, তবে বড় ভাণ্ডার।
 কথা প্রমাণ করিয়া আমেরিকান কমিটির আদম্‌স
 সাহেব কহিলেন, কমিটির উরাণা বাইতে কমিটী সম্মত
 হইবেন না। ডেপানী রাজকর্মচারী প্রমাণ করিলেন,
 না হইবে। হইবে কেন, উরাণা কমিটির লোকসিগের
 সহিত সন্ধি করণ জন্য সম্মিটির মিঃ সিন্ডার্স, তদ্বিধ
 জন্য কোন স্থানে সে কর্ম নির্বাহ হয় না। কাণ্ডেন
 আদম্‌স কহিলেন, হবে না কেন, সম্মিটি এই
 স্থানেই কমিসনের পাঠাইয়া কেন সন্ধিপত্র সম্পাদন
 করুন না, সত্য কহিতেছি, আমাদের প্রতিজ্ঞা অনজমীত,
 যে স্থানে আমাদের জাহাজ সকল মজুর করা হইয়াছে,
 সেই স্থানেই সন্ধি হইবে, ইহাতে যদি ডেপান গবর্নমেন্ট
 সম্মত না হয়, তবে আমরা এই উপসাগর পার হইয়া
 বাইব, প্রয়োজন হয় তো ডেডো রাজধানী পর্যন্ত বাইতে
 হইবে। তদ্বিবনে রাজকর্মচারী ভীত হইয়া ওবিবয়ে
 আর কোন কথা কহিলেন না, মিষ্ট সম্মিটনে অর্গরাপন
 কথা কহিতে লাগিলেন, পটের দ্বিধা জলযোগ করিয়া
 বিদায় প্রার্থনা করিলেন।

পরদিন ডেপানীর রাজকর্মচারী গুনরাব পাউ-
 হেটন নামক ভাণ্ডার উপস্থিত হইয়া কহিল, আমেরিকা-
 নদিগের প্রতি আমাদের সম্মিটির কিছু মাত্র বিরুদ্ধতা
 নাই, তিনি সর্বাঙ্গকরণের সহিত তাহাদের মঙ্গল
 প্রার্থনা করেন, ইহাতে তাহাদিগের অবমানন বা অস-
 র্বাদা হয়, এমন কর্ষে লিপ্ত হইতে তাহার কণ্ঠস্বর উঠা
 নাই। অপরদিনের মধ্যে তিনি কমিসনার প্রেরণ করিয়া
 কমিটির সম্মতি করিবেন; তদ্বিবনে পাউহেটনের

কর্ণধার বলিলেন; করিবেন তো কটে তা আমরা জানি, কিন্তু কোম স্থানে করিবেন তাহা নিশ্চয় হইলে ভাল হয় না। তাহাতে তাহার প্রত্যুত্তর করিল বোধ হয় কামাকুরা নগরে হইবে। এই কথাতে কাণ্ডেন আদমস সাতিশয় বিস্ময়াপন্ন হইয়া কহিলেন, কল্যা ভোমরা উরাগাতেই গুহাইবে এমন কৃত নিশ্চয় হইয়াছিলে, আজ একেবারে কামাকুরা উল্লেখ করিতেছ এ কথার অতি প্রায় কি ২ হুটাং এমন স্থান পরিবর্ত করি হইল। জেনারেল দেশীয় ভদ্র সম্ভ্রামেব, এমনমন্ডা বিদ্যা শিক্ষার নাম বাল্যকালে হইতে শঠতা বিনয়শীলতা এবং চতুরতা নি শিক্ষা করিয়া থাকে, কাপটা ভাব প্রকাশ করিয়া অজ্ঞান বদনে চতুর্য ও প্রতারনার কথা কহে, কিছু মাত্র অস্থির চিত্ত অথবা শরু চিত্ত হয় না। অতিব্রহ্মসহানুভবনে তাহার প্রত্যুত্তর করিল, তা জানেন না মহাশয়! সমুদ্র উরাগা এবং কামাকুরা উভয় স্থানেই দ্বির করিয়াছিলেন, কমভোর উরাগা ঘাইতে সম্মত নাহেন বলিয়া এই স্থান মনে লীত করা হইয়াছে বোধ হয় অধ্যক্ষ মহাশয় ইহাতে অসম্মত হইবেন না।

জেডে উপনাগতেব অছুরই তীরবর্তী স্থানের নাম কামাকুরা, উহা উরাগার দশ কোশ দূরে আছে, উহারি কটে চাতেই পূর্বে মেসিজোনিয়ান জাহাজ লাগিয়া ছিল। ঐ দৈব ঘটনা যোগে কমভোরকে সেই স্থানে কিছুদিন জাহাজ নঙ্গর করিয়া থাকিতে হইয়াছিল বলিয়া তিনি সমস্তানের বিষয় কিছুমাত্র অজ্ঞাত ছিলেন না। এবিষয়ে কিছু না কিছু অবশ্যই কুমন্ত্রনা এবং ধূর্ততা আছে, এই মাহশয় করিয়া তিনি কাণ্ডেন আদমসকে এই কথা কহিত

বলিগানিলেন, কাম্বোজর কাঁচরা কব্জি সহজ কথা নহে, উহা আমাদের পক্ষে বড় অযোগ্য স্থান। এই রক্তাক্ত কহিরা আদমস কাণ্ডপদ এবং নিকটবর্তী স্থান নিয়োগের বিষয় উল্লেখ করিলেন, জেপানীরা কাম্বোজী সম্রাটের অনুজ্ঞায় উরাগারকেই বাইতেহইবে, এই কথা পুনঃ কহিতে লাগিলেন, তাহাকে আদমস বিরক্তিতাব প্রকাশ করিয়া প্রত্যুত্তর করিলেন, কাম্বোজী রক্তমান স্থান পরিভাষণ করিয়া কখনই কাম্বোজী বাইবে না, যদি কোন উচ্চপদস্থ রাজ পুরুষ আমাদের সহিত সাক্ষাত করিতে চাহেন; তবে এই স্থানেই করিতে হইবে। এই রূপ অনেক প্রকার বাক্য বিতণ্ডা হইতে লাগিল, অবশেষে কাণ্ডপদ আদমস কহিলেন, অধিক বাক্যব্যয়ে প্রয়োজন নাই, আমেরিকানেরা যেখানে এক্ষণে অবস্থিতি করিতেছে সেখানে কমন্ডোরের সহিত সাক্ষাৎ করণে তোমাদের আপত্তিটা কি তাহা লিখিয়া দেখাইতে পার। জেপান রাজকর্মচারী এবিষয়ে স্বাভিমত প্রকাশ করিয়া বলিলেন, আমাদের বে-বে বিষয় জিজ্ঞাস্য কাণ্ডপদ আদমস যদি ওহ প্রত্যুত্তর লিখিয়া প্রদান করেন, তবে আমরাও আমাদের আপত্তি কি? তাহা লিখিয়া জানাইতে পারি। উকনুরো নামে একজন ওলন্দাজ উকীল জেপানীরা দের সঙ্গে ছিল, ঐস্থান কর্মচারির সঙ্গে সে ব্যক্তি কিরূপে ক্রম পরামর্শ করিয়া, এই কথা লিখিল, উরাগার নিকটবর্তী মোরাহান নগরে যখন আমেরিকান অধিপের পক্ষ আমরা গ্রহণ করিয়া ছিলাম, তখন সেই স্থানেই তোমরা আমাদের প্রত্যুত্তর লইবে না কেন? কাণ্ডপদ আদমস উত্তর লিখিলেন, কি কারণে কমন্ডোর সেখানে

যাইতে সম্ভবত মইন, তাহা জা'মি বলিতে পারি না, কেবল এক মাত্র কারণ এই, জাহাজ লঙ্ঘন করণ পক্ষে সে স্থান সর্ব বিধায়ে অবিধাজনক নহে, তথায় নানাবিধ বিপদ ঘটবার সম্ভাবনা আছে।

আদম্‌সের কথার ভাবে জেপানীয়েরা কিছু সন্দেহ চিত্ত হইল, আমেরিকানেরা বৈরতাজ্জ্বল্য করিবে, মনে এই সন্দেহ করিয়া তাহারা জিজ্ঞাসা করিল, জেপানীরা যখন মোটের নামানের প্রতি সম্পূর্ণ সখ্যাতাভ্যাস করিয়া, কিন্তু কনগো-ভোরের সেতাব আমাদের প্রতি আছে কি না? কাগুন আদম্‌স সাধ্যানুসারে তাহাদিগকে বুঝাইয়া দিয়া কহিতে লাগিলেন, আমি তোমাদিগকে নিশ্চয় কহিতেছি, বন্ধ করণ বাতিরেকে আমেরিকানেরা অন্য কোন অভিপ্রায় এদেশে আসে নাই, জেপান গবর্নমেন্টের সহিত কুশলে বানিজ্য সম্পাদি হয়, ইহা তাহাদের সম্পূর্ণ উচ্ছ, তবে সম্রাটের প্রজ্ঞাযে তাহার যে সতর্কতাই হইবে না, তাহা করণ এই, অনেক উচ্চ সম্মান কর্তব্য এই মননিক পুঙ্খল হইয়া স্বদেশ পরিভ্রমণ করুক এই নির্দেশ জাপান রাখে, ঐ বানিজ্যসূত্রাদি আমেরিকানদিগের প্রধান শুল যে জাহাজ এবং নাবিকগণ, তাহাও জাপান হইয়াছে, এ সমস্ত কিসে নিবিশ্ব এবং শিরোপদ থাকে, কনগোভোর অহনিশি এই চিত্ত করেন, অধিক পি বলিব, অনুপস্থিত স্থানে গেলে বিপদ ঘটবার সম্ভাবনা আছে বলিয়া তিনি যাইতে সম্ভবত হইতেছেন না, আর অন্য কোন কারণ নাই! এই কথাতে জেপানীয়েদের কিছু সন্দেহ নিদর্শন হইলে, তাহারা কহিল, মন্ত্রী পদে উপস্থিত

কমোডোরের সহিত সাক্ষাৎ করণান্তর সকল বিষয় স্থির
করিবেন, আমরা এক্ষণে বিদায় প্রার্থনা করি। আদমস-
কহিলেন, যদি জেনারেল তবে, যেন এই জাহাজেতেই
আসেন। জাহাজে জেনারেল কর্তৃক চারো বালিশেন, ইহা অম-
টন ঘটকের দ্বারা স্থানান্তরিত হইতেছে। আমেরিকান
কর্ণধার প্রভৃতির পরিচয় প্রকাশ্য রাজকর্ম নিক্সাহ
প্রায় রাজ্য হইতে হইয়া গিয়াছে দেশেই রীতি আছে।
তোমাদিগের কথনই শ্রদ্ধাশীল যদি জাহাজে আসা অম-
টন ঘটনা হয়, তবে কমোডোর নিজে রাজধানী জেডোতে
নাইয়া এককর্ম সমাধা করিবেন। এই কথাতে তাহার
মুখ ভঙ্গিমা দ্বারা সান্ত্বিত্য বিরক্তি প্রকাশ করিয়া কহিল,
জেডো রাজধানীতে তোমাদের কখনই যাওয়া উচিত
না, আমরা ভূয়ো ভূয়ো নিবেদন করিতেছি, জেডোতে
তোমাদের কখনই নাওয়া হইলেন না। বাইবার সময়
জেনারেলেরা কর যোড় পূর্বক নিবেদন করিল, মহাশয়
আপনার সেন্যে কোল বোট বা নৌকা পাঠাইবেন না,
আর, জেডো প্রভৃতি উপসাগরে আপনাদিগের নাবিকগণ
বাইয়া যাক রক্ষা দ্বারা জলের যেরূপ দ্ব্যাবধারণ করি
তেছে, সে রূপ যেন আর না করে, কেন না তদ্বারা পদে
পদে জেনারেল গবর্নমেন্টের অবমানন্য করা হইতেছে। আদ-
মস কহিলেন, এক্ষণে অঙ্গীকার আমরা করিতে পারি
না, কমডোর প্রবিষ্ট সুখ সচ্ছন্দ লালসায় ঐ কর্ম করিতে
আসিয়া থাকেন, উহাতে শুদ্ধ আমেরিকার নম-
কর্ম দেশীয় সমস্ত বণিক সম্প্রদায়েরই উপকার হইতে
পারিবে, আনাদের লিখিত রক্তান্ত পাঠ করিয়া তাহার

ম্যাসিভোনিয়ানরা আমাদের দ্বারা আর কেহ বিপদে পড়বে না। এমন সুযোগ পরিভাগ করা উচিত নয়, তোমরা উৎকণ্ঠিত হইও না, জাতি হিংসা বৃত্তি একেবারে উন্মূলন কর, আমরা জেপান রাজ্যের ইচ্ছা বীহীন অমিষ্ট করিতে আসি নাই।

কিয়দ্দিন বিলম্বে উক্ত পদস্থ প্রধান রাজপুরুষ আসিয়া কমোডোরের সহিত কথোপকথন করনামন্তর সকল বিষয় স্থির করিবে, এই কথা বলিয়া জেপানিয়ারা গিয়াছিল বটে, কিন্তু পর দিন প্রাতঃকালেই জাপান কয়েক রাজ কর্মচারী পাউহেটান নামক জাহাজে আসিয়া উপস্থিত হইল। কমোডোর পূর্বে দিবস শীর্ণ ছিলেন, এজন্য তাহার প্রথমে আসিয়াই তিনি কিরূপ আছেন তাহাব জ্ঞাপন করিয়া পরে কহিল আমাদের কর্ম পক্ষে আদেশ এই, মহাশয়দিগের কোন অভাব থাকে বলুন, কাষ্ঠ ফল প্রভৃতি জাহাজের উপযোগী যে কোন বিষয়ের অভাব হইবে, আমরা সাধ্যমতে সে সকলই সম্পূর্ণ করিব। আমেরিকানেরা বলিল, তোমাদিগের প্রস্তাবে আমরা বড়ই বাবিত হইলাম, সম্প্রতি আমাদের কিছু অভাব নাই, দিন কয়েক পরে মৎস্য, ডিম্ব, এবং কিছু বাস্তব সামগ্রীর প্রয়োজন হইবে, আমরা মূল্য দিতে প্রস্তুত আছি, তোমরা জয় করিয়া আনিস, নিলে উপকৃত হইব।

এমন কথা শুনিয়া জেপানিয়ারা কহিল, সামান্য বিষয়ের নিমিত্তে এতদূর কষ্টে আমাদের আদেশ নাই, যদি উপকরণ রূপে আপনারা উক্ত প্রদত্ত পূর্কক গ্রহণ করেন তবে এখনই জাপান দিতে পারি। এই কথা কথোপকথন হইতেছিল, কথ কহিতে কহিতে

আদমস্ ভবিষ্যদ্বাণী পত্রের কথা জানিত
কিন্তু কইনা কহিলেন। সত্য মিথ্যা বাস্তবতা পারিলেন
আদমস্ ভবিষ্যদ্বাণী একটি আশঙ্কা হইয়াছে, তোমরা যদি
ভবিষ্যদ্বাণী কর, তবে সম্ভবতঃ নিরবাস হয়। আদমস্
সবন সাক্ষাৎ হইতে জেপান যাত্রা করি, তখন গাথে
আদমস্ ভবিষ্যদ্বাণী জেপান রাজ্যের অধিপতি স্বরূপ একজন
রাজপুরুষের নিকট হইয়াছে, একথা কি-বাক্য
জেপানীরা কহিল, হাঁ এক জন উচ্চ পদবিশিষ্ট ব্যক্তি
মরিয়াছেন। আদমস্ পুনর্জিজ্ঞাসা করিলেন, তাহার
উপাধি কি? জেপান কর্মচারীরা কহিল, তিনি একজন যুব-
রাজ, কুটিল স্বভাব জেপানীয়েদের সামান্য বিষয়ের জন্য
জিজ্ঞাসা করিলেন এমনি ঘোর করে করিয়া উত্তর দেয়
যে সত্য জানা তাহাদিগের নিকট চূড়ান্ত হইয়া উঠে,
অতএব সম্রাটের মৃত্যু যথার্থ কি না, আদমস্ তাহ
জানিতে পারিলেন না।

এই দিনে এই রূপে গেল, উচ্চ পদস্থ জেপান কর্ম-
চারীরা দিন দিন আসিয়া তাহাদিগের সহিত সাক্ষাত
করিতে লাগিল। ১৮ ফেব্রুয়ারি দিবসে তাহারা আদমস্
কহিল, সম্রাট এখান রাজপুরুষ এক ব্যক্তিকে কমডো
রাজপুরুষের উরাগাতে প্রেরণ করিয়াছেন, অতএব
প্রার্থনা এই যথাক্রমে মহাশয় সেখানে গিয়া যেন জমা
কার সহিত সাক্ষাৎ করেন। এই কথা শ্রবণ করিয়া
আদমস্ বুঝিতে পারিলেন যে জেপানীয়েরা খেজাচাষী,
আদমস্ বাহা বলে তাহাই করে, অপরেক কথার সর্বস্ব
অতএব বিরক্ত হইয়া নিম্ন লিখিত পত্রখানি
তাহাদিগের হস্তে দিলেন।

পাটবেটন জেডো উপসাগর ১৮ ফেব্রুয়ারি ১৮৫৪ খাল।

সকল দেশে যে রূপ রীতি আছে, উন্নতসারে কনডোর
পেরি রাজধানী জেডো নগরে বাইবার প্রতীক করিতে
ছেন।

“আমাদিগের জাহাজেরূপ প্রকাণ্ডকার এবং উহার
মূল্য যে রূপ অপরিমিত, উরাগাতে যাওয়া কোন
মতেই হুজুর্গিস হইল না এবং এখানে কতক দিন থাকাতে
উচ্চ নর, জেডো উপসাগর পার হইয়া রাজধানীর
সমীপবর্তী হওয়া যেন বিধেয় বোধ হইতেছে, কারণ সে
স্থানে গেলে আমাদের জাহাজ সক্ষম নিরাপদ এবং
নিশ্চয় হইবে।”

“যদ্যপি প্রধান কমিসনার উপযুক্ত মর্যাদা বিশিষ্ট
এক জন লোক প্রেরণ করিয়া আমাদের প্রধান কর্মচার
কাপ্তেন আদমসের সহিত এই সমীপবর্তী সাগর তাই
যাকাত কবান, তবে কোন সময়ে এবং কোন স্থানে জাহাজ
সহিত সাক্ষাৎ হইতে পারে, তাহা যেন নিশ্চিত হয়,
আগামী মঙ্গলবারে অথবা কাল পর্যাখ্ত যেন আনন্দা বহি
স্বয়ের সম্বাদ পাই।”

“যদ্যপি কমিসনারের হুকুম হইল কনডোর পরম
আজ্ঞাসেন সহিত একখানি জাহাজ প্রেরণ করিয়া
জাহাজে এই মর্শন সোণা স্থানে আনিয়ন করিতে পারেন,
আর সর্ব সমাধ হইলে পুনরায় জাহাজ দ্বারা
জাহাজকে উরাগাতে প্রেরণ করিতে পারেন।”

“কমিসনারের প্রেরিত লোক যখন কাপ্তেন আদম-
সের সহিত সাক্ষাৎ করিতে পারিবেন, তখন যেন জাহাজ
কতৃপক্ষের প্রাক্করিত একখানি পত্র আনিয়ন করেন,

না আমিনে তাহার প্রতি আমাদের বিশ্বাস হইবে না।

আমেরিকান কর্মচারিদিগের নিকট হইতে এই পত্র গ্রহণ করিয়া জেপানিগেরা যত্নে প্রস্তান করিল, তাহিব্যয়ে আর কোন ভুল রিভক্ করিল না মনে করিল আগে প্রধান রাজপুরুষদিগকে এই পত্র দেখাইয়া রাই ইহার যথযথ বিবেচনা করিবেন। বাইবান সমগ্র কেবল এই কথাটি জিজ্ঞাসা করিয়া গেল, জেপান গবর্ণ-মেন্ট গত বৎসর নেগ্যাংসকাই নিবাসী এলন্দাজদিগের দ্বারায় কমডোরকে যে একখানি পত্র মিথিয়াছিলে, তাহা তিনি পাইরাছেন কিনা? এপ্রস্তাবের কোন কথা প্রকাশ করিয়া বলেন, কাগুস আদমস্ এমন কর্মকা ছিল না, সুতরাং তিনি প্রত্যুত্তর করিলেন, তোমরা ও কথা আমার জিজ্ঞাসা করিও না, ও সকল বিষয়ে কথা কহিলে আমার অধিকার নাই।

অনন্তর দুই দিন পরে জেপান দেশীয় প্রধান কর্ম-সমূহ নিম্ন লিখিত ক্ষুদ্র পত্রখানি কমডোরকে লিখিয়া পাঠাইলেন। জেপান বিশ্বাসের অনুজ্ঞা ক্রমে আমেরিকা যুক্তরাষ্ট্র ইউনাইটেড স্টেটসের রাজ কর্তৃপক্ষের প্রেরিত দ্রুতকে হর কামাকুরা নতুন উবাগাতে আসিয়া সম্বন্ধনা করিতে বাধ্য হইয়াছি, সেই স্থানেই স্বাক্ষর হইলে, বাণিজ্য বিষয়ক সন্ধির নিয়ম করিয়া তাহাতে জেপানীয় এবং আমেরিকান জাতির যে যে উপকার হইবার সম্ভাবনা সে সকল কথাই হইবে, এখন সে বিষয়ের আলোচনায় আবশ্যক নাই। নাহা লিখিতেছি তাত সত্যই লিখিতেছি।

কমডোর পেরি এই পত্র খানি প্রাপ্ত হইয়া

তৎপ্রত্যক্ষের সামান্যরূপ এই কথা লিখিয়া প্রেরণ করিলেন, যে কারণে কমডো'র উবাগাতে গমন করিতে পারেন না, তাহা পূর্ব পথে সুবিদিত হইয়াছে। অসমবিকার কর্তৃপক্ষের আদেশ এই, কেডো নগরে সমুদ্রের প্রত্যক্ষ পথ ভাঙ্গাকে গ্রহণ করিতে হইবে।

[illegible]

যারা পরিত্যক্ত, দেখিলে চক্কর পাশ ছর হইল।

বাসপার্শ্বে উপবেশন করা জাপানীদিগের মতে
 জাতিগত সম্মানসূচক হইল, অতএব আমেরিকানেরা গৃহ
 মধ্যে প্রবেশ করিলে, বিশেষ সম্মান পূর্বক তাহার
 তাহাদিগকে এই দিকে বসাইল। অনন্তর জাপানদেশে
 যুবরাজ হুইজেন প্রতাপশালী মানা গণ্য লোকের সঙ্গে
 গিয়া বসনিকা উন্মোচন করত অপর একটি কোঠা
 মধ্যে বহির্গত হইলেন, দর্শনমাত্র উরাগের শাসনকর্তা
 প্রধান প্রধান অপ্রধান মত জাপানী কর্মচারী ছি-
 লেন। এই পাতিয়া বসিয়া নতুন হুইজেন, যদবধি
 উক্ত জাতির পরস্পর সম্মানন বা সম্মানিত না হইল,
 তাহারা এইভাবে প্রতিদ্বন্দ্বিতার প্রতি দৃষ্টিপাত
 হইতে মাথায় বসিয়া গেল। রাজপুত্র এবং তাহার
 সখ্যতা যার আমেরিকানদিগের দক্ষিণপার্শ্বে উপবেশন
 করিলেন, প্রায় পঞ্চাশ জন জাপানী মৈন্য আসিয়া তাহার
 কাছাকাছি করিয়া পূর্বক দণ্ডিতমান রহিল।

যুবরাজের অতি সুন্দর পটবস্ত্র পরিচ্ছদ, সুসঙ্গ
 এবং সুবস্ত্রী জাপক বদন মণ্ডল, সুমধুর বচন এবং অল্প ত-
 দ্বিয়ার দ্বারা সকলেই বিমোহিত হইল। প্রথমতঃ তিনি
 পাশ্চাত্য পূর্বক কাপ্তেন আদমসকে কহিলেন, আপন
 দ্বার শুভাগমনে আমি বড়ই পরিতুষ্ট হইয়াছি। এক
 জন ওলন্দাজ এই কথা ইংরাজীতে অনুবাদ করিয়া
 আদমসকে জানাইলেন, আদমস হতোভোজ পূর্বক
 তাহাকে সম্বাদ করিয়া বখাবিহিত শিষ্টাচার প্রকাশ
 করিলেন। তৎপরে কি আমেরিকান, কি জাপানি, কি
 ওলন্দাজ, যে সকল লোক তথায় সমুপস্থিত ছিল, সক-

সেই পাত্রোথান পূর্বক মস্তক অবনত করিয়া পরস্পর
অতিবাদন করিল। অনন্তর আমেরিকান ছুত বিনীতভাবে
নিবেদন করিলেন, জাহাজের পক্ষে উরাগ কোনমতে উপ-
যুক্ত স্থান নহে, তথায় নঙ্গর করিলে, নানাব্যাঘাত ঘটিবার
সম্ভাবনা আছে। তৎপ্রবণে জেপানিয়ের প্রত্যুত্তর করিল,
সম্রাটের আজ্ঞায় আপনাদিগের অধ্যাক্ষ সেই স্থানে সম্বন্ধিত
হইবেন, এবং পনের ও উত্তর সেই স্থানে দেওয়া বাইবেক,
ইহাতে আমাদিগের আর কোন বক্তব্য নাই। কাগুেন
আদম্‌স এবিষয়ের আর কোন কথা না কহিয়া আপনার
নামাক্ষিত একখানি তাশ যুবরাজের হস্তে দিলেন, এবং
যুবরাজের নামাক্ষিত তাশের নিমিত্ত প্রার্থনা করিলেন। অ-
ম্পঙ্কন বিলম্ব কর, দেওয়া বাইবে, এই কথা বলিয়া জেপা-
নাবিপ বানিকা উমোটনকরত অপর একটী প্রকোণ্ডে প্রবেশ
করিলেন, আর বলিলেন মহাশয়! ক্ষমা প্রার্থনা করি, অম্প-
কন বিলম্ব হইবে সেজন্য আপনি চিন্তিত হইবেন না।

অনন্তর রাজানুসঙ্গী লোক সকলে হস্ত চীনদেশোৎ-
পন্ন অতিশুদ্ধ এক একটী পাত্র লইয়া আমেরিকানদিগকে
দিতে লাগিল, কাঠের বাসনে ঐ চাপাত্র সকল স্থাপিত
হইল, তাহার শোভার কথা কি কহিব, ধ্বং এবং
বৌদ্ধের কৃত্রিম পুষ্প দ্বারা উহার চতুষ্পাশ্বে এমন
পরিমণ্ডিত যে সহস্র তৎপ্রতি দৃষ্টি করিবার ও জ্বল্য
প্রযুক্ত চক্ষু ব্যাপস। লক্ষিতে থাকে। এইরূপে চা-
প্রদান করিয়া ওলফাজ উল্লেখ করি কহিল, মহাশ-
য়গণ! এ অতি সম্মানা খাদ্য, আপনাদিগের উপ-
যুক্ত নহে, অতুগ্রস্ত পুঙ্কক যদি গ্রহণ করেন, তবে আমরা
বড়ই বাধিত হই। পরস্পর এতদ্বারা কথা

কহিতে জেপানিদের। আমেরিকানদিগকে জিজ্ঞাসা করিল, আপনাদের প্রধান কর্মচারীদের নাম কি? উরাগায় আসিয়া আপনার সন্তুষ্ট হইরাছেন কিনা? আমেরিকা-অধিপতির গমের প্রত্যুত্তর গ্রহণ বিষয়ে এস্থান উপযুক্ত কি না। এই বিষয়টি তাহাদিগের মুখা অবিষেয়, অতএব বতর্কথা কর সকলেতেই কেবল ঐ অভিপ্রায় প্রকাশ করে। আমেরিকান জাহাজ জেডোর সরিধানে আইলে আমাদের অনিষ্ট হইবে, এই আশঙ্কায় কেবল তাহার। নিষেধেরই কথা কর, কিসে আমাদের অভিপ্রেত লাভ হইবে কেবল এই চেষ্টাই করে। কাণ্ডেন আদমস তাহাদিগের নিতান্ত দাড়া এবং উত্তেজিত দেখিয়া তাহাদিগকে কহিলেন, কমোডোরের হস্তাক্রিত এক খানি পত্র আমার নিকট আছে, তিনি তোমাদের প্রস্তাবে কথনই সম্মত হইবেন না। কেন তোমাদের কি শ্রাবণ নাই, উরাগাতে নঙ্গর করিয়া পূর্বে ভেঙেলিয়া জাহাজের কি ছুরবন্ধা হইয়াছিল, এখন তো প্রবলতর ঝড় রক্তির সন্মুখ, আমাদের কিছু একখানি জাহাজ নয় অনেক গুলি, এমন সময়ে ওস্থানে থাকিলে আর কি নিকৃতি আছে, তোমরা কি অসম্ভব অনুরোধ করিতেছ, বিপদ পড়িলে তোমরা কি আমাদিগকে হাত দিয়া রক্ষা করিবে।

এই রূপ কথা বার্তা হইতেছিল, এমন সময়ে যুবরাজ কহিলেন, হইয়া আপনার নামাকিত তাশখানি আদমসের হস্তে দিলেন, “হারেবাই ডেকাকু নোকানি” অর্থাৎ জে-কাকুর অধিপতি হারেবাই, তাহাতে এই নাম লেখাছিল। আদমস উহা গ্রীণ হওমানন্তর কমোডোরের পত্রখানি জাহাজ হস্তে দিলেন, দিয়া কহিলেন, সহায়িত্ব বিবেচনা

করুন, নির্দিষ্ট " নিরাপদ স্থান আমাদিগের জাহাজের
পক্ষে অত্যাবশ্যক বিষয়, এবিষয়ের যেন অন্যথা না হয়।
যুবরাজ, ঐ পত্র প্রাপ্ত হইয়া উহার মর্ম্মানুগত হইবার
নিমিত্ত পুনর্বার অমাত্যবর্গের সহিত আর একটী গোপন
গৃহে প্রবেশ করিলেন।

অনন্তর নানাবিধ মিষ্টান্ন সামগ্রী বিবিধ প্রকার ফল
আর চা দুধ মিহরি লইয়া জনকরেক পরিচারক আসিল,
আসিয়া সভাস্থ লোকদিগকে তাহা পরিবেশন করিতে
লাগিল। সভ্যেরা খাইতে খাইতে কহিতে লাগিলেন,
কমডোরের অভ্যর্থনায় নিমিত্ত এই গৃহটি বিশেষরূপে
নির্ম্মিত হইয়াছে, আহা ইটি কি সুন্দর গৃহ, আমাদের
দেশে অনেক সম্ভ্রান্ত বৃন্দিক বাগিচারার্থে আসিয়াছিলেন
বটে, কিন্তু সম্ভ্রান্ত এতাদৃশ সুন্দর বাটী কাহারও
নির্ম্মিত প্রস্তুত করেন নাই। কেহ বলিলেন, এখানকার
নদীর জল অধিক হইবে। আমেরিকানদিগকে সমুদ্রে
নিবার নিমিত্ত এইরূপ কতজন্মে কতকথা কহিতে লাগিল।
কিন্তু কাণ্ডেন আদমস্ তাহাদের কথাতে কণপাত
করিলেন না, তাহারা যত কমডোরকে তথায় অচনিবার
নিমিত্ত তাহাকে সাধ্য সাধনাকরে, তত তাহাকে তত্রস্থ
নদীর জল মানরজুর দ্বারা পরিমাণ করিতে কহে, ততই
তিনি উরাগা নানা বিপদের আঁকর বলিয়া তাহাদের
সমস্ত কথা কাটিয়া দেন। কাণ্ডেন আদমসের সহিত
এই রূপ বাগ বিতণ্ডা হইতেছে, এমন সময়ে যুবরাজ
তিন জন সম্ভ্রান্ত লোকের সহিত বহির্গত হইয়া কহি-
লেন, আমি আপনাদিগের অধ্যাক্ষের প্রেরিত পত্র
খানি দিন চারি বার পাঠ করিয়াছি, কিন্তু এরূপ কঠিন

প্রভাব, আমি আপেকা উক্ত পদাতিবিক্ত রাজকর্মচারী
দিগের সহিত পরামর্শ না করিয়া সহস্র। এবিষয়ের
অভ্যন্তর দিতে পারি নাই; সমুটি দ্বারায় তাহাদিগকে
এই উরাগাতে প্রেরণ করিবেন, আপনারা তিন দিন কাল
বিলম্ব করুন। তৎপ্রবণে কাণ্ডেন আদমস্ কহিলেন,
মহাশয় আপনাদিগের নমোদিত ভাব কি তাহা প্রকাশ
করিয়া বলুন, অন্ত আশা দিয়া ক্রমবধিক মন্দিত্ব রাখা
উচিত নয়, ক্রমে প্রবল হয় হইতেছে, উপমাগরে আর
অধিক কাল জাহাজ রাখিলে বিপদ উপস্থিত হইবার
সম্ভাবনা আছে, বিশেষ অনেক দিন আমরা স্বদেশ পরি-
তাগ করিয়া আসিয়াছি, জেপানের সহিত কতদূর পর্য্যন্ত
সন্ধি হইল সেসংবাদ এত দিন পর্য্যন্ত প্রেরণ করা হয় নাই।
কনডোর এজন্য বড়ই চিন্তিত আছেন, তিনি আমেরিকাতে
শীঘ্র একখানি জাহাজ পাঠাইয়া দিবেন, তাহা হইলে আর
যে যে জাহাজ সেখান হইতে আসিতেছে, তাহা আর
আসিবেনা, অতএব এবিষয় বাহাতে শীঘ্র নিষ্পত্তি হয়
তাহা আপনারা কখন, নতুন। ভবিষ্যতে মন্দ বই ভাল
হইবে না। এইরূপ কথোপ কথন হইলে পর, সুবরাজ
অমাত্য বর্গের সহিত বিনীত ভাবে আদমস্কে সন্মতিকার
করিয়া প্রস্থান করিলেন।

ভেগেলিয়া নামক জাহাজে কাণ্ডেন আদমস্ উরা-
গাতে গিয়াছিলেন, সভা তৎকরণান্তর স্বস্থানে প্রস্থান
করিবার উদ্যোগ করেন, এমত সময়ে প্রবল ঝটিকা
উপস্থিত হইল, বায়ুর প্রভাবে উপমাগরের সমস্ত বারি
উৎফলিত হইয়া প্রবল তরঙ্গহিম্মাল উঠিল। তৎদর্শনে
কাণ্ডেন আদমস্ জাহাজে আর চড়িলেন না, বিলম্ব

করিয়া নিকটস্থ স্থান সকল নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন । কিন্তু কিছুই দেখিতে পাইলেন না, জেপানের কর্তৃ-
পক্ষ সভাপতির পক্ষ ঘন বস্তুর ঘবনিকা দ্বারা
এমনি আবরণ করিয়াছিলেন যে উক্ত আটকিটের
অধোভাগে কি আছে, হঠাৎ তাহা দৃষ্ট করা হইল, কেবল
উচ্চ উচ্চ পাহাড়ের উপরিভাগে বহুসংখ্যক স্ত্রী পুরুষ
বালক বালিকাগণ আমেরিকানদিগকে দেখিবার নিমিত্ত
যে বাগ্ন হইয়া ধাবমান হইতেছিল, তিনি শুদ্ধ তাহাদিগকে
দেখিতে পাইলেন । বাগ্ন স্থির হইলে, আমস্ অন্সমজি-
লোকদিগের সহিত জাহাজে আসিবার উপক্রম করি-
তেছিলেন, এমন সময়ে আমেরিকানদিগের পায়ে যে
সকল অবশিষ্ট খাদ্যসামগ্রী ছিল, জেপানিদের। দেশীয়
বীতরুসারে তাহা একখানি কাগজে মুড়িয়া তাঁহার হস্তে
প্রেরণ করিল, কাগজের সাহেব ঐ উচ্ছ্রীষ্ট সামগ্রী সকল
গ্রহণ করিতে অগ্রদ্ব গেলেন না, যে দেশের যে আচার,
এই বিবেচনায় তাহা সমাদর পূর্বক লইলেন । তিনি
ঘাটে আসিলে জেপানিদের সমাদর পূর্বক তাহাকে
অপনাগিরের নৌকাতে লইয়া জাহাজের সন্নিদানে
বাইতে চাহিল, কিন্তু পাহাে কিছু ধূর্ততা করে, এই
ভয়ে তিনি জাহাজের নৌকায় আরোহণ করিলেন না,
অন্সমজিলোকদিগকে তদ্বার। পাঠাইয়া আপনি ভেঙে-
নিয়ার ক্ষুদ্র একখানি বোটের দ্বারা গেলেন । তাহার অন্স-
মজি লোকেরা জেপানি নৌকার সৌন্দর্য্য, এবং তৎশিল্প-
করদিগের শিল্পনৈপুণ্য দেখিয়া বড়ই আশ্চর্য্যান্বিত
হইল বটে, কিন্তু তাহার দাঁড়ের একটি বিশেষ অংগভেদ
দেখিয়া তাঁহাদের সমুদয় কৌতুহল ভয়ের নিমিত্ত হইল,

মানুষের মাথার খুলিতে দাঁড় করিয়া মানবে যে নৌকা বহন করে, এবাংগার তাহারা জন্মাবধি কখন দেখে নাই। জেপানী নৌকাতে ইহা প্রথম ইঙ্গিয়া তাহারা সাতিশয় শঙ্কিত হইল।

পরদিন প্রাতঃকাল পর্য্যন্ত তেঙেলিয়া জাহাজ উরাগাতে অবস্থিতি করিতেছিল, ইত্যবসরে ইজাইমেন নামক একজন প্রধান রাজকর্মচারী তথায় উপস্থিত হইলেন। পূর্বে যখন আমেরিকানেরা জেপানে আগমন করেন, তখন ঐ ব্যক্তি বিশেষ আত্মীয়তা প্রকাশ করিয়া তাহাদের সহিত সদ্ভাবহার করিয়াছিলেন। কাগেন আদম্‌স তাহাকে দেখিয়া সাতিশয় বিস্ময়াপন্ন হইলেন। কারণ এবারে তাহার সহিত সাক্ষাত না হওয়াতে, তিনি মনে করিয়াছিলেন যে জেপানগবর্ণমেন্ট তাহার ভূতপূর্বকর্ম অনুমোদন করেন নাই, হয় তো তাহার অপমান করিয়াছেন, নতুবা তিনি মান সম্মান বক্ষার্থে জেপানের রীতনুসারে আত্ম-ইত্যার দ্বারা সামান্যিক সূখে জলাঞ্জলি দিয়াছেন। বাহা ইউক, আদম্‌স বিনীতভাবে তাহাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, মহাশয়! এখানে আসিয়া পর্য্যন্ত আম-বা আপনকার সহিত সাক্ষাতের প্রতীক্ষা করিতেছি, এ-দিন আপনার আসা হয় নাই কেন? তিনি উত্তর করিলেন, কিছুদিন আমি শারীরিক অসুস্থ ছিলাম, পরে রাজকর্মের এমনি গুরুতর ভার আমার প্রতি পড়িয়াছিল যে আমার মাথা চুলকাইবার অবকাশ ছিল না, আজি আমার কিছুপ্রভাতা রজনী, তোমাদের সহিত সাক্ষাত হওয়াতে আমি যে কি পর্য্যন্ত আশ্লাদিত হইয়াছি তাহা বলিতে পারি নাই। এইরূপ শিষ্টাচার এবং প্রণয় প্রদর্শন

করাতে, তিনি যে একজন প্রকৃত ভদ্রলোক, কাপ্তেন আদম্‌সের ইহা স্তির উপলব্ধি হইল। কথোপকথন করিতে করিতে ইজাইমেন আদম্‌সকে আরও কহিলেন, সামান্য বিষয়ের নিমিত্ত আপনারা এত ব্যস্ত এমং উৎকণ্ঠিত হইরাছেন কেন? জেপানের সম্রাট আপনাদিগের প্রতি যে বিশেষ অঙ্গা ভক্তি করেন, ইহা আমি উত্তররূপ জানি, কমোডোরের মানস সিদ্ধ হইলে তাহার কোন মনেহ নাই। তবে কিনা রাজ আজ্ঞা, অধ্যক্ষ মহাশয় উরুগাভে একবার জামিলে যদি সম্রাট সমুদ্র তল, তবে তাহাতে তাঁহার ক্ষতি কি? আপনি কমোডোরকে এই কথাগুলি বিশেষরূপে বুঝাইয়া দিউন। আমি আপনাদিগের হিতাশ্রমী, কনাই একজন উৎকণ্ঠিত রাজ-কর্মচারীকে প্রেরণ করিয়া যাহাতে কমোডোর পত্রের উত্তর পান তাহার বিচিত্র চেষ্টা করিব, সম্রাটকে অনুরোধ করিলে বোধ হয় একথার আনুগত্য হইবে না। এই কথা বলিয়া তিনি বিদায় হইলেন। কাপ্তেন আদম্‌স এই সময়ান লইয়া ভেৎসেলিয়া নামক জাহাজ জেভো উপসাগরের অভিমুখে চালাইতে লাগিলেন, আমেরিকানদিগের আর আর জাহাজ যেখানে ছিল, তিনি সেই স্থানেই আসিয়া উপস্থিত হইলেন।

কাপ্তেন আদম্‌সের বিলম্ব হওয়াতে কমোডোর বিবেচনা করিতেছিলেন, উরুগাভে যাইয়া বুঝি তাঁহার কর্ম সিদ্ধ হয় নাই, অতএব এত দিন যে তথের কথা জেপানীদিগকে বলি যাইতেছে, তাহা এখন নিষ্পাদন করাই বিধেয়। এই বিবেচনায় যেস্থানে গেলে মাস্তলের উপরিত্যাগ হইতে জেভো নগর দেখা যায়, যেস্থান হইতে

জাপানের রাজধানীর যকৌশনি পল্লীরূপে প্রসিদ্ধ হইয়া থাকে। তিনি সেই স্থানে জাহাজ সমূহ স্থানান্তরীকৃত করিয়াছেন। সর্বসময়ে সাবধান করিবার নিমিত্ত জাহাজেব অস্ত্রাদি যত্নসূচক সকল অগ্রসর হইয়া স্থানে স্থানে জনপরিদর্শন করিতেছিল, মাঝিকগণ রাজকীয়র অনতিদূরে জাহাজ সকল মসর করিবার উপক্রম করিতেছিল, এমন সময় কাণের আওয়াজ ভেঙেছিল। জাহাজ নইয়া ওখায় উপস্থিত হওনান্তে সুবরাজের নিম্নলিখিত পত্রখানি কমোডোরের হস্তে দিলেন।

মহামহিম জীযুক্ত কমোডোর পেরি আমেরিকান

জাহাজাধ্যক্ষ মহাশয় মহিমান্বিতক ।

সদিনয় নিবেদনবিদ্যে মহাশয়! আপনক র প্রেরিত পত্রখানি পাঠ করিয়া আদ্যোপান্ত তাবৎ বিবরণ অবগত হইলাম। প্রত্যুত্তরে নিবেদন করিতেছি, ইউরোপ এবং আমেরিকার রাজ্যসমূহে জেডে, নগর যোগ্য আপনকার বিহিত ঘটে, কিন্তু জাপানদেশীয় প্রথানুসারে আপনকার সেখানে করিয়া উচিত বোধ হইতেছে না, কারণ বিহিত বিধানে মহাশয়কে অভ্যর্থনা করিবার নিমিত্ত এখানে একটি গৃহ নির্মিত হইয়াছে, আপনি যেরূপ উচ্চপদাভিষিক্ত, তরূপ উচ্চপদস্থ ব্যক্তি সকল আপনকার সম্বর্জন করিবার নিমিত্ত নিযুক্ত হইয়াছেন, তাহার। মহাশয়ের মহত্ব প্রযুক্ত বিশেষ সমাদর করিয়া থাকেন। সম্রাট বিদ্যেজীলোকদিগের কি রীতি নীতি তাহা অবধান করিয়া দেখেন নাই, একেবারে আমাদিগকে উরাগায় প্রেরণ করিয়া এই আক্রা দিয়াছেন, তোমরা এই স্থানে আমেরিকার মাঝিক অধিপতির সহিত সাক্ষাত

করিয়া বিশেষরূপে তাহার সম্মান করিবে, আর যে কোন বিষয়ের তাহার অভাব হয়, তাহা সাধ্যমতে সংপূর্ণ করিবে, এই রাজআজ্ঞা অবহেলন করা বোধ হয় আপনকার মহত্বের কৰ্ম নয়। মহাশয়! আপনি অতি বুদ্ধিমান, জ্ঞানবান, এবং ক্ষমতাপন্ন ব্যক্তি, অধিক আপনাকে কিনি লিখিব, স্থিরচিত্তে বিবেচনা করিলে অন্যায়সেই আপনি এবিষয়ের কর্তব্যাকর্তব্য স্থির করিতে পারিবেন, তাহাতে আমিও জেপান গবর্ণমেন্টের প্রকৃত গৃহমধ্যে আপনাকে আমাদিগের সহিত সাক্ষাত করেন, ইহা শুদ্ধ রাজার ইচ্ছা নয়, আমাদেরও সম্পূর্ণ ইচ্ছা, বোধ হয় একসময় আপনি আমাদের নিষ্কলা করিবেন না। পরমেশ্বরের আশীর্বাদে মঙ্গল করুন, আপনি তাহার কুপায় সম্পূর্ণ বিশ্বাস স্থাপন করিয়া পরম সুখে কালযাপন করুন, কিম্বদিক নিবেদনসিদ্ধি ২৭ মে সাংরওফ্টস্ ১৮ ৫৪।

নিভান্তানুগত ভূতা

শ্রীহেমাঙ্গী ডেকাকু নোকামি।

কারণ আদমস্ সন্দ্বিষ্ট হইলে তাহার কিয়ৎকণ বিলম্বে ইত্যাদি মনে তাহার ~~শ্রীহেমাঙ্গী~~ ইয়া তখন উপনীত হইলেন তিনি কহিলেন, উক্ত গদ্যভিযুক্ত রাজ কর্মচারী কন্ডোরকে যে পত্র লিখিয়াছেন তাহার প্রত্যুত্তর লইতে আমার আসা হইয়াছে, কিন্তু তাহার কথার ভাবে সে অতি প্রায় নোপ হইল না। কন্ডোরের উরাগা যাইতে ইচ্ছা আছে কিনা এখানে তিনি একথা জিজ্ঞাসা করিলেন, তাহাতে জাহাজস্থ অপরলোক সকল প্রত্যুত্তর করিল, না তাহার ইচ্ছা নাই, অতএব তিনি ক্ষুদ্র চিত্ত হইয়া আমেরিকানদিগকে কহিলেন, নাই

আর কিছুকালে তোমাদিগের কিঞ্চি বিকল্পে
অভাব আছে তাহা বল, রাজ জাহাজে সৈ সকলি
সংগৃহীত হইবে। আমেরিকানরা বলিল আমাদের বিশেষ
অভাব কিছুই নাই, আমাদের মধ্যে কেবল জল ও
কাষ্ঠের প্রয়োজন হইয়াছে, ইজাইমেন প্রত্যুত্তর করি-
লেন, জেপান গবর্ণমেন্ট পরমাচ্ছানের সহিত ঐ দুই
বস্তু আপনাদিগকে দিবেন তার আবার একটা কথা কি,
কিন্তু নিয়ম এই উরাগা তিন অন্য কোন স্থানে বিদে-
শীরা উহা পার না। আমেরিকানদেরা কহিল, উরাগা
হইতে আশ্রয় বা অন্য কোন স্থান হইতেই আশ্রয়,
ভাহাতে কিছু আইনে যায় ন, পরন্তু জল ও কাষ্ঠের
অনুরোধে কমডোর যে উরাগায় যাইবেন এমন আপনি
মনেও করিবেন না, জেপানিদেরা যেহেতুপূর্বক যদি
আমাদিগের জাহাজে জল আনয়ন না করে, তবে তিনি
সমুদ্রতীরে লোক প্রেরণ করিয়া পরে জল আনয়ন
করাইবেন, তার জন্য আবার ভাবনা কি।

ইজাইমেন দেখিলেন, জেডে নগর ঘাইতে কমডোর
দ্বির প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন, প্রত্যুত্তরকে সহসা স্রবীভূত করা
যে রূপ দুঃসাহ্যী কর্ম, কথার দ্বারা তাহার মনকে কোনল
করিয়া উরাগাতে আনা দেই রূপ সুকটিন হয়, অতএব
যে স্থানে তাহার জাহাজ সকল নথর করা ছিল,
তাহারই সম্মুখবর্তী জকুহামা গ্রামে জেপান দেশীয়
বসিন্দারদিগের সহিত তাহার সাক্ষাত করণের স্থান নিরূ-
পণ করিলেন। তিনি কমোডোরকে বলিলেন মহাশয়! রা-
জধানী জেডো নগর এগান হইতে চারিক্রোশ দূরে আছে,
আর আপুনি আগ্রসর হইয়া যাইবেন না, আপনি দশদিন

কাল দিনর ককুন, এইখানেই আমরা আপনকার সম্বন্ধ-
নার্থ গৃহ নির্মাণ করিয়া বধ্যবিধানে অভ্যর্থনা করিব।
কমোডোর এই প্রস্তাবে সম্মত হইলেন, জেপানীয়েক
অবিলম্বে বহুসংখ্যক লোক নিযুক্ত করিয়া কাঠময় গৃহ
নির্মাণ করিতে প্ররম্ব হইল। কর্মচারিরা যে ব্যস্ত হইয়া
কর্ম করিতেছে, অধাক্ষ মহাশয় ইহা জাহাজ হইতে
দেখিতে লাগিলেন। কথায় ওতায় নাই, তাহাদের
নাম যদি কিছু শুঠতা থাকে, তিনি নৌকা প্রেরণ করিয়া
জাহাজের নিকটস্থান, তাহার সম্মুখবর্তী উপসাগরের
কূল কছ পাহার ইহা পরিদৃষ্ট করিতে লাগিলেন। তাহাতে
তাহা মন্দ স্থান নহে, ইহা নিরূপণ হইলেন, তিনি উহার
এককোশ দূরে জাপানি জাহাজ সকল মাত্র রাখিয়া
থাকিলেন, আর এককোশ পর্য্যন্ত উপসাগরতটের
সম্মুখস্থানে এক একটি কামান বসাইলেন, কাণ্ডের আদ-
মসমূহ কখন তাহাবন্দী হইয়া নূতন অটালিকাটি
কি পর্য্যন্ত হইতেছে তাহার তত্ত্বাবধান করিতে লাগিলেন,
আর নিকটস্থ দ্বীপে নিয়ন্ত্রণ করিলে নাবিক এবং জাহাজ
অপার বহু সকল নির্দিষ্টে আন, যাইতে পারে, তাহাও
কর্মচারিদিগকে নির্গাইরা দিলেন।

দ্বাদশমাসের অষ্টম দিবস সত্য দিন নিরূপিত হইল,
ইতিমধ্যে কর্মচারিরা কাঠনির্মিত গৃহটি সম্পূর্ণ করিল।
ইহার পূর্ন দিবসে জনকয়েক প্রধান ব্যক্তি একত্র হইয়া
নিকটে সত্য দিন সমারোহ সম্পন্ন হইবে, তাহা স্থির
করিতে লাগিলেন। ইজাইমেন আমেরিকান জাহাজ
সমূহের মধ্যে কয়জন প্রধান কর্মচারী আছেন, তাহা-
দিগের প্রত্যেকের নাম কি. উপঢৌকন দিবার নিমিত্ত

এসমুদায় অনুসন্ধান করিতে লাগিলেন। তাহাতে
 আদম্‌স তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, সন্ধিকরণার্থ জৈপান
 গবর্ণমেন্ট যে কমিসনার নিযুক্ত করিবেন, তিনি মহা-
 রাজার প্রায় তুল্য লোক কি না। ইজাইমেন উত্তর করি-
 লেন, মর্যাদায় তিনি প্রায় দ্বিতীয় লোক বটে, কিন্তু
 পূর্বে যে চারিজন উচ্চপদাভিষিক্ত লোকের কথা বলি-
 য়াছিলেন, তাঁহার আদিবন। এবং যুবরাজ আর এক-
 জন প্রধান লোককে সঙ্গে লইয়া সভায় সমাগত হই-
 বেন। অতঃপর পুরস্কার সাহুরাগ প্রকাশ করিয়া যথা-
 বিধানে বিনীত ভাবে সভা ত্যাগ করিলেন। ইজাইমেন
 এবং তাহার পারিষদ বর্গ বিদায় লইয়া গমনকালীন
 এই কথা বলিয়া গেলেন, যে কল্যাণ আমরা একজন রাজকন্যা
 চারিকে পাঠাইয়া কনোডোর এবং তাঁহার আদিবন
 স্থলে আনয়ন করিব।

চতুর্থ অধ্যায় ।

কোম্পানী উদ্ভিদগণের পশ্চিম দিগ অবধি পশ্চিম দিগ
যান্ত্রিক কলগুলি নগর এবং প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড গ্রাম আছে,
তাহার মধ্যে মধ্যে পক্ষতাকার উচ্চ ভূমি, পুরোনো
জেপানীয়েবা। এই ভূমির উপরিভাগে মাঝি মাঝি কামান
নগর আছে, কিন্তু সে কামান সকল ক্ষুদ্র, সে গৃহের উ-
পরিভাগে বসান থাকে সে গৃহের গাথনি বড় শক্ত নাই।
একটি উদাহরণে যেত ভয়ানক বাস্তবিক গুণ ভয়ানক
নাই। নগর সকলের মধ্যে কানাগারা নামে একটি প্র-
কাণ্ড সহর আছে, এই সহরে জেপানীয়েব কনিস্টেবলের
প্রথমে সজ্জির প্রস্তাব করেন, যদি জাহাজ নগর পরিদর্শন
করে সে স্থান সুবিধা জনক হইত, তবে কনিস্টেবলও তাহা
মনোনীত করিতেন নন্দেহ নাই। জাহাজান্বিত সজ্জি
সদস্যগণের হওয়াতে সেখানে জাহাজ লইয়া বাইরে
গায়ে কোন অসুবিধা ছিল না, এই গৃহটি দেবদাস, কাঠে
নির্মিত, তাহার ছাদ তদ্দেশজাত পিক নামক একপ্রকার
কাঠে প্রস্তুত হইয়াছিল, যে মালানে লোক সকল উপবে-
শন করিয়া কথোপকথন করিত, তাহা দীর্ঘ প্রায় পাঁচ
ফিট, এবং তাহার চতুর্পাশে অনেকগুলি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র
একোষ্ঠ ছিল। পীতবর্ণ ঘণ্টিকা দ্বারা গৃহের মধ্যস্থ

নটি পৃথককৃত হইয়াছিল, ঐ যবনিকার উপরিভাগে কাল
 কাল ভোর। থাকিতে দেখিবার বড় সুন্দর হইয়াছিল। গৃহের
 বহিস্থিত প্রাচীর কৃষ্ণবর্ণ বস্ত্রে মণ্ডিত, তাহার মধ্যে মধ্যে
 লোহিত বর্ণের রেখা, আর এক একটী মনোরম হস্ত
 তাহার স্থানে স্থানে চিত্রিত হইয়াছিল। ভৈরব দে-
 শেরে তৃতীয় কমিসনার ইজাওয়া নিনাসাকাই নগরের অ-
 ধিপতি ছিলেন, তাহার গৌরবার্থে ঐ সমস্ত হস্ত চিত্র-
 দ্বারা চিত্র করিতে অনুমতি করেন, কিন্তু আমেরিকানদের
 এতদতিপ্রায় বুঝিতে পারে নাই, আনাদিগের অমঙ্গল
 ভৈরবানীয়েরা প্রাচীরে এই চিত্র চিত্র করিয়াছে, তাহার
 মনে মনে এরূপ কল্পনা করিয়াছিল।

নার্সমাগের অষ্টম দিবসে প্রাতঃকালেই সভার দিন
 নিরূপণ হইয়াছিল, এজনা উপসাগরের তটে কোলাতলের
 আর পরিসীমা ছিল না, কর্ণদারিরা নৌল, পাত, লোহিত
 বর্ণ প্রভৃতি নানাবর্ণের পঙ্খদ্বারা গৃহ সুসজ্জিত
 করিতেছিল, কোন স্থানে স্বর্ণ, কোন স্থানে রৌপ্য,
 কোন স্থানেও বা অন্য অন্য পাত্তর স্তম্ভাদি বসাইয়া
 বিবিধ অলঙ্কারে গৃহটি অলংকৃত করিয়াছিল। প্রবেশ
 দ্বারের দুইদিকে কৃষ্ণবর্ণ পতাকা ঝুলিতেছিল, তাহার মধ্যে
 মধ্যে অলঙ্কৃত লোহিত বর্ণের ভোর। ছাদের নিম্ন
 ভাগে ঝাড় লঠন টাঙ্গাইল লোকে যেরূপ গৃহ শোভা করে,
 ভৈরবানীয়ের সভা গৃহের মধ্যে তেমনি এক একটী
 লম্বা সুচিকন কাষ্ঠ দণ্ড ঝুলাইয়া দিয়াছিল, ঐ দণ্ড
 শাখা প্রশাখা দ্বারা সুসজ্জিত করিয়া কোন স্থানে
 হীরার অলঙ্কার, কোন স্থানে বা স্বর্ণ রৌপ্য মতির আভ-
 রণ স্থাপন করিয়াছিল, এক এক খালি অলঙ্কারের নীচে

অতি কৃন্দর গজের আঁখি দোলারমান হইতেছিল।
গৃহের সম্মুখ বারান্দা উপস্থিত বস্তুর ব্যবহার দ্বারা
আচ্ছাদিত, তাহাতে বসিবার কোন বস্তুই দৃষ্টিগোচর
হইত না, চিক যেন কারী গৃহের উঠানের ন্যায় উহা ভয়-
স্বর দেখাইতেছিল। কমডোর আহাজ হইতে এই সকল
বিষয় দেখিয়া বিস্ময়াপন্ন হওত তথাকালস্থানের অতি-
প্রায়ে একজন কর্মচারিকে পাঠাইয়া দিলেন। তিনি
আসিয়া তথা জিজ্ঞাসা করিতে জেপানিদের নহিল,
পাশে বহুলোক জনতা হয়, তিনিই এই সকল
পদ্য দেওরা হইয়াছে, ইহা সভার মান্য সূচক অপ-
মান সূচক নহে। তৎপরে কমডোর প্রবর্তার লোক
পাঠাইয়া বলিয়া পাঠাইলেন, এমন সম্মানের আবশ্যক
নাই, যবনিক উন্মোচন না করিলে আমি ভূমি স্পর্শ
করিব না। কি করে, তিনি তাহা বলিলেন অগত্যা জেপানি
দ্বিগকে তাহাই করিতে হইল।

অনন্তর নির্ধারিত লোক সকল বিশিষ্ট বর্ণের নিশান
তুলিয়া সারি সারি দণ্ডায়মান হইল, ব্যাকবেরা সুশৃ-
ঙ্খল পূর্বক উপবেশন করিয়া মনো-হর বাদ্য করিতে
নাগল, গাইকেরা দম্ভ প্রকাশ পূর্বক হুকার শব্দ
চাল ও তববারি খেলিতে লাগল, সকলোই মস্তক
ধূসর এবং লোহিত বর্ণের উজ্জীব, গাত্রে অনুচ্ছল পান বর্ণ
পরিচ্ছন্ন, ঐ পরিচ্ছদের স্থানে স্থানে এক একটি ক্ষুদ্র
পতাকা উদ্ভিত, সকলেরই হাতে সুতীক্ষ্ণ এক একখানি
বর্ষা। পূর্বে গোঁড়িচামা নামক দাঙ্গাৎ করন সময়ে কখন
ভোর যে রূপ মৈনোর আঁচরণ দেখিয়াছিলেন এবারেও

সেমা ছিল না, তাহারিও আবার একত সুশিক্ষিত সিপাহী
নহে, যে সকল উচ্চ পদাভিষিক্ত রাজ কর্মচারী এই
রাজ কর্মোপলব্ধি সমাগত হইয়াছিলেন, তাহারি
কিছুরেই অকুচক কথকরা। অতঃপর নিকটবর্তী নগর
এবং গ্রাম সকল হইতে সহস্র সহস্র লোক আসি হইয়া
সমাগিতে আসিয়া সমাগতদের পরিসীমা বাড়ি, লোক জন
তারি উপসংগতের ভিটে একেবারে পরিপূর্ণ করিল, লোক
গণ যেন সভা গৃহে অবশ্য করিতে না পারিলে, রাস্তা
প্রহীণগণ সমাগতদের এমন নত করিতে লাগিল। কুড়ি
তিন জন অধ্যক্ষ প্রধান মৈনিক প্রকৃষাদ্বারোদয়ন করিত
ইতস্ততঃ উপসংগতের মাগিলেন, তাহি কাকিলে লোক
করিতে হইবে কর্মকারিসিগকে কখন দেখাইয়া, কখন
কখন বা উপস্থিত লোকসিগের বিশেষত্ব ছাড়া লোক
বিব্রিত করে।

কিন্তু ক্ষণপরে সদীপ্ত কালগয়, নগর হইতে এক
কানি একাও বজরা আসিলে সেপান লোকের
কানির সৌন্দর্যের কথা লিখিল, উহার তুল্য অপর
উপরিভাগ পর্যন্ত সকল স্থানে বিচিত্রকর্মে চিত্রিত
তদ্রূপে আবোদীলোদেহ, সে পুত্র বসিয়াছিল, তাহার
চতুঃপার্শ্বের সকল উল্লি পূর্ণ এবং সে পুত্র পুত্র মণ্ডিত
ছাদেবর নিম্ন ভাগের কান স্থানে সোমার পুত্রের
কান কানকার পরিচি নির্মিত হইয়াছিল, অতিশয়
মণ্ডিত কানকে ভিতরট, সদস্য মোতা, গাভার তিনটা
মাসতুলে তিনটা রক্তবর্ণ পাতা উড ডীঘনাম হইতেছিল।
লোক সকল ছাদের উপরি ভাগে বসিয়া যেন পদমুখে

কারেরা বিশেষ শিল্প জৈপনা প্রকাশ করিয়া তত্ত্বপরি
অতি মনোহর বসিবার আসন প্রস্তুত করিয়াছিল। ঐ
তরুণী জৈপান গবর্ণমেন্ট সংক্রান্ত, উক্ত পরাভিষিক্ত
লোকদিগের ব্যবহারার্থ নির্মিত, কমিসনারেরা উহার
দ্বারা কাক্‌হান্না মগরে উপনীত হইলেন। উপসাগর
তইতে তট প্রস্থ দূর আছে, এমন স্থানে উহার প্রবেশ
নিষিদ্ধ করিয়া কয়েকখানি ক্ষুদ্র লৌকিতে আরোহণ
করিলেন। দেখিতে দেখিতে বহু সঙ্খ্যক জৈপানি লৌকা
প্রাপ্ত হইল, সকলের আকার সমান নহে। কোম
কোম, কৌ, কোম খান ক্ষুদ্র, কোম খান বা মধ্যবিধ
আকারের, সকলেরই প্রান্তদেশে বিবিধ বস্তু প্রদেয়
অর্থাৎ কাপ, কুলি প্রভৃতি, এবং প্রান্তদেশে প্রদেয় ন
হওয়া লীগান লিশান উক্তপ্রভৃতি দ্রব্য পার্শ্বকার,
কৌ, কৌমখান, সমুদ্রের দূর প্রদূর নহে, ম. ঠাতি প্রদেশ
পার্টে প্রদেয় হইয়াছে। তেহু দ্বাই, দ্বাই মগনের অপ্রতিভ
ছিল, তাহা এখন প্রতিষ্ঠিত হইয়া উঠিল।

[illegible]

১৯৪১ খ্রিঃ অব্দে ১৯৪১ খ্রিঃ কালীন যে পরিচ্ছেদ তাঁহার।
 সচরাচর পরিধান করিয়া থাকেন, সেই মনোহর পরি-
 ক্ষেপণ পরিহিত হইয়া পিস্তল এবং তরবারি হস্তে
 লগত যেন সন্নিহিত সহবর্তী হন, নাবিকেরা দীর্ঘবর্ষ
 পা জামা পরিধান এবং কোতুরা প্রভৃতি বস্ত্র পরিধান
 করিয়া বেশ বন্দুক কিরিচ এবং পিস্তল প্রভৃতি অস্ত্র শস্ত্র
 দ্বারা সজ্জিত হয়। অস্ত্র বিহীন কোন লোক বেশ
 পরিহিত হইয়া পিস্তল বন্দুক এবং বাক্সের ডিবা সকল
 পরি সজে থাকে, এমন কি আত্মনিগের বেশ চূড়ান্ত এবং
 রণসজ্জা দর্শনে জাপানীরা দর্শকসমূহের নিমোহিত ও
 শঙ্কিত হইত।

বেলা সাতটা এলাদশ ঘণ্টার সময় সৈন্যপতি বাকা-
 নার্ন, পাঁচ শত সৈন্য ছুই শত নাবিক এবং অপর এক
 শত লোককে সঙ্গে লইয়া সচরাচর পরিহিত কাপড়
 পরিহিত করিলেন, তাহার। তাঁহাদের পরিহিত হইয়া
 নৌকাগুলি সারি সারি পাখি ক্রমে ক্রমে ক্রমে
 অবরোধ করিল। প্রথমে সৈন্য পদে নাবিকগণ তৎপরে
 অপরাপর লোক সকল রণ সজ্জায় সজ্জিত হইয়া সারি
 সারি দণ্ডায়মান হইলেন, দর্শকগণ তাঁহাদের শোভা
 দেখিয়া একেবারে বিমোহিত হইল। আমেরিকান
 সৈন্যপতি নৌকা সকলকে ছুইভাগে বিভক্ত করিয়া
 ঘাটের দুইদিকে রাখিলেন, মধ্যভাগ ফাঁক রাখিল। পাঁচ
 হাটান জাহাজের এক খানি সুরমা বজরাতে কনোডোর
 অবরোধ করিয়া তৎপরে ঘাটে উপস্থিত হইলেন, তিনি
 উপস্থিত হইবানান মাসিডোনিয়াম জাহাজ হইতে
 উচ্চতর সম্মান সূচক সম্ভরণটি তৎপ হইল, বাঙ্গালার

সুমধুর তালে বাঁদ্য করিতে লাগিল, কনডোর করধনি করিয়া আপনাদের বল বিক্রম প্রকাশ করিল, জেপানীর রাজকর্মচারীগণ অগ্রসর হইয়া তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন, গাভীরা লোক সকল ঘাটাবশি সভা গৃহ পর্য্যন্ত নিশান তুলিয়া ঘাটের দুইপাশে সারি দণ্ডমান হইল। এই সকল লোককে পশ্চাৎ এবং দুই পাশে রাখিয়া কনডোর অনুসঙ্গি লোকদিগের সহিত সভা হই চলিলেন, যাহার উদ্ভূত হইবার কতকগুলি জেপানি সৈন্য রহিত হইয়া বিদ্রোহ ভাবে নমস্কার করিল, পরে অগ্রবর্তী হইয়া ভিতরে লইয়া গেল। কনডোর পূর্বে শিখাই রাখা নাছিল, আমি সভার ভিতর প্রবেশ করিলে যেন জেপানিদিগের সম্মুখে এক বিশিষ্ট তোপ এবং তাহার প্রধান কর্মচারীদের সম্মুখে সপ্তমশী তোপ হয়, অতঃপর এই আশ্চর্য্যময় আমেরিকানেরা পাউহাটন এবং অন্যান্য জাহাজ হইতে তোপধনি করিতে লাগিল।

পূর্বে গোরিহাটন নগরে যাইয়া কনডোর সেকপ গৃহসমূহ দেখিয়াছিলেন, অতঃপর কর্মচারিদিগের সহিত প্রথমে প্রবেশ করিয়া এবারেও সেইরূপ দেখিলেন। অর্থাৎ দালানটা সুদীর্ঘ এবং প্রশস্ত ছিল, মেঝাটো অত্যন্ত খড়ের মাছুর বিছান, তদুপরি একখানি উৎকৃষ্ট পাশিটা পাড়া ছিল, দেওয়ালের চতুষ্পাশ্বে প্রায় চারি-চাতি প্রশস্ত এবং লম্বা একখানি অতিসুন্দর সোফা আসন লাগনি, তাহা রক্তবর্ণ পটবস্ত্রের দ্বারা আচ্ছাদিত, তাহাতে সভারা অনায়াসে হেলান দিয়া বসিতে সক্ষম হইলেন, তাহাদের সম্মুখে ভাগে যে একটি সুদীর্ঘ টেবল অর্থাৎ মেজ ছিল, তাহাও ঐরূপ বস্ত্রে সজ্জিত। গৃহের

ক্রেপান।

সমুদ্রের জাহাজগুলিতে কাঁচের কপাট, তাহাতে সুচিকন
উত্তমাক বস্ত্রের এক এক পরদা, স্বচ্ছতা প্রযুক্ত তত্ত্বা
বিশিষ্ট আলোক জ্বলিতেছিল, ঘরটি নিত্য উত্তম এবং
শীতল নহে, স্থানে স্থানে জ্বলন্ত পাতে পাখুরিয়া কপা-
লার আশ্রয় থাকিতে বাহ্যিক গের শীতল বায়ু নিষেধিত
হইয়াছিল। কিন্তু ঘাটে বস্ত্রের ভিত্তি নিষিদ্ধ হইয়াছিল,
কেশিরা আশ্রিত হইয়া। কেহই মুক্তি পাইলেন।
কেনন করিয়া। ছাদ তাহা দেখা, পর্বত, সমুদ্র
প্রাচীর বস্ত্র হইয়া আরিত ছিল, তাহার উপরিভাগে
চিত্রকরের নানাবর্ণের বিবিধ প্রকার পশু পক্ষী
মৃগাদির মূর্তি চিত্র করিয়াছিল, তন্মধ্যে লক্ষ লক্ষ
উত্তোলন করিয়া, সারস পক্ষী, মন তাবের নান অঙ্গ
দেখাইতেছে, একপাতি হাঁহ, মন তাবের নান অঙ্গ
দেখিলেন।

সামুদ্রের উরাগীয় গমন রিমন-পূর্বক একপাতি
গিয়াছে, কনোডোর এবং তদনুসঙ্গিণ জাহাজ পরিগত
করিলে এবারেও সেইরূপ চটল, ত্রুপন, নদী হইলো
দিগের সমুদ্রের রীতি নুসঙ্গে কনোডোর নভার বাসনা
উপবেশন করিলেন, ত্রুপানীয়েরা নগ্ন পায়ের নগ্ন
ইহার পরকণে পাঁচজন উচ্চমাত্রায় কামিনার
নীলানের প্রান্তবর্দি একটা প্রকৌট ইটতে বাঁধিত হই
লেন, শীতাদিগকে দেখিয়া অঙ্গন কর্মচারী সমুদ্র
ত্রুপান হাটু পাতিয়া কনোডোর বসিয়াছিল, যে পদাধ
নত, তদন চটল তাহারা গাজোপান করিলেন।

প্রধান কর্মচারী ঐ কামিনারেরা দেখিতে অতি
বলিষ্ঠ, নীলকান্ত বাক্তি, বিশেষ স্বভাব নটে, কিত বাহা

এই আদার অনুমতি ব্যক্তিদের কখনই মনোমত হইত। তিনি গভীর ভ্রমের বরফ ছিলেন। অকস্মিকের বিনয়কর ভাষায় সন্তোষ প্রকাশ্য বসন্ত, গভীর স্বভাব, অথচ সর্ব বিষয়ে বিনয়তা বাণী, দৃষ্টিমাত্র তৎপ্রতি লোকের আস্থা। তিনি কয়েক জনের ব্যক্তির নাম আইডো, ইমি সমীমা মোলোয়ীকা, বরম প্রায় পঞ্চাশঃ বর্ষ, দেখিতে শুভল বীর, মায় ব্যক্তি, ইত্যেখাই অগেফ তাহার বদনমণ্ডনের অধিক-নমোরম ছিল। তৃতীয় এবং সর্ব কনিষ্ঠ দাম-প্রিয় নিমাস, এই দেশের ভূপাল বরম চতুর্বিংশৎ বর্ষ ব-ভিক মর, সমগ্রে ভিত্তম রাজার মধ্যে তিনি গভীর মর কর্তব্য, অভিন্নর জনক, কোতুঃ এবং বাসা চতুর্বি-প্রিয়। বিদেশী লোকেরা জেপানে আসিয়া তিনি তাহানিগের সহিত বিস্তর আমোদ আক্কেল করিতে, এজন্য শুদ্ধ জেপানীয়েয় নব্বু অগেরিকানের ত হাকে বড় ভাল বাসিত। বিশেষ তিনি অভিন্নর গীত এবং বাসা প্রিয় ছিলেন। রাজকর্মে অক্লিষ্ট থাকিয়াও স্মি-স্বন্দর গীত বাসা শুনিতে, তথাপি দ্বির হটের, বাসা-চ-পারিভেদনী, আশ্রয় আশ্রয় ইত্যপরাপি সফলন করিয়া, তালে তালে নৃত্য করিতেন, সন্তোষ প্রকাশ্য। তাহার বদনমণ্ডন দেখিয়া দৃষ্টিমাত্র প্রলোভিত হইত।

উভেদনাম নামে এক ব্যক্তি কমিসনরদিগের ন্যায় ছিলেন, যদিও তিনি রাজপোষ্ঠে নহেন, কিন্তু অতি মহা-ভক্ত কর্তব্য করিতেন, তাহার কোন মনোহর মাই, কখন সমীম জেপানের দীক্ষা সংক্রান্ত তত্ত্বাবধানের ভার তাহার উপর ছিল। পক্ষম কমিসনরের নাম নাহুসাকি সিহিতান, তিনি কি কর্তব্য করিতেন এবং তাহার উপস্থিতি

যা কি জাহা বলিয়া উঠা মুকঠিন, পূর্বে চারিজন লোক আসিবার কথা ছিল, সভা স্থাপনের দুই এক দিন পূর্বে যে অপর এক জনের আসিবার কথা হয়, ইনি সেই ব্যক্তি। সমুটীকি অভিপ্রায়ে তাঁহাকে নিমুক্ত করিয়া পাঠাইয়াছিলেন, আমেরিকানেরা তাহা জানিত না, কেবল এতাবস্থায় জানিয়াছিল, তিনি অতি আটল শীর্ণকাস অভিজ লোক, যখন আশ্রিত বয়স ও উচ্চ হইবে, ললিত মাংস পালিত কোমল রস স্বন্দররূপ দেখিতে পাইতেন না, বোধ হয় যেন তাঁহার গৃহিণী রোগ ছিল, তিনি সকল বিষয়ে চমকার সাহায্য ব্যতিরেকে কোন কর্ম করিতে পারিতেন না। মেঝার প্রায়ুভাগে তাঁহার বসিবার আসন ছিল, এই জন লেখক তাঁহার ঘরিকটে উপবেশন করিয়া তিনি যাহা যাহা বলিতেছিলেন তাহা পূর্বক সে সমস্ত বিষয় লিখিয়া রাখিতেছিলেন।

১৮৮৯ খৃঃ অব্দে জোহন নামক নগরে কাপ্তেন গ্রীন যখন জেপানীদিগের সহিত সাক্ষাৎ করিতে যান, তখন তারিয়ানা জোসফি নামে এক জন উসীল বিশেষ কার্যে ব্যস্ত প্রকাশ পাইয়াছিলেন, সেই উসীল এ কথোও আপন কথা বিনোদ্য যথার্থ প্রমাণ করিতে লাগিলেন। করিয়ানারেরা তাহার নিউ নিজ জোসফি উপবেশন করিলে, যেনস্কার বংশের বক্তৃতা যাহা এই মহাশয়ের চরণপ্রান্তে পৌঁছে পাইয়া বসিয়া তিনি কি আজ্ঞা দেন তাহার প্রতীক্ষা করিতে লাগিলেন। জেপানীদিগের মধ্যে নমস্কার করণের বিবিধ রীতি পদ্ধতি সাদৃশ আছে, পৃথিবীতে কোন জাতির মধ্যে তাঁদৃশ নিগম নাই, রাজ্যে তাহারি এক প্রকার নমস্কার

ব্যক্তিকে দেখিলে হাঁটু পাতিয়া নমস্কার করে। তথায় সম্রাট সর্দার প্রধান, কোন ব্যক্তি তাঁহা অপেক্ষা মহান নাই, তিনি সমুখা সহজে কাছারে। সমুখে অগ্নিপাত করেন না বটে, কিন্তু তাঁহাকে মিথ্যা দেবতাবীর আরাধনা কালীন ঐ কর্ম করিতে হয়। আমেরিকামেষ্ট্রো বীলা-হুয়া পর্যন্ত এরূপ শিকাগোরের রীতি কুত্রাপি কখন অবলোকন করেন নাই, অতএব জোপানীয়ের এদেশ ব্যক্তিদিগের সমুখে করজোড় প্রসঙ্গ নব্বই হইতে মত সাক্ষীকে এলাম করিল, ততই তাহাদের হৃদয় বেগে হইতে লাগিল।

অনন্তর রাজ প্রতিনিধি কমিসনারেরা-
মৌরোব্রানসন করিয়া বহুসংখ্যক যেনম ক্রিকে বলাগেন, তুমি আমেরিকামদিগের অভিযান কর তাহাদের ঐ উকীল গাহোথান করিয়া প্রথমে কনোভানসন এবং তদনুসরণে লোকদিগের খাণ্ডের কথ ডিকাসন বহির্ভূত, পরে মহাশয়দিগের শুভাগমনে আমেরিকামদিগের জোপান চমি পবিত্র হইয়াছে, সর্দারীশ্বর আমোনেস মতারকা তাপান-দের স্তম্ভাকালী, ইত্যাদি নামসমূহকে লে পদ্য শিকাগোর করিল, পরে স্যামুয়েল পুকার তাহান পতি বহির্ভূত লেন। অননি পূর্বোপদিষ্ট পরিচালনায় এক এক কর্ম পুতে চ, এবং এক এক পুতে নান, বিধ শিকাগোর মনো মটরা পাণ্ডবরী একটি কর্মসমূহ হইতে বাহির হইল, আর কলযোগের নিমিত্ত মতামত দিগকে তাহা বিস্তরণ করিতে আশিল। সকলে সিকিৎসকিৎস আহার পরিচরিত হইয়াসাই উকীল দ্বারা প্রস্থাব করিলেন, রাজসীল কর্ম সম্পাদনায় ফলস্বরূপে কুত্রাপি মধ্যে গেলেন।

ডাল হয়, কিন্তু সেকুঠারীটী ক্ষুদ্র, দশ জনের অধিক লোক ধারণ করিবে না। কনোডোর বলিলেন, হানি কি, আমি সর্ব্বাঙ্গে গাত্রোথাম করিলাম, তাহাতে তদন্তসম্মী এই জন উকীল এবং আর তিন জন সেনাপতি তাহার সঙ্গে চলিল। রক্তবর্ণ বস্ত্রে ঘণ্ডিত একটি মেয়ে এই ঘরের ভিতরে ছিল, সকলে এই মেয়ের চতুর্দিকে আসিয়া প্রদক্ষিণ করিলেন, আমেরিকানদের বাদপাশে বসিলেন, ক্রিস্তনাপ্রদায় সন্নিপাতেরে বসিয়া কার্য্য আরম্ভ করিলেন, কনোডোর গাত্রোথাম অনেক বিবেচনা পূর্ব্বক তাহারি প্রাণের আশঙ্ক্যেতে একটি কথা বলিল, একভাড়া কাগজ কনোডোরের হস্তে প্রদান করিলেন। আমেরিকা দেশের কর্তৃপক্ষের পক্ষের উদয় উঠাতেই ছিল, তাহার অন্তিম নিম্নে লিখিত ছিল।

ଅଧ୍ୟାୟ ୧୦ ଶିଳ୍ପ ଓ ଉଦ୍ୟୋଗର ବିକାଶ

महाराष्ट्र, पुणे ।

गविन्दः 'नमो भगवते वासुदेवाय'

কর্তৃপক্ষের গভীর সম্মতিতে এই প্রস্তাবটি গৃহীত হইল। অধীক্ষক
কর্তৃপক্ষের নীতি অনুসারে নিম্নলিখিত প্রস্তাবটি আনয়ন করিলেন।
মন্ত্রিসভার প্রস্তাবটি গৃহীত হইল। মন্ত্রিসভার প্রস্তাবটি গৃহীত হইল।
নিম্নলিখিত প্রস্তাবটি গৃহীত হইল। মন্ত্রিসভার প্রস্তাবটি গৃহীত হইল।
এক
প্রস্তাব পূর্বে প্রাধিকার অনুসারে আদেশ ছিল, তদনু-
সারে আপনি আদেশ প্রদানের ক্ষমতা প্রত্যাহার করে আদেশ
নিষেধন করিতে পারেন। আমেরিকান গণনায়েক সকল বি-
ষয়ের প্রস্তাব করিয়াছেন, একোরে যে সব বিষয়ের প্রস্তাব
প্রদান করা নাহি। প্রস্তাব পূর্বে প্রস্তাব করিয়া, আদেশের
পূর্বে প্রস্তাব প্রত্যাহার করিতে পারেন।

শিখাছেন তদনুসারে তাহা সম্পূর্ণ নিষিদ্ধ, কিন্তু কালের
গতিক এমন নয়, দেশ কাল পাত্রানুসারে প্রাচীন নিয়-
মের বৈলক্ষণ্য হইয়া থাকে, চিরকাল একনিয়মের উপর
নিষ্ঠ র করিলে, রাজ্য শাসন হয় না, বিশেষ প্রয়োজন
হইলে রাজবিধির বিপর্যয় হইয়া থাকে।

গত বৎসর মহাশয় যখন জাপানে আগমন করিলেন
তখন আশানুগতির সম্মুখীন হইয়াছিলেন, এই কারণেই
তিনি পরলোক প্রাপ্ত হইয়াছেন। তাঁর মৃত্যুর দিন
কয়েক রাজকীয় কর্ম কিছুটা বন্ধ নাহি, বর্তমান সম্রাট
সিংহাসনারূঢ় হইলে, একেবারে বহুকর্মে তাঁর মৃত্যুর
স্মৃতিতে হইল। এই সকল সম্রাটের মৃত্যুর
কারণ সম্রাটের রাজত্বের শেষে নিম্নলিখিত
তাহার সম্ভাবনাও নাই। বিশেষ, মৃত্যুর কারণ
নৈবারণী সময়ে জনানা বধীশ রাজ্য একেবারে অশান্ত
নিগূঢ় নিকট বহুকাল কুহিনাছেন। আরি, এই
বাবড়, মধ্যনিয়মে রক্ষা করিব, প্রাণাধিকার প্রাপ্ত হইয়া
চরম করিব। এই এক সম্প্রদায় চট্টোকে, যে নিম্ন
মিত পরিবর্তন করা একেবারে চাহার বিশেষ নয়।

গত বৎসর শরতকালে নৈবারণী সময়ে ব নিম্নলিখিত
সকল একবারে অশান্ত হইয়াছে। জাপান দেশের
তখন তাহার অশান্তির নিকট আসিয়াছে। এই কারণে
সাম, তিনি প্রথম নিকট বিপর্যয় হইয়াছেন। প্রথম
জাপানের গণতান্ত্রিক কামান, তদনুসারে অশান্ত হইয়া
জানাইয়াও ছিলেন, যে পাত্র অশান্তি আশানুগিতের নিকট
হইয়াছে।

অতি অশান্তি হইল, কামিরা। দেশের রাজদ্রুত যদে

শীত গবর্ণমেন্টের অভিপ্রায় লইয়া নেগাম্‌কাই নগরে
আসিয়াছিলেন, সম্রাট তাঁহার অভিপ্রায় বিবরণে কোন
বিশেষ প্রশংসা করিতে পারিলেন না। কেবল এই কথা ব-
লিয়া বিদায় করিলেন, এক্ষণে তুমি প্রত্যাহার হও, যদি
কিছু লিখিতার বিষয় থাকে পরে লেখা যাউক। তাহা হইয়া
নাই, এমোজমৌ নিয়ম নাহি, আপনাদিগের গবর্ণমেন্ট
একটা কাঁথুগিয়া করল, তখন, ১৮২২ খ্রিস্টাব্দে সামগ্রী প্রদান
করিলেন। তখন প্রস্তাব করিয়াছেন, তাহাতে আমরা সমস্ত
অর্থ, ও আপনাদিগের জাহাজ অথবা নাবিকগণের বিপদ
কোনো সময়ে হইতে রক্ষা করণে আমকা বিজিত চেষ্টা
করিয়া এক্ষণে নিবেদন দি। জাপানের মধ্যে দুই কক্ষটি
আমকা হইল। আমকা তখন, তখন এখন আপনি মনো-
নিবৃত্ত করেন, যে স্থান তাহা হইল, তাহা হইল, ~~অমোজমৌ~~ কব।
১৮২২, ফিলিপ্পাইন প্রদেশের নেউর প্রদেশ হইল।
১৮২২ আমকা প্রদেশের শাসক করিয়াছেন। যদি ইচ্ছা হয়
নেগাম্‌কাই নগরে এখন আসিয়াছিলেন, পাশ্চাত্য সম-
সার আনিজা যাহার বিবরণে পাইলেন, কেহো মানে ১৮
১৮২২ প্রদেশের শাসক করিয়াছিলেন জিত করা গেল।

১৮২২ সালে আমকা প্রদেশের শাসক, তাহার কর্ম প্রার্থনা
করিয়া, যদিও ১৮২২ সালে আমকা হইল, তবে নিবেদন করিয়া
১৮২২ সালে আমকা প্রদেশের শাসক, ১৮২২ সালে আমকা
প্রদেশের শাসক, তাহা প্রকাশ করিয়া, লিখিলেন। আমকা
নেগাম্‌কাই নিবেদন হইল, জেপান রাষ্ট্রের উৎপন্ন জবাব
হইল। যদি আমকা প্রদেশের জাহাজের কোন উপকার এবং

সহিত তাহা বিন, মূল্যে প্রদান করিবেন। কুরাকারা-
কাহি এ২ং মুরিয়ামাজেন সকি এই দুই ব্যক্তি বাণিজ্য
ক্রমের মূল্য নির্ধারণে নিযুক্ত হইলেন, ইহারা উভয়ে
মিলিয়া বাহা স্থির করিবেন জেপান গবর্ণমেন্ট তাহা ঠিক
কর করিবেন। পূর্বোক্তোক্ত বিষয় সকল স্থির হইত
সকিপদ সদাশা করিয়া থাকরিত হইবে, আগামি
ইহার দিন নিরূপিত হইল।

নিতাসু-নুগুত হুতা

সিমাডিয়াম জেনসকি।

কমোডোর জেনসকি পাঠ করণান্তর জেনসকি
হতে পুনঃ প্রদান করিত নিষেধন করিলেন, নতর এ
কমোডোর কমিসনরদের থাকেন ই. অতঃপর
খিচ দিন কলা থাকরিত করাইল আমাকে নিষেধন। এক্ষণে
সকিপদ বিষয়ে আমাব বাহা বহুতর আচ্ছ শুনুন, বিন
দেশ-এবা ইউনাইটেড এম্পাইর, গবর্ণমেন্টের মত,
যে নিয়মে সক্তি আচ্ছ, যেই নিয়মে সক্তি জেপান
সকি সক্তি বহুতর, তবে উভয় এ নিয়মে সক্তি
গারি। অন্যদের গবর্ণমেন্ট মত, সক্তি দুইতর
প্রেরণ করিয়াছেন, একপ মত, সক্তি দুইতর
প্রেরণ, সক্তি কর্ম সিদ্ধ হইত, তবে এ নিয়মে সক্তি
কয়েক খানি জাহাজ প্রেরণ করিলেন। আমি সক্তি
এত সক্তি সক্তি করিত হইলেন, সক্তি সক্তি সক্তি
সক্তি শীঘ্র নিষ্পন্ন হইবে, তবে সক্তি সক্তি
নিষিত যে দুই খানি জাহাজ আমি পাইত, ইচ্ছা
করিযাজি, তাহা শীঘ্র পাঠাইতে পারিব। এই কথা ব-

চীন এবং ওলন্দাজ ভাষার পৃথক পৃথক রূপে উহার বর্ণনা লেখা ছিল, আর কমোডোরের স্বাক্ষরিত দুইখানি লিপিতে উহার বর্ণনা ছিল, উরাগা নিবাসি প্রধান কমিসনার এমোর কমোডোরের পত্রের প্রতুলতরে যাকি লিখিয়াছিলেন, তাহাও উহার সঙ্গে ছিল। আমেরিকান দূত এই সকল কাগজ পত্র সমস্ত উপস্থিত করিলে, জেপসীম কমোডোরীণ তাহা বিনীতভাবে গ্রহণ করিয়া কহিলেন, আমাদের স্বদেশীর ভাষায় উহা অনুবাদিত হইবে, আমার উহা বর্ণনা বুঝিতে পারিব না, অতএব উহা লিখিত ভাষায় উহার বর্ণনাবগত হওত এবিষয়ের কোন কথা বলিতে পারিব না।

কমিসনার তখন সমুদ্রে একটা শোভাযাত্রা করিয়া আসিয়াছিলেন, তাহাতে উপস্থিত করিয়া কমোডোরের সঙ্গে দেখা করিলেন, সমস্ত দুই দিন পূর্বে আমেরিকান কমিসনার মি.সিমিগাই নামক লাহাজের কর্ণবার পালোকে আসিয়াছিলেন। এ পর্য্যন্ত উহার আন্তোডি কিম্বা সমাধি স্থান, ই. জার্মান এই, আপনারা জাপান দেশে আমাদিগকে এক বিষয় ভূমি বিক্রয় করুন, আমরা তথায় তাহাতে গরুর ঘর, এবং ভবিষ্যতে আর কখন যদি আমাদের জুপ বিপত্তি ঘটে, তবে তাহাদেরও সমাধি স্থানির ঐ স্থানে হইতে পারিবে। ইতি অত্যাবশ্যক শুদ্ধা বিষয়, বিবেচনা করিলে এইবেলা, বিবেচনাতে যাচা হয় তাহা শীঘ্র শীঘ্র চলুক। এত প্রস্তাবে কমিসনারগণ বড়ই বিস্মিত হইলেন, কি বলিলেন তাহারা কিছু ক্রির করিতে পারিলেন না, জাপান পরস্পর কথোপকথন করিয়া এ বিষয়ে তর্কবিতর্ক করণার্থে অপর একটি ঘরে গেলেন।

তাঁহারা গৃহ পরিভ্রমণ করিলে, সুইজন্স ভ্রমণস্থান এই
 ভ্রমণ করেক পরিচারক মহোদায় মাংস পৃষ্ঠক নামাধি
 মিষ্টান্ন সামগ্রী ও ফলাদি আমদান করিয়া কহিল, মহা-
 সুভব মহাশয়গণ! অল্পগ্রহ পূর্বক কিসিৎ জলযোগ
 করুন। কমোডোর কহিলেন, তোমাদিগের নিমন্ত্রণ
 আমি পরম আজ্ঞার সহিত গ্রহণ করিলাম, কিন্তু
 আমেরিকা এবং অন্যান্য ভিত্তির লোকদিগের মধ্যে এমন
 নিয়ম অতিশয় ভোজের কর্তব্য কতী নিমন্ত্রিত লোকদি-
 গের সহিত বসিয়া একত্রে ভোজন করেন, তাহাতে
 অধিক রুচি বড়ই হইয়া থাকে। অতএব কমিসনার
 বসিগের সহিত মণ্ডলিত হইয়া তাহার সন্নিহিত আগমন
 মিষ্টান্ন অতিলাব হয়। তৎপরে তদ্র সময়ে সুইজন্স
 কমোডো নিবেদন করিল, মহাশয়! বিদেশী ভোজনদি-
 গের রীতি নীতি তাঁহারা জানেন না, আপনাদিগের
 ভো এখনি তাঁহারা আসিয়া পদমানন্দে একত্রে ভোজন করি-
 বেন। এই কথা বলিয়া তাহার চলিয়া গেল। কখনকাল
 পরে দ্বিতীয় এবং তৃতীয় কমিসনার আসিয়া কমোডোরের
 সহিত ভোজন করিতে বসিলেন, সাক্ষি নামে এক
 প্রকার পেরোয়া তাঁহাদিগের সম্মুখে ছিল, তাহার
 এক পাত্র পূর্ণ করিয়া বিদেশী নিমন্ত্রিত সভ্যদিগকে কহি-
 লেন, আপনাদিগের ইচ্ছা পান করুন, জেপানের রীতি এই
 অভ্যর্থিত লোকদিগকে সম্মুখে পান না করাইয়া আদ-
 পান করিয়া।

এইরূপ শিষ্টাচারের কথা বার্তা হইতেছে; এমনত
 সবে আর আর কমিসনারগণ বিশেষ সভা করিয়া ক-
 মোডোরের প্রশ্নাবের উত্তর লিখিয়া আসিলেন। তাহার

মর্থ এই, মেগেসকাই নগরের অনতিদূরে যে একটি মন্দির, স্থাপিত আছে, বিদেশী লোকদিগের সমাধি-কার্য্য সেই স্থানে হইয়া থাকে, যদি মাঝিক স্বেয়াপতিকে কবর দিতে হয় তবে সেই স্থানেই দিতে হইবে। এখানে তাঁহার মৃতদেহ উত্তীর্ণিতে আসিবে, পরে সে স্থান হইতে পুর্নোক্ত স্থানে লইয়া যাইতে হইবে। কামোডোর এই প্রস্তাবে অসম্মত হইয়া কহিলেন, সকল জাতিতেই অস্বাভাবিক্রিয়ার নিষিদ্ধ এক একটি নির্জন স্থান নির্দিষ্ট করে, অতএব যেখানে ভেদভেদ নাই, বিদেশী মাত্রেই সমাধি হয়, এমন স্থানে আমেরিকান নাটকিকে কবর দেওয়া কিসে সম্ভব, যদি দেওয়াই মত হয়, তবে এই গ্রামের নিকটবর্ত্তী কোন স্থান নিউন। জেপানিয়ার এই কথাতে প্রথমে অনেক আপত্তি করিল, পরে নানা তর্ক পরিত্যাগ করিয়া গ্রামের মৃতদেহ কবর দিষ্ট দিন, স্থানটি ভাঙ্গানিগের মন্দিরের নিকটবর্ত্তী উপস্থাপিত হইতে চাহা জনস্বাস্থ্যে দূষ্ট হইত। তাহার আরও বলিল, ইতি সূতন বিমর, বোধ হয় অনেক লোক দেখিতে আসিবে, কি জানি কোন হাঙ্গাম উপস্থাপিত হইলেও হইতে পারে। অতএব কল্যাণপ্রাপ্তকালে মিসিসিপাই নামক জাহাজে আমরা একজন সমুদ্র সৈনিক প্রভৃৎকে প্রেরণ করিব, প্রত্যক্ষ করিব হয় তিনি তোমাদের সঙ্গে সঙ্গে থাকিবেন।

অনন্তর কামোডোর বিদায় চাহিলেন, যাইবার সময় কহিলেন, বাবু একটুকু উচ্চ হইলে জেপান দেশীয় সম্ভ্রান্ত রাজ কর্মচারী বা যদি একদিন আমার জাহাজে হইয়া কোন পানাদি করুন, তবে আমি সন্তোষিত হইব।

দেখানিয়েরা জতার সমালোচনা করিত। তাঁহার নি-
মিত্ত গ্রহণ করিয়া করপুটে নিবেদন করিলেন, মহাশয় !
এত বড় অর্থের বিকর, ৩০ দিন আশ্রয় অনুমতি করিলেন,
৩০ দিনই স্থায়ী হইবে। এই কথা বলিয়া তাহার ন-
জর করিয়া চলিয়া গেলেন। কনোডোর বাহিরে আসিয়া
দেখিলেন, দেখানিয়েরা তাঁহার অসীম কর্মজীবনকে
সম্মত হইয়া দেখা দেয়-তু উপরূপে লোকজন করা ইত্যাদি,
কিন্তু ইহাও পাইলেন না, দেখিয়া সাহিত্যিক হইলেন।
লেন। এদিকে তাঁহার সমস্ত বাহ্যিক লোক সমস্ত জগৎ জগৎ
আসিয়া লাগিল, বাদ্য করে, বাদ্য আদম্বর, তিনি
যেমন সমালোচনা গিয়া ছিলেন, তেমনই মন হোলে প্র-
ত্যাহত হইলেন।

পরদিন প্রাতঃকালে পূর্ণ নিরানুগত জেপানিদি-
গের এক জন সভ্য জৈনিক পুং ব নিসিনিকাউ তাঁকে
জাহাজ উপস্থিত হইলেন, আর কবর স্থান কোথায়, কি-
রূপে তথায় গিয়াছে হইবে তাহা বলিয়া দিলেন। গেলেন
সমস্ত উল্লেখ করিতে করিতে গেল। অগত্যা হইল
পাঁচটার বেশ পড়ানিগের প্রেরিত হইল। ৩ মাসের
পরিধান করিয়া তথায় উপনীত হইলেন। অ নোদোম
দিগের কি জাহাজ ক্রি বোট কি নৌকা সকলেতেই পক্ষ
খণ্ড নিশান উঠিল, মাঝিকেরা পাইল ৩০ টি উর। ৩০ টি
কাম করিল, জোকুহাম, গ্রাম হইতে বড় ছুর মগ, এমন
এক পাড়াড়ের নিম্নভাগে বাহ্যগত মৃতদেহ লইয়া
ইতে লাগিল। ধর্মোপদেশক শবের সঙ্গে সঙ্গে সম্মো-
চিত শোক প্রকাশ করিয়া চলিলেন, তথাকার রাজ কর্ম
কর্তাও সম্মোচিত শবের সম্মান করিল, পৃষ্ঠপুর্ন না

... ..

ভেপানি কবিরাইতে লাগিলেন, সকল লোক গ-
 র্ভাওের উপস্থিতিতে গল্প করি এবং অন্যায় স্থানে বসিয়া এই
 ভেপানি বিষয় কবুলোক্ত করিতেছিল, তাহার ক্রমে অক-
 দ্রোহণ কবিতে লাগিল, কিন্তু পূর্বতটা গড়ানির ভাবে ছিল
 মামিরা তাহাদের মামল সিদ্ধি সহসা হইল না। এদিকে ভে-
 পানিরেরা বেশীলীকানুসারে কবরের শুভুপাথে বংশের
 বিধা দিয়া অনতিদূরে একটি ক্ষুদ্র কুটির নির্মাণ করিল,
 ভেপানি আশানুসারে জন কয়েক এইরূপ দিন কয়েক চেক-
 টানে বাস করিয়া কবর চেকি দিতে লাগিল।

আমেরিকানদের অস্ত্রোত্তি দ্রিষ্টা সমাপন করিয়া ক-
 ষকে প্রত্যাগমন করিলে, কবরাক্ষয়ক তা নামে একজন
 প্রধান রাজকর্মচারী যেসময়কে গল্পে লইয়া রাখিলে
 পাউইট নামক জাহাজে উপস্থিত হইলেন। ক-
 থেন অদমস বধা বিধানে তাহার সম্বন্ধন করিয়া
 দেবসহিত বৈষ্ণবিক অধ্যয়ন করিতে লাগিলেন।
 ভেপানি বাসী প্রধান রাজ কর্মচারী তাহার এক ভাই
 বাগল দিয়া কহিলেন, আপনাদিগের দেশাদিগের প-
 তি উত্তর ইহাতে লেগ আছে, তাহািতন কমিগন ব-
 ইহাতে থাকর করিয়াছেন। অতী ১৩ই মাস
 মবার দিবসে ভেপানি ক্রীড় আপনাদিগকে উপভোগ
 দিবেন, তৎপূর্ব দিবসে নানা প্রকার বাজ, এবং অ-
 শর্চা শিল্প নৈপুণ্যের প্রদর্শন প্রেক্ষাগৃহে দেওয়া হ-
 ইবে, যদি আপনাদিগের চাহ দর্শন করিতে ইচ্ছা
 হয়, তবে সেদিনে তথায় সমাগত হইবেন। তাহা হইলে
 অভ্যর্থনার স্থান আপনাদিগের বখানোগা হইয়াছে কি

কথোপকথন করিতে করিতে কাপ্তন আদমস জেপান রাজকৰ্মচারীকে জিজ্ঞাসা করিলেন, কমিসনারগণ আমেরিকানদিগের বাণিজ্যার্থ কোন স্থান মনোনীত করিয়াছেন? বিবেচনা করিব বলিয়া তাহারা যে পায়ের লইয়া ছিলেন, সে অতি দীর্ঘকাল, আমাদিগের গণ তত বিলম্ব করিতে পারেন কি না পারেন, স্থল, বিদেশ, যদি শুদ্ধ ভিজিমাতে বাণিজ্য করিতে জেপান গবর্ণমেন্টের আদেশ হয়, কনোজোর জাহাজে কোনই সমস্যা হইবে না, প্রত্যুৎপন্ন কুরাকায়াকায়ী হইয়া যখন বলহীন করিয়া প্রত্যুত্তর করিলেন, কমিসনারগণ কোন কৰ্ম্ম করিবেন না, সার্বকাশ্যে বর্তমানের বিষয় বিবেচনা করিয়া যেখানে ভাল বোধ হয়, নিবন তাহাই বাণিজ্যার্থ দেখিয়া হইবে। তীরে বাস করিয়া বিনয়ে, কাপ্তন আদমস কহিলেন, আমাদিগের যে সকল নাবিক ভাল পরিমাণ করিয়া যেডায়, তাহারা জেপান উপসাগর গিয়াছে, তীরে যাইয়া সমারোহ দেখিয়া আমাদিগকে অহরোধ করিব, কিন্তু ত-
 ৩১১
 ৩১২
 ৩১৩
 ৩১৪
 ৩১৫
 ৩১৬
 ৩১৭
 ৩১৮
 ৩১৯
 ৩২০
 ৩২১
 ৩২২
 ৩২৩
 ৩২৪
 ৩২৫
 ৩২৬
 ৩২৭
 ৩২৮
 ৩২৯
 ৩৩০
 ৩৩১
 ৩৩২
 ৩৩৩
 ৩৩৪
 ৩৩৫
 ৩৩৬
 ৩৩৭
 ৩৩৮
 ৩৩৯
 ৩৪০
 ৩৪১
 ৩৪২
 ৩৪৩
 ৩৪৪
 ৩৪৫
 ৩৪৬
 ৩৪৭
 ৩৪৮
 ৩৪৯
 ৩৫০
 ৩৫১
 ৩৫২
 ৩৫৩
 ৩৫৪
 ৩৫৫
 ৩৫৬
 ৩৫৭
 ৩৫৮
 ৩৫৯
 ৩৬০
 ৩৬১
 ৩৬২
 ৩৬৩
 ৩৬৪
 ৩৬৫
 ৩৬৬
 ৩৬৭
 ৩৬৮
 ৩৬৯
 ৩৭০
 ৩৭১
 ৩৭২
 ৩৭৩
 ৩৭৪
 ৩৭৫
 ৩৭৬
 ৩৭৭
 ৩৭৮
 ৩৭৯
 ৩৮০
 ৩৮১
 ৩৮২
 ৩৮৩
 ৩৮৪
 ৩৮৫
 ৩৮৬
 ৩৮৭
 ৩৮৮
 ৩৮৯
 ৩৯০
 ৩৯১
 ৩৯২
 ৩৯৩
 ৩৯৪
 ৩৯৫
 ৩৯৬
 ৩৯৭
 ৩৯৮
 ৩৯৯
 ৪০০
 ৪০১
 ৪০২
 ৪০৩
 ৪০৪
 ৪০৫
 ৪০৬
 ৪০৭
 ৪০৮
 ৪০৯
 ৪১০
 ৪১১
 ৪১২
 ৪১৩
 ৪১৪
 ৪১৫
 ৪১৬
 ৪১৭
 ৪১৮
 ৪১৯
 ৪২০
 ৪২১
 ৪২২
 ৪২৩
 ৪২৪
 ৪২৫
 ৪২৬
 ৪২৭
 ৪২৮
 ৪২৯
 ৪৩০
 ৪৩১
 ৪৩২
 ৪৩৩
 ৪৩৪
 ৪৩৫
 ৪৩৬
 ৪৩৭
 ৪৩৮
 ৪৩৯
 ৪৪০
 ৪৪১
 ৪৪২
 ৪৪৩
 ৪৪৪
 ৪৪৫
 ৪৪৬
 ৪৪৭
 ৪৪৮
 ৪৪৯
 ৪৫০
 ৪৫১
 ৪৫২
 ৪৫৩
 ৪৫৪
 ৪৫৫
 ৪৫৬
 ৪৫৭
 ৪৫৮
 ৪৫৯
 ৪৬০
 ৪৬১
 ৪৬২
 ৪৬৩
 ৪৬৪
 ৪৬৫
 ৪৬৬
 ৪৬৭
 ৪৬৮
 ৪৬৯
 ৪৭০
 ৪৭১
 ৪৭২
 ৪৭৩
 ৪৭৪
 ৪৭৫
 ৪৭৬
 ৪৭৭
 ৪৭৮
 ৪৭৯
 ৪৮০
 ৪৮১
 ৪৮২
 ৪৮৩
 ৪৮৪
 ৪৮৫
 ৪৮৬
 ৪৮৭
 ৪৮৮
 ৪৮৯
 ৪৯০
 ৪৯১
 ৪৯২
 ৪৯৩
 ৪৯৪
 ৪৯৫
 ৪৯৬
 ৪৯৭
 ৪৯৮
 ৪৯৯
 ৫০০
 ৫০১
 ৫০২
 ৫০৩
 ৫০৪
 ৫০৫
 ৫০৬
 ৫০৭
 ৫০৮
 ৫০৯
 ৫১০
 ৫১১
 ৫১২
 ৫১৩
 ৫১৪
 ৫১৫
 ৫১৬
 ৫১৭
 ৫১৮
 ৫১৯
 ৫২০
 ৫২১
 ৫২২
 ৫২৩
 ৫২৪
 ৫২৫
 ৫২৬
 ৫২৭
 ৫২৮
 ৫২৯
 ৫৩০
 ৫৩১
 ৫৩২
 ৫৩৩
 ৫৩৪
 ৫৩৫
 ৫৩৬
 ৫৩৭
 ৫৩৮
 ৫৩৯
 ৫৪০
 ৫৪১
 ৫৪২
 ৫৪৩
 ৫৪৪
 ৫৪৫
 ৫৪৬
 ৫৪৭
 ৫৪৮
 ৫৪৯
 ৫৫০
 ৫৫১
 ৫৫২
 ৫৫৩
 ৫৫৪
 ৫৫৫
 ৫৫৬
 ৫৫৭
 ৫৫৮
 ৫৫৯
 ৫৬০
 ৫৬১
 ৫৬২
 ৫৬৩
 ৫৬৪
 ৫৬৫
 ৫৬৬
 ৫৬৭
 ৫৬৮
 ৫৬৯
 ৫৭০
 ৫৭১
 ৫৭২
 ৫৭৩
 ৫৭৪
 ৫৭৫
 ৫৭৬
 ৫৭৭
 ৫৭৮
 ৫৭৯
 ৫৮০
 ৫৮১
 ৫৮২
 ৫৮৩
 ৫৮৪
 ৫৮৫
 ৫৮৬
 ৫৮৭
 ৫৮৮
 ৫৮৯
 ৫৯০
 ৫৯১
 ৫৯২
 ৫৯৩
 ৫৯৪
 ৫৯৫
 ৫৯৬
 ৫৯৭
 ৫৯৮
 ৫৯৯
 ৬০০
 ৬০১
 ৬০২
 ৬০৩
 ৬০৪
 ৬০৫
 ৬০৬
 ৬০৭
 ৬০৮
 ৬০৯
 ৬১০
 ৬১১
 ৬১২
 ৬১৩
 ৬১৪
 ৬১৫
 ৬১৬
 ৬১৭
 ৬১৮
 ৬১৯
 ৬২০
 ৬২১
 ৬২২
 ৬২৩
 ৬২৪
 ৬২৫
 ৬২৬
 ৬২৭
 ৬২৮
 ৬২৯
 ৬৩০
 ৬৩১
 ৬৩২
 ৬৩৩
 ৬৩৪
 ৬৩৫
 ৬৩৬
 ৬৩৭
 ৬৩৮
 ৬৩৯
 ৬৪০
 ৬৪১
 ৬৪২
 ৬৪৩
 ৬৪৪
 ৬৪৫
 ৬৪৬
 ৬৪৭
 ৬৪৮
 ৬৪৯
 ৬৫০
 ৬৫১
 ৬৫২
 ৬৫৩
 ৬৫৪
 ৬৫৫
 ৬৫৬
 ৬৫৭
 ৬৫৮
 ৬৫৯
 ৬৬০
 ৬৬১
 ৬৬২
 ৬৬৩
 ৬৬৪
 ৬৬৫
 ৬৬৬
 ৬৬৭
 ৬৬৮
 ৬৬৯
 ৬৭০
 ৬৭১
 ৬৭২
 ৬৭৩
 ৬৭৪
 ৬৭৫
 ৬৭৬
 ৬৭৭
 ৬৭৮
 ৬৭৯
 ৬৮০
 ৬৮১
 ৬৮২
 ৬৮৩
 ৬৮৪
 ৬৮৫
 ৬৮৬
 ৬৮৭
 ৬৮৮
 ৬৮৯
 ৬৯০
 ৬৯১
 ৬৯২
 ৬৯৩
 ৬৯৪
 ৬৯৫
 ৬৯৬
 ৬৯৭
 ৬৯৮
 ৬৯৯
 ৭০০
 ৭০১
 ৭০২
 ৭০৩
 ৭০৪
 ৭০৫
 ৭০৬
 ৭০৭
 ৭০৮
 ৭০৯
 ৭১০
 ৭১১
 ৭১২
 ৭১৩
 ৭১৪
 ৭১৫
 ৭১৬
 ৭১৭
 ৭১৮
 ৭১৯
 ৭২০
 ৭২১
 ৭২২
 ৭২৩
 ৭২৪
 ৭২৫
 ৭২৬
 ৭২৭
 ৭২৮
 ৭২৯
 ৭৩০
 ৭৩১
 ৭৩২
 ৭৩৩
 ৭৩৪
 ৭৩৫
 ৭৩৬
 ৭৩৭
 ৭৩৮
 ৭৩৯
 ৭৪০
 ৭৪১
 ৭৪২
 ৭৪৩
 ৭৪৪
 ৭৪৫
 ৭৪৬
 ৭৪৭
 ৭৪৮
 ৭৪৯
 ৭৫০
 ৭৫১
 ৭৫২
 ৭৫৩
 ৭৫৪
 ৭৫৫
 ৭৫৬
 ৭৫৭
 ৭৫৮
 ৭৫৯
 ৭৬০
 ৭৬১
 ৭৬২
 ৭৬৩
 ৭৬৪
 ৭৬৫
 ৭৬৬
 ৭৬৭
 ৭৬৮
 ৭৬৯
 ৭৭০
 ৭৭১
 ৭৭২
 ৭৭৩
 ৭৭৪
 ৭৭৫
 ৭৭৬
 ৭৭৭
 ৭৭৮
 ৭৭৯
 ৭৮০
 ৭৮১
 ৭৮২
 ৭৮৩
 ৭৮৪
 ৭৮৫
 ৭৮৬
 ৭৮৭
 ৭৮৮
 ৭৮৯
 ৭৯০
 ৭৯১
 ৭৯২
 ৭৯৩
 ৭৯৪
 ৭৯৫
 ৭৯৬
 ৭৯৭
 ৭৯৮
 ৭৯৯
 ৮০০
 ৮০১
 ৮০২
 ৮০৩
 ৮০৪
 ৮০৫
 ৮০৬
 ৮০৭
 ৮০৮
 ৮০৯
 ৮১০
 ৮১১
 ৮১২
 ৮১৩
 ৮১৪
 ৮১৫
 ৮১৬
 ৮১৭
 ৮১৮
 ৮১৯
 ৮২০
 ৮২১
 ৮২২
 ৮২৩
 ৮২৪
 ৮২৫
 ৮২৬
 ৮২৭
 ৮২৮
 ৮২৯
 ৮৩০
 ৮৩১
 ৮৩২
 ৮৩৩
 ৮৩৪
 ৮৩৫
 ৮৩৬
 ৮৩৭
 ৮৩৮
 ৮৩৯
 ৮৪০
 ৮৪১
 ৮৪২
 ৮৪৩
 ৮৪৪
 ৮৪৫
 ৮৪৬
 ৮৪৭
 ৮৪৮
 ৮৪৯
 ৮৫০
 ৮৫১
 ৮৫২
 ৮৫৩
 ৮৫৪
 ৮৫৫
 ৮৫৬
 ৮৫৭
 ৮৫৮
 ৮৫৯
 ৮৬০
 ৮৬১
 ৮৬২
 ৮৬৩
 ৮৬৪
 ৮৬৫
 ৮৬৬
 ৮৬৭
 ৮৬৮
 ৮৬৯
 ৮৭০
 ৮৭১
 ৮৭২
 ৮৭৩
 ৮৭৪
 ৮৭৫
 ৮৭৬
 ৮৭৭
 ৮৭৮
 ৮৭৯
 ৮৮০
 ৮৮১
 ৮৮২
 ৮৮৩
 ৮৮৪
 ৮৮৫
 ৮৮৬
 ৮৮৭
 ৮৮৮
 ৮৮৯
 ৮৯০
 ৮৯১
 ৮৯২
 ৮৯৩
 ৮৯৪
 ৮৯৫
 ৮৯৬
 ৮৯৭
 ৮৯৮
 ৮৯৯
 ৯০০
 ৯০১
 ৯০২
 ৯০৩
 ৯০৪
 ৯০৫
 ৯০৬
 ৯০৭
 ৯০৮
 ৯০৯
 ৯১০
 ৯১১
 ৯১২
 ৯১৩
 ৯১৪
 ৯১৫
 ৯১৬
 ৯১৭
 ৯১৮
 ৯১৯
 ৯২০
 ৯২১
 ৯২২
 ৯২৩
 ৯২৪
 ৯২৫
 ৯২৬
 ৯২৭
 ৯২৮
 ৯২৯
 ৯৩০
 ৯৩১
 ৯৩২
 ৯৩৩
 ৯৩৪
 ৯৩৫
 ৯৩৬
 ৯৩৭
 ৯৩৮
 ৯৩৯
 ৯৪০
 ৯৪১
 ৯৪২
 ৯৪৩
 ৯৪৪
 ৯৪৫
 ৯৪৬
 ৯৪৭
 ৯৪৮
 ৯৪৯
 ৯৫০
 ৯৫১
 ৯৫২
 ৯৫৩
 ৯৫৪
 ৯৫৫
 ৯৫৬
 ৯৫৭
 ৯৫৮
 ৯৫৯
 ৯৬০
 ৯৬১
 ৯৬২
 ৯৬৩
 ৯৬৪
 ৯৬৫
 ৯৬৬
 ৯৬৭
 ৯৬৮
 ৯৬৯
 ৯৭০
 ৯৭১
 ৯৭২
 ৯৭৩
 ৯৭৪
 ৯৭৫
 ৯৭৬
 ৯৭৭
 ৯৭৮
 ৯৭৯
 ৯৮০
 ৯৮১
 ৯৮২
 ৯৮৩
 ৯৮৪
 ৯৮৫
 ৯৮৬
 ৯৮৭
 ৯৮৮
 ৯৮৯
 ৯৯০
 ৯৯১
 ৯৯২
 ৯৯৩
 ৯৯৪
 ৯৯৫
 ৯৯৬
 ৯৯৭
 ৯৯৮
 ৯৯৯
 ১০০০

কিছুই এমন কথা কহিলেন । অতঃপর বাণিজ্য সা-
ধার কল্যাণ হইল, জেনোনিয়েরা আমেরিকানদিগের
সহায়তা লাভে সক্ষম হইলেন, রাক্ষসেরা এই
সহায়তা গ্রহণ করিলেন আর স্থান মনোনীত হইলেন,
কিন্তু তাহা সামগ্রী বিক্রয় করিতে পারিলেন না, কেবল ক
ল্যাণের জন্যে বিক্রয় নিষ্পত্ত হইবে । একজন মান লোক
কিন্তু কল্যাণের তত্ত্বাবধায়ক রূপে নিযুক্ত হইবেন, আমেরি-
কানদের মেরুপ ওজনে জেনোনিদিগকে মুদ্রা প্রদান ক
রিতে আমেরিকানদেরও সেইরূপ ওজনে তাহাদিগকে ধ
রিতে পারিবে । সমুদায় বর্ষ নিরীক্ষার্থে নেগাসকাই
কিন্তু কল্যাণ, অন্যান্য স্থানপেক্ষ, আমেরিকা উহাকে মনো-
নীত করি, যদি আমেরিকানদিগের কোন কর্মের ব্যাঘাত
লাগে, তবে বাণিজ্যরূপে এই স্থানেই করা বিধেয় । উট
হিত সন্ধিগৃহে পরদিন কাগজে আদম্ভ উপস্থিত হইলেন,
তাহার সহিত পূর্বেই জেনোনি কর্মচারীদিগের অঙ্গ-
কণ কপোতকথন হইল । আদম্ভ কহিলেন, বিদেশী লে
কদের বিবরে আপদাদিগের কর্তৃপক্ষ যে নিয়ম নির্দ্ধা
করিয়াছেন, কনোভোর তাহাতে সন্তুষ্ট আছেন বটে,
কিন্তু যে সকল বিষয় দিতে সম্মত হইরাছেন তাহা সন্তোষ
নহে, একখানি লেখা সন্ধিপত্রে বিস্তারিত রূপে নিয়ম কর
অতি আবশ্যিক । উৎপাদে অনেক বিষয়ে অনেক তর্ক
বিতর্ক হইলে, উভয়ে যথার্থভাবে সৌহার্দ্য ভাব প্রকাশ
করিয়া স্থান পরিত্যাগ করিলেন ।

অনন্তর উত্তরজাতির উপচৌকম প্রদানের দিন উপ-
স্থিত হইল, যদিও বায়ু শিথিল ছিল না উপসাগরে তরঙ্গ
হিলোল হইতেছিল, তথাপি আমেরিকানেরা তাহাজ

ছাড়িয়া তটে গমন করিলেন, তাহাতে তাহাদের কিছুক্ষণ
 হইল না । উপটৌকনে অনেক গুলি বড় বড় সৈনিক
 পূরিত হইল, জনকয়েক নাবিক এবং প্রধান সৈনিক
 ক্রম তাহার রক্ষক রূপে নিযুক্ত হইলেন, একখানি সৈনিক
 কাতে এক মল নামাকর বায় বাজাইতে লাগিল, তাহা
 আদট আমেরিকানসিগের প্রতিনিধি কর্তৃক
 ইয়া সকল সামগ্রী সঙ্গে লইয়া চলিলেন । উপটৌকন
 দিবার অভিপ্রায়ে যদি পুহের সন্নিকটে গিয়া গুলি
 নির্মাণ হইয়া ছিল, অর্থাৎ বোট গুলি তটে রাখিয়া
 জনকয়েক সৈনিক পুহের সম্মুখবাহাতি সৈন্য দ্বারা উপ-
 নীত হইলেন । যুদ্ধবাজ চাওয়াই অগ্রসর হইয়া গিয়া বি-
 ধানে তাহাদের সম্মুখন করিয়া গুলিচালনা লইয়া গেলেন ।
 আদট মিউচাল প্রকাশ পূর্বক কমান্ডোরের বাজিয়া
 একখানি পত্র এবং অপর সামগ্রী কল তাহার হস্তে প্র-
 দান করিলেন, তিনি যতদূর সম্ভব পুহ তাহা গ্রহণ ক-
 রিলেন । তাহা হইলে একটি ক্ষুদ্র পুহ আদটকে লইয়া
 গিয়া কহিলেন, অসামান্য দৃষ্টান্তের কমান্ডোরের স-
 হিত সাফল্য কমান্ডার দিন হইতে কহিলেন, তিনি পত্রদ্বারা
 জাপানের সৈন্য দ্বারা কখনো কখনো নিমিত্ত প্রার্থনা
 করিয়াছেন, যেদিন তাহার সে পত্রের প্রত্যুত্তর দেওয়া হা-
 উবে ।

অনন্তর জেপানীয়েয় তটস্থিত নৌকা হইতে উপটৌ-
 কনের সামগ্রী সকল আনা ইয়া যথাস্থলরূপে তাহা স্থাপন
 করিতে লাগিল । লোকেরা যেন উৎসাহরূপে দেখিতে পার
 এজন্য চারিদিক খোলা একখানি প্রকাণ্ড আউটলা কমি
 সমারগণ নির্মাণ করিতে অনুমতি দিলেন, পরিপ্রয়ো

সকল লোকসকল দিন রাত্রি পরিশ্রম করিয়া তাহা
 করিতেছিল। যে সকল সামগ্রী শীতল বায়ু লাগিয়া
 তাহার নিমিত্ত একটি বস্ত্র স্থান নির্মাণ
 হইল। আমেরিকানেরা শিক্ষা কর্ণে বড়ই পারদর্শী
 হইয়াছিল। তাহারা তাহার সমগ্র অর্থ আপ-
 নাদের জাহাজ সজ্জার স্থান পর্যন্ত প্রায় এক কোশ
 দূর একটি টেলিগ্রাফ নির্মাণ করিতে আরম্ভ করিল, বড়
 একটি টাউনসকল পোতা হইলে তাহার উপরে তরবার
 আনন্দে অধিবাসী অতি আশ্চর্য্য বিষয়, জেপানীযের
 জাহাজে দেখা নাই, অতএব সান্তিশায় উৎসাহ প্রকাশ
 করিয়া এই অভিনব কর্ণের সাহায্য করিতে লা-
 গিল। তাহারা হইলে, তাড়িত বাতাবহে বাতী প্র-
 কাশিত হইল। জেপানীযের একজন সৌত-
 ক হইল ও তাহার কর্ণ সকল দেখিয়া অতীব আশ্চর্য্যবিত্ত
 হইল, এক দুই হের মধ্যে হিংরাতি ওলকাৎ এবং জে-
 পানি ভাষায় সংবাদ করিলে এক বাসী হইতে অন্য
 দিকে দেওয়া হয়, তাহা অসম্ভব করাই ও হানের পক্ষে
 হইল। প্রতিদিন বাক্যের প্রধান অংশের
 সকল আশ্রয় কর্ণদ্বারীকে করিতেছিল, তাহারা
 তাড়িত বাতাবহের কর্ণ আরম্ভ কর, আগর দেখি
 যত্ন সার্থক করি। দিনতি করিয়া এই আশ্রয় করিলে
 কর্ণদ্বারী কর্ণ করিত, লোক সকল জনমাত্র সংবাদ
 প্রেরণ ও উত্তর পাইয়া সান্তিশার আশ্রয়িত হইত।

রেলওয়ে অর্থাৎ লৌহময় বাক্যের নির্মাণ দেখা হইতেও
 আমেরিকানের ক্রটি করে নাই। উপত্যকায় সামগ্রীর
 মধ্যে তাহার একখানি লৌহ শকট প্রদান করিয়াছিল,

বাপ্পীয় শকট বেকুপ হইতে হয়, উহা সকল দিগেই সেইরূপ, কেবল আকারে অতি ক্ষুদ্র মান. এত ক্ষুদ্র যে ছয় বৎসর বয়স্ক বালক উহাতে খাটতে পারিত কিনা সন্দেহ ছিল। জাপান দেশীয় লোকেরা এতরূপ অশুচি সামগ্রী পরস্পর কখন দেখে নাই, কি ভাবে কি অতদূর সমুদ্রেই ইহা নতুন দরজানে মাতিয়া, বিমোচিত হইল। ক্ষুদ্রকায় কনিষ্ঠ বহিঃ উহারে তাহার মধ্যে প্রবেশ করিতে পারিত না, তথাপি ডানের উপর উঠিয়া কোন কোন দিক দিয়া কোন ভাবেই অক্লেশ পথ ভ্রমণ করিয়া আসিত। হুইলো কনিষ্ঠের লেহ লোহ শকটের উপরিন ডানে বসিয়া অসম্মদ করিতেছে, তাহারিগেল ছিল। পশ্চিম দিকের উড়িতেছে, আমেরিকানেরা ইহা দেখিয়া মাতিয়া কেঁতু হনাক্রম হইত। কতক ভয়, কতক ক্রোধ, হ মা বননে মেওয়ারি নামক উচ্চগাছ দ্বা দিয়া মগন শকটোপরি আবেষ্টন করিয়া ইতস্ততঃ ভ্রমণ করিত, আর কখন উচ্চ হ মা, কখন বা চীৎকার করিয়া উঠিত, তখন লোকে কতগুলি দিক, মাতিয়া প্রলম্বিত হইত।

আমেরিকানদের সহিত জাপানিদের যেন বিশেষ সংস্রব ও স্বক্ৰিয়তা ন হয়, কৃতমাধ্য জেপান গবর্ণমেন্টের দ্বারা প্রতিনিয়ত হকাইতে যদিও কিছুমান জুটী কারেন নাই, তথাপি অগত্যা তাহাদিগকে সংস্রব করিতে হইল। আমেরিকানদের তাহাকে প্রতিদিন জল ও খাদ্য সামগ্রীর প্রয়োজন হইত, যাজপুসদিগের অনুমতানুসারে সাধারণ জেপানীয়েবা তাহা মূল্য লইয়া বিক্রয় করিত, সুতরাং কখনুরোপে কি ছোট কি বড় সকল জাতিদের সহিত

আমেরিকান লোকদের কথোপকথনাদি সংগ্রহ হইত, একরকম ব্যবহার অনুবোধে একত্রে বসিয়া ভৌতন চলিত না। কোন আশ্চর্য্য স্মৃতি সাক্ষী দেখিলে জাপানীয়েরা সাক্ষীকে কোতুলকাক্রান্ত হয়, ইতি তাহার কারণ। তাহা বিবর্তিত। অতএব আমেরিকানদের স্মৃতি স্মরণ লিপ্যন্তর দেখিয়া তাহার। তৎকালীন জাতীয়তাবাদীরা নতুন নতুন কল্পনা করিত। দৃষ্টান্তরূপে একটা কথা বলি, আমেরিকান সৈনিক পুরুষদের বস্ত্রের পারিপাট্য বড় উৎকৃষ্ট ছিল। যেখানে যেমন কামি বস্ত্র পরিধান করিতে হয়, তাহার। সেইরূপ পরিধান করিত। জাপানীয়েরা তৎকালীন সাক্ষীর কোতুলকাক্রান্ত হইয়া, কল্পনে তাহার। এইরূপ বস্ত্র প্রস্তুত করে, কল্পনে তাহার। সেলাই হয়, কল্পনে তাহাতে বোতাম লাগায় ইত্যাদি নানী কথা, জিজ্ঞাসা করিত। উপহার রূপে আমেরিকানদের। তাহা দিগকে স্মৃতি দিয়া একটা বোতাম দিলে, তাহাদের আকর্ষণের আর পরিণতি থাকিত না। সাক্ষীর সন্তোষ প্রকাশ পূর্ব্বক তাহার। উহা গ্রহণ করিয়া বড়ই কৃতজ্ঞ হইত। তাল। এত সামগ্রী থাকিতে আমেরিকানদের পরিচ্ছদ সম্বন্ধে তাহাদের প্রতি তাহাদের এত অনুরাগ ছিল কেন? কারণ জাপান দেশে বোতামের ব্যবহার ছিল না, উহা বিশেষ প্রকারের কল্পিত হইত। তাহাও তাহার। আনিত না, তাহাদের যে সকল বস্ত্র ব্যবহার করিত, সে সকলই হয় সড়ি নতুন। স্মৃতি দিয়া বাক্য বোঝাতে করিয়া তাহান থাকিত, সুতরাং বস্ত্র পরিধান বা পরিভাগ করিয়া। সময়ে বোতামে যত চাপ দিত, তাহা তাহাদের কখনই হইত না।

বস্ত্রের বিষয়ে তে এইরূপ বলিলাম, তৎক্ষণীয় প্রদান

রাজকর্মচারী মেওয়ারিমেরা যখন অনুচরস্বর্গকে সঙ্গে
লইব। জাহাজে যাইতেন, তখন কখনোত্র বিরাম করিতেন
না, পুছাপুছ রূপে জাহাজের এ কোণ ওকোণ ভিতর
ব্যস্তি সর্বত্র অনুসন্ধান করিতেন। কখন উকি মারিয়া
তাহাদের বড় বড় কামান দেখিতেন, কখন কোতুহলী-
ক্রান্ত হইয়া, তাহাদের প্রকৃতি তাহাদের ক্ষুদ্র অস্ত্র সকল
পরীক্ষা করিতেন, নৌকা সকল মাপ করিতেন, বর্শা সকল
কিঞ্চপ ক্রমে পরীক্ষা করিয়া দেখিতেন। বাঙ্গালীর
তাহাদের সে স্থানে বাঙ্গা যন্ত্র ছিল, যন্ত্রবিৎ কর্মকারকেরা
কিঞ্চপে তাহাদের কর্ম করে, যন্ত্রের ঢাকা কড় শীঘ্র মারি,
কিঞ্চপে উহা জন গঠিতে বাঙ্গা উপস্থিত হইয়া। তাহাদের
মৃত কর্ম নিষ্পাদন করে, তাহা বিশেষরূপে পরীক্ষণ
করিতেন। জেপানীরা লোকের, শুদ্ধ দেখিয়া, মন্তব্য হন নাই,
মাইবার সময় তাহার, তাহাদের দীর্ঘস্থ্রী শিখিল পরি-
চ্ছাদন এক পার্শ্বের জেবেতে হুঁত ছালের কাগজ পেন-
সিল এবং কারী কলম প্রকৃতি লিখিবার সামগ্রী লইয়া
হইত, আর আমেরিকানদিগের সহিত সাক্ষাৎ করণ সময়ে
দে সকল কথোপকথন হইত তাহার কর্ম লিখিয়া রাখিত।
জেপানীদিগের চিত্রকর্মে বড়ই অনুরাগ ছিল, আমেরি-
কানরা কোন মনোহর প্রতিমূর্তি অথবা চিত্রপট দেখাইলে,
পরমাচ্ছাদিত হইয়া তাহার প্রতিকৃতি গঠিতে চেষ্টা করি-
ত, কিন্তু শিল্পকর্মে তাহাদিগের সুনৈপুণ্য ছিল না বলিয়া
উহা তাহাদৃশ উত্তম হইত না। এতোক মনুষ্যই আমেরি-
কানদিগের জাহাজ এক অন্যান্য সুন্দর সুন্দর সামগ্রীর প্র-
তিমূর্তি লইতে চেষ্টা করিত বুদ্ধি কৌশল প্রকাশ করিয়া
পেন, সল হারায় চিত্রের পাণ্ডুলেখ্য লিখিত, কিন্তু সকল চ-

জৈপনি।

ইউ.সি.ইউ.এর কারণ কি? বোধ হয় তাহার কারণ
 শিল্পিক ছিল না, কারণ প্রকৃত শিল্পিকদিগের তত্ত্ব
 প্রকৃত যে সকল কর্ম আমেরিকানেরা জৈপানে বাস্তব
 প্রয়োগ করিত তাহা সর্ববিধায়ে প্রশংসনীয়। যদিও
 তাহার সুগভ্য লোক নহে, পদার্থ বিজ্ঞান শিল্পের
 তাহাদের বুদ্ধি রক্তি এবং ধর্ম প্রকৃতি সুমাজিত হয়
 নাই, তথাপি তাহাদিগের অনুকরণ শক্তি বিশেষ
 রূপ ছিল, যেখানে যেমন সেখানে তদনুযায়্য ব্যবহার
 করিত, বিদেশীলোকদিগের আচার ব্যবহার শীঘ্র শিখিত
 নাই, তাহাদের রিত্যনুসারে ক্রম করিত, খুঁটখুঁটের প্রতি
 বিষয়ই তাহাদের বিদ্যে ছিল, বোধ হয় ইহারা উৎ
 কল অনুভব করিতে পারে ন, বলিয়াই এই রূপে ইহা
 প্রকাশিত। স্বাভাবিক তাহার মেরুপ ও উত্তর, উ
 দ্বার কলোপধায়িক শক্তি বুদ্ধিতে পরিণত, তাহাদের এ
 রূপ বিরাগ কখনই থাকিত না, বরং সমাদিত পূর্নক গ্রহণ
 করিয়া বাহ্যে তাহার উন্নতি হয় এমন চেষ্টা, পাইত এবং
 আপনাদিগকেও কৃতকৃতার্থ বোধ করিত।

বিদেশী লোকদিগের বিষয়ে সন্তোষ কোরুল
 প্রকাশ করিয়া, জৈপানিয়ার তত্ত্বদের বুদ্ধি বিদ্যা অল্প
 কালে তৎপর ছিল বটে, কিন্তু বিদেশীয়েরা বাহ্যে তা
 হাদিগের কোন প্রকার বিদ্যা শিখিতে না পারে, এবিষয়ে
 কিছুই সাহায্য ছিল। আমেরিকানেরা যদি কোন দিন তা
 হাদের আচার ব্যবহার রীতিনীতি ধর্ম অথবা বিদ্যার
 বিষয়ে কোন কথা জিজ্ঞাসা করিত, তবে তাহার শপথ ক
 রিয়া বলিত, মহাশয়! অল্প গ্রহপূর্নক একথা আমাদিগকে
 জিজ্ঞাসা করিবেন না, জৈপান সংক্রান্ত কোন কথা প্রকাশ

মারিগণ কোথায় থাকে, তবে কেহই যেন তাহার স
 ন জাহাজে প্রত্যাগমন করে। মৈনিক পুরুষেরা তদনুসারে
 তাহার অনুজ্ঞামত কর্ম করিলে, তিনি আশ্বাসপত্রের অমু-
 লিপি একখানি জেপানি দুতের হস্তে দিয়া কহিলেন, যে
 ব্যক্তি যাবত লঙ্ঘন করিয়া তোমাদের দেশে অত্যাচার
 করিতেছে, তুমি এখন যাঁহীরা তাহার হস্তে এই লিপি
 খসি প্রদান কর, তাঁহা হইলে সে নিবৃত্ত হইয়া এখন জা-
 হাজে প্রত্যাগমন করিবে তাহার কোন সন্দেহ নাই। ক-
 মোডোর যেরূপ বলিলেন, তুত সেইরূপ করিল, বিবাদের
 নিষ্পত্তি হইয়া গেল, তাহাতে কানাগয়ার কর্তৃপক্ষের
 সন্তুষ্টি হইয়া পরদিন প্রাতঃকালে তাঁহাকে একখানি কৃত-
 অত্যন্তক পত্র প্রদান করিল।

তুত, আমেরিকান সেনাপতি বনিয়া যে ব্যক্তির লৌ-
 ঙ্গাঙ্কার কথা প্রকাশ করিয়াছিল, তাহার ব্যবহৃত
 জেপানিদেরা চমকিত হয়, সে আর কেহই নয়, টিউকুয়া
 নামে সসকুইহানা জাহাজের একজন ধর্ম উপদেশক।
 তিনি এক দিন সমুদ্রতটে ভ্রমণ করিয়া বেড়াইতেছিলেন,
 বেড়াইতে বেড়াইতে আরও কিয়দূর গমন করিয়া ডে-
 পানের প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্য অবলোকন করিতে তাহার
 কৌতুহল জন্মিল, অতএব তিনি নিতা যেমন বেড়াইতেন
 তদনুসারে দুই তিন ক্রোশ পথ চলিয়া গেলেন, কিন্তু
 বিদেশী দলকগণ যেন ততদূর পর্য্যন্ত ন যায়, জেপান
 গবর্নমেন্টের এমন নিষেধ ছিল। তিনি যতদূর নগর
 হইতে সে ক্রোশ দূরবর্তী কানাগয়া নগরে যাওয়াতে,
 জন কয়েক জেপান গ্রহণ করিয়াও পূর্বেক তাহার
 নিকট নিবেশন করিল, মহাশয়! অগ্রসর হইয়া দেখার

অভ্যন্তরে ঘাইবেন না, বিনা বাত অজ্ঞার কোন ব্যক্তি
নগরের মধ্যে যান, আশ্রমের দেশে এমন নিষেধ নাই।
ধর্মোপদেশক তাহাদের কথা ন, মানিয়া দেখা ক্রমে
অগ্রসর হইতে লাগিলেন, তাহাতে কুকুর দেরূপ ভয়
সংক্রমার, জেপান প্রভৃতিতে সেইরূপ তাহার-সংক্রম
ছিল, যদবধি কাকসংক্রান্ত নগরে তিনি উপস্থিত না
হইলেন, যদবধি তাহার তাহার-সংক্রম পরিচালিত করিল
ন। এখানে অসিরা তাহাকে একটি নদী পার হইতে
কৈল, জেপান দেশীয় যে সকল নৌকা-যাত্রিক ভায়া
উপস্থিত ছিল, পায় করিয়, নদীর পাশেই তিনি তাহার
নিবাস স্থানসমূহ দেখেন করিলেন কিন্তু কোন নগরেই
নদীর সম্মুখ হইলেন। তাহাৎবধি নৌকার দলে, যে,
উদ্যত এই উপদেশক জেপানগরস্থ হইয়া তাহা বিদ্যাক
নগরস্থ ন নদীর উপর হইতে হইল, সেখানে, সীতা
যেহে হইতাহা ন নদীর পাশেই নিবাস একজন
ধর্মোপদেশক তাহা দেখিয়া, পান, এস করণে যে উদ্যত
হইলেন, তাহা ন নদীর পাশেই হইলেন। তাহা হইক
পার হইলেন, সেখানে তাহা ন নদীর পাশেই হইলেন
প্রভৃতি, তাহা তিনি নদীর পাশেই হইলেন, তাহা ন নদীর
পাশেই হইলেন, তাহা ন নদীর পাশেই হইলেন, তাহা ন
সেইখানে নিবাস পায় হইল। উপক্রম করিয়া হইল, যেত
সময়ে জেপানি হস্তকর্মের, তাহা অনুজ্ঞাপ্রাপ্তি তাহার
হস্তে ছিল, আর করিল, পাশে দেখ, পথখান আর এক-
বার পাড়িয়া দেখ, এখন জাহাজে কি'রূপ যাবে কিনা
বল? দুই মিনিট, যায় আর এই কথা বলে, ধর্মোপদে-
শক তাহাতে অসন্তুষ্ট হইলেন বটে, কিন্তু কোন কথা

মা কহিয়া একেবারে বলিলেন, এত বাকী আউষধের আ-
বশ্যক নাই, আমি স্বস্থানে প্রস্থান করিতেছি।

পথে যাইতে যাইতে ধর্মোপদেশক বজোড়া নামক
একটি নগর দৃষ্টি করিলেন, সর্বা বিধায়ে ঐ নগর অতি
মনোহর স্থান, উহার পথ, মাটি, বাজার হাট সকলই
সুশরিত, ত এবং লোকাকর্ষণ, মুদ্রা পরিবর্তনের প্রয়োজন
হওয়াতে তিনি একটি দোকানে যাওয়া স্বদেশীয় মুদ্রার
পরিবর্তে জৈপুৰ মুদ্রা লইতে গেলেন। অন্য রজোড়
মুদ্রা গ্রহণ করা জৈপুৰ দেশের বিধি নহে, এই কথা ব-
লিয়া দোকানদার প্রধান আমের আপত্তি করিল বটে,
কিন্তু উপদেশক আমের কুর্কণিতক করিলে সে শঙ্কিত
হিষ্ট হইয়া পিছুনে রাখা হইল। কিছু পরদিন এ-
নস্কি প্রভৃতি নগর আমেরিকান নগরের নিকট আ-
গমন করত করিলেন, ভোগীদের মুদ্রা তোমরা লও,
জৈপুৰি মুদ্রা আমানিতে পুনঃ প্রদান কর, একপ-
নিধা: আউষধ ও আঁটা আঁটা দেখিয়া আমেরিকানেরা
হাস্যময় করিতে পারিলেন, ধর্মোপদেশককে অচিন-
তাতার সহাস্য বলনে কোনরূপে উৎসাহিত হইয়া
ছিল।

সমুদ্র তীরে কনোডোরের সহিত সাক্ষাৎ ও ধর্মোপদেশ-
কের জন্য কমিসনারগণের দ্বারা সে দিন স্থির হইয়াছিল
যত্ববুদ্ধিরূপ দৈব ঘটনা, প্রকৃত সে দিন শুভকর হইল
না, তখনা পরদিন প্রাতঃকালে তাহা সমাধা করিবার
কালনা স্থির হইল। পরকু কমিসনারগণ নিশ্চিন্ত ছিলেন
না, নিম্ন লিখিত পত্রখানি তাঁহার কনোডোরকে লিখি-

মান্যবর ত্রিযুক্ত কমোডোর পেরি আমেরিকান

জাহাজের অধ্যক্ষ মহাশয় সমীপে,

সবিনয় নিবেদনমিদং--

গত ৮ ই মার্চ দিবসে আমরা যখন মহাশয়ের সহিত সাক্ষাত করিতে যাই, তখন আপনি আমাদিগকে আমেরিকার কর্তৃপক্ষদিগের নানিচ্ছা প্রস্তাব বিষয়ক যে কাগজপত্র দিয়াছিলেন, আর এক্ষণে চীনদেশে আপনাদের মেরুপ নানিচ্ছা হইতেছে, সেইরূপ নানিচ্ছা যেন জেপানে হয়, এই অভিপ্রায়ে আপনি ১১ ই মার্চ দিবসে প্রত্যেক লিপি স্বরূপ আমাদিগকে যে লিপি লিখিয়া দিলেন, যত্ন পূর্ব্বক আমরা সে সকল পাঠ করিয়াছি, আমেরিকা প্রেরিত পূর্ব্ব পত্র দ্বারা বোধ হয় মহাশয় অবশ্যই জ্ঞাত হইয়া থাকিবেন, যে অত্যন্ত দিন স্মৃতি মনুষ্য ভিত্তি হইয়াছেন, রাজকায়ের অনেক বাণী আর এখনও সম্পূর্ণরূপে সমাপ্ত হয় নাই, আমেরিকার সহিত যুদ্ধ সম্মিলন প্রস্তুত মনোযোগ করেন, সম্ভ্রান্তি তাঁহাদের এমন সাবকাশ নাই এই জন্য গত শীতকালে ওলন্দাজ জাহাজের পূর্ব্বদ্বারা মহাশয়কে এবিষয় জ্ঞাত করা গিয়াছিল, আর আপনি যে ইচ্ছা ইউনাইটেড স্টেটসের লাল করেন, তাহারা এমন মনে করিয়াও ছিলেন, ...

যে সকল বিষয় আপনি প্রস্তাব করিয়াছেন, তন্মধ্যে আমেরিকা বাসী ছদ্মশাপন নাবিকদিগকে আশ্রয় দেওয়া জেপান হটবত্তী ওলন্দাজ জাহাজকে রক্ষা করা, যে সকল জাহাজ আমাদের সমুদ্রে হইয়া যায়, প্রয়োজন হইলে কি করিল, কি খাদ্য, কি অপর প্রয়োজনীয় দ্রব্য, যথাবিধানে

তাঁহাদের অভাব সম্পূরণ করুন, জেনারেল গবর্ণমেন্ট এসকল প্রস্তাব যুক্তিসিদ্ধ বিবেচনা করিয়াছেন, অবশ্যই আপনারা এসকল পাইবেন, তাঁহার কোন সন্দেহ নাই, কিন্তু চীন দেশে যে রূপে আপনাদের বাণিজ্য চলিতেছে, সে রূপে বাণিজ্য এখানে হওয়া সাতিশয় সম্ভব হইল, সে বিষয়ে আমরা সম্প্রতি কিছুই লিখিতে পারি না। কারণ আমাদের দেশীয় লোকদিগের রীতি নীতি এবং সংস্কার অপরা দেশীয় লোকদিগের সম্পূর্ণ বিপরীত, আমরা প্রাচীন প্রথাকে বড়ই মানা করি, মহাশয় ইচ্ছা করিলে কি হইবে, সে নিয়ম পরিবর্তন করা আমাদের পক্ষে সম্ভব নহে। বহুকালাবধি চীন রাজ্যের, পৃথিবীর পাশ্চাত্য নিবাসী ভিন্ন ভিন্ন জাতির সহিত বাণিজ্য সংস্রব আছে, আমাদের কেবল নেগাসকাই নগরীতে চীন এবং ওলন্দাজ ব্যতীত অপরা কোন জাতির সহিত সংস্রব নাই, আর এই দুই জাতি ভিন্ন অন্য লোকের সহিত সংস্রব রাখিবার প্রয়োজনও নাই, কারণ আমাদের দেশীয়দের জন্মে আমাদের অভাব সম্পূরণ হইয়া থাকে, অন্য দেশীয় জন্মে আমাদের বড় একটা প্রয়োজন করে না, এজন্য এখানে বাণিজ্য জন্মের পাবেবর্তন অতি অনুরূপ হয়।

অনেক বিবেচনা করিয়া গিয়া হইল, যে আগামী পর কয়েক বর্ষে আপনারা নাগাসকাই নগরে বাণিজ্য করিবেন, স্থানীয় কাঠ, জল, কয়লা, এবং অন্যান্য জন্মে কিছু প্রয়োজন হইবে, সে সকলই যে স্থান হইতে পাইবেন। আমেরিকা জাত জন্মের মূল্য ও গুণ আমরা বিশেষ অবগত নহি, এবং আমাদের দেশোৎপন্ন জন্ম সা-

নগরী মূল্য ও গুণ আপনান্না বড় একটা জানেন না, এজন্য পাঁচ বৎসরকাল পরস্পর পরস্পরের পরীক্ষা লইতে হইবে। এই সময় অতিবাহিত হইলে, আমরা এমন স্থান তোমাদিগকে বাণিজ্যার্থ দিব, বাহা সর্ব বিধায়ে তোমাদের পক্ষে সুবিধা জনক হইবে। নিবেদন মिति ১৬ ই মার্চ ১৮৫৫ খৃঃ অব্দ।

নিতান্ত যুগত ভৃত্যঃ

শ্রীহারএসাই

শ্রীইজাওয়া

শ্রীইদো,

শ্রীউইডোনে,

পরদিন ১৭ ই মার্চ কমোডোর জনকয়েক উকীল এবং প্রধান কর্মচারীকে সঙ্গে লইয়া সকল গৃহে কমিসনারগণের সহিত সাক্ষাৎ করিতে গেলেন, পরস্পর দেখা শুনা ও শিষ্টাচারের কথা বার্তা হইলে, প্রধান প্রধান হাহার। জনকয়েক দলান্নেব পাশ্বেবর্তী একটি কুঠারিতে প্রবেশ করিলেন। এই সময়ে জেপান ও আমেরিকান উভয় জাতিতেই যোদ্ধার বেশে পরিচূষিত হইয়াছিল। হায়াএসাই এই কথা বলিয়া কর্ম্ম আটক করিলেন, যদি বিষয়ে আমাদিগের যে অভিপ্রায় কল্যাণামর, কানাদরকে লিখিয়াছি কমোডোর তত্বাতে সন্তুষ্ট হইয়াছেন কি না? ওলন্দাজ উকীল, নিম্নভাষায় একপার কর্ম্ম বৃত্তান্ত করিলে, তর্কবিতর্ক আবৃত্ত হইল। আপনাদিগের মত বজায় করিবার জন্য জেপানিযেবা সাতিশয় দঢ়াভা করিতে লাগিল, আর তোমাদিগের অভিষ্ট সাধন আমাদের দেশের স্বাধীনতার পক্ষে বড়ই কঠিন, আমরা কোন মতেই তাহা করিতে পারিব না, এই কথা বলিয়া নানু আপত্তি ও পৌরযোগ করিতে লাগিল। জেপানী কমিসনারগণ বিশেষাভ্যুযোগ

বর্তমানে তিনটি স্থান না পাইলে তিনি কোনমতে সন্তুষ্ট হইবেন না। নাইফন উপদ্বীপে উরাগা এবং কাগাসিমা নামে দুইটি নগর আছে, উরাগা একটা নগরে তাহাদিগের প্রথম বাণিজ্য স্থান হইবে, দ্বিতীয়টি জেসোউপদ্বীপস্থ মাটসুই নগর, এবং তৃতীয় স্থান লুক উপদ্বীপের লুক নগর হইবে। ই কথ শুনিয় কমিসনারগণ প্রায় অল্পকাল বোম্বাইয়নে রহিলেন, অনেক বিবেচনা করণাবশত অবশেষে বলিলেন, মেগাসকাই নগর গ্রহণে যখন কামাডোব আপত্তি করিতেছেন, তার উদগে প্রদান করণে যখন আমের আপত্তি করিতেছেন, তখন এতদেব বোম্বাইয়নে ন হইয়া মাটসুই নগরে আমেরিকান জাহাজের বন্দর হইয়া উঠিত। লুক উপদ্বীপে নতুন রাজ্যের অধীন হইতে, কিন্তু দরবন্দী স্থান বলিয়া তাহার কদাচিৎ উদ্যতে সম্পূর্ণ নাই, একারণ ইচ্ছায় আমেরা কোন আপত্তি করিতে চাহিল না। আর, যেরূপ লুক, মাটসুই নগর যদিও জাপান গবর্ণমেন্টের সম্বন্ধে নং ১৭ তম, কিন্তু অনেক কারণ দৃশ্যে তাহা বিবেচনা করিয়া আমেরা কিছুতে বলিতে পারিব না।

কমিসনারগণের এ সকল আপত্তিতে কামাডোব কর্ণপাত করিলেন না, যাহা চাহিয়াছি তাহা লইবই লইব, জাপান গবর্ণমেন্টকে অবশ্যই নিতে হইবে, এইভাবেই যখন এড়াতে, কমিসনারগণ তাহাকে অননুমোদিত দেখিয়া গোপনে এ বিষয় বিবেচনা করণার্থ অপর কঠোরীতে গেলেন। গিয়, সকলে প্রায় একঘণ্টাকাল নানাতরু করণান্তর বাহিরে আসিয়া কহিলেন, আমরা অনেক বিবেচনা করিলাম, কিন্তু মাটসুই নগরে বাণিজ্য করণ

বিষয়ে সহম। কিছুই স্থির করিতে পারিলাম না, উহা সম্রাটের নিজাধিকার নহে, জন্ম সূত্রে যুবরাজের অধিকারস্থ হয়, রাজ সন্মানে উত্তমরূপ আন্দোলন না করিয়া এবিষয়ে কোন কথা কহিতে আমাদের ক্ষমতা নাই, বোধ হয় এক বৎসরের স্থানে উহা স্থির হইবে না। কমোডোর তাঁহাদিগকে বাক্যের ছলে বলিলেন, কোন প্রকার শেষ উত্তর না পাইলে তিনি জাপান পরিত্যাগ করিবেন না, যুবরাজ তো স্বাধীন রাজ্য বটেন, মাটসমাই নগরে শাইয়া তিনি যেন তাঁহার সহিত শীঘ্র সাক্ষাৎ করণান্তর এবিষয়ের নিয়ম স্থির করেন। রাজ প্রেরিত লোকেরা ইহাতে প্রত্যুত্তর করিল, আগামী ২৩ সে মার্চ রুৎস্পতিবার আমরা আপনাকে একথার চূড়ান্ত উত্তর দিব, অপর শাইমোডা বিষয়ে সকলে সম্মত হইয়া স্থির করিলেন, কমোডোর পর দিন তথায় ছুই তিন খানি জাহাজ প্রেরণ করিবেন, একজন জাপানী কমিসনার ও জনকয়েক রাজ কর্মচারী তথায় উপস্থিত থাকিবে। আমেরিকান নাবিকগণ এই স্থানে উত্তমরূপ পরীক্ষা করিয়া দেখিবে, যদি, সর্ব বিধায়ে উহা তাহাদের মনোনীত হয়, তবে এই স্থান বাণিজ্য স্থান হইবে, নতুবা শাইফন উপদ্বীপের দক্ষিণে জাপান গবর্নমেন্ট তাহাদিগকে অপর এক উত্তম স্থান দিবে। ইহা স্থিরীকৃত হইলে ভেঙেলিয়া এবং সাউথাম্পটন নামে দুই খানি জাহাজ তথায় প্রেরিত হইল।

কমোডোর পেরি পাউহেটান নামক জাহাজে ছিলেন, ২৩ সে মার্চ দিবসে একজন নায়েব কমিসনার মাটসমাই নগরে বন্দর করণ বিষয়ক চূড়ান্ত উত্তর লইয়া তথায় উপস্থিত হইল। সে উত্তর, জাপানী গীন এবং ওলন্দাজ ভা-

যাতে লেখা হইয়া ছিল ; তাহার মর্ম্ম এই, আমেরিকান জাহাজের খাদ্য সামগ্রী জন এবং কাষ্ঠাভাব হইলে, মাটসমাই নগরে না গিয়া পূর্ব্ব ইচ্ছানুরূপ হাকোডাডি নগর হইতে তাহারা তাহা প্রাপ্ত হইবেন। হাকোডাডি বিদেশী লোকদিগের বাসস্থান জন্য এখন প্রস্তুত নহে, অতএব স্থিরীকৃত হইল, ১৮৫৫ খৃঃ অব্দের ১৭ ই সেপ্টেম্বরে আমেরিকানেরা তথায় যেন কার্য্যারম্ভ করেন। কমোডোর ইহাতে কথঞ্চিত সন্মত হইয়া এই বলিয়া নায়েব কমিসনারকে বিদায় করিলেন, আমরা অগ্রে ঐ বন্দরটি পরীক্ষা করিব, যদি কর্ম্মণ্য হয়, তবে তাহা গ্রহণ করণে আমার কোন আপত্তি নাই, কিন্তু কমিশনারদিগের এত অমৌক্তিক বিলম্বের কথা বড়ই অবিধের হইয়াছে।

এইরূপে বাণিজ্য স্থানের কথা শেষ হইলে, আমেরিকানদিগের জাপান যাত্রা একপ্রকার সিদ্ধ হইল। দুই জাতিতে মৌহাদ্দ হইবার উপক্রম হইয়া উঠিল, উভয় লোকের প্রধান প্রধান কর্ম্মচারীগণ সম্পূর্ণ শিষ্টাচার এবং বিনীতভাব প্রকাশ করিয়া পরস্পরকে পত্রলিখিতে লাগিলেন। আমেরিকানেরা জাপান গবর্ণমেন্টকে যে সকল উপঢৌকন দিয়া ছিলেন, বিশেষ কৃতজ্ঞতা এবং ধন্যবাদে সহিত জাপান গবর্ণমেন্ট পত্র দ্বারা তাহা স্বীকার করিলেন। ২৪ সে মার্চ জাপান সম্রাট প্রধান প্রধান রাজ কর্ম্মচারী দ্বারা কমোডোরকে নিমন্ত্রণ করিয়া প্রত্যুপঢৌকন দিতে অনুমতি করিলেন। তদনুসারে কমোডোর পূর্ব্ববৎ জন কয়েক উকীল এবং প্রধান প্রধান কর্ম্মচারীকে সঙ্গে লইয়া যোকুহামা নগরে উপস্থিত হইলে, সন্ধি গৃহে জেগানীয়ের। তাঁহাদিগকে বিশেষ অভ্যর্থনা করিয়া লইয়া গেল।

রাজদত্ত উপঢৌকনে ঐ গৃহ পরিপূর্ণ ছিল, সর্বোৎকৃষ্ট শিল্পশৈল্যে জেপানে বাহা বাহা প্রস্তুত হয়, সে সকলই তথায় ছিল। যথা কিংখাপ বুটিনার ও নানা প্রকার রেশমী কাপড়, তদ্দেশজাত সুপ্রসিদ্ধ চৌ চৌ বাক্স, কোটা, সি-নুটুক, মেজ, চৌকী বারকস, পানপাত্র, ভোজন পাত্র, বাটী কটোরা ইত্যাদি, এসকলই কাস্ট নির্মিত, এমনি মনোহর ও সুচিকিৎস যে দর্পণের ন্যায় উহাতে মুখের প্রতিবিম্ব দেখা যাইত। কাঁচের বাসন অগণা, সকলই সাতিশয় উজ্জ্বল ও স্বচ্ছ, নানা প্রকার স্বর্ণ কুল এবং প্রতি মূর্তিতে পরিভূষিত, তাহাতে বিবিধ বর্ণের মনোরম আভা প্রকাশমান, দর্শনে দর্শনেন্দ্রিয়ের পাণ ছুর হয়। কাঁচের বাসনের নিমিত্ত চীন দেশ সর্বত্র সুবিধায় আছে বটে, কিন্তু তদপেক্ষাও উহা উৎকৃষ্ট ছিল। পাখা, আলবোলাবল, পরিধান বস্ত্রের কয়েক প্রকার সামগ্রী বড় মূল্যময় ছিল না বটে, কিন্তু স্বর্ণ রৌপ্যের যে সকল দ্রব্য তাহার চতুষ্পার্শ্বে ছিল, সৌন্দর্য্য ভুলনায় উহা কোন মতেই স্থান ছিল না। পূর্বোক্ত উপ ঢৌকন সকল শ্রেণীবদ্ধ সুশৃঙ্খল এবং পরিপাট্যরূপে স্থাপিত থাকাতে, কমোডোর তদর্শনে সাতিশয় আক্লাদিত হইলেন। মান এবং পদানুসারে ঐ সকল সামগ্রী দত্ত হইবে বলিয়া, উহা একটি উচ্চ গোলারীর উপর ক্রমান্বয়ে স্থাপন করা গিয়া ছিল।

কমিশনারগণ দালানের এক পাশ্বে আসন গ্রহণ করিলেন, কমোডোর এবং তৎসঙ্গী লোক সকল গৃহের অভ্যন্তরে প্রবেশ করিলে, যুবরাজ হায়েসাই গাত্রোধান করিয়া সমুদায় সামগ্রীর ফর্দ, আর যে ২ ব্যক্তিকে তাহা প্রদান করা হইবে, তাহাদের নাম পাঠ করিতে লাগিলেন।

উকীলেরা ঐ সকল কথা প্রথমে ওলন্দাজ ভাষায় ইংরাজী ভাষায় অনুবাদ করিল। ধারাবাহিক রূপে সকল কর্ম সমাপ্ত হইল, হায়েসাই কমোডোরকে অপর একটি প্রকোষ্ঠ মধ্যে লইয়া গেলেন, গিয়া, জাপানে মতপ্রকার মুদ্রা প্রচলিত আছে, সে সমুদায়ের দুই দুইটি, তিন বাক্স দিয়া-সলাই, এবং দুই খানি তরবারি তাঁহাকে উপঢৌকন প্রদান করিলেন। এই সকল সামগ্রী যদিও মহামূল্য নহে, তথাপি জাপানীয়েরা আমেরিকান কর্তৃপক্ষের প্রতিনিধি বলিয়া কমোডোরকে যে সম্মান করিত, ইহাতে সপ্রমাণ হইয়াছিল। জাপান দেশে, বিদেশী লোককে মুদ্রা প্রদান করা যখন একেবারে নিষিদ্ধ আছে, তখন অভ্যর্থনা করিয়া তাঁহাকে মুদ্রা দেওয়া কিছু অস্বাভাবিকের কর্ম নয়।

কমোডোর স্বস্থানে প্রস্থান করণের উদ্যোগ করিতে ছিলেন, এমন সময়ে কমিশনারগণ বিনয় বচনে তাঁহাকে কহিলেন, মহাশয়! কলকাল বিলম্ব করুন, আপনাদের অধিপতিকে আমরা যে সমস্ত সামগ্রী দিয়াছি, তন্মধ্যে একটি জব্বা এখনও আপনি দেখেন নাই; অতএব একবার আমাদের সঙ্গে গিয়া দৃষ্টিপাত করুন। এই কথাতে রাজপ্রতিনিধি তাঁহাদের সঙ্গে সঙ্গে চলিলেন, জাপান রাজকর্মচারীরা তাঁহাকে সমুদ্র তটে লইয়া গিয়া দুইশত বস্তা চাইন দেখাইয়া দিলেন, ঐ সকল তগুল আমেরিকান জাহাজে দিবার জন্য সম্পূর্ণ প্রস্তুত ছিল। তগুল দর্শনে কমোডোর কোঁতুহলাক্রান্ত হইয়া প্রত্যাগমন করিতেছেন, এবং সময়ে জেনসকি অঙ্গুলী সঙ্কেত দ্বারা অপর এক স্থান হিত কতকগুলি শুষ্ক মৎস্য কয়লা এবং গোটা কয়েক কুকুর দেখাইয়া কহিলেন, মহাশয়! আপনি আশ্চর্যা-

বিষ্ঠাইবেন না, রাজা অথবা রাজ প্রতিনিধিকে উপঢৌকম দিবার সময়ে তণ্ডুল, মৎস্য, কয়লা, এবং কুক্কুর দেওয়া আমাদের দেশের পদ্ধতি, না দিলে অবমাননা প্রকাশ হয়, কিন্তু ঐ সকল উপঢৌকম কি অতিপ্রায়ে কেহই দেওয়া হয়, তাহা প্রকাশ করিয়া কহিলেন না, কমোডোর ইহাতে কিছু ক্ষুণ্ণচিত্ত হইলেন। পরন্তু অনুমোদন দ্বারা তিনি অবগত হইলেন, কাপ্তেন সারিস যখন ১৬১৩ খ্রিঃ অব্দে জেপান যাত্রা করেন, তখন জেপানীয়েরাও উদ্ভূত ও কথানি পত্র লিখিয়া কতকগুলি মহামূল্য দ্রব্য এবং গোটা কয়েক কুক্কুর উপঢৌকন দিয়া ছিল।

জেপানীদিগের প্রকৃত দাসশীলতার প্রমাণ আমেরিকানদেরা মনে মনে আন্দোলন করিতেছেন, এমন সময়ে তটোপরি হটাৎ হস্তী সদৃশ ভীমকায় ভরস্কর মূর্খি জন কয়েক লোক তাহাদিগের নেত্রগোচর হইল। উহারা মল্ল যোদ্ধা, আমোদ আক্সাদের নিমিত্ত যুবরাজ কি গোপন কি প্রকাশ্য সভা সর্বত্র তাহাদিগকে সঙ্গে লইয়া বেড়াইতেন। গণনায় তাহারা পঞ্চবিংশতি লোক, সকলেই অতি দীর্ঘাকার এবং শূলকায় হওয়াতে বাহ্য দৃষ্টিতে যেন তাহারা রাক্ষসের মত ছিল। তন্মধ্যে তিনজন লোক অতি প্রসিদ্ধ কুস্তিগির, জেপান দেশে উহাদের মত কেহই কুস্তি করিতে পারিত না, এজন্য যুবরাজ অভিমান করিয়া তাহাদিগের গুণ আশ্চর্য্যাবিষ্ট আমেরিকানদিগের নিকট কীর্জন করিতে লাগিলেন। কয়ানাজী নামা এক ব্যক্তিকে একজন কমিশনার কমোডোরের নিকট আনয়ন করিলে, কমোডোর তাহার আশ্চর্য্যরূপ দর্শনে কোঁতুহলাক্রান্ত হইয়া তাহার একটি হস্ত ধারণ করিলেন,

ধরিবামাত্র উহা যেন প্রস্তরের ন্যায় শক্ত ও নিরাট বোধ হইল, এমনি মোট', তিনি ছুই চাটুয়া দ্বারা তাহার কবজী মাপীতে চেঁচা করিলেন, কিন্তু পরিসরে তুল্য হইল না, প্রকাণ্ড বগুের গলদেশে যেকপ গলকয়ল অর্থাৎ লোলিত মাংস কুলিতে থাকে, ঐ অসম্ভব স্থল ব্যক্তির গলায় তেমনি কয়ল কুলিতেছিল। সকলে তাহার ভয়ঙ্কর মূর্ত্তির প্রশংসা করাতে, দম্ভ প্রকাশ করিয়া সে একবার চীৎকার করিল, তাহাতে বম্বা শূকরের চীৎকার অপেক্ষা তাহার চীৎকার সাতিশয় উচ্চতর হইল।

রুবরাজ আমেরিকানদিগকে তাহাদের বল দেখাইবার নিমিত্ত তটোপরি যে সকল চাইলের বস্তু ছিল, তাহা জাহাজে তুলিতে কহিলেন, তাহাতে পরস্পর লেহ কাহাবও আশ্রয় নহিল না, সকলেই ছুই হাতে ছুইটা বস্ত্র ধারণ করত ক্ষণমাত্র সমুদায় তওল জাহাজে তুলিয়া দিল। ঐ সকল বস্ত্রের কোনটাই ছুই মনের চ্যান ছিল না; তন্মধ্যে কয়নাজী ছুই হাতে ছুইটা এবং দন্তে একটা ধারণ করত অম্মান মুখে অক্লেশে চলিতে লাগিল, তদর্শনে আমেরিকানেরা সাতিশয় আশ্চর্যাবিক্ত হইলেন। তৎপরে মল্লযোদ্ধাগণ সক্রিয় হৈ গমন করত বলবিহীন প্রকাশপূর্ব্বক মল্ল যুদ্ধ করিতে লাগিল, সে যুদ্ধ সাতিশয় জঘণ্য কুৎসিত ব্যাপার, অতএব এস্থলে বর্ণন করা বিধেয় হইল না, কেবল এইমাত্র বলিয়া ক্ষান্ত হই, কমোডোর পূর্ব্বদেশে আসিয়া এতাদৃশ মন্দ রীতি পূর্ব্ব কখন দেখেন নাই।

শুশিক্ষিত রাক্ষসদিগের ঐ পশুবৎ কর্ম্ম সকল সমাপ্ত হইলে, আমেরিকানেরা জৈপানীদিগের রেলরোড এবং টেলিগ্রাফ দেখিতে গেলেন। কমোডোর জৈপানীদিগকে

অর্দ্ধ সভ্য লোক বলিয়া। জাপানে, পাঁচাড়ি। লোকদিগের ন্যায় কদর্যাচারে লিপ্ত থাকিয়াও তাহারা পদার্থ বিদ্যার যে এত উন্নতি করিবে, কখনই তিনি এমন বিবেচনা করেন নাই। ইংলণ্ডাদি সুসভ্য দেশের টেলিগ্রাফ এবং রেলরোড যেরূপ, উহার নির্মাণের রীতি ও প্রায় তদ্রূপ ছিল। বাষ্প যন্ত্রে অগ্নি প্রদান করিলে, বাষ্পবল সহকারে যখন লৌহ বস্তুর গাড়ি চলিতে লাগিল, তখন জেপা নবাসী লোকদিগের আশ্চর্যের আর পরিসীমা রহিল না, তাহারা সকলেই করতালি দিয়া কোলাহল করিতে লাগিল। রেলবন্ধ গাড়িগুলির শেষ এক খানি গাড়িতে দাঁড়াইয়া কমিশনারদিগের এক জন কেরানী সমাগত লোকদিগকে সে দিবসের পরেও রত্নান্ত্র কহিতে লাগিল, আর একজন মিস্ত্রী এক হস্তে অগ্নিতে কয়লা এবং অপনু হস্তে কল টিপিয়া গাড়ি ঢালাইতে লাগিল, আর টেলিগ্রাফ দ্বারা সে সময় জকুহান্দা নগরের কোন স্থানে কি হইতেছে, সে সমুদায় রত্নান্ত্র আসিতে লাগিল, তাহাতে সমাগত লোকদিগের কোতূহলের আর পরিসীমা রহিল না। অনন্তর জেপানীয়েরা যথাবিধানে রাজদত্ত উপঢৌকন সকল আমেরিকানদিগকে প্রদান করিল। বুদ্ধে জয়লাভ করিলে যেরূপ রণবাদ্য হয়, আমেরিকান জাহাজের নাবিক বাদ্যকরণে নানাদলে বিতক্ত হইয়া অতি মনোহর তালে সেই রূপ রণবাদ্য করিতে লাগিল, বাদ্যকরদিগের বেশভূষা সুশিক্ষা এবং সূনৈপুণ্য এবং নানাবিধ তালমান মূচ্ছাদি যুক্ত বিবিধ বাদ্যের মনোরম শব্দে জেপানীর তত্র লোকেরা বিমোহিত হইলেন। সে দিবসের সমারোহ ব্যাপার ঐ পর্য্যন্ত হইল, কমিশনারগণ সক্রিয় হইয়া গমন করি-

লেন, কমোডোর যথা বিধানে বিদায় লইয়া নিজ জাহাজে প্রত্যাবৃত্ত হওনের উদ্যোগ করিলেন, আশিবার সময় তিনি কমিশনারদিগকে কহিয়া আইলেন, পরশ্য দিবসে আপা-নাদিগকে আমেরিকান জাহাজে ভোজন করিতে হইবে, আমি নিমন্ত্রণ করিলাম, তাহাতে কমিশনারগণ মন্তক অবনত করিয়া নিমন্ত্রণ স্বীকার করিলেন।

২৭ সে মার্চ প্রাতঃকাল অবধি রহস্তোক্তের উদ্যোগ হইতে লাগিল, আমেরিকান জাহাজ সমূহের উপরিভাগে নীল পীত লোহিত প্রভৃতি নানা বর্ণের পতাকা উড্ডীয়মান হইল, নাবিকেরা সকল জাহাজ পরিষ্কার করত সুশৃঙ্খলপূর্বক সকল গুলিকে সারি সারি স্থাপন করিল, আর পুষ্পমাল্য এবং হরিদ্বর্ণ বস্ত্র পত্র দ্বারা সকলকেই সুশোভিত করিল, কাপ্তেন প্রভৃতি প্রধান প্রধান কর্মচারীগণ সকলে একই প্রকার রণ পরিচ্ছদ পরিধান করিয়া নিমন্ত্রিত লোকদিগকে অভ্যর্থনা করিতে প্রস্তুত হইলেন। দাঁড়ী-মাজী এবং অপর সামান্য কর্মচারী তিন প্রায় সপ্ততিজন ভদ্রলোক নিমন্ত্রণে আসিবেন, এই সমুদায় লোকের উত্তম খাদ্য আয়োজন এবং ভোজনোপবেশনের স্থান প্রস্তুত করণে কমোডোর কিছুমাত্র ত্রুটি করিলেন না। জাপানীদিগের সাধারণ ব্যবহারে অনেক কঠিন নিয়ম ছিল, প্রধান কর্মচারীরা অধীন কর্মচারীদের সহিত একত্রে বসিয়া ভোজন পানাদি করিতেন না, কমোডোর একারণে দুই স্থানে দুইটি মেজ প্রস্তুত করণের অনুমতি প্রদান করিয়া কহিলেন, প্রধান প্রধান লোকেরা তাহার গৃহস্থিত মেজে বসিয়া ভোজন ক্রিয়া নিষ্পাদন করিবেন, এবং অপর লোকদিগের আহার জাহাজের উপরিস্থিত ডেকের

মধ্যে হইবে। তদনুসারে স্থান প্রস্তুত হইলে, গো মেস এবং পক্ষ্যাদির মাংসে কালিয়া কোণ্ডা কাবাব পোলাউ প্রভৃতি নানাবিধ সুবাদযুক্ত ভোজনোপকরণ প্রস্তুত হইতে লাগিল। বঞ্জেনের সঙ্গক্ষে ও মনোহর শোভার সমুদায় ভোজনস্থান একেবারে আমোদিত হইল।

যথাকালে নিমন্ত্রিত লোকদিগের স্তভাগমন হইলে, আমেরিকানেরা সপ্তদশ তোপ ছুড়িয়া তাহাদিগের সম্বর্জন করিল। জেপানীয়েরা যুদ্ধ প্রিয় লোক ছিল না বটে, পরন্তু যুদ্ধান্ত্র এবং রণ সংক্রান্ত কর্ম দর্শনে তাহাদের সাতিশর অল্পরাগ ছিল। একারণ জাহাজে গিয়া অপেক্ষণ এখার ও খার দর্শন করত তাহারা যে গৃহে গোলাগুলি বারুদ কামান এবং বন্দুক প্রভৃতি ছিল, তাহা অবলোকন করিতে গেল, অবলোকন করিয়া তাহাদের আত্মাদের আর পরিসীমা রহিল না, প্রফুল্ল বদন এবং বাক্য প্রয়োগ দ্বারা তাহারা হর্ষচিহ্ন প্রকাশ করিতে লাগিল। কি কৌশলে তাদৃশ প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড বাষ্পীয় জাহাজ সমুদ্র গমন করে, জেপানী রাজকর্মচারীরা পরে জানিতে ইচ্ছুক হইলেন, তাহাতে আমেরিকান নাবিকগণ বাষ্প যন্ত্রের সমুদায় অংশের গুণ এমনি সুস্বরূপে বর্ণন করিল, এবং তাহা চালাইয়া এমনি বুদ্ধি নৈপুণ্য দেখাইল যে তদ্বারা তাহারা সাতিশর আশ্চর্য্যাবিষ্ট হইলেন। অনন্তর খাদ্য প্রস্তুত বলিয়া কমোডোর সকলের অভ্যর্থনা করিলেন, তাহাতে সকলে তাহার সঙ্গে আইলে, জাহাজের ডেকের মধ্যে যে যেমন তাহাকে সেই স্থানে বসাইয়া, আপনি কমিশনারদিগের সহিত নিজগৃহে আইলেন, উত্তম খাদ্য এবং মিষ্টবাক্য দ্বারা তাহার অধীন কর্মচারীরা সকলকে পরিতুষ্ট করিল।

আমেরিকান জাহাজের চারিজন প্রধান কর্ণধার কমে-ডোরের প্রধান কর্ম সম্পাদক এবং উকীল কমিসনারদিগের সহিত ভোজনে বসিলেন। কিন্তু জৈপানীদিগের উকীল জেনসকি আপন কর্তৃপক্ষদের সহিত বসিতে পাইলেন না, কমিশনারের অনুগ্রহ প্রকাশ করিয়া ঘরের এক পাশে একটি ক্ষুদ্র মেজে তাহাকে ভোজন করিতে অনুমতি দিলেন, তাহাতেই তিনি সন্তুষ্ট হইয়া প্রকুলচিত্তে ভোজন করিতে লাগিলেন, অবমানন কিছুই বোধ করিলেন না, ইহাতে আমেরিকানের আশ্চর্য্যান্বিত হইল। হায়েসাই সকল বিষয়ে গাম্ভীৰ্য্যভাব প্রকাশ করিতে লাগিলেন, তিনি সকল প্রকার মদ্য ও খাদ্যাদির অল্প অল্প আশ্বাদ লইলেন বটে, কিন্তু ভাল করিয়া কিছুই খাইলেন না, তাঁহার স্বদেশীয় অপর ভ্রাতৃলোকেরা সেরূপ ব্যবহার করিলেন না, বিশেষ আমোদ করিয়া তাঁহার সকল সমগ্রী পর্যাপ্তরূপে ভোজন করিলেন।

আমেরিকান যোদ্ধাদিগের সহিত ভেলের মধ্যে যে সকল জৈপানীলোক ভোজন করিতে বসিয়া ছিল, ভোজন করিতে করিতে মদ্যপান কালীন তাহাদিগের কলরবে বিশেষ গোলমাল হইল, গোলমালের কারণ কেবল পরস্পর পরস্পরের স্বাস্থ্য উত্তিমাত্র, তাহাদিগকে উৎসাহিত ও আহ্বাদিত করিবার জন্য যে মনোহর বাদ্যোদয় হইতে ছিল, তদপেক্ষাও তাহাদের শব্দ উচ্চতর হইল। মদ্যমানে মত্ত হওয়া যদিও নিমন্ত্রিত এবং নিমন্ত্রণকারী উভয়ের পক্ষেই অবিধেয় কর্ম, তথাপি সুখের সময় বলিয়া কোন পক্ষের কর্তৃপক্ষ কিছু বলিলেন না, মদ্যের বোতল আনিবানাত্রেই নাই, কাহার পর কি খাইতে হইবে তাহারও

নিয়ম রহিল না, ইহা দেখিয়া পরিবেশন কারীরা সঙ্গীসা বদন হইল । পরন্তু সকল ভোক্তার একরূপ অবস্থা হয় নাই, জনকয়েক জেপানী ধৈর্য্যাবলম্বন করিয়া যথা নিয়ম ভোজন পানক্রিয়া সম্পাদন করিয়াছিল ।

আমেরিকানেরা বহুলোকের খাদ্যসামগ্রী আয়োজন করিয়াছিল, সকল লাগিল না, ভোজনের পর ভুক্তাবশেষ সকল বস্তুরই কিছু কিছু রহিল । জেপানীয়েরা স্বদেশের রীতানুসারে ঐ সকল সামগ্রী বাঁধিয়া আনিবার উদ্যোগ করিতে লাগিল । তাহাদিগের পরিধেয় লবঙ্গদার স্থানে স্থানে প্রশস্ত থলিয়া ছিল, ভোজে ঘাইবার সময়ে তাহারা উহাতে কতকগুলি কাগজ ও অপর লিখবার সরঞ্জাম লইয়া ঘাইত, আর যতপ্রকার খাবার প্রস্তুত হইত সে সকলই লিখিত, পরে আশিবার সময় ঐ সকল সামগ্রীর কিছু কিছু কাগজে মুড়িয়া আনিত । বর্তমান কর্মোপলক্ষে ভোজনের পর সকলেই অবচ্ছিন্নরূপে মেজের উপর কাগজ পাতিয়া খাদ্য সংগ্রহ করত রুমালে বাঁধিলে, খোল ভাত ব্যঞ্জনাদির রস তাহাদের সমুদায় বস্ত্রে লাগিতে লাগিল, কিন্তু দেশের রীতি বলিয়া তাহারা ইহাতে জ্ঞপ্তিও করিল না । জেপানী ভোজে ঘাইবার সময় যেন আমেরিকানেরা ঐরূপ করে, না করিলে ভোক্তাভার অবমানন করি হয়, ইহা তাহারা এক প্রকার স্পষ্ট করিয়া বলিল । বিশেষ আমোদ করিবার জন্য আমেরিকান নাবিকেরা মুখে কালী মাখিয়া কাকুরূপ ধারণ করত বীণা বাদ্য করিতে লাগিল, বীণার রবে সকলেই মোহিত হইলেন, যুবরাজ হারেসাইয়ের যে এত গভীর স্বভাব, তিনিও ঐ আমোদে আমোদিত হইলেন ।

সূর্যাস্ত সময়ে তাহার সকলেই স্ব স্ব নিকেতনে প্রস্থান করিতে উদ্যত হইলেন, এদান কমিসনার কমোডোরের হস্ত পরিয়া এই কথা বলিলেন, অদ্যাবধি নাইফন এবং আমেরিকা একান্তঃকরণ হইল, কমোডোর ইহাতে শি-ফোচার প্রকাশ করিয়া সময়োচিত বক্তৃতা করণান্তর তাঁহাদিগকে সিদায় করিলেন, পবে তাহার আপনাদের নৌকায় চড়িয়া হাস্যামোদ কবত গৃহে গমন করিলেন ।

পরদিন প্রাতঃকালে পূর্বোক্ত সন্ধিগ্রহে একটি সভা হইল, জেপানী সম্মানিত কমিসনারগণ পূর্বাপেক্ষ কিছু গম্ভীরভাবে প্রদর্শন পূর্বক সভায় অধাসীন হইলেন, বোধ হয় গত দিবসের আমোদ স্মরণ করিয়া তাঁহার কিছু লজ্জিত হইয়াছিলেন । তাহাহাউক, কমোডোর আসন গ্রহণ করিবামাত্র, জেপানীয়েরা তাঁহার হস্তে একখানি পত্র দিয়া কহিল, সেনাপতি পোপ, রাজপ্রেমিত ডাকযোগে আমাদিগের নিকট সাইমোডা হইতে এই পত্র পাঠাইয়াছেন, পাঠ করিয়া মর্ম্মাবগত হউন । পত্র পাঠে কমোডোর সন্তুষ্ট হইলেন, বন্দর করণ বিষয়ে সাইমোডা উদ্যোগ স্থান হইবে, ইহা তাঁহার মিত্র উপলব্ধ হইল, অতএব অবিলম্বে তাহা গুলিতে তিনি একেবারে প্রস্তাব করিলেন, আর কহিলেন হাকোডাডা দ্বিতীয় এবং নাকা আমাদের তৃতীয় স্থান হইবে, তাহাতে আর কোন আপত্তি নাই ।

এখন উভয় পক্ষে (এগ্রিমেন্ট) সন্ধি পত্র স্বাক্ষর করা উচিত, ইহা বলিয়া কমোডোর আপন উকীলকে ওলন্দাজী ভাষায় লিখিত ঐ পত্র পাঠ করিতে আজ্ঞা করিলেন, উকীল উহা পাঠ করিলে, জেপানী রাজকর্ম্মচারী গণ ছুই তিনবার উহা বহুপূর্বক পড়িয়া কহিলেন, আমরা

অপর সকল বিষয়ে সম্মত আছি, কিন্তু অবিলম্বে সাইমোডা নগর বন্দর হইতে পারে না। ইহাতে উভয়পক্ষে তর্ক হইতে লাগিল, অনেক তর্ক করণান্তর হ্রি হইল, জেপানীয়েরা কমোডোরকে প্রনাশা একথা নি পত্র লিখিবেন, তাহাতে এই সকল কথা লেখা থাকিবে, “দশমাস গত না হইলে আমেরিকান জাহাজের সাহা ২ প্রয়োজনীয় তাহা সাইমোডা হইতে দেওয়া হইবে না, তবে জল কাঠ এবং অপর যে যে দ্রব্য তথায় সহজে পাওয়া যায়, তাহা সহর প্রদত্ত হইবে।

আমেরিকান দিগের জেপান রাজ্যে কত ক্ষমতা থাকিবে, পূর্কোক্ত তিন নগরে তাহাদিগের কত দূর পর্য্যন্ত সীমা হইবে, চিরস্থায়ী বসতি স্থান তাহার। উহাতে কথিতে পাইবে কি না, আমেরিকানদিগের (রেসিডেন্ট) অর্থাৎ রাজপ্রতিনিধি জেপানে থাকিবে কি না ইত্যাদি বিষয় সকলের পরে তর্ক হইল। কমোডোর যাহা ২ বলিলেন, জেপানী কদিসনারগণ তাহাতেই সম্মত হইলেন। কেবল বর্তমানে আমেরিকানেরা চিরস্থায়ী বসতি স্থান করিতে পাইবে না, আর শুদ্ধ একজন রাজপ্রতিনিধি দেড়বৎসর বহিষ্ঠূত হইলে সাইমোডাতে থাকিবেন, ইহাই স্থির হইল, অতঃপর কমোডোর যথাবিধানে বিদায় লইয়া স্বস্থানে প্রস্থান করিলেন। কিয়দ্বিঘস পরে ইংরাজী, ওলন্দাজ, জেপানী এবং চীন ভাষার তিনখানি করিয়া এগ্রিমেন্ট প্রস্তুত হইল, উভয় পক্ষের নিযুক্ত মিলনকারকেরা উভয় জাতির কর্তৃপক্ষের দ্বারা তাহা স্বাক্ষর করাইলেন। এগ্রিমেন্টের নিয়মের কথা পূর্কো

পুনঃ পুনঃ উল্লেখ হইয়াছে, অতএব এখানে তাহা পুন-
কল্পেখের আর আবশ্যক নাই ।

এইরূপে সন্ধি পত্র স্বাক্ষরিত হইয়া পরস্পর প্রদত্ত
হইলে, কমোডোর স্বজাতীয় রাজনিশান একটি প্রধান
কমিসনার যুবরাজ হায়েসাইকে প্রদান করিয়া কহিলেন,
মহাশয় ! বিদেশী রাজাদিগের সহিত মিলন হইলে,
অস্বদেশে যে সকল আত্মীয়তা ও বন্ধুত্বের চিহ্ন প্রকাশিত
হইয়া থাকে, তন্মধ্যে রাজপতাকা প্রদান করা সর্বোৎ-
কৃষ্ট চিহ্ন রূপে পরিগণিত, অতএব ইহা আমি আপনাকে
দিতেছি । হায়েসাই তাহাতে সান্তিশয় সম্মুখে হইয়া
সহস্র সহস্র ধন্যবাদ করত সাদরে গ্রহণ করিলেন । তৎ-
পরে আর আর সম্মুখ রাজকর্মচারীদিগের জন্য বাহা
বাখিয়াছিলেন, একে একে তাহা সকলকে দিয়া বিনয়
বাক্যে সকলের মনোরঞ্জন করিলেন । এক্ষণে পূর্বের স-
মুদায় গোলযোগের নিষ্পত্তি হইল, কমোডোর সুস্থির
হইয়া কুশলে স্থায় কর্ম নিষ্পাদন করিতে লাগিলেন ।

পরদিবস কমিসনারগণ সমস্ত কর্মচারীদিগের সহিত
কমোডোরকে ভোজনে নিমন্ত্রণ করিলেন, শুভ ভোজ ব-
লিয়া তদ্দেশজাত নান উপাদেয় খাদ্যের আরোজন হইল,
যে দালালে পূর্বে তাঁহার সম্বন্ধিত হইয়া ছিলেন, তাহা-
তেই এখন মেজ বিভূত হইল, ঐ মেজ গুলা আর কিছুই
নহে, লোকেরা সচরাচর যে তত্ত্বপোষে শয়নোপবেশন
করে, উচ্চৈতে সেই তত্ত্বপোষ মাত্র, কেবল লোহিত বর্ণের
সাটিন কাপড়ে তাহা আচ্ছাদিত, আর নিমন্ত্রিত লোকদি-
গের পদ মর্যাদামুসারে তদুপরি ক্রমাযয়ে সুরমা এক এক
খানি আসন দেওয়া হইয়াছিল । তন্মধ্যে একখান মেজ

অপর কয়েকখান মেজ অপেক্ষা কিছু উচ্চ ছিল, তাহাতে কমোডোর তাঁহার প্রধান কর্মচারী এবং কর্মিশনারগণ বসিলেন। সকলে আসন গ্রহণ করিলে, পরিচারকেরা দ্বার পর য: ক্রমশঃ খাদ্য দ্রব্য আনয়ন করিতে লাগিল, প্রথমে মাটির কটোরা পুরিয়া সকলকে এক এক কটোরা খোল দিয়া গেল, উহা তাজা মংসের খোল ছিল বটে, কিন্তু অভিশয় গাঢ় হওয়াতে ঠিক ইংরাজী খাদ্যের মত দেখাইতে ছিল। তৎপরে একখান রেকাবে করিয়া কিছু মসলা আঙ্গুর প্রভৃতি মেওয়া ফল এবং নান প্রকার চাটনী দেওয়া হইল, আর তার মধ্যে মধ্যে তদ্দেশজাত মাঁকি নামক মদ্য এবং ইংরাজী ছইন্সির ন্যায় তণ্ডুলোৎপন্ন আর এক প্রকার মদ্য যথেষ্টরূপ দেওয়া হইল। অনন্তর পুটক এবং নান প্রকার মিঠাই আসিতে লাগিল, সকলই সাতিশয় মিষ্টরস যুক্ত, জেপানীয়েরা উপাদেয় বলিয়া পর্যাপ্তরূপ ভোজন করিতে লাগিল, কিন্তু আমেরিকানেরা অমম উপাদেয় দ্রব্য জন্মাবধি কখন খান নাই, অতএব তাহাদিগের অর্জু-শমও হইল না, উদর পূরণ না হওয়াতে শেষে কি আসিবে, তাহারা তাহারই প্রতীক্ষা করিতে লাগিলেন। ভোজনের শেষ হয়, এমত সময়ে কতকগুলি মাছ তাজা, চিংড়ি নাম্বুর খোল অমল, এবং পুডিং নামে পরমাম আইল, আমেরিকানেরা মনে করিলেন, অদ্য এই পর্য্যন্ত শেষ, ইহাতে বাহা হউক এক প্রকার ক্ষুধা নিবৃত্তি করিতে হইবে। কিন্তু তাহাদের ভাগ্যে তাহাও ঘটিল না, কারণ পরিচারকেরা ইজিত দ্বারা কহিল, বাটী ঘাইবার সময় সিমিত্রিত লোকদিগের সহিত ইহা ঘাইবে, সুতরাং আসিবার সময় তাহাদিগকে তাহা বাঁধিয়া আনিতে হইল।

খাদ্য আয়োজন বিষয়ে বাহ। ইউক, কিন্তু জেপানী কমিশনারদিগের শিষ্টাচারের কিছুমাত্র ত্রুটি হয় নাই। কামাগয়া নগর খাদ্য সামগ্রীর পক্ষে বড়ই অনুপযুক্ত স্থান, আপনাদের ভাল আহার হইল না, ইহা বলিয়া তাহারা কনোডোরের নিকট অনেক দিনতি করিলেন। পরে পরস্পর পরস্পরের স্বাস্থ্য সম্ভাষণ করিয়া ছুইশাস সাকীমদ্য পান করিলে, বিষয় কর্মের কথা আবিস্ত হইল। পূর্বে কনোডোর জেডো নগর দর্শনের প্রস্তাব করিয়া ছিলেন, কমিশনারগণ তত্বল্পেথেষ্টে বলিলেন মহাশয়! যদি যাইতে হয়, তবে উপসাগরের কিয়দূর বাইবেন, কিন্তু নগরের নিকটবর্তী হইবেন না, কারণ আপনাদিগকে দেখিলে, তত্বস্থ লোকেরা ভয় পাইবে, তাহাতে আপনাদিগের ক্রেশের পরিসীমা থাকিবে না। এই কথা শুনিয়া কনোডোর অনেক তর্কবিতর্ক করণান্তর কিছুদিন জেডো যাওয়া স্থগিত রাখিলেন। কমিশনারগণ ইহাতে সন্তুষ্ট হইয়া স্বস্থানে প্রস্থান করিলেন। জাহাজে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া কনোডোর স্বদেশে জেপান সংস্থাপিত সন্ধিপত্র প্রেরণের উদ্যোগ করিতে লাগিলেন, সেনাপতি আদম্‌স এবিষয়ে অনেক উদ্যোগ করিয়া ছিলেন, অতএব ১৮৫৪ খৃ অন্দের এপ্রেলমাসে তাহাকে প্রেরণ করাই বিহিত বোধ হইল।



পঞ্চম অধ্যায় ।

সেনাপতি আন্দ্রুস সৌভাগ্য সূচক সন্ধান লষ্টয়া সা-
রাটোংগা জাহাজ দ্বারা আমেরিকা গমন করিলেন পর, ক-
মোডোরপেরি দেশ দর্শনার্থ সমুদ্র তীরে অববোহন করি-
লেন । মরিয়ামা, জেনসকি এবং অপর কতকগুলি জেপানি
বাজকশ্রমচারী তাঁহার সহনর্তী ছিল । আড়াই ক্রোশের
অধিক তাঁহার দেশ পরিদর্শন হয় নাই, তথাপি ইচ্ছাতে
করিয়া তিনি অনেক আশ্চর্য্য প্রাকৃতিক দিগদর্শন করিয়া
ছিলেন, অনেক গ্রামে গিয়াছিলেন, অনেক লোকের স-
ম্মিলিত তাঁহার আলাপ পরিচয়াদি হইয়াছিল । তখন বসন্ত
কালের প্রথমাগমন উদ্ভাস এবং ক্ষেত্র সকল সতেজ হরি-
তবর্ণ শস্যানি দ্বারা মনোহর রূপ ধারণ করিতেছিল । এত-
দৈর্ঘ্য যাত্রা লোকের কেমিলিয়া নামক যে পুষ্পকে
অতি সতেজ উদ্ভাস মধ্যে রক্ষণাবেক্ষণ করেন, জেডো উপ-
সাগরের তটে তাহা স্বভাবতঃ এত উন্নীত ছিল যে তাহার
সম্মুখ করা যায় না, লম্বা কোম গাছই চক্ষিগোচর হইতের স্থান
নাই, লোহিত বর্ণ কুমুদ তাহার সকলোতেই পরিয়া ছিল ।
আর কোম কোম গাছে যে কয়েকটা ফুল ফটিয়াছিল, সে
সকলই ঘোর লাল, প্রকাণ্ড মূলপত্র অপেক্ষাও তাহার
জায়তন অধিক, কমোডোর পূর্বে কখনকোম দেশে এমন
কেমিলিয়া দেখেন নাই, অতএব দর্শন করিয়া ঐ বনজ
পুষ্পের সাতিশয় প্রশংসা করিলেন ।

কমোডোর কোন পলিগ্রামের নিকটে উপস্থিত হইলেই, তাঁহার জেপানি সহচরের মধ্যে এক ব্যক্তি সম্মুখ অগ্রসর হইয়া পথমধাবর্তী জ্বীলোক এবং অপর জনগণকে পথ ডাঙ করিতে কহিত, কহিবারাত্র তাহার। পলারমপর হইয়া যথাস্থানে লুকাইত। কমোডোর দেশীয় লোকদিগের নীতি নীতি অচার ব্যবহাস সন্দর্শনার্থ ভ্রমণ করিতে ছিলেন, অতএব ও কর্ম তাঁহার মনের মত না হওয়াতে তিনি অনুসঙ্গী উকীলকে কহিলেন, একি ব্যবহার, শিয়াল ককুব তাড়াইবার মত উহার পথিকদিগকে এমন করিয়া তাড়াইতেছে কেন? বিশেষ জ্বীলোকদিগকে অমন করিয়া তাড়ান উহাদের উচিত হইতেছে না, জেনসকি প্রত্যাহার করিলেন, জ্বীলোকদিগের উপকারার্থেই একর্ম হইতেছে, মহাশয়! এতদেশীয় কামিনীগণ সাতিশর চুচু স্বভাব, সাহসের লেশমাত্র নাই, বিদেশী লোকদিগের দৃষ্টিগোচর ইহার। কোন মতেই হইতে পারে না। এই কথাতে উভয়ের অনেক বাদানুবাদ হইল, কমোডোর সে এমন সন্দেহ সূচক কথায় প্রত্যাহার করেন না, উহা তাঁহার দ্বির উপলক্ষ হইল, কিন্তু কমোডোরের কথার এমন সুরসভাব জেনসকি তাহাতে কোন দোষ গ্রহণ না করিয়া বরং প্রীতি প্রাপ্ত হইয়া কহিলেন মহাশয়! জেপানি রাজকর্মচারিদিগের পূর্ব শিক্ষিত বাক্য নৈপুণ্য আপনি যে বুঝিতে পারিয়াছেন ইহা বড়ই ভাল। আপনকার মনোরথ পূর্ণ করা আবশ্যক দেখিতেছি, আর একটুকু অগ্রসর হইয়া চলুন, নিকটবর্তী নগরে মহাশয়কে কিছু জলযোগ করিতে হইবেক, সেখানে গেলে আমরা জ্বীলোকদিগকে তাড়াইয়া দিবনা, আপনি সকল দেখিতে পাইবেন। তদনুসারে কিয়দূর বা-

ইয়া কমোডোর পূর্বোক্ত স্থানে উপস্থিত হইলে, আবালবৃদ্ধ বনিতাদি সকলেই বিদেশীদিগকে দেখিবার আশয়ে মহা জমতা করিতে লাগিল ।

নগররক্ষকের বাটীতে আমেরিকানদিগকে লইয়া গেলে, তিনি বিশেষ সমাদর করিয়া তাহাদের অভ্যর্থনা করিলেন । বাটীর অভ্যন্তরে প্রবেশ করিয়া তাহারা বৈঠক খানায় গিয়া দেখিলেন, যে জাপানীয়েরা সচরাচর মেরুপ আড়ম্বর করিয়া গৃহ সজ্জা করে তথায় তদ্রূপ আড়ম্বর নাই । ঘরটি পরিষ্কার এবং সুপ্রশস্ত, মেঝাতে সুকোমল নাক্তর বিছান আছে, তৈলাক্ত কাগজে তাহার জানাল, গুলি মণ্ডিত, দেওয়ালে নান বর্ণের নক্স ও চিত্র সকল শোভা পাইতেছে, কিন্তু চিত্র করের স্বনৈপুণ্য প্রকাশ করিয়া সে চিত্র সকল চিত্র করে নাই, উদ্ভম শিল্পিক আমেরিকানেরা তাহাতে অনেক বৈলক্ষ্য দেখিলেন । বসিবার নিমিত্ত ঘরের চারিদিকেই লাল রঙ্গের বেগ পাতা ছিল । কাষ্ঠাসনে বসিয়া আমেরিকানের, জাপানীদিগের সহিত কথোপকথন করিতেছেন, এমন সময়ে শাণ্ড রক্ষকের স্ত্রী এবং তগিনী কিঞ্চিৎ জলযোগের নানগ্রী হস্তে লইয়া তথায় সমাগতা হইলেন, তাহাদের ঐক্য হাস্য বচন এবং সযত্নতার ভজনা দেখিয়া কমোডোর বৃত্তিতে পাবিলেন, তাহারা সেন কিছু হাস যুক্ত আছে । রম্য-দ্বয়ের মধ্যে তাহারও পদে পাছুক নাই, একই প্রশ্নের কৃষ্ণাৰ্ণ পরিচ্ছদ উভয়েই পরিধান করিয়াছে । ইংলণ্ডীয় কামিনীগণ রাত্রি কালে বেরুপ ডিলা গাউন পরে, তাহাদিগের পরিধিত বস্ত্র প্রায় সেই প্রকার, প্রভেদের মধ্যে কেবল কটিদেশে চওড়া কিতা বাঁধা ছিল । দেখিতে তাহারা স্কুলাকার বটে

(বোধ হয় কদম্বরূপ বস্ত্র পরিধান জন্য ঐরূপ দেখাইতে-
ছিল) পরন্তু মুখ মণ্ডলের এক অপূৰ্ণভাব দৃষ্ট হইতে
ছিল, তাহাদের কেশ ঘেরূপ কৃষ্ণবর্ণ নেত্রদ্বয়ও সেইরূপ
কৃষ্ণবর্ণ হওয়াতে, মীলবর্ণ মেঘের মধ্য দিয়া যেন চন্দ্রোদয়
হইতে ছিল। জেপান দেশীয় পুংসেরা মস্তকের উপরি-
ভাগে ঘেরূপ কেশ বন্ধন করে, তাহাদেরও মাথার উপরে
তেমনি কুণ্ঠি বাঁধা ছিল, প্রভেদের মধ্যে কেবল মস্তক
ভাগ সমান ছিল না। মাতা কন্যা উভয়েই বিম্বোষ্ঠী, সু-
ন্দররূপ হামা করাতে উভয়েরই দন্তপাটি গোড় কৃষ্ণবর্ণ
দেখা গেল, মেঘের অধিনাংশ ক্ষয় হইয়া গিয়াছে। জে-
পান দেশে কেবল সধবা স্ত্রী লোক সাকিও লৌহচূর্ণ প্রভৃতি
নানাবিধ দ্রব্য নিশ্চিত করিয়া মাজন প্রস্তুত করত দন্ত রক্ষ
করিতে পারে, বিধবাদের পাবে না। এই মাজন এমনি মন্দ
যে বিশেষ সাবধান হইয়া দন্ত বর্ণভ্রম না করিলে, উহাতে
বড়ই মন্দ ফলোৎপন্ন হয়, চোটে লাগিলে লোহিত বর্ণ
ওষ্ঠ একেবারে ধূমল বর্ণ হয়, মাড়িতে লাগিলে মাড়ি ক্ষ-
ণিত হইয়া অকর্ম্মা হইয়া থাকে। বিবাহের সম্বন্ধ হই-
লেই জেপান দেশীয় যুবতীর এই অশ্রুয়া বদন শোভা
করিতে আরম্ভ করে, দন্তপাটির কৃষ্ণবর্ণ ওজ্জ্বল্য ভাল
দেখাইবে বলিয়া তাহারা চোটে লাল রঙ্গ দেয়, তাহাতে
তাহাদের যে সত্যবতঃ বিম্বোষ্ঠের ব্যতায় হয়, ইহা তাহারা
একবারও মনে ভাবে না। পরিচ্ছদের উপরিভাগে গল-
দেশ অবধি কোটিদেশ পর্য্যন্ত জেপানদেশের স্ত্রীলোকেরা
একটি লাল কোর্তা ব্যবহার করে, কিন্তু অবস্থা বিশেষে ঐ
কোর্তার বর্ণ পরিবর্ত্ত হয়, অর্থাৎ মান্যাগাণ্য কামিনীগণ

সাধারণ লাল কোর্ডা না পরিয়া ইবং নীল বর্ণের কোর্ডা পরিধান করেন।

পূর্বোক্ত স্ত্রীলোকের আমেরিকানদিগের নিমিত্ত যে জন খাবার আনিয়াছিল, তাহা চা মিঠাই এবং সাকি মদ্যমাত্র, আর এই মদ্যের সঙ্গে ডগুন প্রস্তুত এক প্রকার পবনার ছিল। উক্তগদ্য রাজকর্মচারী বিশেষ শিষ্টাচার প্রকাশ করত খাও খাও বলিয়া তাহাদিগকে খাওয়াইতে লাগিলেন। তাহার সহধর্মিণী এবং সহোদরা করমোড করত তাহাতে অনুরোধন করিতে লাগিল, আর পুতুলি তীড়া করিয়া মন্তক অবনত করাইয়া পুতুলিকে যেরূপ নমস্কার করায়, ঐ রমণী হয় বিদেশীদিগকে সেইরূপ নমস্কার করিতে লাগিল। মাজিস্ট্রেটের ভাষণ অতি সুশীল, সুশীল স্বভাব প্রযুক্ত তিনি আপনার একটা শিশু সন্তানকে আনিয়া নিমন্ত্রিত লোকদিগের হস্তে দিলেন, অথচ হেতু শিশুটি যদিও মলীন ছিল, যদিও তাহার পরিচ্ছদের বড় একটা পারিপাট্য ছিল না, তথাপি আমেরিকামের। তাহাদের মনোরঞ্জনার্থ শিশুটিকে ফোড়ে লঙত নানাবিধ আবাদ করিতে লাগিলেন। মাচাইতে মাচাইতে তাহার। একটা মিঠাই ছেলিয়াটির হস্তে প্রদান করিলে, তাহার মাতা তাহাকে নমস্কার করিতে কহিলেন, তাহাতে বালক মণ্ডিত মন্তক চোট করিয়া অমনি নমস্কার করিল, তদনন্তর উপস্থিত লোকদিগের আক্লাদের আর পরীক্ষা না রহিল না, ক্ষুদ্র শিশুর শিষ্টাচার দেখিয়া সকলেই বিশেষ আশ্রয় করিতে লাগিল।

গমনকালে কমোডোর শাণ্ডিরস্কক ভোজ্যদাতার সমস্ত পরিবারের স্বাস্থ্য সন্ধান করিলে, তাহার হুকা মাতা ত-

ধার উপস্থিত। হইয়া গৃহের এক কোণে শুঁড়ি মারিয়া বসিলেন। মাজিষ্ট্রেট তত্র মহাশয়ের সমস্ত আত্মীয়গণের মধ্যে তিনি প্রাচীন, পরিবারের মঙ্গল প্রার্থনা করিলে, তিনি অতীব সন্তুষ্ট। হইয়া নিম্ন মন্তক করত কনোডোরকে সম্বন্ধার করিলেন, তাহাতে আমেরিকানেরা যথা বিধানে তাহাকে প্রত্নিমন্তক করত বিদায় হইলেন। পথে আসিবার সময় জাপানীর, স্বদেশীয় লোকদিগের কোতূহল নিবারণে মত্ত করিল ন, সুতরাং এবারে আমেরিকানেরা উত্তম মধ্যম অধম সকল অবস্থার লোক দেখিতে পাইলেন। জাহাজে শীঘ্র প্রত্যাবর্ত হওয়া তাঁহার আবশ্যক ছিল, একত্রণ পথি মধ্যে অনেক বিলম্ব করিতে পারিলেন না, একটি ক্ষুদ্র নগরে প্রবেশ করিয়া নিম্নোক্ত তিনশ্রেণীর লোক তিনি বিশেষরূপে দেখিলেন। রাজকর্মচারী, ব্যবসায়ী এবং শ্রমোপজীবী, সকল লোক অপেক্ষা শ্রমোপজীবী মনুষ্যদিগকে দেখিয়া, তাহার বোধ হইল যে, অন্যান্য দেশের লোকদিগের ন্যায় তাদিগের দুরবস্থা নয় তাহারা বর্দ্ধনশীল সমস্তোষচিত্ত, সাধন-তিরিক্ত শ্রম জনা শ্রান্ত ও ক্লান্ত নহে। তাহারা দরিদ্র লোক বটে, কিন্তু তাহাদের মধ্যে দীনতার চিহ্ন কিছুমাত্র ছিল না। স্ত্রী এবং পুরুষ উভয়েই ক্ষেত্র মধ্যে কৃষিকর্ম করিয়া থাকে, প্রধান লোকদের ন্যায় চোগার মত চিল্যাকাপড় তাহারা পরিধান করে, কিন্তু কিছু ছোট, তাহাদের অনেকেরই খোলা পা ও খোলা মাথা, অর্থাৎ শিরোভাগ ও পদদেশে কিছুমাত্র আবরণ নাই। জীলোকেরা পুরুষের ন্যায় পরিচ্ছদ পরিধান করে, প্রভেদের

মধ্যে পুরুষের মাথার কেশ নাই, স্ত্রীলোকেরা স্ব স্ব কেশে বেণী বন্ধন করত শিরোপরি ঝুটি বাকে ।

বর্ষাকালে জেপান দেশের লোকেরা এক একটা খড়ের ঝাঁতল পরিধান করে, যাড়ে বাঁধিয়া উহা ঝুলাইয়া দিলে, খড়ের চালের ন্যায় তাহা স্ফুট এবং পৃষ্ঠ দেশ পর্যন্ত লম্বমান হইয়া থাকে । উচ্চ পদস্থ লোকেরা আপনাদিগের পরিচ্ছদের উপরে একটা তৈলাক্ত কাগজের কোর্ডা পরিধান করেন, জন তাহাতে প্রবেশ করিতে পারে না । চীন দেশের লোকদের ন্যায় জেপানীদিগের সঙ্গে সতত এক একটা ছত থাকে, গ্রীষ্মকালে সূর্য্যকিরণ উহাতে নিবারিত হয়, এবং বর্ষাকালে এক পয়সা রুটি হইলেও কিছু হানি করিতে পারে না । সকল শ্রেণীর লোকেই সান্তিশয় শিষ্টাচার প্রকাশ করিয়া কথা কহে, বিদেশীদিগের অনুসন্ধান লইতে তাহারা বিশেষ তৎপর বটে, কিন্তু তাহাতে তাহাদের মান সম্মুখে হানি হয়, এমন কথা তাহারা কদাচ জিজ্ঞাসা করে না । সামান্য প্রবোপজীবী লোকে ভ্রমলোকদিগকে সান্তিশয় ভয় করে, সংস তাহাদের সম্মুখে গাইতে তাহারা সক্ষম হয় না, এরূপ বাধা না থাকিলে তাহারা সাহস পূর্ব্বক মনের ভাব প্রকাশ করিতে পারিত ।

পূর্বে লেখা গিয়াছে, জেপানী লোকেরা বিদেশীদের সহিত বড় একটা সংশ্রব রাখে না, ইহা কেবল জেপান গবর্ণমেন্টের রাজ কৌশল, মতুবা তাহারা অতি সভ্য ভবা লোক, পরস্পর পরস্পরের সহিত বিশেষ সৌহার্দ্য ভাব প্রকাশ করিয়া কালযাপন করে । তাহারা স্ত্রী জাতিকে সমতুল্য জ্ঞান করে, পৃথিবীর পূর্ব্বভাগ

নিবাসী অন্যান্য জাতিতে যোষাদিগকে যেরূপ দাসত্ব করত, তাহারা সেরূপ করে না, একারণ জেপানী সমাজ উহাদের অপেক্ষা স্পষ্টরূপে শ্রেষ্ঠ হয়। তজ্জাতীয় শ্রী সমাজের অবস্থা খৃষ্ট ধর্ম্মাক্রান্ত দেশের ন্যায় উন্নত নহে বটে, কিন্তু মুসলমান এবং পৌত্তলিক ধর্ম্মী লোক অপেক্ষা বিশেষ উন্নত হয়। জেপানে বহুবিবাহ প্রচলিত নাই, ইহাকে তাহাদের উৎকর্ষের চিহ্ন অবশ্য বলিতে হইবে। পূর্নকালে যত জাতি আছে, জেপানীদিগের মধ্যে ধর্ম্ম নীতির প্রাক্তর্লব বড়ই দৃষ্ট হয়, একারণ তাহারা অপেক্ষাকৃত সচ্চরিত্র, তাহাদের শ্রী জাতিদিগের আচার ব্যবহারে ইহা স্পষ্টরূপে প্রমাণীকৃত হয়, এই উৎকৃষ্ট গুণ প্রযুক্ত শ্রী পুত্র কন্যাদিগ সহিত তাহাদের বড়ই সুরথে বাস হয়, অমন পারিবারিক সুখ আশিয়া খণ্ডে কোমরেনে দেখা যায় না।

জেপান দেশীয় বালিকার, পটন সূন্দরী নহে, কিন্তু তাহাদের মুখ নাসিকা প্রভৃতি অত্যন্তে বিলক্ষণ আছে, সধাবণে তাহাদের যে প্রাশংসা করে, তাহারা তাহারা যোগ্যপাত্রী, তেজস্বনী হইয় তাহারা লোক সমাজে কালযাপন করে বটে, কিন্তু বাহ্যতে সতীত্ব ধর্ম্মের অনুমাত্র হানি হয়, এমন কথায় প্রোত্তে হস্তক্ষেপ কবে না, সাধী থাক। শ্রী জাতিদিগের যে একটি পবন ধর্ম্ম ইহা তাহাদের বিলক্ষণ উপলব্ধি আছে। আমেরিকান এবং ইংলণ্ডীয় লোকেরা সম্ভ্রান্ত ভোজন অথবা চ. পানাদি সময়ে পরিবার এবং বন্ধুবর্গ দ্বারা পরিবেষ্টিত হইয়, সকলে একত্রে যেরূপ সুখে ভোজন করে, জেপানীয়েরাও সেইরূপ করিয়া থাকে। ভোজনাসনে উক্ত জাতিয় শ্রীলোককে যেরূপ

প্রাধান্য পদ দেয়, জেপানীয়েরাও সেইরূপ দিয়া থাকে, কি কথোপকথন কি পরিবেশন, কি খাদ্য মনোনীত করণ, স্ত্রীজাতির প্রতিবন্ধকতা করিতে পুরুষের ক্ষমতা নাই। শান্তি রক্ষকের বাটীতে কমোডোর এবং তদনুসঙ্গীগণের ভোজন কালে, ভ্রমবংশজা জেপানী রমণীরা সর্ব্বতোভাবে যে মতভাব গ্রহণ করিয়াছিল, সে কেবল বিদেশীদিগের সম্মানার্থ, নীচ পদের জন্য নহে। প্রধান প্রধান রাজধানীতে ছুচিরিহ, কুলটাদিগের আবাস আছে বটে, কিন্তু ইহা শুদ্ধ জেপান বলিয়া নহে, দুর্ভাগ্য বশতঃ পৃথিবীর সর্ব্বত্র সকল প্রধান দেশেরই এরূপ দুর্ব্বস্থা হয়। পরন্তু জেপান দেশীয় স্ত্রী লোকদিগের পক্ষে ইহা বল: গাইতে পারে, আমেরিকানদের। যতদিন জাহাজ নজর করিয়া জেডো উপসাগরে ছিল, ততদিন তরঙ্গ কোন স্ত্রী লোকের কোনপ্রকার শীলতার ক্রটি দেখেন নাই।

হান ত্যাগ করিয়া অন্যত্র গমন বিষয়ে কমিশনারগণ কমোডোরকে একখানি নিষিদ্ধ পত্র লিখিয়া ছিলেন বটে, কিন্তু তিনি তাহা মানেন নাই। ১২ মে এপ্রেল দিবসে তিনি জেডো নগরের সন্নিকটবর্তী হইতে মনস্থ করিয়া নাবিকদিগকে অজ্ঞা করিলেন, নগরের নিকট উপসাগরের জল যতদূর পর্য্যায় গভীর আছে, তোসবা ততদূর জাহাজ চালাও। তাহাতে পরদিন প্রাতঃকালে আমেরিকানদের সমস্ত জাহাজ স্থান পরিত্যাগ করিয়া অগ্রসর হইতে লাগিল। তদন্বয়ে জেপানী উকীলেরা পাউহেটান নামক জাহাজে আসিয়া বিনতি স্থতিবাক্যে কমোডোরেব নিকট নিবেদন করিল, মহাশয়! ক্ষান্ত হউন, জাহাজ চালাইবেন না, চালাইলে আপনাদিগের অনিষ্ট বই ইষ্ট

লাভ হইবে না ! কমোডোর তাহাদের কথায় কণপাত না করাতে, কি হয়, কতদূর পর্য্যন্ত জাহাজ যায়, ইহা অবলোকন করিবার নিমিত্ত তাহারা জাহাজে বসিয়া রহিল। পাউহেটান এবং মিসিসিপাই নামক জাহাজ দুয় রাজধানীর এত অদূরস্থ হইল, যে কোয়াসা না হইলে তথা হইতে উহা স্পষ্টরূপে দৃষ্ট হইত। তথাপি তাহারা যাহা দেখিল তাহা বর্ণনার অযোগ্য নহে, জেডো রাজধানীর সমস্ত উপরিভাগ বড় বড় অটালিকা এবং ক্ষুদ্র গৃহে পরিপূর্ণ, পরস্পর এমন সংযোজিত যে বিন্দুমাত্র স্থান দেখা যায় না, বাড়ী গুলির ছাদ সকল ঢালু, এবং উচ্চত অস্পষ্ট হয়। সাগরের ধারেই রাজধানীর দুর্গ, উহার তিতরটা কিরূপ সুদৃঢ় তাহা বলি যায় না, কিন্তু বহির্ভাগে কামবিস কাপড়ের অনেক কণ্ঠই দেখা গেল। বোধ হয় উহা প্রকৃত গড় না হইলেও হইতে পারে, বৌদ্ধদিগের মন্দির কুয়াসাতে ঐরূপ দেখাইতে ছিল। উপসাগরের সমস্ত সমুখভাগ সুদৃঢ় অথচ উচ্চ গরাদিয়ার কাঠ গড়াতে আবদ্ধ, নৌকা এবং বজর যাইবার নিমিত্ত তাহার মধ্যে মধ্যে এক একটি প্রবেশ দ্বার ছিল। তরঙ্গ হিলোলে তীরের মূহুরিক যেন ক্ষয় না হয়, অথবা শক্ররা যেন রাজধানী আক্রমণ করিতে না পারে, এছুইয়ের মধ্যে নি কারনে ঐ কাঠগড়া প্রস্তুত করা হইয়া ছিল, তাহা নিশ্চয় করা চুকব। কিন্তু আমেরিকানদিগের জাহাজ সমূহ জেডো স্পর্শ না করে, তাহাদের অস্ত্রধারী সৈন্য সকল বন্দুর্ধক নৌকা দ্বারা গিয়া রাজধানী আক্রমণ করিতে চেষ্টা না করে, এই জন্যই ঐ উচ্চ কাঠগড়া যে নির্মিত হইয়া ছিল ইহা সম্ভব হইতেছে। তাহা যে

অতিপ্রায়ে হউক, আমেরিকানেরা রাজধানীর যে অবস্থা দেখিল, বড় বড় কামানের দ্বারা গোল ছুড়িলে, উহা যে অনায়াসে নষ্ট করিতে পারা যায় তাহার কোন সন্দেহ নাই।

জেপানীদিগের যে বহুতর সৈন্য সামন্ত আছে, যুদ্ধা-
বশ্যক কোন সামগ্রীর যে তাহাদের অভাব নাই. আমে-
রিকানদিগকে ইহা দেখাইবার নিমিত্ত প্রথমতঃ জেপা-
নীরা বড় আড়ম্বর করিতে লাগিল। জেডে উপসাগরের
যে স্থানে আমেরিকানদিগের সমস্ত জাহাজ ছিল, তাহার
সম্মুখে জেপানী সৈন্যে মহা আক্ষালন পূর্বক রণ শি-
ক্ষা দেখাইতে লাগিল, রাজধানী রক্ষার নিমিত্ত সূতন ক-
র্ম সকল আরম্ভ হইল। তৎপর দিনে তাহার আর কি-
ছুই দৃষ্ট হইল না, স্পষ্টরূপে তাহার পূর্ব রাজ কো-
থাল পরিবর্তন করিয়, বাধা দিবার নিমিত্ত আড়ম্বর
পূর্বক যে আয়োজন করিতে ছিল, সে সমস্ত পরিত্যাগ
করিল।

কমিশনারগণ যেন ভয় না পায়, বিদেশী জাহাজ সমূহ
দেখিয়া তত্রস্থ লোকদিগের যেন ভ্রাস না জন্মায়, আত্ম
বক্ষার্থে সমস্ত জেপানী উৎসাহিত হইয়া যেন টুংসা-
হসী কুর্ম না করে, জেপান গবর্ণমেণ্টের সহিত যে সন্ধি
সম্পন্ন হইয়াছে, কোন প্রকারে তাহার যেন বিপর্যয় না
হয়, এসমস্ত বিবেচনা করিয়া, কনোডোর জেডোব নি-
কটে জাহাজ নঙ্গর করিলেন না, পূর্বে যে স্থানে আমেরি-
কান জাহাজ নঙ্গর করা ছিল, পুনরায় তথায় প্রত্যাগমন
করিলেন। প্রত্যাহৃত হইয়া এক খানি জাহাজ পূর্ব নি-
কুপিড বোনিম নামক স্থানে, অপর চারিখানি সাইমো-

ডাতে প্রেরণ করিলেন, আর কয়দিন পরে পাউছে-টান এবং মিসিসিপাই জাহাজ আপনি সঙ্গে লইয়া তথায় উপনীত হইলেন, গিয়া দেখিলেন, তাঁহার পূর্ব প্রেরিত জাহাজ সকল নিরাপদ অতি সুন্দর স্থানে নজর করিয়া আছে । সন্ধি কালীন আমেরিকানদিগকে যে সাইনোডা নগর দেওয়া হইয়াছিল, তাহা নাইফন উপদ্বীপের মধ্যবর্তী জেডো উপসাগরের একটি শাখার উপর আছে । সাইনোডার বাণিজ্য স্থান সাগরের পশ্চিম দিকে, তন্মধ্যে একটি উর্বর উপত্যকা থাকাতো তথায় বহুতর শস্য কলাদি জন্মে, জেপানী ভাষায় সাইনোডা শব্দের অর্থ নিম্ন হ্রদি, বোধ হয় তদ্‌হ্রদির নিম্নতা প্রযুক্ত ঐ নাম দেওয়া হইয়া থাকিবেক । নগরের মধ্য ভাগে যে একটি ক্ষুদ্র নদী আছে, তাহার সীম বন্দর পর্যন্ত হয়, এজন্য নাইফন উপদ্বীপের সকল স্থান হইতে বাণিজ্য দ্রব্য বন্দবে আনীত হইয়া থাকে, উহার উপত্যকা এবং উপপর্কিত সকল হরিদ্বর্ণ শস্য কলাদিতে পরিপূর্ণ হয় বলিয়া নগর পর্যাবেক্ষে সাতিশর প্রীতি জন্মে । দুইশত বৎসর পূর্বে উহা জেপানদেশের একটি প্রধান বাণিজ্য স্থান ছিল, কারণ জাহাজ দ্বারা রাজধানী জেডো নগরে যে সকল ব্যবসার সামগ্রী আসিত, প্রথমে তাহা সাইনোডা না হইয়া আসিত না, কিন্তু উপসাগরের সম্মুখবর্তী উরাগার প্রাকৃত্যব হইলে ক্রমে উহার দরিদ্রতা ও হ্রাস হইতে লাগিল । দৃষ্টি করিলে উহা যে এখন সমধিক বাণিজ্য বাপারের স্থান এমন বোধ হয় না বটে, কিন্তু উপদ্বীপের মধ্যভাগ ও তীরস্থিত অনেক স্থানের দ্রব্য সামগ্রীর ক্রয় বিক্রয় তথায় হইয়া থাকে ।

সুসভ্য লোকদিগের নগরে বেরূপ সভ্যতার চিহ্ন দেখা যায়, সাইমোডাতে কমোডোর সে সমুদয় চিহ্ন দেখিলেন, তাহার কোন স্থানে (ডকইয়ার্ড) অর্থাৎ বহু সংখ্যক নৌকা ও বোট নির্মাণ এবং মেরামত হইতে ছিল, কোন স্থানে শিল্পকরেরা কাষ্ঠ সূত্রাদি দ্বারা নানাবিধ মনোহর সামগ্রী প্রস্তুত করিতে ছিল। নগরটি দৃঢ়তরূপে নির্মিত, সুনিয়ম এবং সুশৃঙ্খল। উহার সর্বত্র পরিদৃশ্যমান, সমুদয় রাজপথে পাথর বিছান, উহা ত্রয়োদশহস্তেরও অধিক প্রশস্ত, মধ্যো মধ্যো যে সকল গলি তাহাতে সংলগ্ন আছে, তাহা আট হস্তের স্থান নহে। সকল পথেরই প্রথমে এক একটা প্রবেশ দ্বার, অস্পদারী একজন রক্ষক দণ্ডায়মান হইয়, তাহা রক্ষা করিতেছে, রুষ্টি অথবা সূর্য্য কিরণে রক্ষকদিগের ক্লেশ হইবে বলিয়া দ্বারের একপাশে এক একটি ক্ষুদ্র কুঠারী আছে। নগরের মধ্যভাগে যে ক্ষুদ্র নদী বহিয়া গিয়াছে, তাহার দুই পাশে প্রস্তর প্রাচীর দ্বারা সুনির্মিত, তিন চারিটি কাষ্ঠনয় ক্ষুদ্র সংগ্রহ ভবন ধাকিতে অনায়াসে লোক সকল পরপারে বাতায়িত করে। পথের দুই পাশে সুপ্রশস্ত জল প্রণালী, এমনি কোশে তাহা নির্মিত, যে মলীন এবং কদর্য্য জল ক্ষণমাত্র তাহাতে থাকিতে পারে না, পড়িলেই অমনি সমুদ্র অথবা নদীতে সংমিশ্রিত হয়। যদিও উহা লোকা-কীর্ণ স্থান, তথাপি সুসভ্য নিয়ম প্রযুক্ত সে স্থানে স্বাস্থ্যের ব্যাঘাত কিছুমাত্র হয় না।

তথাকার দোকান এবং মধ্যবিত্ত গৃহস্থ লোকের বাটী অতি সামান্যরূপে নির্মিত, তন্মধ্যে অনেকই কেবল খড় অথবা পাতার চালযুক্ত ক্ষুদ্র কুঠীরমাত্র, উক্ত লোকদি

গের যে কয়েকখান বাটী প্রস্তর নিশ্চিত হয়, তাহার ছাদ, বাঁশ এবং মৃত্তিকা দ্বারা হইয়া থাকে। জাপান দেশের মৃত্তিকাতে এমনি কাটিনা গুণ আছে, যে একবার তাহা আঁটিয়া গেলে প্রস্তর অপেক্ষাও কঠিন হয়, এই মৃত্তিকার উপর তাহার রঙ্গ লাগায়। কখন বা কিছুই করিতে হয় না, সূর্য্য কিরণে একেবারে তাহা কৃষ্ণবর্ণ হইয়া যায়, কাল ছাদের চতুষ্পাশ্বে তাহার চুনের অঁজি লাগায়, তাহাতে ছাদের বড়ই শোভা হইয়া থাকে। বাটীতে যে সকল জানাল থাকে, তাহাতে তাহার কাচের নায় সজ্জিত স্বচ্ছ এক প্রকার তৈলাক্ত বস্ত্রে আচ্ছাদন করে, তদ্বারা অনায়াসে বাহিরের বস্তু দৃশ্যমানীয় হয়, কাক পক্ষীকে সাইমোডার লোকেরা সাতিশর ঘুরা করে, যেন কাক না আইসে, এজন্য লোহার তারে জাল প্রস্তুত করিয়া তাহার গৃহের উপরি ভাগের চতুর্দিক আবদ্ধ করে, কিন্তু উহা অশুভ লক্ষণ প্রযুক্ত অথবা কাক পক্ষীর কৃষ্ণতাব প্রযুক্ত হইয়া থাকে, তাহা নিশ্চয় জানা যায় না। ধূম বাহির করিবার নিমিত্ত তাহার কোন উপায় করে না, ঘরের ঘোয়া ঘরেতেই থাকে, তবে গর্ত বা ছাঁদা বাবু যত বাহির হইতে পারে। সেখানে দোতাল বাটী প্রায় নাই সকলই এক তাল, তার কোন কোনটা অতি উচ্চ নাত্র। সাইমোডাতে যত দোকান আছে, কিসের দোকান তাহা দোকানের দ্বারেই লেখা থাকে, এবং কোন কোন দ্রব্য সামগ্রীরও প্রতিমূর্ত্তি তাহাতে চিত্রিত করা হয়। যে সকল সামগ্রী উৎকৃষ্ট সচরাচর তাহা বাক্স অথবা দ্রাজে রাখা যায়, এই যত্নপূর্ব্বক রাখিবার গুণে লোকে তাহা অধিক মূল্য দিয়া ক্রয় করে।

সকল বাটীর প্রবেশ দ্বার হয় বাটীর দক্ষীণ নতুবা বাম পার্শ্বে থাকে, নীচ ছাদ দ্বারা তাহা আচ্ছাদিত, গৃহস্থের প্রয়োজনীয় সমান্য জিনিসপত্র সেই ঘরে থাকে। কি গৃহস্থ কি দোকানদার প্রাচীরে কাঠের সেলফ লাগান সকল লোকেই ব্যবহার, ঝোড়, পুরিয়া, জবা, সাংগ্রী তাহাতে রাখিয়া দেয়। ছোটই হউক বড়ই হউক, বাটীর বহির্ভাগে সকল গৃহস্থের এক একটি পূজার ঘর থাকে, ঐ গৃহ তাহাদিগের নিত্য পূজনীয় দেব দেবীর স্থান আদ্যে রিকান দর্শকগণ ঐ পবিত্র স্থানের ভাব দেখিয়া সান্ত্বিত্য সম্প্রীত হইয়া ছিল। এস্থলে আমরা পৌতুলিক ধর্মাবলম্বীদিগের একটি উত্তম দৃষ্টান্ত পাইতেছি, তাহা এই, পারমার্থিক বিষয়ে তাহাদের বিশেষ দার্ঢ্য আছে, উহা যে নিত্য প্রয়োজনীয়, কি সম্পদ কি বিপদ সকলই যে অলৌকিক ক্ষমতাসীন হয়, ইহা তাহারা সকলেই স্বীকার করে। তবে এই দার্ঢ্য সর্ব শ্রেষ্ঠ পরম পদার্থে না বর্ত্তিয়া অতি নিকৃষ্ট হস্তকৃত বস্তুর প্রতি যে বর্ডে, 'ইহা বড়ই চুৎখের বিষয় হয়, তাহা হউক, সূক্ষ্মরূপে বিবেচনা করিতে হইলে ইহার মূল সূত্রকে অবশ্যই উত্তম করিতে হইবে, পাপমুক্ত প্রকৃতির ভকতি প্রযুক্ত লোকে যথেষ্ট ব্যবহার করে বটে, কিন্তু সর্ব প্রাথমিক ঈশ্বর জ্ঞানের চিহ্ন তাহাদের সকল কর্মেই দৃশ্য হয়। বাহার। সত্য সনাতন একমাত্র ঈশ্বরকে জানে, প্রকৃত পূজা পদার্থকে পূজা করে, তাহার ই যথার্থ সুখী হয়। তাহাদিগের সাংসারিক সুখের পরিসীমা নাই, পৌতুলিকদিগের চিত্ত শুদ্ধি হয় না, কাল এবং অবস্থানুসারে নিত্য নূতন নূতন ভাবোদয় হওয়াতে বিশ্বাসের পরিবর্ত্ত হয়,

তবে যে আমেরিকানেরা জেপানীদের প্রতি সম্ভ্রুত হইয়া ছিল, তাহার কারণ শুদ্ধ তাহার। নাস্তিক নহে, মানব চিত্তের বাঞ্ছনীয় এক প্রকার ধর্মে বিশ্বাস করিয়া থাকে ।

ভিতর বাটীর উঠানে জেপানীদের। ছুই ফুট উর্দ্ধ তক্তা পোষের ন্যায় সুপ্রশস্ত এক কাষ্ঠাসন প্রস্তুত করে, গৃহ স্বামীদিগের ইচ্ছানুসারে কখন কখন তাহাতে মাছুর বিছান হয়, এবং ভোজন পান এবং শয়ন ক্রিয়াদি সকল অন্যোদের কণ্ঠ তথায় নিষ্পন্ন হইয়া থাকে । শ্রমোপজীবী অর্থাৎ স্বত্বধর এবং অন্যান্য শিল্পিকেরা উহাতে বসিয়া শ্রমাদিগের বর্ষ নিষ্পাদন করে, পরন্তু কর্ম্মকার এবং ভাস্করেরা কাষ্ঠাসনে বসে না, মূর্তিকারে উপবেশন দ্বারা তাহাদের সকল কর্ম্ম হয় । জেপান দেশের ভাড়াটিয়া বাটী সাতিশয় পরিষ্কার এবং পরিচ্ছন্ন, ঘন অথচ সুকোমল মাছুব বাসযোগ্য সকল গৃহেই পাতা থাকে, ভাড়াটিয়ারা দিনের বেলা ঐ মাছুবে বসিতে পারে এবং রাত্রিকালে শয়ন করিয় স্নেহে নিদ্রা যায় ।

ভদ্র লোকদের বাটীর সম্মুখে এক একটি নিশান পোতা থাকে, ঐ নিশানে অস্ত্র সম্বলিত এক চাপকান ঝুলান হয়, কে ভিনি, তাহার নাম কি, ইত্যাদি কথা সকল স্পষ্টাকরে ঐ চাপকানে লেখা হয় । তথায় যে সকল হোটেল, ঘর আছে, দেখিতে তাহা বড় একটা জমকাল নহে, মনুষ্যের স্বচ্ছন্দ্রের নিমিত্ত মেজ চৌকি কোচ লন্টন প্রভৃতি যে সকল সামগ্রী সাতিশয় প্রয়োজনীয় তাহার কিছুই তথায় থাকে না, এমন বিদেশীয় সুসভ্য লোকদিগের তথায় বাস করা অকঠিন হইয়া উঠে, আমেরিকা এবং ইংলণ্ড দেশের

হোটেল সম্পূর্ণ নয়ন এবং মনের, প্রীতিকর সকল পদার্থই তথায় থাকে, পথিক বা ভ্রমণকারী লোকেরা তাহাতে আশ্রয় লইলে স্বস্তিকেনন অপেক্ষা অধিক সুখ সঙ্কল পায়, কিন্তু সামান্য মাত্র সুখ যে চিত্র এবং দর্পণাদি জেপান হোটেল তাহাও না থাকাতে, সভ্য আমেরিকানদিগের পক্ষে উহা মরুভূমি তুল্য হইয়া ছিল। কনোডোর পেরি লিখিয়াছেন, সাইমোডাতে সহস্রাধিক বাস গোণা ঘর নাই, প্রায় সমস্ত সহস্র লোক তাহাতে বসবাস করে, তন্মধ্যে পঞ্চ অংশের একাংশ দোকানদার এবং শিপিক। জেপান দেশের অন্যান্য নগরের ন্যায় সাইমোডাতে সৈনিক পুরুষদিগের সম্মান, অসমতুল্য হয়। প্রধান সেনাপতি রাও অগ্রধান সৈনিকপুত্র এবং ভ্রম লোকদিগের রক্ষক সিপাহীর মধ্যে একদলভূত, ইহারা নগরের কোন উৎসাহ করে না, প্রমোপজীবী নীচ লোকেরা কাঠিন পরিগ্রহ করিয়া যাহা উপাঞ্জন করে, তাহাতে তাহারা প্রতি পালিত হইয়া থাকে। পরন্তু এত কষ্ট সহ্যেও তথাকার নীচ লোকদিগের অবস্থা বড় নিকৃষ্ট নহে, কারণ ভিক্ষা করে এমন লোক জেপানের কোন পথে দেখা যায় না। এই সাইমোডাতে সাধারণ ক্রয় বিক্রয়ের স্থান দাঁট বাজার নাই, তন্নিবাসী লোকেরা ক্রয় বিক্রয় কর্ম সকল গোপন ভাবে করিয়া থাকে, গোলযোগ কিছু মাত্র হয় না, বিদেশীরা প্রথমে তথায় গেলে বোধ করিতে পারে, যে, পৃথিবীর সুহিত এ নগরের কোন সম্পর্ক নাই।

সাইমোডা বাসী লোকেরা জীবের মধ্যে মৎস্য এবং ভূমুৎপাদিত শস্য ফলাদি আহার করিয়া জীবনধারণ করে, কুক্কুট হংস মেঘ হ্রাদি তাহার। প্রতিপালন করে বটে,

কিন্তু তাহাদিগের মাংস তাহারা কদাচ ভক্ষণ করে না ।
 ধান জব গোম এবং মিষ্টি আলু নগরের মধ্যে 'ও তা-
 হার চতুষ্পাশ্বে' বহুতর জন্মে, কৃষকেরা ইহারই চাস
 অধিক করিয়া থাকে । এতদ্ব্যতীত হালিম পটল সিম
 কপি প্রভৃতি শাক নানা প্রকার ব্যঞ্জনের সানগ্রীও উৎ-
 পন্ন হয় । বঙ্গ দেশে জৈষ্ঠ আষাঢ় মাসে ধান্য রোপণ
 করিয়া বৈরূপ অগ্রহায়ণ পৌষ মাসে কাটে, জেপানে সেরূপ
 করে না, তথায় গোম এবং বব জৈষ্ঠ মাসে পাকিয়া উঠে,
 এজন্য সেই সময় কৃষকেরা উহা ছেদন করে । একে ক্ষেত্র
 কর্ষণ করিয়া ধান্যের বীজ একবার ছড়াইতে হয়, চার হ-
 ইলে পুনর্বার তাহা উঠাইয়া ভিন্ন ক্ষেত্রে রোপণ করা বা-
 বহার, এজন্য ধান্য শীঘ্র হয় না, আষাঢ় মাসের শেষে তাহা
 কাটিবার যোগ্য হয় । কোন ২ ক্ষেত্রে প্রতিবর্ষে ই এই
 সকল শস্য জন্মায় । কৃষকেরা শীতকালে নীম্নভূমি চাস দিয়া
 রাখে, এবং উচ্চ ভূমি প্রস্তুত করিয়া গোমের বীজ ছড়ায় ।
 প্রথমতঃ ধান্যক্ষেত্র জল দ্বারা উৎপ্লাবিত করে, পুরে হল-
 কর্ষণ দ্বারা তাহার মৃত্তিকা কোমল করিয়া ধান্য রোপণ
 করে, কারণ জল মৃত্তিকা সংমিশ্রণে কর্দম না হইলে
 ধান্য জন্মে না । জলের ভিতর ঘাস এবং অন্যান্য অনি-
 ষ্টের জঙ্গলী তৃণ জন্মিয়া থাকে বটে, কিন্তু সুবকী চুনা কাঁ-
 টার ন্যারে জেপানী কৃষকেরা দুইখান কাট যুক্ত এক প্র-
 কার কাঁটা ব্যবহার করে, ধান্যক্ষেত্রের জলের নিম্নভাগে
 তাহা ঘর্ষণ করিলে ঐ সকল তৃণ মূলশুদ্ধ উৎপাটিত
 হয় । জেপানে আশ্বিন মাস ধান্য রোপণের কাল ।
 কৃষিকার্যের নিমিত্ত তাহারা রুষ এবং অশ্ব ব্যবহার ক-

রিয়া থাকে বটে, কিন্তু হস্ত দ্বারা এই কর্ম অধিকতর নিম্পন্ন হয় ।

সাইমোডাবাসী লোকদিগের ধর্ম্মনীতি যে প্রকার হউক, কিন্তু তাহাদিগের বহুতর পূজার স্থান এবং নিত্য নৈমিত্তিক ক্রিয়া কলাপাদি দর্শনে সিদ্ধান্ত কর। যাইতে পারে, যে, তাহারা বড় একটা ধর্ম্মশীল লোক নহে, অ-
বিশ্বাস্য মিথ্যা ধর্ম্ম অনেক বিশ্বাস করে । অন্যান্য ধর্ম্মের প্রতি তাহাদের রুড় একটা দ্বেষ নাই, কিন্তু প্রায় শতাব্দিক রোমীয় ধর্ম্মাবলম্বী ক্যাথলিক যাজকদিগের অসহ্যাব-
হার দ্বারা খৃষ্টধর্ম্মের প্রতি তাহাদের এমনি বিদ্বেষ যে, কার্যমনো বাক্যে তাহারা উহাকে সাতিশয় ঘৃণা করে । পোর্তুগীস জাতির অনেক প্রবাদ গল্প ও গীত জৈপানে ব্যবহার ছিল, জৈপানী কঠূপক্ষীয়দিগের আজ্ঞার বৎসরের মধ্যে এক এক দিন এক এক পক্ষের ঐ সকল বিষয় গান্ধুয়া হইত, সাধারণ লোকে তাহা শ্রবণ করিত, তাহাতে ঐ জাতি এবং ভক্তধর্ম্মের প্রতি তাহাদের এমনি বিদ্বেষ হইত, যে মরিলেও সে বিদ্বেষ তাহাদের উন্মূলিত হইবার নহে । জৈপানে বৌদ্ধ এবং সিন্ধু মতে-
রই প্রাচুর্য্য অধিক । নির্ধন অধম বর্ণে এই ধর্ম্ম যত প্র-
তিপালন করে, কৃতবিদ্যা উচ্চপদস্থ লোকে তত শ্রদ্ধা ভক্তি করে না । ইহাতেই বোধ হয়, পৌত্তলিকতা সূমা-
র্জিত বুদ্ধি লোকদিগের নিকট সাতিশয় হেয় বস্তু, কোন নর্ভেই উহা আত্মার অভাব সংপূরণের পক্ষে উপযোগী নহে । জগদীশ্বরের কৃপায় এমন দিন হউক, যে দিনে জগতের সূন্যতা লোকে যেরূপ প্রার্থনা করে, বেরূপ তাহারা পরিবার পরিবেষ্টিত নির্মল গৃহ সুখ সন্তোষ ক-

রিয়া থাকে, যেতপ সমস্তঃকরণের সহিত তাহাদের পার-
মাৰ্থিক এবং সাংসারিক কৰ্ম নিৰ্ব্বাহিত হয়, সেইরূপ যেন
জেপানভূমিবাসী সমস্ত লোকদিগের হয়।

সাইমোডাতে বৌদ্ধ মতের নয়টি প্রধান মন্দির, কিন্তু
মতের মিয়া নামে একটি প্রকাণ্ড মন্দির, এবং অপর কতক
গুলি ক্ষুদ্র দেব দেবীর মন্দির আছে। পঞ্চবিংশতি যাজক
এবং জন কয়েক উদাসীন এই সমস্ত মন্দিরের যাজ্য ক্রিয়া
করে। অন্ত্যেষ্টিক্রিয়ার সময়ে মৃত ব্যক্তির আত্মীয় বর্গ
সে টাকা দেয়, বৌদ্ধ মতানুযায়ী ভিন্ন ভিন্ন পর্কে লোকদন্ত
সে দর্শনী সংগৃহীত হয়, তাহাতেই তাহারা প্রতিপালিত
হইয়া থাকে। সমস্ত মন্দিরই কাষ্ঠ নির্মিত, মধ্যে মধ্যে
সাধারণ লোকের সাহায্যে তাহাদের সংস্কার করা হয়
বটে, কিন্তু বারি বায়ুর এমনি গুণ, মন্দিরের ছাদ কখনই
ভাল থাকে না, দেখিলেই ভগ্নাবস্থা বোধ হয়। ছাদের
উপর টাইল পাতি, খড়্গা ঘরের ছাদের ন্যায় উর্দ্ধ নিম্ন
ভাবে তাহা প্রাচীরে সংযোজিত হয়, মোটা মোটা কাষ্ঠের
খাম অবলম্বনে তাহা স্থিরতররূপে দণ্ডায়মান থাকে। জে-
পানীরা ঐ সকল খাম এক প্রকার তৈলে এমনি বারনিস-
করে, যে দর্পণের ন্যায় তাহাতে মুখ দেখা যায়। মন্দিরের
মেঝা, কিছু উন্নত, তাহার সকল স্থানই মাছুর দ্বারা প-
র্যাবচ্ছাদিত হয়। প্রধান দ্বারের দক্ষিণ পাশ্বে এক ক্রয়
চাক এবং বাম পাশ্বে একটি প্রকাণ্ড ঘণ্টা ঝুলান যায়,
পূজার সময় ভক্তেরা উহা দ্বারা বাদ্য করিতে থাকে। ঐ
বাদ্য দ্বারা নিমিত্ত দেব দেবী জাগরিত হইয়া মনঃসং-
যোগ পূর্বক ভক্তের প্রার্থনা শ্রবণ করেন, বাদ্যের
প্রধান কারণ এই। প্রধান দ্বার অবধি দেবীর সন্মিকট

পর্যন্ত কয়েকটি ক্ষুদ্র মেজ থাকে, তদুপরি কাঠের মাহ, রাজকেরা আরাধন। কালীন উচ্চৈঃস্বরে স্তোত্র পাঠের সময় উচ্চৈঃস্বরে তাল মান রাখেন। বৌদ্ধমতাবলম্বীদিগের উহা একটি প্রধান পূজোপকরণ হয়।

যে বেদী মণ্ডপে দেব প্রতিমূর্তি অধিবসতি করেন, তাহার চতুর্পার্শ্বস্থ প্রাচীরের খোলে এক এক খান তন্ত্রা মারা থাকে, যে ব্যক্তির টাকাত ঐ মন্দির নির্মিত হইয়াছে, তাহার পূর্বপুরুষদিগের নাম ও কীর্তি ঐ তন্ত্রাতে খোদিত হয়, উত্তরাধিকারীগণ উহাতে বিশেষ মনোযোগ প্রকাশ করে, সংস্কার অথবা পরিচ্ছন্নতার অভাবে দেবমূর্তি অথবা স্মরণার্থ চিহ্নের কখনই ব্যাঘাত হয় না। জৈপানীয়েরা শিল্পনৈপুণ্য প্রকাশ করিয়া দেবমূর্তির গঠন ও বর্ণ যতই সুন্দর করুক, চীনদেশীয়দিগের মন্দিরে জম্বু নাম বিগ্রহের সে অপূর্ণ মূর্তি থাকে, তদপেক্ষা তাহাদের দেবমূর্তি কখনই নমোহর নয়। প্রধান রাজকের জীবদ্দশায় যদি কোন দুর্ঘটনা হয়, আর আরাধনাব গুণে যদি তিনি দুর্ঘটনা হইতে মুক্তি পান, তবে বৌদ্ধ অথবা তন্ত্রাশাস্ত্রের দেবতাদের প্রতি কৃতজ্ঞতাসূচক ঐ দুর্ঘটনা প্রকাশক একটি চিত্র মন্দিরের দেওয়ালে ঝুলান হয়। লাইমোডাতে ঐরূপ যত চিত্র আছে, তাহার একটিতেও উত্তমরূপ চিত্র নৈপুণ্য প্রকাশ হয় নাই। মন্দিরের স্থানে স্থানে কাঠ অথবা ধাতুময় ছিত্রযুক্ত ডিবা পোঁতা থাকে। দশকেরা সাধ্যানুসারে উহাতে টাকা পয়সা দেয়। আমেরিকানেরা তদশনে হর্ষযুক্ত হইয়া বোধ করিয়াছিলেন, যে ঐ ডিবা দ্বারা যে টাকা সংগ্রহ হয়, তাহা দরিদ্র লোকদিগের দুঃখ বিমোচনার্থে অবশ্যই নিয়োজিত হইবে।

কিন্তু ভিবার উপর এই যে পদটি খোদা ছিল, তৎক্ষণাব-
গত হইয়া তাহাদের সমুদায় আনন্দ নিরানন্দের নিমিত্ত
হইল। যথা “ক্ষুধার্তি ভূত শান্তি। নিমিত্ত এই ভিক্ষা আ-
বশ্যক হয়।” কোন কোন মন্দিরের সম্মুখে একটি প্র-
কাণ্ড স্তম্ভ থাকে, দশকদিগের চেতনার্থ তাহাতে স্পষ্টা-
করে এই সকল কথা খোদা হয়। “তোমরা পবিত্র স্থানে
প্রবেশ করিবার সময় কখনই নদ্য বা মাংস লইয়া যাইও
না, গেলে দেবতাদের অসন্তোষ ভাজন হইবে।”

প্রত্যেক মন্দির এবং মঠের উঠানে তাহাদের কবর
স্থান হয়। মৃতদিগের স্মরণার্থ তাহাতে অনেক ছোট ছোট
স্মৃতি স্তম্ভ এবং প্রস্তর মূর্তি থাকে। সাইমোড়ার নিকটে
বহুতর হরিদ্বর্ণ প্রস্তর পাওয়া যায়, একারণ পূর্বোক্ত অ-
নেক স্মরণার্থ চিহ্ন উহাতেই নির্মিত হইয়া থাকে। খৃষ্টান
দিগের কবরে বেরূপ ক্রুশ, জৈপানীদিগের প্রত্যেক সমা-
ধি স্তম্ভে সেইরূপ বৌদ্ধ দেবের পদদেশ অবধি মস্তক প-
র্বাস্ত কোন না কোন অঙ্ক দৃষ্ট হয়। কোনটার তাহার সমু-
দায় শরীরের প্রতিমূর্তি দেখা যায়, হয় তো দ্বির ভাবে
দণ্ডায়মান নতুবা বসিয়া রহিয়াছেন। শাস্ত্র হইতে বৌদ্ধ
দেব বাহির হইতেছেন, কখন তাহার করবন্ধ, কখন এক
হস্তে পদ্ম কুল এবং অপর হস্তে মক্ষিকা পরিবার কঁদে,
এই ভাবের প্রতিমূর্তি তাহার। স্মৃতির স্তম্ভ স্থিত যে মর্ম্মর
প্রস্তরে খোদে, দেখিতে তাহা বড়ই চমৎকার হয়। কখন
অতি নিরানন্দ স্থান, তাহাতে মিথ্যা ধর্ম্মোৎপন্ন অশি-
কিত শিষ্য বিদ্যা দ্বারা দেবমূর্তি সকল নির্মিত, অতএব
তদ্বর্ণনে সভ্য খৃষ্টান লোকের আর কি সুখ হইবে। স্ম-
থের মধ্যে জৈপানীয়েরা নিত্য নব পুষ্প চয়ন করিয়া পাতে

সাক্যাইরা যে স্তম্ভের স্থানে স্থানে রাখে, তাহাই নরনের সান্তিশয় প্রীতিকর হয় । শুদ্ধ ইহা নহে, বৌদ্ধ এবং ত-
ৎসংস্কারিত অন্যান্য দেবের উদ্দেশ্যে মধ্যে মধ্যে তাহার।
কবরে বলি হোম নৈবেদ্যাদিও প্রদান করিয়া থাকে ।

সুতম কবর হইলে, জেপানী যাজকেরা তৎসম্মুখবর্তী
ছুই ধারে ছুই খুঁটি পুঁতির। একখান তক্তা ঝুলাইয়া
দেয় । তাহাতে ধর্মগ্রন্থের ছুই একটি পদ বা শ্লোক লেখা
থাকে । সে শ্লোকের অর্থ এই, “ হে জীবিত মানবমণ্ডলী
গণ ! এ সংসার অনিত্য, কথন্ আছে কথন্ নাই, ইহাতে
সম্পূর্ণরূপে অভিলিপ্ত হওয়া উচিত নয় । অতএব সংক্রিয়া-
সুতাম কর । যাহাতে তোমাদের নাম অনন্তকাল স্থায়ী
হয় এমন যত্ন পাও, নিত্য ধর্মগ্রন্থ এবং দেবতাদিগের
স্তোত্র শ্রবণ কর, পুরোহিতকে দক্ষিণা দিতে কাতর
হইও না । ” কখন বা এই ভাবে লেখা হয়, “ যাহারা
আপনাদিগের সংকীর্্তি দৈত্য এবং দানব রাজ্য পর্যন্ত
লক্ষ্য করাইতে ইচ্ছা করে, তাহার। আমাদিগের এবং
অন্যান্য অনন্তজীবী লোকদিগের ন্যায় ধর্ম গ্রন্থে সম্পূর্ণ
বিশ্বাস করুক । জানী লোকের। আমাদিগের পবিত্র
দালানকে আলোক ময় করিবে, তাহাদিগের স্মৃতি স্তম্ভ
চিরস্থায়ী হইবে ” । এ সমুদায় কথার অর্থ এই, ধর্মার্থে
যুক্ত্য দান করিলেই স্বর্গধাম প্রাপ্ত হয় । দেহ ত্যাগে পর-
লৌকে তাহাদিগের স্বর্গে ঘাইবার পথ রোধ করিতে পা-
রে না, এবং মৃত্যুকালে বিরক্ত করিতেও সক্ষম হয় না ।
জেপানের বারি বায়ুতে বড়ই শৈত্য গুণ আছে, এজন্য
স্মৃতি স্তম্ভের ধোদা অক্ষর বহুকাল থাকে না, কিছু দিন
পাকিলেই শৈবাল পড়িয়া পাঠের অযোগ্য হয় । আমে

রিকামেরা অনুসন্ধান দ্বারা যতদূর জানিতে পারিয়াছিলেন, খৃষ্টানদিগের কবরস্থ ভূমিতে যেসকল ক্রম এবং মৃত্যুর দিন, কোন বংশ, কাহার সম্ভান এবং সংক্রিয়াদির সংক্ষেপ বৃত্তান্ত লেখা থাকে। জাপানীদের কবরেও সেইরূপ হয়, প্রভেদের মধ্যে মৃত ব্যক্তি কয় খান ধর্মগ্রন্থ শ্রবণ বা পাঠ করিয়াছে তাহাও লেখা থাকে। কারণ, যে ব্যক্তি সহস্রাদিক ধর্ম গ্রন্থ শ্রবণ বা পাঠ করে, জাপানীদিগের বিবেচনার তত্ত্বল্য পুণ্যবান লোক আর নাই। রাইওসেনজী নামক প্রধান বৌদ্ধ মন্দিরের উঠানে কমোডোর একটি সমাধি দেখিয়াছিলেন, সেটি ঘরের মত, ভিতরে দুইটি প্রস্তর মূর্তি, ঐ মূর্তির চতুর্দিকে অপর কতকগুলি মূর্তি যেন এক চিত্রে উক্ত মূর্তি ঘরের কথা শ্রবণ করিতেছে। আমেরিকান অধ্যক্ষ এরূপ কবরের ভাব প্রথমে বুঝিতে পারেন নাই। অনুসন্ধান দ্বারা জানিতে পারিয়াছিলেন, রাজসংক্রান্ত উচ্চপদস্থ ব্যক্তি হইলে তাহাদিগের কবর এই ভাবে নির্দিষ্ট হয়।

আমেরিকানদিগের জাহাজসমূহ যখন সাইমোডাতে যায়, তখন নয়টি বৌদ্ধ মন্দিরের মধ্যে, রাইওসেনজী নামক প্রধান মন্দির জাপান গবর্নমেন্ট আমেরিকানদিগকে অল্প দিন ব্যবহারের নিমিত্ত দিয়াছিলেন। এই মন্দিরের সংযুক্ত একটি উৎকৃষ্ট উদ্যান আছে, তাহাতে নানাবিধ শাক সবুজি বাগানের সামগ্রী উৎপন্ন হয়, বাজকেরা তাহা ভোজন করিয়া জীবন ধারণ করেন। এতদ্ভিন্ন দর্শন স্থল হয় এমনত পুষ্পোদ্যান, স্বর্ণমতস্যযুক্ত সরোবর এবং বহু উৎকৃষ্ট কলাদির হস্ত আছে। এই উদ্যানের পশ্চাৎ তাহা একটি ক্ষুদ্র পাহাড়, ঐ পাহাড়ে উষ্ণিবার জন্য উ-

দ্যানের মধ্যভাগ হইতে সিড়ি পর্য্যন্ত একটি সংক্রম নির্মিত হইয়াছে। যাজকেরা যে গৃহে বাস করেন, তৎসংক্রান্ত সুদীর্ঘ গ্রন্থ একটি লম্বা ঘর আছে, তাহাতে মধ্যে মধ্যে কাঠের যবনিকা, তন্দ্বারা বহুলোক তন্মধ্যে থাকিলে সুখশুদ্ধ-
 ম্দের ব্যাঘাত হয় না। জাহাজের প্রধান কর্মচারিদিগকে রাসের জন্য ঐ ঘর দেওয়া হইয়াছিল। মনস্ত ঘরে ত্র্যকোণ-
 ল মাদুর পাতি। থাকতে তাহাদের শয়নোপবেশনের পক্ষে বড়ই সুখজনক হইয়াছিল, যাজকদিগের প্রমাদে তাহাদের উত্তম অন্ন এবং উত্তম বাক্সন সামগ্রী ভোজন হইত। পরি-
 চারক লোকের কিছুই অভাব ছিল না, সকলই সুপরিষ্কার, জীবন ধারণের নিমিত্ত যাহা প্রয়োজনীয় তৎসকলই তাহাদিগকে দত্ত হইয়াছিল। কোন প্রকার অসন্তোষের কথা তাহারা বলিতে পারে নাই।

প্রকাণ্ড মিয়া নামে সিন্দু মন্দির, সহরের যে ভাগে বৌদ্ধদিগের পূজার স্থান আছে, সেই ভাগে হয়। তাহার ন্যায় একটি সঙ্গীর্ণ লম্বা ঘরের মধ্য দিয়া গেলে দর্শকেরা প্রস্তরের সোপান প্রাপ্ত হইয়া থাকে, তন্দ্বারা পূজার দা-
 লানে যাওয়া যায়। প্রবেশ দ্বারের দুই পাশে দুইটি প্রস্তরময় সিংহ আছে, তাহার গঠন বড় একটা সুন্দর নহে, দেব মন্দির তাহারা নাকি রক্ষা করিয়া থাকে। বড় বড় কাঠের খুঁটি দ্বারা মন্দিরের চাঁদনি সংরক্ষিত হয়, ঐ খুঁটিতে ব্যাঘ্র এবং হস্তীর মস্তক খোদিত, এতদ্ভিন্ন উহা অনেক প্রকার অভ্যাশচর্য্য প্রতিমূর্তি দ্বারাও পরিভূষিত হইয়া থাকে। বাঁশের চিয়াড়ির পরদা দ্বারা মন্দিরটি দুই ভাগে বিভক্ত হয়, পূজার দালান এবং বেদী মণ্ডপ, এই মণ্ডপে হাচিনান নামা এক অলৌকিক বীর পুরুষের

দেবমূর্তি বিরাজমান আছে। সিন্ধু মতাবলম্বীরা তাঁহাকে ঈশ্বর জ্ঞান করে, এবং তাঁহারই নামে ঐ মন্দির উৎসর্গ হইয়াছে। এই বিগ্রহের পার্শ্ববর্তী দুই কুলঙ্গীতে তাঁহার অম্বুসঙ্গী দুই সৈনিক পুরুষের মূর্তি আছে, জেপান দেশীয় প্রাচীন রীতানুসৃত তাঁহাদিগের যুদ্ধ সজ্জাও পরিচ্ছদ, প্রধান সেনাপতির আজ্ঞার প্রতীকার তাহারা যেন দণ্ডায়মান আছে, এই ভাবে নির্মিত। এই মিন্য। দেবের সম্মুখেও জেপানীরা নানাবিধ গন্ধ পুষ্প নৈবেদ্যাদিও প্রদান করে। প্রধান বেদীমণ্ডলের দেওয়ালে বহু সজ্জাক চিত্রপট আছে, তন্মধ্যে তাম্রমুদ্র। তরবারি তীর ধনুক দেবালয় আদির চিত্র অনেক দৃষ্ট হয়। যে সকল লোকের দাতব্য দ্বারা মন্দিরের নিষ্ঠা জিয়। কলাপ এবং পরীক্ষা নিরীক্ষা হয়, তাহাদিগের নাম স্মৃতিঙ্গ তৈলাক্ত কাগজে লেখ। দেওয়ালে নানা আছে, এত নাম যে সে কাগজ খানি ত্রিশ ফিটের মূন হইবে না। জেপানী রাজকদিগের বিবেচনায় দাতা এবং দাতব্যের কথা প্রকাশ করা সাতিশয় কবব্য কর্ম হয়। হাচিগান দেবের সম্ভোষার্থ প্রতি বৎসর একবার একট মহা পরী হয়, উহাকে জেপানীরা মাটজুদী বলে, যত লোকে চাঁদা দেয়, বাষিক চাঁদা এই সময়ে সকলকার শেষ করিতে হয়। বাহাদির চাঁদা প্রকাশ করণের যোগ্য নয়, অথবা দান দ্বার। নাম প্রকাশ করিতে সাহারা ইচ্ছা করে না, তাহাদিগের প্রীত্যর্থে বিগ্রহের সম্মুখে একটি ছিদ্রযুক্ত বাক্স থাকে, ঐ বাক্সে তাহারা আপনাদিগের সামর্থ্যানুসারে দাতব্য দেয়।

যে সকল বর্ণিত হইল, তদ্ব্যতীত ইতিহাসে অনেক

ধর্মবিষয়ক কথা লেখা আছে, গ্রন্থ বাহুল্য ভয়ে সে সকল কথা এখানে লেখা হইল না, কেবল এই বলিয়া এবিষয়ের পর্য্যবসান করি, কি ভদ্র কি অভদ্র ধর্মার্থ জেপানীরা যত টাকা ব্যয় করে, এই পৃথিবী মণ্ডলীর অস্পন্দনের লোকে তত টাকা ব্যয় করিয়া থাকে। যদিও সাধারণ লোকের পক্ষে উহা বড়কষ্টজনক, তথাপি দান আদির প্রধান গ্রহীতা যাজকগণ, যত্ন পরিশ্রম স্নেহ এবং উৎসাহ সহকারে আপনাদিগের কর্তব্য কর্ম এমনি নিষ্পাদন করে, যে তাহারা শ্রদ্ধা পূর্ব্বক ধর্মার্থদান দিয়া কৃতার্থ মন্য হয়। কোন মন্দির কত টাকা প্রতি বর্ষে ব্যয় হইয়া থাকে, আমেরিকানেরা ইহার রহস্য লইতে চেষ্টা করিয়াছিলেন, কিন্তু রাজকর্মচারী লোকদিগের ন্যায় তদ্রূপ ধর্ম সংক্রান্ত লোকেরা এমনি চতুর যে কোন মতেই কৃতকার্য হইতে পারে নাই।

আমেরিকানদিগের সহিত সন্ধি হওন পর্য্যন্ত সাইমোড়া জেপানদেশে একটি প্রধান রাজকীয় বাণিজ্যস্থান বলিয়া গণ্য হয়, রাজধানী জেডো নগরের রাজ সভা হইতে এই আজ্ঞা দত্ত হইয়া ছিল। এই নগরে রক্ষকরূপে মহারাজা ছয় জন রাজপুরুষকে নিযুক্ত করিয়াছিলেন, দেড় কোশ অন্তর তাহাদিগের এক এক জনের বিচারালয়, ঐ বিচারালয় রাজপথের প্রান্তরবর্তী ছিল, মুতন রাজ নিয়মানুসারে তাহাদের রাজ কর্ম সমাধা হইত। এই আদালতের বহির্ভূত যে সকল লোক বাস করিত, তদ্রূপ লোকের গবর্ণমেন্ট দ্বারা তাহাদের রাজকাৰ্য্য নিরীহ হইত, পূর্ব্বোক্ত ছয়জন শান্তি রক্ষকের কর্তৃত্ব তাহাদের প্রতি কিছুনা ছিল না।

একণে প্রকৃত ইতিহাস পুনঃ বর্ণনা করি। কমোডোর সাইমোড়াতে উপস্থিত হওনের তিনদিবস পরে, অর্থাৎ ২১ সে এপ্রেল দিবসে জন কয়েক প্রধান কর্মচারীকে সঙ্গে লইয়া তীরে অবতরণ করিলেন, করিয়া, কুরাকায়াকাহী নামা নগরাধ্যক্ষের সহিত সাক্ষাৎ করিতে গেলেন। জেপানাদীর্ঘের জেনসকিকে তথায় উকীল রূপে পাঠাইয়াছিলেন, কমোডোর যাইবামাত্র নগরাধ্যক্ষ এবং জেনসকি দণ্ডায়মান হইয়া বিশেষরূপে আমেরিকানদিগের সম্বন্ধনা করিলেন। পরস্পর শিষ্টাচার সম্বন্ধীয় অনেক কথা হইলে পর, পূর্বকৃত সন্ধিপত্রের নিয়ম বিষয়ে রাজোপদিষ্ট জেনসকির যাহা বক্তব্য ছিল তাহা বলিলেন। অতঃপর তাহার। সকলে গাত্রোথান করিয়া সহর এবং তামিকটবর্তী স্থান সকল দর্শন করিতে গেলেন, যাইতে যাইতে আমেরিকান জাহাজ সমূহে যে যে প্রয়োজনীয় আহারীয় দ্রব্য দিতে হইবে, তাহার নিয়ম অবধারণ করিলেন।

সন্ধি পত্রের ক্ষমতানুসারে আমেরিকানদের প্রধান ২ সৈনিক পুরুষ ও কর্মচারীগণ সর্বদা তীরে অবতরণ করিয়া গুরুত্ব নগরের রাজপথে ভ্রমণ করিয়া বেড়াইতেন, সাধারণ জনসমাজ তাহাদিগকে দেখিলে, আত্মাভিমান করিত, বিদেশী লোকের প্রতি যেন তাহাদের বিশেষানুরাগ আছে এমন ভাব দেখাইত, সৌহার্দ্যমুচক অনেক অথোপকথনও করিত। কখন কখন দশ বারজন জেপানী একজন সৈনিক পুরুষকে ঘেরিয়া বসিয়া তমাক সাজিয়া দিত। সে তমাক খাইতে খাটতে অল্প ভঙ্গী ইঙ্গিত এবং দুইএক জেপানী বোল ছাড়িয়া কথা

কহিত, ইত্যবসরে তাহার। তাহার পরিচ্ছদ পরীক্ষা করিত, বালককে প্রকাশ করিয়া আনন্দ ও ব্যগ্রতার সহিত কেহ তাহার বোতাম তরবারি এবং সুন্দর পোষাকে অঙ্গুলী দিয়া তাহার গুণ অনুভব করিত, মনের মত হইলে নিলক্ষ্য তাঁড়ের দ্বারা ইংরাজী ভাষাতে উহাদিগকে কি বলে তাহা জিজ্ঞাসা করিত। দুই একদিনের মধ্যে প্রকাশ পাইল, যে, জেপান গবর্ণমেন্ট স্ব রাজ্যস্থ লোকদিগের আমেরিকানদের সহিত এরূপ সংস্রব ও সরলতা, প্রদর্শন কোন মতেই অনুমোদন কদেম না, কারণ তাহাদিগকে বিদেশীদিগের সহিত কথা কহিতে দেখিলে অস্ত্রধারী সিপাহী অথবা পোলিসের লোক আসিয়া দূর করিয়া তাড়াইয়া দিত। আত্মলোকদের প্রতি এই কণ্ঠিন্য ব্যবহার করিয়া তাহারা সন্তুষ্ট হয় নাই, আমেরিকানদের প্রতি এরূপ নিষ্ঠুরতার করণে স্থির প্রতিজ্ঞ হইয়া ছিল। কারণ আমেরিকান কর্মচারীরা যেখানে যাউত, জনকয়েক অস্ত্রধারী সিপাহী তাহাদের সঙ্গে সঙ্গে যাইয়া তাহাদের প্রত্যেক পদ নিক্ষেপ পর্য্যবেক্ষণ করিত, শিকারী কুকুরগণ যেরূপ শিকারীর সঙ্গে যায়, তাহারাও সেইরূপ তাহাদের সঙ্গে সঙ্গে থা কত। মাজিফোর্ট সাহেবের অনুমতানুসারে মোকেরা আমেরিকানদিগকে দেখিলেই পলাইত। রাজপথ প্রাপ্তরবর্ত্তি দোকানদারেরা দোকান বন্ধ করিত। তাহাতে মহামারী উপস্থিত হইলে যে রূপ হয়, দিম করেকের মধ্যে নগর সেন লোকশূন্য হইল। সহরে আমেরিকানদের দর্শন তো এইরূপ হইল। পুলী প্রায়ে বেড়াইতে গেলেও, দুই একজন পোলিসের চাপরাসী দ্রাক্ষীদের সঙ্গে ছাড়িত না। একান্ত সতর্ক হইয়া বিদেশী

দর্শকেরা কি করে, কোথা যায়, ইহা স্পষ্ট রূপে পর্যবেক্ষণ করিত, অধিক কি, তাহাদের স্বাধীনতার প্রতিবন্ধকতা জন্মাইতে কোন প্রকারে তাহারা সাধ্যানুসারে ক্রটি করে নাই ।

এতাবৎ রক্তান্ত জ্ঞাত হইয়া কমোডোর সাতিশয় জ্যো-
হাষিত হইলেন, এবং কি কারণে সাইমোডার শান্তিরক্ষক
গণ একরূপ ব্যবহার করিতেছেন, তাহার নিগূঢ় রক্তান্ত
জানিতে স্থির প্রতিজ্ঞ হইলেন । তদনুসারে পর দিন প্রাতঃ
কালে তিনি আপন নায়েবের সঙ্গে চুই জন উকীল দিয়া
নগরাধ্যক্ষকে এই কথা বলিয়া পাঠাইলেন, আমেরিকা-
নেরা সহরে গেলেই যে দোকান বন্ধ হয়, পোলিষের প্র-
হরী দ্বারা রাজপথের সমুদায় লোক যে তাড়িত হইয়া
থাকে, ইহার কারণ কি ? আমাদের সঙ্গে তোমাদের যে
নিয়ম নির্ধারণ হইয়াছে, ইহা তাহার সম্পূর্ণ বিপরীতা-
চরণ । যদ্যপি একরূপ পীড়নের কথা পুনরায় শুনা যায়,
তবে তিনি (কমোডোর) সমুদায় জাহাজ সঙ্গে লইয়া
জেডো যাত্রা করিবেন এবং স্বয়ং সম্রাটের নিকট যাইয়া
ইহার তথ্য জিজ্ঞাসা করিবেন । আমেরিকানেরা তীক্রে
অবতরণ করিলে যে সকল সুখস্বচ্ছন্দ পাওয়া উচিত, তা-
হার দশাংশের একাংশও পায় নাই । এই সুযোগে তিনি
নায়েবকে কহিয়া দিলেন, তুমি জোর করিয়া বলিবে যে
তাঁহার দ্বারা এমন কৰ্ম্ম আর না হয়, হইলে পরে ভাল
হইবে না ।

নায়েব এবং উকীলদ্বয় কমোডোরের উপদেশানুক্রম
সমস্ত কথা মগরাধ্যক্ষকে কহিলে, তিনি প্রত্যুত্তর করি-
লেন নাগাসাকাই নগরের ওলন্দাজেরা রাজপথে আ-

সিলে, বার চোদ্দজন জেপানী সিপাহী তাহাদিগের সঙ্গে সঙ্গে যায়। এই রাজনিয়ম আমেরিকানদিগের প্রতিও প্রচলিত থাক। কর্তব্য, এই বিবেচনায় আমি আপনারা নগরে আইলে অত্যাচার নিবারণক সৈন্য সঙ্গে দি, অপূর কোন অসদতিপ্রায় নাই। তৎশ্রবণে উকীলেরা, প্রত্যন্তর করিলেন, ওলন্দাজদিগের প্রতি তোমরা যে ব্যবহার কর, তাহা আমাদের সহ্য না, আমরা শুদ্ধ বন্ধুত্ব এবং পরিচয় হেতু জেপান গবর্ণমেন্টের সহিত সন্ধি করিয়াছি, সাইমোডাতে আমাদিগের বন্ধুত্বাবে আসা হইয়াছে, নিয়মপত্রে আমাদিগের যে সকল ক্ষমতা আছে, তদনুযায়ী কখনই আমরা করিতে দিব না। বিশেষ, লোকদিগের বাহাতে অনিষ্ট হয়, এমন অসদতিপ্রায় আমেরিকান কোন দর্শকের নাই, কেবল তাহাদের সহিত আত্মীয়ভাবে আলাপ পরিচয়াদি হয়, ইহা আমাদিগের নিতান্ত ইচ্ছা, তবে অস্বাধীন সিপাহীদের দ্বারা বাধা প্রাপ্ত হইয়া এত অপমান সহিব কেন? এতাবৎকাল তোমার লোক আমাদিগের প্রতি যে ব্যবহার করিয়াছে, কোন দেশে আসিয়া আমরা এরূপ সহ্য করি নাই। তবে একথা লোকে শুনিলে মনে করিবে কি? মনে করিবে, কোন না কোন অত্যাচার করিতে আমাদিগের অভিসন্ধি আছে, তাহাতেই তোমরা আমাদিগের প্রতি এইরূপ আচরণ কর।

উকীলগণের এই যুক্তি যুক্ত অথচ কঠিন ভাষায় নগরাস্থানদের হৃদ্বোধ হইল, যে, তিনি ভাল কর্ম করেন নাই, অতএব তিনি ক্ষমা প্রার্থনা করিয়া বলিতে লাগিলেন, মহাশয়গণ! সন্ধিপত্র হইবার পূর্বে আমি জো-

কুহাদা নগর পরিত্যাগ করিয়া আসিয়াছি, এজন্য “ স্বা-
ধীন সংগ্রহের ,, বিষয় আমি অবগত নহি। এবিষয়ে কি
করা কর্তব্য, তদুপদেশ প্রাপ্ত হইবার নিমিত্ত আমি
অবিলম্বে জেডো নগরস্থ প্রধান রাজ কর্মচারীদিগের
নিকট একখানি পত্র লিখিব। প্রত্যুত্তর পাইবার আর
অপেক্ষা করিলাম না, ঘোষণা পত্র দ্বারা এখনই অনুমতি
করিতেছি, অদ্যাবধি আমেরিকানদিগকে দেখিলে এ
নগরের কোন বাটীর দ্বার আর বন্ধ হইবে না, এবং
সিপাহীরাও পশ্চাদ্বর্তী হইয়া তাহাদের সঙ্গে সঙ্গে যা-
ইবে না। এতদ্ভিন্ন কমোডোর অপর যাহা যাহা প্রার্থনা
করিয়াছেন, তাহাও আমি দিলাম।

আমেরিকান জাহাজের কর্মচারীগণ অতঃপর নিত্য
তীরে আসিয়া সাধারণ জনসমাজের সহিত অবাধে আ-
হার বিহার কথোপকথন করিতে লাগিল, পুলিশ সংক্রান্ত
কোন লোক আর তাহাদের অনুসন্ধান করিল না। একদিন
তাহারা জন কয়েক লোক দলবদ্ধ হইয়া সহরের বহির্ভূত
পল্লী নদ্যা বেড়াইতে গিয়াছে। হঠাৎ দেখিল, চুইজন
জৈপানী তাহাদের পশ্চাদ্বর্তী হইয়া সঙ্গে সঙ্গে আসি
তেছে। তদ্বক্ষণে প্রথমে তাহারা তাহাদিগের প্রতি কিছু
মনোযোগ করিল না। কিন্তু তাহারা যেন গোপন ভাবে
আসিতেছে, কোন কথা বলে যেন তাহাদের এমন বাসনা
আছে। এরূপ বোধ হইলে, আমেরিকান দল তড়াকমান
হইয়া তাহাদের আগমন প্রতীক্ষা করিয়া রহিল। নিকটে
আইলে দৃষ্ট হইল যে, তাহারা উরুপদস্থ নান্য লোক,
তচ্চিহ্নসূচক ছুই খানি তরবারি তাহাদের দুই পাশে
ঝুলিতেছিল। পা জামা, চাপকান, কাবা প্রভৃতি যে সকল

বস্ত্র তাঁহারা পরিধান করিয়াছিলেন, সে সকলই অভ্যস্তম পটে প্রস্তুত। তাহাদের আচার ব্যবহার এবং কথোপকথনের রীতিও সচরাচর ভদ্র লোকদের মত সাতিশয় নমোরম, কিন্তু তাহারা যেন কোন বিষয়ের নিমিত্ত ত্যক্ত হইয়াছেন, সম্পূর্ণ সচ্ছন্দ নাই, অতিশয় সংশয় চিত্ত, বাহ্য লক্ষণে ইহা স্পষ্ট প্রকাশ পাইতে লাগিল। তাঁহারা যে কর্ম করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছেন, তাহা যেন স্বদেশীয় লোকদিগের দৃষ্টিগোচর না হয়, এজন্য তাঁহারা এক একবার গোপনভাবে এদিক ওদিক চাহিতেছেন, ইত্যবসরে তাঁহাদের একজন এক আমেরিকান কর্মচারীর সঙ্গিতে আসিয়া তাঁহার সোনার ঘড়িটির সাতিশয় প্রশংসা করিতে লাগিলেন, করিতে করিতে একখানি মোড়ক করা পত্র তাহার কোষ্ঠার জেবেতে দিলেন। পরে ক্ষণমাত্রে অঙ্গুলী ওঠে দিয়া ইঙ্গিত দ্বারা উহা যে অতি গোপন বিষয় ইহা তাঁহাকে জানাইলেন, আর মুহূর্ত্তেকের মধ্যে তৎস্থান হইতে প্রস্থান করিয়া পলায়নপর হইলেন।

আমেরিকানেরা পত্রের মোড়ক খুলিয়া দেখিল, যে, উহা জেপানী ভাষায় লিখিত, কি ভাবে এমন করিয়া তাহারা সে পত্রখানি তাহাদিগকে দিল, এই আশংসায় তাহারা ইংরাজীতে উহা অনুবাদ করাইলেন। সে অনুবাদের স্থূল মর্ম্ম এই। “জেডো রাজধানী নিবাসী আমর। ছুইজন পাঠশালার ছাত্র, আমেরিকান জাহাজের কর্তৃপক্ষ এবং কর্মচারীদিগের প্রতি আমাদের সর্বিনয় নিবেদন এই যে, আমরা নিজে যেরূপ লঘু, আমাদের বিদ্যা বুদ্ধিও তাদৃশ হয়, অতএব কৃতবিদ্য আমেরিকান

দিগের সম্মুখে আসিতে আমরা লজ্জিত হই। আমরা
অস্ত্রবিদ্যা জানি না, রাজনীতি এবং পাণ্ডিত্য বিষয়ে তর্ক
করিতেও আমাদের ক্ষমতা নাই, বৃথামোদ এবং অন-
র্থক কর্মে আমাদের অমূল্য সময়ের অনেকাংশ অতি-
বাহিত হইয়া গিয়াছে। ইউরোপ এবং আমেরিকার বি-
দ্যানুশীলন এবং আচার ব্যবহার বিষয়ক অনেক কথা
আমরা পুস্তকে পড়িয়াছি, এবং লোক মুখেও শ্রুত
আছি, পড়িয়া শুনিয়া অনেকদিন পর্য্যন্ত পৃথিবীর প্রধান
প্রধান পাঁচ খণ্ড দেখিতে আমাদের বড়ই ইচ্ছা হইয়াছে।
কিন্তু সামুদ্রিক যাত্রা বিষয়ে আমাদের দেশীয় ব্যবস্থা
বড়ই কঠিন হয়, বিদেশীদিগের এদেশে আসা, এবং
এদেশীয়দিগের বিদেশে যাওয়া উভয় নিষিদ্ধ আছে।
সুতরাং মনের কথা মনেই থাকে। পদ বন্ধন করিলে ম-
নুষ্যের যেরূপ গতি রোধ হয়, নিষীদ বন্ধ করিলে যেরূপ
প্রাণ সংশয় হয়, আমাদের মনোরথ পূর্ণ বিষয়ে সেই
রূপ হইয়াছে। ভাগ্যক্রমে আপনারা আমাদের এদেশে
আসিয়া কিছুদিন জাপান সমুদ্রে বাস করাতে, আপনাপ
পরিচয় এবং পরীক্ষা দ্বারা স্থির উপলব্ধি হইয়াছে, যে
আপনারা অতি মহানুভব মহাশয় লোক, দয়া ধর্মগুণে
পৃথিবীর সর্বত্র যশস্বী, ইহাতে আমাদের বহুদিনের
শুদ্ধ আশালতা পুনরায় হরিদ্বর্ণ হইয়া সপত্র হইতেছে।
একবে প্রার্থনা এই, যাহাতে আমাদের সেই আশালতা
ফলবতী হয়, এমন উপায় করিয়া দিউন।

মনোরথ পূর্ণ হওনের সময় উপস্থিত দেখিয়া আমরা
গোপনভাবে আমাদের এই আবেদন খানি আপনা-
দিগের নিকট পাঠাইতেছি, জাহাজ লইয়া সমুদ্রে বাওন

সময়ে আপনারা আমাদিগকে লইরা যাইবেন, আমরা স্বদেশীয় কুৎসিত প্রথা মানিব না, মহাশয়দিগের সাহায্যে পাঁচখণ্ড পৃথিবী দেখিয়া আপনাদিগকে কৃত কৃতার্থ বোধ করিব। পাছে সম্পাদক মহাশয়েরা আমাদিগের এরূপ দুরাকাঙ্ক্ষিত প্রার্থনায় অসন্তুষ্ট হন, অতএব অঙ্গীকার করিতেছি, যে, সামান্য ভৃত্যের ন্যায় আমরা জাতাজের কর্ম করিব, আজ্ঞার অধীন হইব, যে কর্ম করিতে বলিবেন তাহা তৎক্ষণাৎ সমধা করিব, সাধ্যানুসারে ক্রটি করিব না। জেপানবাসী আমরা সকলে বর্দ্ধপদ এবং খঞ্জ লোক তুল্য হই, পৃথিবীর উত্তর দক্ষিণ ত্রিশ অংশ, এবং পূর্ব পশ্চিম ত্রিশ অংশ যাইতে আমাদের সাহস হয় না, আপনারা বড় বিচ্ছাত বজ্রাঘাত মানেন না, অনায়াসেই লক্ষ লক্ষ ক্রোশ সমুদ্রে যাইতেছেন, পৃথিবীর বহুদূরবর্তী দেশ সকল আপনাদের করতল হিতের ন্যায় দেখাইতেছেন। তদ্রশ্যে যদিও আমরা পদবন্ধ ও খঞ্জ সদৃশ তথাপি এমন সাহস হইতেছে যে একদিন অস্বারোহী হইয়া স্থানে স্থানে ভ্রমণ করিতে পারিব। আপনারা যদি এ অধীন দ্বয়ের প্রতি অনুগ্রহ প্রকাশ করেন, তবে সে অনুগ্রহ কদাচ আমরা বিস্মৃত হইব না, কৃতজ্ঞ চিত্তে যাবজ্জীবন তাহা উপলব্ধি করিতে থাকিব। কিন্তু যদি আমাদিগের এ প্রার্থনা বিবেচনার অধীন হয়, আমরা যদি উহার বোধ্যপাত্র না হই, তবে আবেদন পত্রখানি ছিঁড়িয়া ফেলিবেন, কাহারও নিকট প্রকাশ করিবেন না, প্রকাশ করিলে দেশীয় কঠিন ব্যবস্থা দ্বারা আমরা শুদ্ধ তাড়িত ও অপমানিত হইব না, নিসন্দেহ আমাদিগের প্রাণ বিনাশ হইবে। তাহা হইলে

আপনাদিগের দয়া ধর্ম গুণের যে নির্মল জ্যোতি, পৃথিবীর সর্বত্র দীপ্তিমান আছে, তাহা একেবারে অন্ধকারাচ্ছন্ন হইবে । আর কুপাদৃষ্টি করিয়া আপনারা যদি আমাদের মনস্কাম সিদ্ধ করিতে ইচ্ছুক হন, তবে যতদিন পর্য্যন্ত আমাদের যাওয়া না হয়, ততদিন একথা গোপনে রাখিবেন, একবার যাওয়া হইলে আর এবিষয়ের আন্দোলন হইবে না, আমরা বিশেষ জানি, আমাদের দেশের লোক গত অনুসূচনা বডএকটা করে না । শেষ নিবেদন এই, আমরা যে কথা লিখিতেছি অকপট একান্তচিত্তে লিখিতেছি, ইহাতে আপনারা কোন প্রকার আশংসা করিবেন না, অবোধে আমাদিগের মনোরথ যেন পূর্ণ হয়, বহুসম্প্রদায়ের সহিত আমরা এই পত্র খানি স্বহস্তে প্রদান করিলাম ইতি ১১ ই এপ্রেল ।

এই পত্রের অভ্যন্তরে আর একখানি ক্ষুদ্র পত্র ছিল, তন্মধ্যে এই, মহাশয়েরা যখন ষোকুহামা নগরে অবস্থিতি করেন, তখন এক রাত্রি একখানি ক্ষুদ্র নৌকা দ্বারা আমরা তথায় সাক্ষাত করিতে গিয়াছিলাম, কিন্তু অসুবিধা প্রযুক্ত গামস সিদ্ধ হইল না । তৎপরে শুনিলাম আপনাদিগের সমস্ত জাহাজ সাইমোডাতে আসিয়াছে, তাহাতে ভাগ্য পরীক্ষার্থ আমরা একখানি ক্ষুদ্র নৌকা দ্বারা এতদূর পর্য্যন্ত আইলাম, কিন্তু জাহাজের নিকট পর্য্যন্ত অগ্রসর হইতে আমাদের সাহস হয় নাই । যদি আপনারা অনুগ্রহ করিয়া আমাদের প্রতি বিশ্বাস করেন, তবে কলারাত্রিকালে যখন সকলই নিশ্চল হইবে, তখন আমরা সমুদ্র তীরে আসিয়া আপনাদের সহিত সাক্ষাৎ করিব, সেখানে কোন গৃহস্থের বসবাস নাই, বোধ হয় আমাদি-

গের সাক্ষাৎ বিষয়ে কোন প্রতিবন্ধকতা হইবে না। ঈশ্বর আমাদের আশা ফলবতী করুন ইতি ২৫ সে এপ্রেল।

পরদিন রাত্ৰিকালে দুই প্রহর দুইটার সময়ে মিসি-সিপাই নানক জাহাজে একজন প্রহরী চৌকি দিতে ছিলেন, এমনত সময়ে জাহাজের পাশ্বদেশ হইতে হঠাৎ একটা গোলযোগ তাহার কর্ণগোচর হইল, আরোহণীয় স্থানে সে উপস্থিত হইয়া দেখিল, যে দুইজন জেপানী যুবাপ্ত্রুষ নৌকা হইতে সিড়ি লাগাইয়া তাহাদের জাহাজে উঠিতেছে। কারণ জিজ্ঞাসা করাতে, তাহারা কি বলিল সে সৈনিকপুরুষ বুঝিতে পারিল না, ভাব ভঙ্জিমা দ্বারা কেবল এতাবশ্য জানিল যে তাহারা জাহাজে আসিত চয়। অনুমতি দেওয়াতে তাহারা জাহাজে আসিয়া সে স্থানে ব্যগ্রতাপূর্বক থাকিতে চাহিল, সমুদ্র তীরে আর কিরিয়। যাইতে চাহিল না। তাহাতে মিসিসিপাই জাহাজের প্রধান কর্ণধার গাত্ৰোখান করিয়া তাহাদিগকে কহিলেন, কোন কথা বলিবার ইচ্ছা থাকে তো তোমরা ঐ নিশান তোলা বড় জাহাজ খানিতে যাও, আমি রাত্ৰিকালে তোমাদিগকে এ জাহাজে স্থান দিতে পারিব না। এই কথাতে তাহারা অনেক কষ্টে পুনরায় নৌকা দ্বারা নিশান তোলা জাহাজের নিকট গেল। সিড়ি লাগাইয়া উপরে উঠিবার উপক্রম করিতেছে, তরঙ্গ হিলোলে তাহাদের নৌকা সমুদ্রে ভাসিয়া গেল, দৈবভুক্তিপাক, কি স্ব ইচ্ছাতে তাহাদের এ ঘটনাটি হইল, তাহা নিশ্চয় করি যায় না। যাহা হউক, জাহাজে উপস্থিত হইলে, কৰ্মোভোরকে এ বিষয়ের সংবাদ দেওয়া গেল, তাহাতে তাহারা কি কারণে এমন সময় আসিয়াছে, ইহা জানিবার

নিমিত্ত জাপান ভাষায় পারদর্শী একজন উকীল পাঠাইয়া দিলেম। উকীল আসিয়া তাহাদের সহিত কথোপকথন করাতে তাহারা স্বীকার করিল, ইউনাইটেড স্টেটস নামক দেশে যাইতে আমরা নিতান্ত ইচ্ছুক হইয়াছি, এ মনোরথ পূর্ণ হইলে আমরা পৃথিবীর সর্বস্থান দর্শন করিব। কর্মচারীরা যে দুই লোককে সমুদ্র তটে দেখিয়াছিল, ইহারা সেই লোক, ইহা জানিতে পারিয়া, উকীল এক দৃষ্টে তাহাদিগের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন, দেখিলেন, তাহারা জাপান দেশীয় উচ্চ পদস্থ তত্রস্থান বটে, কিন্তু ভ্রমণকারী লোকেরা যেরূপ পরিচ্ছদ পরিধান করে, তাহারা সেইরূপ বস্ত্র পরিধান করিয়া আসিয়াছে, নৌকা বাহিয়া আসাতে সাতিশয় শ্রান্ত ও ক্লান্ত হইয়াছে বলিয়া, তিনি তাহাদিগকে দুইখানি বসিবার চৌকী দিলেন। তাহাদের এক জনের স্থানে একখানি তরবারি ছিল, অপর তিনখানি তরবারি তাহারা নৌকায় ফেলিয়া আসিয়া ছিল, তাহাদের বাক পটুতা দ্বারা বোধ হইল যে তাহারা কৃতবিদ্যা লোক, চীন ও জাপানী ভাষা অনর্গল লিখিতে ও কহিতে সক্ষম, তাহাদিগের রীতি নীতিও নম্রশীল সভ্যতব্য ছিল।

উকীল কমোডোরকে তাহাদের অতিপ্রায় জ্ঞাত করিলে, তিনি এই কথা বলিয়া পাঠাইলেন, আমেরিকাতে জন কয়েক জাপানী লইয়া যাইতে আগার নিতান্ত ইচ্ছা বটে, কিন্তু জাপান গবর্নমেন্টের অনুমতি ভিন্ন আমি একর্ম্য করিতে পারিব না, আমাদিগের জাহাজ এখনও অনেকদিন এখানে থাকিবে, ইত্যবসরে দর্শকগণ স্বদেশীয় গবর্নমেন্টের নিকট প্রার্থনা করুক না কেন ? উ-

কীল পুনরায় আসিয়া তাহাদিগকে এই সকল কথা কহিলেন, তাহার। কড়বোড়ে কহিতে লাগিল, মহাশয়! কমোডোরকে বুঝাইয়া বলুন, তীরে গেলে আমাদিগের প্রাণ থাকিবে না, বিদেশে যাইবার কথা। শুনিলে জেপান গবর্ণমেন্ট আমাদেব সৰ্কসনাশ করিবেন। উকীল বলিল ভয় কি আমরা তোমাদের সাহায্য করিব, কমোডোরের আজ্ঞা অন্যথা হইবার নয়, তিনি যাহা বলিতেছেন তাহা কর। যুবা পুরুষ জেপানী দ্বয় কাকুতি বিনতি দ্বারা অমেক সাধ্য সাধনা করিয়া জাহাজে থাকিতে চাহিল, কিন্তু কোনমতে নাবিকের। তাহাদিগকে থাকিতে দিলনা, জাহাজী বোট দ্বারা শেষে বলপূৰ্ব্বক তাহাদিগকে সমুদ্রে নামাইয়া দিল। স্তবরাং হতাশ হইয়া ভ্রুখিতচিত্তে তাহার। যে স্থানে আপনাদের নৌকাখানি ছাড়িয়া আসিয়াছিল, পুনরায় সে স্থানে গেল। আর ভাগ্যে কি ঘটনা ঘটে, এই চিন্তায় ব্যাকুলিত হইয়া তাহার। কি কুকৰ্ম্ম করিলাম বলিয়া অনুতাপ করিতে লাগিল।

পরদিন সন্ধ্যাকালে জেনসকি নিশাকারী জাহাজের কৰ্ণধারের নিকট উপস্থিত হইয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, শুনিলাম, কল্য রাত্রিকালে দুইজন উন্নত মদ্যপ জেপানী আমেরিকান জাহাজে আসিয়াছিল, তাহাদের দ্বারা তোমাদের কিছু অনিষ্ট হইয়াছে কি না? কৰ্ণধার উত্তর করিলেন, কৰ্ম্মান্তরে কত ব্যক্তি জাহাজে আসে যায় তাহার সম্বন্ধ নাই, সকলকার কথা স্মরণে রাখা দুষ্কর, কিন্তু এই নাত্র নিশ্চয় বলিতে পারি, কোন ব্যক্তি আসিয়া আমাদিগকে বিরক্ত করে নাই, করিলে আমরা অবশ্যই আপনাকে জানাইতাম। ভাল জিজ্ঞাসা করি, আপনি যে

ব্যক্তি দ্বয়ের কথা বলিতেছেন, তাহারা নিরাপদে কুল প্রাপ্ত হইয়াছে কি না? জেনসকি বলিলেন, সে দুর্ভাগ্যবশত কুল পাইয়াছে, তদ্বিষয়ে ভাবনা নাই।

জেনসকি বিদায় হইলে, কর্ণধার কমোডোরের নিকট তাহার আগমন বৃত্তান্ত কহিলেন, তাহাতে সুবিচক্ষণ আমেরিকান অধ্যক্ষ মনে মনে বিবেচনা করিলেন, জেপানের যে কঠীন আইন, রাজ্জিদশর্ক যুবকদ্বয়ের নিকৃতি দেখিতেছি না, অতএব একজন কর্মচারীকে পাঠাইয়া যাহাতে শান্তিরক্ষকদের রাগ শান্তি হয়, এমন উপায় করা আমার বিহিত হইয়াছে। এই বিবেচনার নগরাধ্যক্ষের নিকট একজন লোক পাঠাইয়া তিনি তাহাকে এই কথা বলিতে কহিলেন, আমেরিকানদিগের সুখ সচ্ছন্দ বিষয়ে আপনারা যে এতটা তত্ত্ব করেন, ইহাতে কমোডোর সন্তুষ্ট হইয়া আপনাদিগকে ধন্যবাদ দিয়াছেন, তিনি বলিয়াছেন, সামান্য বিষয়ের নিমিত্ত আপনারা এত উদ্বিগ্ন হইবেন না, এরূপ ঘটিলেও কিছু আইসে যায় না, ক্লেমেন্টাইন এত অনুসন্ধান করা অল্পযুক্ত হয়। গবর্নমেন্টকে না জানাইয়া তিনি ভবিষ্যতে কোন জেপানীকে আমেরিকান জাহাজে গ্রহণ বা স্থান দিবেন না, আপনারা তাঁহাদের প্রতি যে বিশ্বাস করেন, তদনুযায়ী তাঁহাদের দ্বারা কখনই হইবেনা, এবিষয়ে আপনারা নিশ্চিন্ত থাকিবেন। কারণ সন্ধিপত্রে যে সকল নিয়ম নির্দ্ধারিত হইয়াছে, তাহার অণুমাাত্র ত্রুটি করিতে তাহার ইচ্ছা নাই।

জেপানীরা জ্ঞান এবং বিদ্যাবৃদ্ধি করণার্থ কত আগ্রহ এবং উৎসুক, এই যুবকদ্বয়ের বৃত্তান্ত পাঠে সকলেই জানিতে পারেন! দেশীয় প্রথানুসারে প্রাণ বাইবার সন্তা-

বনা জানিয়াও ইহারা পৃথিবী দর্শনে একান্ত ইচ্ছুক হইয়াছিল। এতাদৃশ বিদ্যানুরাগী ব্যক্তিগণকে আশ্রয় না দেওয়া কমোডোরের মহত্বের কার্য্য হয় নাই, ইহাতে তাঁহার ঔদার্য্য এবং মহানুভাবকতার অনেক ব্যত্যয় হইয়াছে, কেহ কেহ এমন কথা বলিলেও বলিতে পারে। কিন্তু সুস্পষ্টরূপে বিবেচনা করিয়া দেখিলে দ্বির উপলব্ধি হইতে পারে, যে, কমোডোরের কর্ম্ম কোন মতেই অবিবাহিত কর্ম্ম নহে, জেপানীরা সুতুর ধূর্তলোক, চাতুর্য্য করিয়া আমেরিকানদিগকে পরীক্ষা করিবার নিমিত্ত যদি তাহারা আসিত, আর তাহাদিগকে বিশেষ না জানিয়া ঔদার্য্যভোগ হেতু কমোডোর যদি একেবারে আশ্রয় দিতেন, তবে এত যে অসাধ্য সাধন করিয়া তিনি জেপান গবর্নমেন্টের সহিত মিল করিয়াছিলেন, তাহা একেবারে বিনষ্ট হইত। আর ষ-ধার্থ্যই তাহারা যদি কোতূহলপ্রযুক্ত আসিয়া থাকে, তথাপি রাজনীতির রীতানুসারে তাঁহার অবিবেচনার কর্ম্ম হয় নাই, কারণ যুক্তিযুক্ত বা অগৌত্রিক হউক যে দেশের যে প্রথা নহে, তদ্বিপরীত কর্ম্ম করিয়া একটা আকণ্ঠ কুণ্ড করা জানবান রাজনীতিজ্ঞ লোকের কর্ম্ম নয়।

যাহা হউক, এই ঘটনার কিয়ৎদিন পরে, জমকয়েক আমেরিকান কন্সচারী একদিন নগরের বহির্ভাগে বেড়াইতে গিয়াছিল, বেড়াইতে বেড়াইতে হঠাৎ তাহারা কারা গৃহের নিকটে উপস্থিত হইল। বাড়ীটা কিরূপ? কারাবাসীরা কি অবস্থায় তথায় বাস করে? ইহাজানিবার নিমিত্ত তাহারা বাড়ীর ভিতর গেল। প্রবেশ দ্বার পার হইয়া দেখে, যে, ভূমণ্ডল দর্শনাখী পূর্বেক্ষিত দুইজন জেপানী দ্বারের সম্মুখে একটি লৌহ পিঞ্জরে বদ্ধ হইয়া আছে,

পিঞ্জরটি সাতিশয় সতীর্ণ, সচ্ছন্দে নড়িতে চড়িতে পারে এমন স্থান তাহাতে নাই। তাহাদের বদন মণ্ডলের ভাব দেখিয়া বোধ হইল, যে, বিপদে তাহারা নিতান্ত অবসন্ন হয় নাই, ধৈর্য্যাবলম্বন করিয়া স্থিরচিত্তে অবস্থিতি করিতেছে। দেখা হইল ভাল হইল, আমেরিকানেরা স্বচক্ষে আমাদের এই দুর্ববস্থা দেখুক, এই বিবেচনায় তাহারা এক দৃষ্টে কর্মচারীদিগের প্রতি দৃষ্টি করিতে লাগিল। তাহাতে একজন দর্শক তাহাদের পিঞ্জরের সম্মুখে গেল, যাই-বামাত্র তাহারা কোন কথা বলিল না, পিঞ্জরের এক কোণে যে একখানি কাগজ লিখিয়া রাখিয়াছিল, তাহাই তাহার হস্তে প্রদান করিল। পদার্থতত্ত্ব নির্ণয়ার্থ জ্ঞানার্থেবী লোকেরা যে কত কষ্ট সহিতে পারে, ঐ কাগজখানি তদু-চ্চাণ্ড স্বরূপ, নিম্নে তাহার অনুবাদ প্রকাশ করিলাম।

“বীরপুরুষ লোক যদি কোন উৎকট কর্মের অনুষ্ঠান করেন, আর দৈব দুর্নিপাক হেতু তাহার সে কর্ম যদি সিদ্ধ না হয়, তবে তিনি যেমন দুর্ভাগ ও চোর বলিয়া লোক সমাজে গণনীয় হন, আমাদের দশাও সেইরূপ হইয়াছে। অসাধ্য সাধন করিতে গিয়া জনসমাজ দ্বারা আম-রা ধৃত ও অপমানিত হইয়াছি, আমাদের প্রধান পক্ষস্থির হইয়াছে, পিঞ্জরে বদ্ধ হইয়া আমরা যৎপরোনাস্তি কষ্ট পা-ইতেছি। গ্রামের প্রাচীন এবং প্রধাম লোকেরা আমাদের প্রতি জঘন্যরূপে ব্যবহার করিতেছে, তাহাদিগের অত্যাচার সহিতে পারা যায় না। যখন আমরা আপনাদের কর্ম আপনারা দেখি, তখন তিরস্কারের যোগ্য এমন কোন কর্ম করি না বোধ হয়, কিন্তু আমাদের বর্তমান দশা যখন আমরা উপলব্ধি করি, তখন যেন হীন অপরাধের

অপরাধী হইরাছি এমনি জ্ঞান হয় ; হবে বৈকি, আমা-
দিগের ছুরাকাজ্ঞ। তো অস্প নহে, গণমাণ্ড পঞ্চাশত বা
বতী দেশ দেখিতে আমাদের ইচ্ছা হইল না, একেবারে
ভূমণ্ডলের পাঁচ খণ্ডে ভ্রমণ করিতে আমরা অভিলাষ করি-
য়াছিলাম। তা যেমন কর্ম তেমন ফল, কম্পনা ফলবতী
না। হওয়াতে আমাদের সকল আশাই বৃথা হইল, বনাজী-
বের মাণ্ড পিঞ্জর বদ্ধ হইলাম, সুখে শয়নোপবেশন তো-
জন পান নিদ্রাদি হয়, এমন স্থান পাইলাম না। হাঃ বি-
ধাতঃ এস্থান হইতে আমরা কিরূপে মুক্ত হইব, কাঁদিলে
লোকে আমাদিগকে নির্কোষ পাগল বোধ করে, হাসিলে
চূৰ্ণিত কহে, তাবিলাম এক হলো আর, অন্তএব মৌনা-
বলম্বন কারাই আমাদিগের বিধেয় হইরাছে :

ইসাজি কুড়া

কিভান সুচীমানজী ।

অধীন কর্মচারীদিগের মুখে কমোডোর এই বুদ্ধান্ত
প্রবণ করিয়া সাতিশয় দুঃখিত হইলেন, কালবিলম্ব করি-
লেননা, সেই দিনেই তাহাদের মুক্তির প্রার্থনায় একজন
প্রধান কর্মচারীকে দেশাধ্যক্ষের নিকট পাঠাইলেন। আ-
মেরিকান অনুচর কারাগৃহে গমন করিয়া শুনিলেন, যে য-
থার্থই সে সুবকসর আমেরিকান জাহাজে গিয়াছিল ব-
লিয়া আবদ্ধ হইরাছে, দেশাধ্যক্ষ নিজে তাহাদিগেয় দণ্ড
বিধান করিতে পারেন নাই, জেডো রাজধানীতে তাহা-
দের অপরাধের কথা লিখিয়াছিলেন, তাহাতে আদেশ
হইরাছে, যে, তাহারা সে স্থানে বিচারিত হইবে, তৎকাল
কাল রাজিকালে তাহাদিগকে তথায় পাঠান গিয়াছে।
এই কথা শুনিয়া আমেরিকান দূত বলিতে লাগিলেন, কি

পরিভাষা ! যদিও নির্দোষী; সেখানে তাহাদের প্রাণ দণ্ড হইবে তাহার কোন সন্দেহ নাই। কিন্তু দেশাধ্যক্ষ তাহার আগমন সন্বাদে তথায় সমুপস্থিত হইয়া কহিলেন, আশংসা করিওনা, কমোডোর যে তাহাদের বিষয়ে রিপট দিয়াছেন, তাহাতে তাহাদের প্রাণ দণ্ড কখন হইবে না, হয়তো সামান্য দণ্ড হইবে, এইদেখ, এবিষয়ে জেপান গবর্নমেন্টের অভিপ্রায় দেখ, এই কথা বলিয়া। তিনি কমোডোরের সন্তোষার্থ তাহার হস্তে একখানি পত্র পাঠাইয়া দিলেন। দ্রুত প্রত্যাবৃত্ত হইয়া অধ্যক্ষকে সেই লিপিকথানি দিলে, কমোডোর তাহা পাঠ করিয়া ঐ হতভাগ্য লোকের বিষয়ে নিরুৎকণ্ঠিত হইলেন।

অতঃপর কিয়দ্দিন সকল বিষয় সৌহার্দ্যভাবে চলিল, আমেরিকানেরা জেপানীদিগের দোকানে যাইয়া আপনাদিগের প্রয়োজনীয় সামগ্রী সকল নিত্য ক্রয় করে, কোন কথায় বিবাদ বিসম্বাদ হয় না। ইতিমধ্যে পাউছেটান নামক জাহাজের একজন নাবিক মরিল, জেপান গবর্নমেন্ট তাহার সতকার্যের মিমিত্ত সাইমোডার নিকটবর্তী একটি গ্রামে কিঞ্চিৎ স্থান নিরূপণ করিয়া দিলেন, ঐ স্থান আমেরিকানদিগের স্থিরীকৃত কবর স্থান হইল। কমোডোর ব্রিস্সিয়ে আপন বৈষয়িক ব্যাপার সমাধা করিতেছেন, ইত্যং একদিন জেপানী সৈন্যদলের অত্যাচার দ্বারা আনন্দ্রের অপমান হইয়াছে ইহা তাঁহার কর্ণগোচর হইল, শুনিয়া তিনি একেবারে চমতকৃত ও ব্যস্ত সমস্ত হইলেন, এস্থানের শান্তি রক্ষক দোষ ফালন হেতু যদি আমায় নিকট ক্ষমা প্রার্থনা না করে, তবে আমি গবর্নমেন্টকে সান্ত্বিত করিয়া দিব। এই বিবেচনায় প্রথমে তিনি

উপসাগরের তীরে একদল সৈন্য পাঠাইতে চাহিলেন, পরক্ষণে তিনি মনে করিলেন, সৈন্য না পাঠাইয়া নায়েবকে প্রেরণ করাই আমার উচিত বোধ হইতেছে, তিনি দেশাধ্যক্ষের নিকট গিয়া এবিষয়ের প্রতীকার করিয়া আসুন ।

পত্র লিখিয়া নায়েব পাঠাইবার উদ্যোগ করিতে-
ছেন, এমন সময়ে একজন কর্মচারী আসিয়া তাঁহাকে ন-
মস্কার করত জেপানীদের দৌরায়ের আশুল রক্তান্ত
কহিল, তাহা এই । মহাশয় ! সেদিন আমরা তিন জন
লোক আনন্দ করিবার নিমিত্ত গিন্তুলাদি লইয়া
পক্ষী মারিতে গিয়াছিলাম, শিকার করিতে করিতে মমন্ত
দিন গেল, ক্রমে অন্ধকার হওয়াতে আর আসিতে পারি-
লাম না, সুতরাং সাইমোডাহিত একটি মন্দিরে আশ্রয়
লইয়া আশাদিগকে রাজি যাপন করিতে হইল । মন্দিরের
সংযোজিত বাসগৃহে যখন আমরা প্রবেশ করি, তখন
আশাদিগকে তত্রস্থ একজন রক্ষক দেখিয়া ছিলেন, তিনি
কিছুমাত্র নিষেধ করিলেন না, বরং কহিলেন, সাইমো-
ডাহিত সকল মন্দিরই কমোডোরের কর্তৃত্বাধীন, তাঁহার
লোকে শয়নোপবেশনের নিমিত্ত যেটি ইচ্ছা সেটি ব্যব-
হার করিতে পারে । এই কথাই শুনিয়া আমরা
বাস গৃহে প্রবেশ করিয়া তাহাতে পাতা কোমল মাছুরে
শয়ন করণের উদ্যোগ করিতেছি, এমন সময়ে দ্বারদেশে
সৈন্যাদিগের কণ্ঠ ধ্বনিত শব্দ ও কলরব আমাদের কর্ণগো-
চর হইল । তাহার শিষ্টাচার সম্বৃত কোন প্রকার অভি-
বাদন করিল না, একেবারে আমাদের নিকট আসিয়া
অসভ্যরূপে আশাদিগকে সে স্থান পরিত্যাগ করিতে ক-

হিল, একে সমস্ত দিনের পরিগ্রাস্ত, তাহাতে নিজায় কাতর হইয়াছি, প্রগল্ভ কটু বাক্য শুনিয়া আমাদেব ব-ড়ই রাগ হইল, আমরা সকলেই বলিলাম, অন্য রাতে আমরা তোমাদেব কথা মানিব না ।

টেটনসকিনামে তাহাদেব সেনাপতি কথা রক্ষা হ-ইল না দেদিয়া সেই রাতিতেই কমোডোরেব সহিত সা-ক্ষাৎ করিতে চাহিলেন । তিনি আমাদিগকে ছাড়িয়া আ-সিলে, অবশিষ্ট সিপাহীরা আমাদিগেব প্রতি এমনি অ-সত্যতাচরণ করিতে লাগিল, যে আমরা কোনমতেই তাহা সহ্য করিতে পারিলাম না, একেবারে খড়্গ হস্ত হ-ইয়া ছুরাআদিগকে শয়নাগার হইতে তাড়াইয়া দিলাম, এরূপ ভয়ানক মৃত্তি না ধারণ করিলে তাহাদিগকে সে রাতি আমরা কখনই দমন করিতে পারিতাম না । অতঃ-পর কুশলে রাতি প্রাভাত হইল, প্রাতঃকালে উঠিয়া দেখি, মন্দিরেব অপর পাশ্বে একদল সিপাহী আমাদেব চৌকী দিতেছে, আমরা তাহাদেব সম্মুখ দিয়া জাহাজে আসিলাম, তাহারা একটিমাত্র কথা বলিল না ।

কমোডোরেব নায়েব পত্র লইয়া নগরাধোক্ষেব নিকট উপনীত হইলে, তিনি আপন অধীন কর্মচারীদিগেব নি-র্দোষিতা সপ্রমাণ করিবার নিমিত্ত এই কথা বলিতে লা-গিলেন । আমেরিকানেব পূর্বে আমাব নিকট কোন অ-ভিপ্রায় প্রকাশ না করিয়া যে মন্দির তাহাদিগকে ব্যব-হার জন্য দেওয়া হয় নাই, তাহাতে রাতি বাপন করিয়া ছেন, একর্ম বড়ই বিকল্প কর্ম হইয়াছে । তৎপ্রবণে নায়েব কমোডোরেব অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়া দুই চারি শব্দ কথা তাঁহাকে কহিলেন, তাহাতে তাঁহাব বাক্য

ক্ষতি আর হইল না, তিনি অপ্রতীত হইয়া একেবারে বলিলেন, আমার অগোচরে মৈনোরা এই অপকর্ম করিয়াছে, আমি বারণ করিয়া দিয়াছি, এরূপ কর্ম তাহার। আর করিবেন না, এতাদৃশ ছুর্ঘটনার নিমিত্ত আমি বড়ই হতবুদ্ধি হইয়াছি। নায়েব कहিলেন, আপনি যখন নিজ মুখে ক্রটি স্বীকার করিতেছেন, তখন এবিষয়ের আন্দোলন কমোডোর আর করিবেন না, কিন্তু ভবিষ্যতে আপনি সাবধান হইবেন, আপনকার অধীনস্থ লোকে আর যদি কোন কুকর্ম করে, তবে সে কর্মকে আমরা মহাশয়ের নিজকৃত কর্ম বোধ করিব।

অতঃপর বিদেশী দর্শক আমেরিকানদিগের সহিত সাইমোড়া বাসী লোকদের আর কোন বিবাদ বিসম্বাদ হইল না, উভয় জাতিতে পরস্পর সম্ভাবে কালগাপন করিতে লাগিল। জাপান গবর্ণমেন্ট কমোডোরকে হাকোডাডী নামে যে আর একটি বাণিজ্য স্থান দিয়াছিলেন, সেই স্থানে যাইবার সময় ক্রমে উপস্থিত হইল। আমেরিকান অধ্যক্ষ পঞ্চবিংশতি দিবসমাত্র সাইমোড়াতে ছিলেন, এই সম্প্রকাল মধ্যে তিনি তথাকার কোন বিষয় জানিতে ক্রটি করেন নাই, সম্পূর্ণ পর্যবেক্ষণ দ্বারা বন্দরটি উত্তমরূপ পরীক্ষা করিয়াছিলেন, উহার ভূমি কিরূপ? উহাতে কি কি উৎপন্ন হয়? এবং কি হইতে পারে? ইহা বিশেষরূপে অবগত হইয়াছিলেন। জাপানে তাঁহার বাণিজ্য চিরকাল বন্ধুত্ব ভাবে হইবে, তদনুযায়ী কদাচ হইবে না, অপর-সাধারণ সকল লোকের মনে ইহা দৃঢ় প্রত্যয় জন্মাইয়াছিলেন। মায়পরতা দ্বারা গবর্ণমেন্টকে শিখাইয়া ছিলেন, জোকুহামা নগরে যে সজ্জিত হইয়াছে, কোন প্র-

করে তাহার বিন্দুবিসর্গ অতীরিজ্ঞ করিয়। কন্ম করিতে
 নেক পারিবে ন। অধিক লেখ। বাহুল্য, সাইমোড়ার অ-
 নেক উত্তরবর্তী জেনো উপদ্বীপস্থ হাকোডাডিতে আমে-
 রিকানের। জাহাজ সমূহ লইয়া গেলে, যে যে বিষয় ঘটয়া-
 ৷ছিল, এক্ষণে আমরা তদ্বর্ণনা করি।

ষষ্ঠ অধ্যায় ।

হাকোডাডিতে আমেরিকানদিগের বাষ্পীয় জাহাজ সকল উপনীত হইয়াছে, চারি পাঁচ ঘণ্টার অধিক হয় নাই, ইতিমধ্যে দৃষ্ট হইল, জেপান গবর্ণমেন্টের প্রেরিত একখানি বজরা আসিতেছে। পূর্বে আমেরিকানেরা তাহাদের যেরূপ বজরা দেখিয়াছিল, উহা প্রায় সেইরূপ, প্রভেদের মধ্যে কিছু তারি, এবং উহার নির্মাণের রীতিও বড় একটা সুন্দর নহে, কাল কাল ডোরা লাগান অল্পজ্বল নিশান উহাতে তিন চারিটি ছিল। যে আটজন দাঁড়ীতে নৌকাখানি বাহিয়া আনিতেছিল, তাহাদের পরিচ্ছদ অতি আশ্চর্য্য, সকলের পৃষ্ঠদেশে আত্ম প্রভুদের মর্যাদাসূচক চিহ্নরূপ এক একখানি অস্ত্র ঝুলিতেছিল। তরলীখানি পাউহেটান নামক জাহাজের নিকট আসিলে, জনকয়েক জেপানী রাজকর্মচারী জাহাজের মধ্যে আসিলেন, আসিবামাত্র, কমিসনারের পূর্বে কমোডোরকে যে পত্র লিখিয়াছিলেন সেই পত্র, এবং চীন ভাষায় লিখিত সন্ধি পত্রও তাহাদিগকে দেখান গেল। তাহাতে তাঁহারা বলিলেন, জেডো নগরে যে কয়েক জন রাজকর্মচারী আপনাদিগের সহিত এখানে সাক্ষাত করিবার জন্য নিযুক্ত হইয়াছেন, এখন পর্য্যন্তও তাঁহারা পৌছান নাই, কি সন্ধিপত্র কি সাইমোড়ার বন্দর করণ আমরা কোন হতাশ

জানি না, আপনার পূর্বে কোন সংবাদ না লিখিয়া একে
বারে হাকোডাডিতে জাহাজ লইয়া আসিয়াছেন, ই-
হাতে অত্রস্থ লোক সকল বড়ই ভীত হইয়াছে। এই কথা
শ্রবণে আমেরিকানেরা তাহাদিগকে কহিল, ভয়ের কোন
আবশ্যক নাই, কল্যা কনোডোর একজন কর্মচারী প্রেরণ
করিয়া, এই নগর সংক্রান্ত রাজপুরুষদিগের সহিত কথো-
পকথন করিবেন, তাহা হইলে তোমাদের সকল আপত্তির
নিষ্পত্তি হইবে।

পরদিন প্রাতঃকালে (১৮ ই মে) কনোডোর পূর্ব
প্রতিজ্ঞানুসারে একজন নায়ের অধ্যক্ষ, দুইজন উকীল,
এবং একজন কেরাণীকে তত্রস্থ শাসন কর্তার নিকট প্রে-
রণ করিলেন। তাঁহারা রাজবাটিতে উপনীত হইলে, শা-
সন কর্তা যেণ্ডোমাটজাইদন তাঁহাদের সহিত সাক্ষাত
করিতে আইলেন, তাঁহাদের সঙ্গে অনুচররূপে ইশুক কন-
জে। এবং কুডোমোগোরো নামা দুইজন প্রধান লোক ছি-
লেন। তাঁহারা সকলেই বিশেষ শিষ্টাচার এবং সম্বন্ধভার
সহিত আমেরিকানদিগকে অভ্যর্থনা করিলেন, পরে সমা-
দর পূর্বক তাহাদের হস্ত ধারণ করিয়া একটি অতি সু-
সজ্জিত দালানে লইয়া গিয়া বসিবার স্থান দিলেন, স-
কলে একে একে আসন গ্রহণ করিলে কার্য্যারম্ভ হইল।
শাসন কর্তা অজবরক্কে ধূবাপুচ্ছ, সাতিশয় নম্র এবং বিন-
য়বাদী, তাঁহার বদননঙল সুপ্রসন্ন এবং দয়াভাবাপন্ন ছিল,
তাঁহার অনুচর দ্বয়েরর রীতি নীতিতে যদিও আনুগত্য
ভাব প্রকাশ পাইতে লাগিল, তথাপি বাহ্য লক্ষণ দৃষ্টে
তাঁহারা যে সম্বৎসর জেপানী ভদ্র সম্ভান ছিল, তাহাতে
আর কোন সন্দেহ রহিল না। দালানটি সুপ্রসন্ন বটে,

কিন্তু তাহার ছাদ চালুভাবে নির্মিত, চতুপাশে প্রস্তর ময় পুস্তালিকা এবং বাহ্যযুক্ত চৌকি খোদিত ছিল, ঐ সকল সাধারণ চিত্রে বোধ হইল, যে সে গৃহটি রাজপরিবারের দান এবং ধর্ম্মালোচনার নিমিত্ত নির্মিত হইয়াছে। শাসন কর্তার পরিচারক ভূতারা উত্তম পরিচ্ছদ পরিধান করিয়া কেহ চা কেহ মিঠাই ও পৃষ্ঠকাপি আমদান করিতে লাগিল, কেহবা উত্তম আলবোলায় সুগন্ধ তামাক সাজিয়া অত্যর্থিত লোকদিগকে তামাকু খাইতে দিল, কর্তা মহাশয় এবং তৎসহকারী অমুচরদ্বয় আত্মীয়ভাবে তাহাদিগকে প্রতিকণ বলিতে লাগিলেন, ভাগ্যক্রমে যদি এ অধীনের বাণীতে আপনাদের স্তুতাগমন হইয়াছে, তবে কিঞ্চিৎ উল্লেখ করিয়া শ্রান্তি ছুঁর করত চিরবাসিত করুন।

রীতিমত ভোজন পানাদিক্রিয়া শেষ করিয়া আমেরিকানেরা আপনাদিগের আগমনের তাৎপর্য্য কহন সূত্রে বলিল, জাপানের সহিত ইউলাইটেড স্টেটসের যে সন্ধি পত্র হইয়াছে, তন্নিয়মাবলি সুদৃঢ় করণার্থই আমরা আপনাদিগের এখানে আসা, সে নিয়মের অনুরূপ বিপরীতাচরণ আপনাদিগের করিতে পারিবেন না, করিলে ভবিষ্যতে ভয়ানক ফলোৎপন্ন হইবে। সাইমোডাতে যেরূপে আমরা কাল-যাপন করিয়াছি, এখানেও আমরা সেইরূপে কালযাপন করিতে পাইব, কোন পথ ঘাট দোকান বা সাধারণ ব্যবহারের প্রকাশ্য স্থানে অথবা পল্লিগ্রামে যাইতে আমাদের নিষেধ থাকিবে না। হাট বাজারের দোকানদারেরা আমাদের আপনাপন জিনিষ পত্র সকল বিক্রয় করিবে, কেতা বিক্রেতাদের সুবিধার জন্য উত্তম জাতির প্রচলিত টাকা উভয়ে গ্রহণ করিবে, তিনটি ভিন্ন ভিন্ন

অট্টালিকা অথবা তিনটি ভিন্ন ভিন্ন মন্দির, কমোডোর ভৎকর্মচারী এবং তদনুসঙ্গী শিল্পিক লোকদিগের ব্যবহারার্থ দেওয়া হইবে, সময়ে সময়ে সে স্থানে থাকিয়া তাঁহারা আপনাদিগের প্রয়োজনীয় কর্ম করিবেন। এদেশে যাহা প্রাপ্ত হওয়া যায়, প্রয়োজন হইলে সে সকল সামগ্রী আমেরিকান জাহাজে নিয়মিত মূল্যে দিতে হইবে, তদ্ব্যতীত অত্রস্থ যে সকল প্রাকৃতিক পদার্থ দর্শনে আমেরিকার বিশেষ কোঁতুহল জন্মিবে, এমন সামগ্রী এখান হইতে আমরা ক্রয় করিব, তজ্জন্য আপনারা অধিক মূল্য লইতে পারিবেন না।

শাসনকর্ত্তা। আমেরিকানদিগের এই সকল প্রার্থনা শ্রবণ করিয়া কহিলেন, জেডো হইতে কমিসনারদিগের উপদিষ্ট প্রেরিত লোক বদবধি না আইসে, তদবধি আপনারা অপেক্ষা করুন, তিনি আটলেই সকল কার্য নিষ্কির্বাঁদে নিষ্পাদিত হইবে। অনেক তর্ক বিতর্কের পর স্থিরীকৃত হইল, সে হাকোডাডির কর্ত্তৃপক্ষ আত্মাভিপ্রায় লিখিয়া পরদিবস কমডোরের নিকটে প্রেরণ করিবেন, পরে তাঁহার বিবেচনায় যাহা কর্ত্তব্য তিনি তাহা করিবেন। তদনুসারে শাসনকর্ত্তা এবং অপর কর্ত্তৃপক্ষগণ স্ব স্ব নাম স্বাক্ষর করিয়া এই কথা লিখিয়া পাঠাইলেন,

মান্যবর শ্রীযুক্ত কমোডোর পেরি আমেরিকান

অধ্যক্ষ মহাশয় সমীপেষু ।

সবিনয় নিবেদনমিদং

হাকোডাডি জাপান উপদ্বীপের বহির্ভূত ছুরবতী প্রদেশ, অন্যান্য লোকের সহিত অত্রস্থ লোকদের বড় একটা সংস্রব নাই, ইহারা অতি মুখ, সম্ভ্রান্তি আপনা-

দিগের জাহাজ এখানে আসিয়াছে শুনিয়া, আবাল বৃদ্ধ বমিভাদি সকলেই ভয়ে দেশের মধ্যভাগে পলায়ন করিয়াছে, দেশের শাস্তিরক্ষক তাহাদিগকে নিবারণ করিয়া ছিলেন, তথাপি তাহাদের ভয় ভাঙ্গে নাই। এস্থান অতি প্রশস্ত বাণিজ্য স্থান বলিয়া আপনাদের আগমন হইয়াছে, কিন্তু তাহা নহে, লোকেরা যে ভীত, বিদেশীয় লোকদের সহিত কন্মিনকালে বাণিজ্য ইহাদের হয় নাই, কল্যাণ আপনি স্বচক্ষে দেখিয়াছেন, যৎকালে কর্মচারীদিগের সহিত মহাশয় রাজপথে ভ্রমণ করেন, তখন সকল লোক আপনাদিগকে দেখিয়, ত্রাসে লুপ্তহিত হইয়াছিল, সমস্ত বিকাল এমগরে কোন কর্ম কাজ হয় নাই। দিন কয়েক বিলম্ব করুন, আমরা লোকদিগকে আপনাদিগেব আগমনের তাৎপর্য্য জানাই, তৎপরে সম্বন্ধে তীরে গমন করিয়া যথা তথা ভ্রমণ করিয়া বেড়াইবেন লোকেরা আপনাদিগের প্রতি কিছুমাত্র অসভ্যতাচরণ করিবে না।

সাইমোডা এবং উরাগা বেরূপ উন্নত স্থান এদেশে সেরূপ নহে, অন্যান্য দেশোৎপন্ন সামগ্রী আমিয়া এ দেশের লোকে ব্যবহার করে। মৃগচর্ম, শুক্ক মৎস্য, লবণ, স্যালমন মৎস্যের তৈল ও ডিম্ব প্রভৃতি যে সকল সামগ্রীর কর্দ আপনাদিগকে দিয়াছেন, তাহা অতি সামান্যরূপ এখানে মিলিবে, পরীক্ষা করিলে কোন প্রকারে ঐ সকল দ্রব্য আপনাদের ইচ্ছানুপ হইবে না, বরং অসন্তুষ্ট হইবেন। এ পর্য্যন্ত আমরা যে সকল সামগ্রী এখানে আপনাদিগকে দিয়াছি, যৎসামান্য বলিয়া তাহার মূল্য লইতে চাহি না।

কল্যাণ আপনাদিগকে দিয়াছিলেন সৌহার্দ্য, সম্পর্ক স্থাপন

করিতে এখানে আপনাদের আগমন, ইতি ন্যায়পরত। বটে, উভয় পক্ষেরই কর্তব্য কর্ম, নিশ্চয় জানিবেন যাহাতে এ গুরুতর বিষয়ের প্রতি রোধ হয়, এমন কর্ম আমা দিগের দ্বারা কদাচ হইবে না। প্রজা শাসন করা আমাদিগের অতীব গুরুতর কর্ম এ বিষয়ের অন্যথাচরণে প্রবৃত্ত হওয়া কোনমতেই আমাদের উচিত নহে। আমাদিগের অধীনে যে কয়েকটি সামারগ প্রকাশ্য অটালিকা আছে, তাহা আপনাদিগকে ব্যবহার করিতে দিলে আপনাদের সুবিধা হয়, কিন্তু তাহাতে তরানক ফল হইবার সম্ভাবনা। অত্রস্থ মূর্থ প্রজারা, আদর। শাসনকর্তা, কি আপনারা শাসনকর্তা হঠাৎ ইহা বুঝিতে পারিবেন না, সুতরাং ভয় পাইয়া গোলযোগ করিয়া বসিবে। তিনখানি বাড়ী দিতেই হইবে বলিয়া যদি আপনি আমাদিগকে বিশেষ অনুরোধ করেন, তবে অগত্যা আমাদিগকে দিতে হয়, কিন্তু জিজ্ঞাসা এই, এরূপ কর্ম বন্ধুতা কার্যের নিয়মানুযায়ী কি না ?।

জোকুহামাতে জাপান এবং আমেরিকার সহিত বদবধিসন্ধি হইয়াছে, তদবধি জেডোর রাজ ধর্মাদিকরুণ হইতে আমাদিগের নিকট সে বিষয়ে একখানি পত্র আইসে নাই, উরাগা বিষয়ে আপনারা যে কথা বলিতেছেন, সে তো আমরা আপনাদের লোক মুখে শুনিলাম, এতাবৎকাল ইহার কোন উল্লেখই শুনি নাই। সম্রাটের আজ্ঞা না লইয়া যদি আমরা স্বেচ্ছাচার করি, তবে তবিষাতে তৎ ফল অতীব ভয়ানক ফল হইবে। নিশ্চয় জানিবেন, জাপান উপদ্বীপে যতগুলি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র রাজ্য আছে, সে সকলই সম্রাটের কর্তৃত্বাধীন হয়, তাহার আজ্ঞার অতি-

জানিত্ত কর্ম করা কি আনাদের পক্ষে বিধেয়? এদেশের নিয়ম এই, অধীন রাজকর্মচারীরা আপনাদের এখান অ-প্রাপন ভাবণ বিষয় যুবরাজকে লিখে, যুবরাজ সম্রাটের অনুমতি লইয়া উক্তুর দিয়া থাকেন। আপনারা সবংশজ তন্ত্র লোক, সাইমোডা এবং জোকুহামাতে অনেক দিন বাস করিয়াছেন, এদেশের রীতি নীতি আপনাদিগের অবিস্মিত নাই, তবে ভবিষ্যতে যে কর্ম দ্বারা আমরা দোষী হইব, এমন কর্ম করিতে আজ্ঞা করেন কেন? তা বাহা হউক, আমাদের ভাগ্যে যা হবার তা হবে, কমিসনারের আজ্ঞার অপেক্ষা আমরা করিব না, ডিম্ব কুকুট মৎস্য হংস প্রভৃতি যে সকল খাদ্য দ্রব্য আপনাদের প্রয়োজন হয়, উৎকৃষ্ট বা অপকৃষ্ট হউক আমরা সামর্থ্যানুসারে সে সকল দ্রব্য আপনাদিগকে যোগাইব। কি গ্রাম কি নগর, পথ ঘাট হাট বাজারে আপনারা স্বেচ্ছামত যাইবেন, তাহাতে কোন ব্যক্তি আপনাদিগকে নিষেধ করিবে না। এতদ্ভিন্ন আপনকার যে কিছু আবশ্যক হয়, আমাদিগকে জানাইবেন, জানাইলে, অভাব সম্পূরণ করিতে আমরা ক্রটি করিব না, কিমধিক নিবেদন মিতি।

নিতাষ্টানুগত ভৃত্য।

শ্রীযেগো নাট জাই মন।

শ্রীইশুকা কম জো।

শ্রীকুডো মো গোয়ো।

পূর্ব প্রেরিত কমোডোরের নামের দসতি স্থান বিষয়ে শাসন কর্তার যে সকল কথা কমোডোরকে জানাইয়া ছিলেন, কমোডোর তাহাতে সন্তুষ্ট হন নাই। অতএব তিনি তদ্বারা পুনর্বার এই কথা বলিয়া পাঠাইলেন,

পথিক বা প্রবাসীলোক অল্প কালের জন্য মন্দিরের যে ভাগে আশ্রয় লয়, আমরা প্রয়োজন মতে দুই এক দিনের জন্য সেই ভাগ চাহি, তাহাতে নিত্য নৈমিত্তিক দেবার্চনার কোন ব্যাঘাত হইবে না। বহুদিনের নিমিত্ত সমস্ত মন্দির অধিকার করিতে আমাদের বাসনা নাই। শাসনকর্ত্তা পূর্বে ভাবিয়াছিলেন, সে, মন্দিরে আশ্রয় লইলে কমোডোর দেবার্চনার প্রতি হস্তক্ষেপ করিবেন। কিন্তু এসকল কথা শুনিয়া তাঁহার পূর্ব আশংসা ছুর হইল, তিনি একেবারে আমেরিকান নায়বেকে কহিলেন, আপনি আজি ষাউন, কল্যা আমি প্রাতঃকালে নাটসমাই কাজিওকে পাঠাইয়া দিব, তিনি কমোডোরের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া এবিষয়ে বাহা কর্ত্তব্য তাহা করিবেন।

এই রূপে হাকোডাডির কর্ত্তৃপক্ষের সহিত কথা বার্ত্তা শেষ হইলে, আমেরিকান জাহাজের কর্ম্মচারীরা প্রতিদিন নগরে অবতরণ করিয়া রাজপথে স্বাধীন রূপে গমনাগমন করিতে লাগিল। গ্রামে গ্রামে দোকানে দোকানে এবং মন্দিরে মন্দিরে বাইরা সকল বিষয় পর্ববেক্ষণ করিলে, নগরের শাসনকর্ত্তা তিনট বাটী আমেরিকানদিগকে দিলেন। একটি কমোডোরের নিজ সচ্ছন্দের নিমিত্ত, একটি তাঁহার কর্ম্মচারিদিগের ব্যবহারের জন্য, এবং অপর একটি আমেরিকান শিল্পিকদিগের শিল্পকার্য্যের জন্য দেওয়া হইল। নগরের মধ্যভাগে একাশ্য স্থানে শাসনকর্ত্তা একটি বাজার করিলেন, জেপান দেশীয় শিল্পিকেরা শিল্পনৈপুণ্য দ্বারা যে সকল উত্তমোত্তম দ্রব্যোৎপন্ন করে, তাহা আমেরিকানদিগকে ঐ বাজারে যথার্থ মূল্যে নিত্য বিক্রয় করা হইত। এতাদৃশ স্বাধীনতার

সহিত উত্তর জাতির সংস্রব হওয়াতে, আমেরিকানেরা শীঘ্র হাকোডাডী এবং তন্নিবাসী লোকদিগের নিগূঢ় বৃত্তান্ত এক প্রকার জানিতে পারিলেন। এমতে আমেরিকা-সে বিষয়ের কিঞ্চিৎ বর্ণন করি, ক্লেমেন্সন সন্ধির প্রস্তাব লিখিয়া পাঠকদিগকে কিছুকাল অসন্তুষ্ট করিব না।

হেনরিউড কহিলেন বন্ধো ! উত্তম কথা হইদাছে ? সাইমোডা এবং অন্যান্য স্থানীয় লোকদিগের মেরুপ চরিত্র বর্ণন করিয়াছেন, এক্ষণে সেইরূপ বর্ণন করুন, বারম্বার সন্ধির কথা বলা উচিত বোধ হইতেছে না। রিচার্ড কহিতে লাগিলেন, জেসোপদ্রীপের দক্ষিণ ভাগে হাকোডাডী অথবা হাকোডেট নামে ঐ প্রসিদ্ধ নগর আছে। উহার অর্থ সিন্দুকের দোকান, কি অভিপ্রায়ে স্থানের ঐ নাম হয়, তথাকার বহুদর্শী বিজ্ঞলোকেও তাহা বলিতে পারেন না। প্রথমতঃ উহার বন্দরে প্রবেশ করিলে বাহ্য দৃষ্টিতে স্থানটি অতি মনোহর দেখায়, দীর্ঘ প্রস্থে উহার পরিমাণ প্রায় দুই কোশ, তিনটি শিখর যুক্ত এক উচ্চ অস্তরীপ উহার দক্ষিণ ভাগে আছে, তদুপরিস্থিত ভূমিতে কোন শস্য ফলাদি জন্মে না। সর্বদা উহা হিমাদি দ্বারা আচ্ছাদিত থাকে, কিন্তু তন্নিস্তাণ সাতিশয় উষ্ণ। স্থান, তাহাতে নানাবিধ শস্য ফলাদি জন্মে, অনেক প্রকাণ্ড বৃক্ষও আছে, তদ্বারা সমস্ত নগর হরিৎ শোভাযুক্ত ছায়াযুক্ত বোধ হয়। জাপান দেশীয় শিল্পি কেরা পাহাড় পর্বতের পাথর কাটিয়া ইতস্ততঃ এক একটি গৃহ খোদিত করিয়াছে, পথভ্রান্ত লোকেরা রাত্রিকালে অনাগমনে তাহাতে আশ্রয় লইয়া সঙ্কল্পে থাকি-

তে পারে, বিশেষ তদ্রূপ শ্রমোপজীবী লোকে কি পর্য্যন্ত
পরিশ্রম ও বুদ্ধিশক্তি প্রকাশ করিয়া কৰ্ম্ম নিৰ্ব্বাহ করে,
তাহা উহাতেই প্রকাশ পায়। প্রস্তরাকর হইতে প্রস্তর
উত্তোলন করিয়া তদ্রূপীয় লোকেরা সমুদ্রাদির বান্দ
গহের ভিত্তি প্রভৃতি নিৰ্ম্মান করিয়া থাকে, এজন্য তথায়
প্রস্তরালয় যত আছে ইচ্ছাকালয় তত দৃষ্ট হয় না।

সমুদয় নগরে সহস্রাধিক বৃহৎ অটালিকা নাই, তাহার
অধিকাংশই সারি সারি সমুদ্রের দিকে হয়, অপর যে
সকল অটালিকা আছে, তাহাও পাহাড়ের পার্শ্বস্থিত রাজ
পথ প্রান্তরবর্ত্তী হয়। জলপথে গমন করিয়া যে সকল লোক
ইউরোপ খণ্ডীয় জীবরন্টের নামক মহা নগর দেখিয়াছে,
তাহারা হাকডাডীর অবস্থা বাহ্য দৃষ্টি প্রভৃতি যদি সন্দ-
র্শন করে, তবে একেবারে আশ্চর্য্য হইয়া মনে করিতে
পারে যে আকার প্রকারে এই হাকডাডি দ্বিতীয় জীবরন্ট-
রের তুল্য, জীবরন্টের পাহাড়ের নীচে ঢালুভাবে
যে রূপ বড় বড় বাসি নিৰ্ম্মিত আছে উহাতেও সেই রূপ
হয়। ঐ সুবৃহৎ নগরে ক্ষুদ্র সঙ্কীর্ণ ভূমি ক্রমে উচ্চভাবে
উত্থিত হইয়া যে রূপ উচ্চ ভূমিসলচ্চ স্পর্শ করিয়াছে,
আর তাহাতে ইংরাজদিগের ছুর্গ এবং এম্পেন রাজ্য যে
রূপ বিতস্ত হইয়াছে, হাকোডাডিতেও সেই রূপ সঙ্কীর্ণ
একটি উচ্চভূমি আছে, যদ্বারা জোসো উপদ্বীপের সীমা পৃ-
থক্কৃত হয়। জীবরন্টের যে রূপ গ্রাম এবং প্রশস্ত উপসাগর
দ্বারা পরিবেষ্টিত, হাকোডাডিও সেই রূপ হয়। এতদ্-
ভিন্ন তথাকার বন উপবন উদ্যান এবং ক্ষেত্রাদির ভাব ও
এক রূপ হয়, অতএব উভয় নগর সমতুল্য তুলনা করিলে
উপমার কোন বৈলক্ষণ্য হয় না।

হাকোডাডি নগরে যে সকল রাজ পথ আছে, তাহা প্রায়ে ত্রিশ চল্লিশ ফিটের ন্যূন নহে, মধ্যে মধ্যে এক বর্ষা অপর বর্ষার দ্বারা সংযোজিত, সকল পথই প্রস্তরময়, তাহার মধ্যভাগ উচ্চ এবং দুই পার্শ্ব নিম্ন হওয়াতে কণমাত্র জল তন্নধ্যে তিষ্ঠিতে পারে না, পড়িলেই গড়াইয়া অমনি জল প্রণালীতে পড়ে। ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র প্রণালী সকল বড় বড় নরদামার সহিত সংযুক্ত, সেই নরদামা সকলের মুখ উপ-মাগরের সহিত সংমিলিত থাকিতে অপকৃষ্ট সকল জলই উপমাগরে পড়ে। পরিভ্রম করিয়া ঝাঁটি দিতে হয় না, হাকোডাডির লোকেরা নরদামার মুখে ঝাঁটার ন্যায় এক প্রকার যন্ত্র নির্মাণ করে, ঐ যন্ত্রে পাক লাগাইলেই জল প্রণালীর ছুঁষিত কর্দম ময় বারি একেবারে বহির্গত হয়। জেপান দেশে ঢাকা যুক্ত গাড়ীর ব্যবহার বড় একটা নাই, লোকে হাঁটিয়াই প্রায় গমনাগমন করে, এজন্য তত্রস্থ পথ সকল শীঘ্র নষ্ট হয় না, একবার নির্মাণ করিলে বহু কালের পর তাহার সংশোধন আবশ্যক হয়। সাইমো-ডার ন্যায় হাকোডাডি অতি পরিষ্কার স্থান, প্রতিদিন তত্রস্থ রাজবর্গ এবং গলির রাস্তায় জল দেওয়া হয়, তা-হাতে ছুঁষিত উষ্ণবায়ু প্রযুক্ত লোকের স্বাস্থ্যের ব্যাধাত হয় না।

জেপান দেশে শান্তিরক্ষণীয় নিয়ম বড় উত্তম নিয়ম হয়, শুদ্ধ হাকোডাডি বলিয়া নয়, সকল প্রসিদ্ধ সহরে প্রচ-লিত আছে, এক এক পল্লির এক এক তত্ত্বলোক কর্ত্তারূপে নিযুক্ত হইয়া থাকেন, ভাল হউক বা মন্দ হউক, সে প-ল্লির কোন লোক যদি কোন কর্ম করে, তবে তিনি তাহার দায়ী হন, পল্লিহ লোক নৃশংস ও সচ্চরিত্র

হইয়া পরস্পর সদ্ভাবহার না করিলে, তিনি রাজবিচারে অপদস্থ হন, এবং অপর এক জন সঙ্ঘশক্তি ক্ষমতাপন্ন ব্যক্তি তৎপদ প্রাপ্ত হইলেন। এই অবৈতনিক রাজকর্ম-কারীদিগের কর্মের সীমা নির্ণয়ার্থ এক এক পল্লি কাণ্ডের বেড়া দ্বারা আবদ্ধ হইল, তাহাতে একটা ফটক থাকে। ফটকের সম্মুখে প্রহরী বাক্স নামে এক প্রকার বাক্স আছে, তাহাতে এক জন প্রহরী দণ্ডায়মান হইয়া এমনি চৌকি দেয়, যে পথ বা পল্লি মধ্যে কোন প্রকার উপদ্রব ঘটিতে পারে না, অগ্নির ভয় বড় ভয়, পল্লির কোন গৃহে অগ্নি সংযোগ না হইতে হইতে সে দৌড়িয়া কর্তা মহাশয়কে সংবাদ দেয়, তিনি সকল লোকের সাহায্য লইয়া বিপদ নিবারণ করেন। বাণিজ্য ব্যাপারের প্রাচুর্য থাকিলে নগরে বড়ই গোলমাল হয়, কিন্তু হাকোডা-ডিতে চুঁশক মাত্র ছিল না, কারণ তথায় গে। অথবা ঘো-টক শকটের বিকট শব্দ নাই, যে কর্ণকূহরে তালি লাগিবে, বণিকেরা ক্রয় বিক্রয় সময়ে এ জিনিষ অপেক্ষা ও জিনীষ ভাল এমন একটি কথাও বলে ন, সকল অর্ব্যোর উচ্ছিন্নল্য অর্ব্যোর উপরে লেখা থাকে, কলিকাতা এবং অপর সহরে বিক্রীওয়ালারা পথে পথে বেক্স অর্ব্যোর নাম ধরিয়া চোঁচার, তথায় সেক্স চোঁচার না, চোঁকার করিলেই পল্লীর কর্তা তাহার দণ্ড বিধান করেন, গোলমালের মধ্যে কখন কখন কেবল এই গোলমাল হয়, গোঁক অথবা ঘোঁড়া কিন্তু হইয়া রাজপথে গেলে, রাখাল বালকেরা চোঁকার করিয়া লোকদিগকে সাবধান করে, কোন সঙ্ঘশক্তি ধনাত্ম্য ব্যক্তি পথি মধ্যে বাহির হইলে, তাঁহার অঙ্গসদী প্রহরী রক্ষকেরা চোঁকার করিয়া লোকদিগকে

নমস্কার করিতে কহে, যে স্থানে কৰ্ম্মকার, স্বৰ্ণকার প্রভৃতি
 শ্রমোপজীবী লোকেরা বাস করে, তথায় মধ্যে ২ হাতুড়ী
 ও বাঁতার শব্দ হয়। তথাপি কোম বিদেশী লোক ঐ
 নগরে গেলে, উহা যে বাণিজ্যের স্থান নহে, কোনমতেই
 তাহার এমন বোধ হয় না, কারণ বাণিজ্য সম্পর্কীয় শত
 শত বোঝাই নৌকা তাহার বন্দরে লাগান আছে, বহু
 সম্বাক বোঝাই ঘোঁড়া বোঝা পৃষ্ঠে লইয়া পথি মধ্যে
 সর্বদা যাতায়াত করিতেছে, ভদ্রসন্তান ধনাঢ্য লোকেরা
 অশ্বারূঢ় হইয়া কৰ্ম্মোপলক্ষে ইত্যন্ততঃ ভ্রমণ করিতেছেন।

হাকোডাডিতে যে সকল বাটী আছে, মৃত্তিকা হইতে
 মাপ করিলে উচ্চে তাহা পঁচিশ ফিটের উর্দ্ধ হইবে ন,
 এক তালাতেই সকল কৰ্ম্ম হয়, দোতাল কেবল নামমাত্র,
 উহার উচ্চতা অত্যুপমাত্র হওয়াতে বাসযোগ্য হয় না।
 ওদাম ঘরের মাঝ উহাতে জিনিষ পত্র থাকে, এবং কখন
 কখন ভৃত্যেরা বাস করে। চৌরী ঘরের চালের নায়
 সকল ঘরই উর্দ্ধ নিম্ন, তছুপরিভাগে জল ভরা অনেক কা-
 ঠের টব এবং কলসী প্রভৃতি থাকে, অগ্নি লাগিলে ঐ সমু-
 দায় জল ছিটাইয়া তাহার অগ্নি নিবারণ করে। সমু-
 দায় ঘরের ছাদই খড় দ্বারা নির্মিত হয়, অত্যুপমাত্র
 মৃণ্ময় টাইলে আচ্ছাদিত হয়। দরিদ্র লোকেরা অতি
 জঘন্য কুড়িয়া ঘরে বাস করে, তাহার চাল ঘাস এবং
 পাতা দিয়া ঢাকা থাকে। কাকে কখন কখন তাহাতে ক-
 লানি ভোজন করে বলিয়া তছুপরি নানা প্রকার গাছ
 জন্মায়। প্রাচীর ছাদ প্রভৃতি অনেকাংশে তাহার কাষ্ঠ
 ব্যবহার করে, কিন্তু রজ দেওয়া পদ্ধতি তাহাদের দেশে
 নাই। সুতরাং হাকোডাডির বারি বায়ু জল সিক্ত হওয়াতে

অল্প দিনের মধ্যে সমুদায় কাঠ জীর্ণ হইয়া যায়, তাহাতে সকল বাটীই ভগ্নাবস্থা দেখায়, অধিক কি, হাকোডাডিকে দেখিলে যত প্রাচীন সহর দেখায়, বাস্তবিক উহা তত প্রাচীন নহে ।

দোকানে কি কি সামগ্রী পাওয়া যায়, তেতাদিগকে ইহা দেখাইবার জন্য হাকোডাডির লোকেরা দোকানের সম্মুখভাগ খোলা রাখে, কিন্তু বড় বড় বণিকেরা এরূপ করে না, মধ্যে মধ্যে বাঁশের বেড়া দিয়া লোকের দৃষ্টি রোধ করে। সকল বাটীরই প্রবেশ দ্বারের উপরিভাগে এক একটি দেব মূর্তি থাকে, মূর্তির সম্মুখে হয় তাম্র পাত্রে খোদা, না হয় প্রস্তরাদিতে খোদিত এক একটি প্রার্থনা আছে, অগ্নিদাহ প্রভৃতি অশুভ ঘটনা ছুর করণার্থ উহা মঙ্গলের চিহ্ন হয় ।

ভোজন কালে চীনদিগের নার হাকোডাডির লোকেরা সচরাচর বাটী বকুন, টিনের বাসন কাচি এবং মাটির চামচ ব্যবহার করিয়া থাকে। ছুপোয়া ক্ষুধিত শিশুদিগের নায় তাহারা ঝোল পানে বড়ই রত, দুটী কাচি দিয়া প্রথমতঃ তাহারা ঝোলে ভাসা মাছ ও তরকারি তুলিয়া খায়, পরে চুমক দিয়া ঝোল পান করে। তাহাদের চা প্রস্তুত করণীয় পাত্র রোপা, তাম্র, পিত্তল বা মৃণ্ময়, তাহার ক্ষণশালায় নিয়ত পাখুরিয়া কয়লার অগ্নিতে বাসান থাকে, দর্শক আইলেই অমনি স্নাতন চা আনিয়া তাহাকে পান করিতে দেয়। কারণ বঙ্গদেশে সমাগত ব্যক্তিদিগকে তমাক দিয়া অভ্যর্থনা করা যেরূপ নিয়ম আছে, সে দেশে চা দেওয়া সেইরূপ পদ্ধতি হয়। সভ্য দেশের লোকেরা চাতে যেরূপ ছুৎ ও চিনি দিয়া সুখাদ যুক্ত

করে, সে দেশের লোকেরা সেরূপ করে না, মিউতাহীন চাহাওয়া প্রায় খাইয়া থাকে। নিরন্তর শীতল বায়ু প্রযুক্ত হাকোডাডির লোকেরা বড়ই ক্লেশ পায়, ধনাঢ্য লোকদিগকে বড় একটা বাহিরে যাইতে হয় না, পশমের উষ্ণ বস্ত্র প্রায় ব্যবহার করে, কিন্তু দরিদ্রদিগকে প্রায় সর্ষদ বাটীর বহির্ভাগে কর্ম করিতে হয়; বস্ত্রেরও পারিপাট্য নাই, একারণ শীত তাহাদিগকে অধিক লাগে। শীত নিবারণের নিমিত্ত তাহার মধ্যে মধ্যে আপনাদের জঘন্য কুড়িয়া ঘরের ভিতর গিয়া অগ্নি সেবন করত শরীর উষ্ণ করে। ধূম বাহির হইবার পথ চিমনী থাকে না; বলিয়। সে ঘরে এমনি ধোঁয়া হয়, যে প্রবেশ করিবারাত্র অজস্র অশ্রুবারি নির্গত হইতে থাকে। মধ্যাহ্ন এবং দরিদ্র শ্রেণীর লোকদিগের শয়ন গৃহের মধ্যভাগে অগ্নি স্থাপিত থাকে, সেই অগ্নিতে শুষ্ক তাহার। শরীর উষ্ণ করে না, তাহাদের চার জল এবং সাকিনামক মদ্য উষ্ণ হয়, এবং অন্ন ব্যঞ্জন প্রভৃতি খাদ্যও প্রস্তুত হইয়া থাকে। কিন্তু ধনাঢ্য লোকদিগের বাটীতে পৃথক একটি রন্ধন শালা থাকে, করাসি লোকেরা তাপ ব্যাপ্ত করণার্থে যে রূপ উনান ব্যবহার করে, উহারাও সেই রূপ উনানে ভোজন সামগ্রী প্রস্তুত করে, কেবল কয়লার পরিবর্তে কাষ্ঠ আলাদা তথায় পদ্ধতি হয়, মহার্ঘ বলিয়। অধিক কাষ্ঠ তাঁহারা ব্যবহার করেন না, অপেক্ষেতেই রন্ধন কর্ম পর্যাবশান করে।

হাকোডাডি নিবাসী প্রধান লোকদিগের সুখসচ্ছন্দের নিমিত্ত সহরের প্রান্তভাগে পল্লী গ্রামস্থিত এক একটা বাগান বাটী আছে, ঐ বাটীর গঠনে কোন চমৎকারিতা নাই বটে, কিন্তু তত্র লোকদিগের সাধারণ বসভাটী অপেক্ষা

তাহা অধিক প্রশস্ত, বাহার যে রূপ ধন এবং সুখ আনুগ, তিনি তাহাতে তরুণ মনোহর রম্য ভূমি প্রশস্ত করিয়া থাকেন। ঐ বাগানে নানাবিধ ফলের বৃক্ষ উৎপাদিত হয়, হরিষ্ণ কুড় বৃক্ষের ঝোপের দ্বারা তাহার বেড়া প্রশস্ত হইয়া থাকে, আর মধ্যে মধ্যে বেড়াইবার নিমিত্ত তাহাতে যে সকল পথ প্রশস্ত হয়, তাহার দুই পাশে পরম সুন্দর পুষ্প বৃক্ষের শ্রেণী শোভা পায়, প্রাচীরের ধারে কাষ্ঠের বেড়া দিয়া তরুণের লতা তুলিয়া দেয়, লতাতে সুগন্ধ যুক্ত এমনি পুষ্প হয় সে তদ্ব্যক্কেই সমস্ত বাটী আনন্দিত করে। এতদর্শনে সপ্রমাণীকৃত হইতেছে, যে সুসভ্য জাতীয় ধনাঢ্য লোকেরা জীবনের সুখসচ্ছন্দ যেমন সম্ভোগ করে, জেপানীয় মান্যলোকেরাও সেই রূপ করিয়া থাকে।

দরিদ্র লোকদিগের প্রয়োজনোপযোগী হাকোডাভির দোকানে অল্পমূল্যের দ্রব্যই অনেক থাকে। সে সকল দ্রব্য এই, মোটা অথচ ঘনবস্ত্র, অপকৃত রেশমী কাপড়, সমান্য মৃণ্ময় চীন দেশীয় বাসন পিয়াল। বকুণা ভোজন কাটি মূলভ ছুরি কাঁটা ইত্যাদি, লোম চামড়া স্তম্ভ বস্ত্র সুপরিষ্কৃত কাচের বাসন কিম্বা ভাস্ম পাত্র প্রায় দেখা যায় না, পুস্তকের দোকান কদাচিত্ত দেখা যায়, খাদ্যসামগ্রীর দোকানে চাল ধান সব গোম শুষ্কমংষ্য শুষ্কঘাস লুন চিনি সার্কি শর্ষণ কয়লা নানা প্রকার আলু এবং ময়দা যথেষ্ট পরিমাণে পাওয়া যায়। সমস্ত সহরে সাধারণ লোকের ব্যবহার যোগ্য হাট বাজার নাই, লোকে গো মেষ শূকরাদির মাংস ভোজন করে না বনিয়া তথায় এ সকল সামগ্রী বড়ই ছুপ্পা প্যা হয়। ব্যক্তিগত সামগ্রী শীম এবং তণ্ডুলের গুড়া সামান্য ব্যবসায়ীরা বাণিজ্য করিয়া পাড়ায় পাড়ায় বেচে, সাধারণ

লোকে অধিক মাত্রায় এসকল সামগ্রী ক্রয় করে, কারণ উহা তাহাদের প্রধান জীবিকা হয়।

চীন বা জাপানী অক্ষরে দোকানের জানালায় যে সকল চিত্র লেখা থাকে, তাহাতেই উহা কিসের দোকান অনায়াসে চেনা যায়। আমেরিকানেরা প্রথমে যখন তাহাদের দোকানে গিয়া জব্য সামগ্রী ক্রয় করিতে আরম্ভ করিয়াছিল, তখন দোকানদারেরা সুপ্রসন্ন বদনে তাহাদিগকে জব্য সামগ্রী বিক্রয় করে না, যেন কিছু সলজ্জ হইয়াছিল, কিন্তু ক্রমে বিদেশীদিগের সহিত আলাপ পরিচয় হইলে তাহাদের পূর্বভাব দূর হইল, বিশেষ কৰ্মদক্ষতা প্রকাশ করিয়া তাহারা কৰ্ম করিতে লাগিল, আমেরিকানবো দোকানে গেলেই তাহারা তাড়া তড়ি যা ইয়া দোকানের সমস্ত দেওয়াজ খুলিয়াদিত, তন্মধ্যে যে যে সামগ্রী তাহাদের মনোনীত হইত তাহা লইত। আপনাদের মৰ্যাদা রক্ষণে তাহারা ভিতরে যাইতে দিতনা, গেলে অত্যন্ত ভ্যাক্ত হইত, সকল সামগ্রীরই নির্ধারিত মূল্য ছিল, মূল্য স্থান করিতে চেষ্টা করা হুথা চেষ্টা মান, করিলে অসন্তোষ প্রকাশ করিয়া তাহারা সচরাচর কটুবাক্য কহিত।

হাকোডাডি নগর চারিদিক আবদ্ধ বলিয়া তন্মধ্যে শত্রু পক্ষের প্রবেশ পৰ্য্যন্ত ছিলনা, একারণ তাহার রক্ষণ জন্য দুর্গের আবশ্যক হয় নাই। তবে সৈন্যদিগের বাসের জন্য কেবল তাহাতে গৃহায় বাটিছিল। বানিজ্য এবং মৃৎশা মরণের দ্বারা উৎসাহ বহুসংখ্যক লোক অতি পালিত হয়। যেডো, মাটসুমাই এবং অন্যান্য অনেক স্থান তাহাদিগের বানিজ্য কার্য্য হইয়া থাকে, তাহারা স্বদেশ হইতে

শুদ্ধ এবং লোম। মৎস্য, পাখুরিয়া কয়লা, হরিণ শৃঙ্গ, গুড়ি-কাঠ প্রভৃতি জব্য লইয়া যায়, আর তৎপরিবর্তে সাইকক কুইসিম এবং নাইকন প্রভৃতি স্থান হইতে চাউল, চিনি, চা, আলু, তামাক, সুতার কাপড়, রেশম, কাঁচের বাসন, ও ছুরি কাঁটা প্রভৃতি প্রয়োজনীয় জব্য সকল আনয়ন করে। কম-ডোর হাকোডাডিতে যে অত্যাপকাল ছিলেন, প্রায় নি-তাই দেখিয়াছেন একশত অপেক্ষা অধিক বড় বড় নৌকা দক্ষিণ সমুদ্রে যায়, গিয়া সমুদ্রোৎপন্ন সামগ্রী লইয়া আইসে, সময়ানুসারে ঐ নৌকার সজ্জা রুদ্ধ হইয়া সহস্র পর্য্যন্ত হয় । আমেরিকানেরা হাকোডাডিতে এক খানিও যুদ্ধ ভরণি দেখে নাই, বোধ হয় দেশে বহুকাল যুদ্ধ ঘটে নাই বলিয়া এই অবস্থা হইয়া থাকিবে, যত বড় নৌকা ইউক না কেন, সকল নৌকাই দাঁড় এবং হাইল দ্বারা বাহিত হইয়া থাকে। হাকোডাডির উপসাগরে নানা বিধ উদ্ভ-মোত্তম মৎস্য পাওয়া যায়, আমেরিকান নাবিকেরা প্রতি-দিন সালমন প্রভৃতি সুখাদ্য মৎস্য ধরিত, তাহাতে তাহা-দের মাংসের বড় একটা প্রয়োজন হইত না, যথেষ্ট মৎস্য খাইয়া তাহারা সন্তোষ পূর্ণ হইত ।

যে কয়জন আমেরিকান শিকারী হাকোডাডিতে শিকার করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন, বন্য হাঁস বটুয় পক্ষি টিটির কাদার্থোঁচ প্রভৃতি কএক জীব তাহারা, যথেষ্ট শিকার করিয়া আনিডেন, খেঁকশিয়ালী বন্যশূকর হরিণ এবং ভল্লুক তথায় কদাচিত্তি শিকার করা গিয়া থাকে। জে-পান দেশীয় লোকেরা খেঁকশিয়ালীকে শব্দতানের অন্-তর-বোধ করে, উহা যেখানে যায় সেই খানেই বিপদ

উপস্থিত হয়, এই বিবেচনার তাহারা ঐ দুর্দশ লক্ষকে দেখিতে পাইনে প্রাণ বধ না করিয়া ক্ষান্ত হয় না।

পূর্বে উক্ত হইয়াছে যে হাকোডাডির লোকেরা সামুদ্রিক কর্মে প্রায় সচরাচর নিযুক্ত থাকে, কিন্তু নগর মধ্যে সকল শ্রেণী সকল অবস্থা এবং সর্ব প্রকার ব্যবসায়েরই লোক দেখা যায়। সুসাদা হস্তকৃত কর্মে তাহারা বিশেষ নৈপুণ্য প্রকাশ করিয়া থাকে, যদিও তাহাদের অস্ত্রাদি উত্তম নহে, কল বা যন্ত্রের কর্মে বিশেষ পারদর্শিতা নাই, তথাপি বুদ্ধি দ্বারা হস্তে তাহারা যে সকল কার্য করে, বিবেচনা করিলে তাহা অত্যশ্চর্য্য হয়। ধরণীমণ্ডলে যে২ জাতি কম্পনা শক্তি দ্বারা মৃতন২ কর্ম করিয়া কৃতকার্য হইয়াছে, জাপানদিগের কম্পনা শক্তি তাহাদের অপেক্ষা কোন নতেই নূন নহে। অপর দৃষ্টে অপর জাতির কোন অতিনব কর্ম দেখিলে তাহাদের অভ্যস্ত কৌতূহল জন্মে, কিরূপে তাহা প্রস্তুত হইয়াছে, ইহা শিখিবার নিমিত্ত তাহারা যে সান্তিশয় ব্যগ্র হয়, শিখিয়া আপনাদের ব্যবহারোপযোগি করিতে যে চেষ্টা পায়, ইহাই তাহাদের উৎকর্ষ লাভের প্রধান লক্ষণ। প্রমোপজীবী শিল্পিক লোকদিগের উৎসাহ বর্জন্যর্থ জাপান গবর্ণমেন্ট কোন উপায় করণ বা না করণ, তাহা-দিগের যে স্বাভাবিক উৎকর্ষ লাভেছে। ক্রমে তাহারা অন্যান্য জাতির ন্যায় উৎকৃষ্ট শিল্পিক হইবেক, তাহারা কোন সন্দেহ নাই। একবার যদি তাহারা ইউরোপ খণ্ডের লোকদের ন্যায় শিল্প শাস্ত্র শিক্ষা করিতে পায়, তবে ভবিষ্যতে তাহারা উত্তম কারিকর হয়, পরীক্ষায় অপর কোন দেশীয় শিল্পিক তাহাদিগকে পরাভব

দ্রুতিতে পারে না। কারণ উপদেশ না পাইয়াও শুদ্ধ বুদ্ধিবলে তাহারা যে গৃহের দ্বার জানালা নির্মাণ করে, সে অতি চমৎকার, এমন সুচিকনরূপে পালিস করে যে আয়নার ন্যায় কাছে মুখ দেখা যায়, কোথায় কি যোড আছে তাহাত অমৃতবই হয় না। সুহৃদদিগের কথা যেরূপ বলিলাম জাপান দেশীয় ভাস্করেরাও সেইরূপ, প্রস্তরাদিতে কারিগরি করিয়া তাহারা যে বুদ্ধি কৌশল প্রশংসা করে, তদ্রূপে সুশিক্ষিত ভাস্করদ্বিতিকে লজ্জিত হইতে হয়, কেবল ইহাদের গুণে সে দেশের গাথলি বহু দূর দূরীয় হইয়া থাকে, নতুবা নান্যাত্মনের যে ভাব তাহা অসম্পাদিত হইয়া যাইত।

হাকোডাডি নিবাসী পিপা নির্মাণকারী কুপার মিস্ত্রীরাও কৰ্ম্যকম হয় কখনো তাহারা শুদ্ধ এবং লোণানুসারে পিপা নির্মাণ করিয়া থাকে। এই পিপা সকলের নিম্নভাগ সংকীর্ণ ও উপরিভাগ কোন ন, বাঁশের বাঁকাবিদিয়া এমন বুদ্ধি কৌশলে তাহারা উহা বদ্ধ করে যে, বিন্দুমাত্র জল কুলিয়া উঠিয়া তদুপায় হইতে নিঃসরণ হয় না। ষাতু হইতে নিতা ব্যবহারের সামগ্রী এবং অলঙ্কার প্রস্তুত করে, জাপানে এমন অনেক লোক আছে, বিশেষ লোহার কৰ্ম্য তাহারা ভালরূপ জানে, কনোডোর এক খানি ভরবারির বাঁট দেখিয়া ইহা জানিতে পারিয়া ছিলেন। পরন্তু হাকোডাডিতে সামান্য ব্যবহারের জিনিস যে ছুরি কাঁচি বিক্রয় হয়, তাহা কোন মতেই উত্তম নহে, আমেরিকান জাহাজের একজন নাপিত নগর হইতে এক খানি কুর কিনিয়া আনিয়াছিল, সে কুর খানিতে চুলভে কাটিত না এবং কাটা যায় এমন উপায় ও ছিল না।

জেপানীয় কর্মকারেরা অগ্নি প্রস্তুত করণ জন্য যে জাঁতা ব্যবহার করে তাহা অতি আশ্চর্য্য, চারিটি বায়ু কুণ্ডল উহা একটা কাষ্ঠের বাক্স, তদন্ত্যন্তবন্ত লৌহ শলাকা টানিলেই তাহার দুই দিককার দুই ছিদ্র হইতে বায়ু নিগত হয়।

ইকোডাডির দোকানে জেপান দেশীয় নানা কারখানার উৎপাদিত নানা সামগ্রী আমেরিকানদের দেখি-
য়াছিল বটে, কিন্তু কোন স্থানে শিল্প বিদ্যা সংক্রান্ত
যে অভ্যুৎকৃষ্ট কৰ্ম হইতেছে তাহা তাহাদের নয়নগো-
চর হয় নাই। লোমে বাদলা-বসাইয়া যে বিচিত্র বস্ত্র
প্রস্তুত করা যায়, তদন্ত সাধারণ লোকে ইহা বিদিত
নহে, আমেরিকানদিগের পরিচ্ছদে বাদলার কৰ্ম দে-
খিলে তাহার। সাতিসয় কোঁতুল প্রকাশ করিয়া তাহা
পরীক্ষা করিত। নীচজাতি মাত্রেই তুলার মোটা কা-
পড় ব্যবহার করে, কোন তত্ত্ববায় সে কাপড় প্রস্তুত
করে না, স্বাস্থ্য সে এতজন সে তাহা আপন ঘরেই
প্রস্তুত করে। জেপানদেশীয় স্ত্রীলোকমাত্রেই তাঁত চ-
রকা টাকু ও মাকু প্রভৃতি স্বতা এবং কাপড় করণীয়
যন্ত্রের ব্যবহার বিশেষরূপ জানে, ঘর দ্বার পরিষ্কার
এবং রন্ধনাদি করা তাহাদের সেনন নিত্য কৰ্ম, তে-
মনি স্বতাকাটা এবং বস্ত্র প্রস্তুতকরা তাহাদের নিত্য ক-
র্মের মধ্যে হয়। কখনও তাহার। বস্ত্রে রঙ্গ লাগায় বটে,
কিন্তু রীতিমত রঙ্গ করিতে জানে না বলিয়া তাহাদিগের
রঙ্গের বস্ত্র বহুকাল স্থায়ী হয় না, ধোত করিলেই উঠিয়া
যায়। ছিট রেশমী এবং বুটাদার সুক্ষ্ম বস্ত্র প্রভৃতি উত্তম
কাপড় জেপানেষাহা প্রস্তুত হয়, তাহার ওসার এক হ-
স্তের উর্দ্ধ হয় না। ইউরোপীয় বা আমেরিকান লোক-

দিগের পক্ষে তাহা উপযুক্ত নহে। কারণ তদ্দেশীয় উত্তম রেশমী কাপড়নাতেই প্রায় বহু মূল্য এবং ভারি, ভুলনয় কথ্যমিত বিলাতি কিম্বাপ ও বুটাদার চিকণ কাপড়ের ন্যায় হইতে পারে বটে, পরন্তু কিছু শক্ত হওয়াতে তাহার নমনীয় গুণ বড় একটা থাকে না। সমস্ত জেপান ভূমিতে এই কাপড় সর্বোৎকৃষ্ট বলিয়া গণ্য, ইহার টানা রেশম এবং পড়েন বর্ণ সূত্রের হওয়াতে দৃষ্টিতে ইহা বড়ই সুন্দর হয়। জেপানে যে সকল ব্যক্তি উচ্চ রাজপদাভিষিক্ত, তাঁহারা ইহা পরিধান করেন, বিসম থাকিলেও অপর লোক ইহা পরিতে পারে না। বহুমূল্যে একপ কাপড় প্রায় বিক্রয় হয়, কিন্তু প্রতি গজ পনের টাকার হিসাবে দিয়া একবার একজন আমেরিকান দেডশত টাকার একটা দর্শগজ খান ক্রয় করিয়াছিল। জেপানীদিগের ছিটের বর্ণ বড় একটা ঘোরাল নহে, এতদ্ভিন্ন লোকেরা ইহাতে প্রায় শরনোপবেশনের আসন ঢাকা দেয়, এবং জানালার পরদাও করিয়া থাকে।

জেপানীদিগের চিত্র কর্মের বিশেষ নৈপুণ্য বিষয়ে ইতিহাসে অনেক কথা লেখা আছে, একবার বমোডোর হাফোডাভির বাজারে একখানি চিত্র পুস্তক পাইয়াছিলেন, কাষ্ঠ পোদিত আদর্শ হইতে সেই সমুদায় চিত্র প্রস্তুত, যুবরাজ হারেসাই স্বহস্তে তুলিকা ধরিয়া প্রথমে উহার চিত্র প্রকাশ করেন। ঘোটক জাতি কোন অবস্থার বিরূপ অঙ্গ ভঙ্গিমা করে, চিত্র পুস্তকের সকল চিত্রগুলিই এই ভাবাপন্ন, যেখানে যেরূপ প্রাকৃতিক ভাব থাকি উচিত, সেখানে সেইরূপ ভাব এমন প্রকাশ করা

হইরাছিল যে, কমোডোর তদর্শনে সাতিশয় আশ্চর্য্যাবিষ্ট হইয়া বলিরাহিলেন, আসিয়া খণ্ডের মধ্যে লোকে যে এমন চিত্র করিতে পারে, পূর্বে আমি একদিনও এমন বিবেচনা করি নাই।

আমেরিকানদিগের সমভিব্যাহারে রেভারেণ্ড জোন্স নাম। একজন ধর্মোপদেশক হাকোডাডিতে ছিলেন। এক দিন খানক এক যবনিকা চিত্র করণে তাহার প্রয়োজন হয়, তাহাতে তিনি জেপানদেশীয় একজন চিত্রকরকে নিযুক্ত করেন। সে ব্যক্তি যখন কর্ম্ম করে তখন পাত্রীসাহেব তাহার সম্মুখে বসিয়া তাহা দেখিতে লাগিলেন। অন্যান্য চিত্রকরেরা পূর্বে যেরূপ আদর্শ করিয়া চিত্র কার্য্য আরম্ভ করে, সে ব্যক্তি সেরূপ করিল না, একেবারে পরদার উপর জাহাজ বাড়ী ঘোটকাদি পশু বৃক্ষ এবং পক্ষী সকল আশ্চর্য্য নৈপুণ্যের সহিত চিত্র করিতে লাগিল। কর্ম্ম সম্বর হইবে বলিয়া এক হস্তে সে কখনঃ ছইটি তুলিকা ধরিয়া রক্ষলতাদির শাখা প্রশাখা টানিতে লাগিল, উহা অত্যাৎ কৃষ্ণ সূক্ষ্ম কর্ম্ম নহে বটে, কিন্তু ইংলণ্ড বা আমেরিকার কোন স্থানে তাদৃশ কর্ম্ম অত শীঘ্র কৃত্রাপি হইত না; আসিয়ার তো কথাই নাই। পাত্রীসাহেব তদর্শনে সাতিশয় আশ্চর্য্যাবিষ্ট হইরাহিলেন। ধর্মোপদেশক জোন্সসাহেব আরো লিখিয়াছেন, প্রথমে আমরা যখন জেপান যাত্রাকরি, তখন জেপানীরা আমাদিগের বাঙ্গালীয় জাহাজ ও তৎকার্য্য দর্শনে একেবারে বিমোহিত হইরাছিল, চিত্রকরেরা অঙ্গাঙ্গ পাইলে বাঙ্গা যাত্রা ও তাহার কোন স্থানে কি কর্ম্ম হয়, পেনসিল দ্বারা তাহার আদর্শ লইত। জেপান

উপরীপে দ্বিতীয় যাত্রা কালীন আমরা গিয়া দেখি, পুনঃ আলোচনা করিয়া তাহারা এমনি বাণ্ণীয় জাহাজ চিত্র করিয়াছে যে তাহার কোন স্থানে কোন ত্রুটি হয় নাই, যেখানে যেরূপ করিতে হয়, সেখানে সেইরূপ করিয়াছে। জেপানী চিত্রনৈপুণ্যের আদর্শ স্বরূপ এচিত্র খানি আমি টাকাদিয়া ত্রয় করিতে চাহিলাম, কিন্তু তদধিকারী কোন প্রকারে আমাকে বিক্রয় করিল না।

ধর্ম সংক্রান্ত ভাস্করীর খোদিত কর্ম জেপানে অনেক দেখা যায়, কি মন্দির কি মঠ কি পথের পার্শ্ব, প্রস্তর ধাতু এবং কাষ্ঠের প্রতিমা সর্বত্রই দৃষ্ট হইয়া থাকে। এই সকল দেবমূর্তিতে হস্তকৃত কর্মপটুতা প্রতীয়মান হয় বটে, কিন্তু প্রকৃত শিল্প বিদ্যার কর্ম উহাকে কখনই বলা যাইতে পারে না। পরন্তু একটি আশ্চর্য্য এই, কাষ্ঠ ক্ষেদন করিয়া জেপানী শিল্পিকেরা যে সকল প্রাকৃতিক পদার্থ যথা পশু পক্ষী অথবা বৃক্ষাদির প্রতিমূর্তি করে, তাহার ভাব প্রায় সত্য হয়। বৃহৎসী এবং মন্দির সকলের স্তম্ভ এবং কারনিশের উপর তাহারা যে সারস পক্ষী, কচ্ছপ এবং মৎস্যাদির প্রতিমূর্তি করে, তাহা দেখিতে অতি সুন্দর হয়, স্বাভাবিক ভাবের ব্যত্যয় হয় না বলিয়া লোকে তাহার বড়ই প্রশংসা করে।

আমেরিকানেরা সাইমোডা এবং হাকো ডাডিতে একটিও যাত্রা যাত্র দর্শন করেন নাই, কিন্তু তত্রস্থ দোকানে অনেক পুস্তক বিক্রয় হইয়া থাকে, ঐ সকল পুস্তকের মূল্য অতি সুলভ, সাধারণ পাঠকবর্গের পাঠোপযোগী বলিয়া রমণীর গম্পাঙ্কে ইতিহাসাদি সকল বিষয় লেখা হইয়া থাকে। কি ছোট কি বড় কি মধ্যমিত, লেখা পড়া জানে

না এমন লোক জাপানে নাই, বুদ্ধিবৃত্তি প্রার্থনা করণে সকলেই উৎসুক, এজন্য ঐ সকল পুস্তক বাহ্যিকরূপে তথায় বিক্রয় হয়, তাহাতে গ্রন্থ কারেরা বিশেষরূপে উৎসাহ প্রাপ্ত হন। সমস্ত জাপান উপদ্বীপে বিদ্যাশিক্ষা এমন প্রবলতররূপে প্রচলিত যে, কি স্ত্রী কি পুরুষ শিক্ষা দ্বারা বুদ্ধিবৃত্তি সুদার্জিত করণে সকলেরই অধিকার আছে, তন্নিকটবর্তী চীন দেশীয় স্ত্রীজাতি সেরূপ বিদ্যারূপে বঞ্চিতা, জাপানে সেরূপ নয়, ঐ কুৎসিত প্রথা সম্পূর্ণ বিপরীত দৃষ্ট হইয়া থাকে। কারণ জাপানবাসিনী কামিনীগণ শুদ্ধ স্ত্রীলোকদিগের প্রয়োজনীয় সামান্যরূপ বিদ্যাশিক্ষা করে না, ভদ্র বংশজা অনেকেই দেশীয় সাহিত্য বিদ্যার সম্পূর্ণ পারদর্শিনী হন। আমেরিকানদিগের সহিত যে সকল জাপানী ভদ্র লোকের আলাপ পরিচয়াদি হইয়াছিল, তাহারা শুদ্ধ যে স্বদেশীয় রত্নসমূহ জানিতেন এমন নহে, ভূগোল, পদার্থ বিদ্যা এবং অন্যান্য দেশের ইতিহাস সকলি কিছু কিছু জানিতেন। যদিও জাপান, পৃথিবীদণ্ডলের অন্যান্য দেশের সহিত বড় একটা সম্পর্ক রাখে না, তথাপি এমনি প্রশ্ন কখন কখন তাহারা প্রস্তাব ও ব্যাখ্যা করিত, যে আমেরিকানেরা তৎপ্রবণে সাক্ষাৎ আশ্চর্য্যাবিষ্ট হইত। কি সে তাহাদের এরূপ জ্ঞান হইয়াছে, আমেরিকানেরা এবিষয়ের অনুসন্ধান লইয়াছিল, তাহাতে জানিতে পারিল, প্রতি বৎসর ইউরোপ খণ্ডে সাহিত্য পদার্থ শিপি এবং রাজনীতি বিষয়ে যে সকল সাময়িক প্রকাশিত পুস্তক হয়, নেগাসকাইবাসী ওলন্দাজদিগের দ্বারা তাহা সময়ে সময়ে জাপান উপদ্বীপে প্রচারিত হইয়া থাকে, তদ্ব্যতীত সকল বিষয় অনুসন্ধান,

সুপণ্ডিত লোক দ্বারা তাহা অনুবাদিত হইয়া মুদ্রিত হয়, পরে রাজ্যের স্থানে স্থানে বিক্রয়ার্থ বিতরিত হইয়া থাকে। কমোডোর পেরির জাপান দর্শনের পূর্বে তাহারা লৌহবয়, বৈজ্ঞানিক বার্তাবাহ, বাষ্পীয় জাহাজ প্রভৃতি অসীম জ্ঞান গর্ভে বিষয় সকল কখন দেখে নাই বটে, কিন্তু তদ্বিষয়ে মোটা মোটি জ্ঞান এক প্রকার তাৎপদের বিলক্ষণ ছিল। কথোপ কথন কালে ইউরোপের তুসুল যুদ্ধ, আমেরিকান রাজবিপ্লব, সেনাপতি ওয়াশিংটন এবং বোনাপার্টের কথা তাহারা এমনি কহিত, স্বচক্ষে যাহারা সে সকল বিষয় দর্শন করিয়াছে, তাহারাও ভেদন করিয়া বলিতে সক্ষম হইত না।

জাপানী লোকেরা কঠিন পরিশ্রম করিয়া থাকে বটে, কিন্তু কোন পরোপলক্ষে অবকাশ প্রাপ্ত হইলে, অথবা সন্ধ্যার সময় কর্মস্থান হইতে গৃহে প্রত্যাহত হইলে, নানা ক্রীড়া ও আনন্দ আক্লাদ করে। একদিন রেভেরেণ্ড জোন্স সাহেব গ্রীন নামে এক বাস্তবিক সঙ্গে লইয়া রাজপথে পদ সঞ্চালন করিয়া বেড়াইতে ছিলেন, এমন সময় হঠাৎ এক পসল রুশি হইয়া গেল, তাহাতে তাহারা দৌড়াদৌড়ি গিয়া পার্শ্ববর্তী একটি গৃহে আশ্রয় লইলেন। সে গৃহটি পথরক্ষক প্রহরীদিগের বাসস্থান, তথায় প্রবেশ করিয়া তাহারা দেখিলেন, যে, জনকয়েক, ব্যক্তি শতরঞ্চ খেলারনার এক প্রকার ক্রীড়া করিতেছে। পাদ্রী সাহেব তদদর্শনে কৌতুহলাক্রান্ত হইয়া ক্ষণকাল তথায় বসিয়া দোভাষী দ্বারা তদ্বিষয়ে প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিতে লাগিলেন, পরে দণ্ডেকের মধ্যে তাহার গূঢ়ত্ব বুঝিয়া লইলেন। জাপানীরা সে খেলাকে শোহোয়ি খেলা বলে, এবং অপর

সাধারণ সকলেই তাহা সাতিশয় ভাল বাসে। এতদ্ব্যতীত তাহার। তাম ক্রীড়াও করে, কিন্তু সে তাম কাগজের নহে, পল্ল-শূক হস্তীর দন্ত অথবা অস্থি দ্বারা তাহা নির্মিত হয়। ইউরোপীয় বালকেরা খেঁত বা কৃষ্ণবর্ণ প্রস্তরময় তাঁ-টাতে যেরূপ তাঁটা খেলা করে, জেপানীয় বালকেরা সেইরূপ এক প্রকার গোলা খেলায়। তাহা দেখিয়া আমেরিকানদের বালাভাব সকল মনে উদয় হইয়াছিল, যে জাতি অন্য জাতির সহিত কোন প্রকার সংশ্রব রাখে না, তাহাদের মধ্যে ছুরণতী বিদেশীয় ক্রীড়া কিরূপে প্রকাশ হইল? ইহা ভাবিয়া আমেরিকানদের। সাতিশয় আশ্চর্য্যাবিষ্ট হয়।

হাকোডাডিতে প্রবাস কালীন আমেরিকানদের দুই-জন নাবিক বিছুদিন রোগ ভোগ করিয়া কাল প্রাপ্ত হয়, তাহাতে ভদ্রস্থ কর্তৃপক্ষ নগরের বহির্ভাগে তাহাদিগের কবরস্থান নিরূপণ করিয়া দেন। অপর শোকাবহ ব্যা-পার জেপানে যেরূপে সম্পন্ন হইয়াছিল, এই দুঃখজনক ব্যাপারটিও সেইরূপে নিষ্পন্ন হয়, জাহাজস্থ লোকেরা শোক প্রকাশক কৃষ্ণবর্ণ বস্ত্র পরিধান করিয়া, সকলে ধীরে ধীরে গমন করত মৃতদেহ শ্মশান ভূমিতে লইয়া গেলে, শোক সূচক বাদ্য হঠাতে লাগিল, বাদ্যের করুণা রসে পায়ান চিত্ত মাতারও অশ্রুঃকরণে শোক সঞ্চার হইল, অসম্মা জেপানী একত্রিত হইয়া অশ্রুপূর্ণ নয়নে জাহাজের নদে সঙ্গে চলিল, কেহ কোন প্রকার শিষ্টা-চারের বহির্ভূত কর্ম করিল না। পাত্রি জোন্স সাহেব কখনাও ধর্ম্মস্তোত্র পাঠ করিতে লাগিলেন। জেপানিরা ইয়োম্বী কথা বুঝিতে পারিল না বটে, কিন্তু একান্ত শ্রদ্ধা

প্রকাশ করিয়া সমুদায় অস্তোষ্টি ক্রিয়া দেখিতে লাগিল। সেই অবধি পাদ্রী সাহেবের প্রতি তাহাদের এমন ভক্তি জন্মিল, যে, কোন স্থানে দেখা হইলে, তাহারা তাঁহাকে সান্ত্বিত করিয়া দিত, বিশেষ করিবার নিমিত্ত তাঁহাকে প্রার্থনাকারী মনুষ্য বলিয়া ডাকিত।

একদিন জাপানীয় লোকদিগের আরাধনা কালে খ্রীস্টোপদেশক জোজ সাহেব একটি বৌদ্ধ মন্দিরে উপস্থিত হইয়া দেখিলেন, যে রোমান ক্যাথলিক দিগের গির্জার হেরূপ গিল্টি কর। সোনার বর্ণ প্রতিমা সকল থাকে, তাহাদিগের যজ্ঞ বেদীর উপরে সেইরূপ প্রতিমা রহিয়াছে, তাহার দুই পার্শ্বে দুইট পরম সুন্দর দীপাধারে প্রদীপ জ্বলিতেছে, আর বেদীর সম্মুখ ভাগে দুইটা মোমের বাতিও প্রজ্বলিত রহিয়াছে। প্রধান বেদীর সম্মুখভাগে দুইটি ক্ষুদ্র বেদী, তাহাতেও ঐরূপ আলোক জ্বলিতে ছিল, পাঁচজন যাজক উত্তম পরিচ্ছদ পরিধান করত দেবমূর্ত্তীর সম্মুখে বসিয়া আরাধনা করিতে ছিলেন, তন্মধ্যে প্রধান যাজক ঠন ঠন শব্দে ঘণ্টা বাজাইয়া মন্ত্র পাঠ করিতে ছিলেন, আর চারি জন ক্ষুদ্র ঢাক বাজাইয়া সুগন্ধ তাল মান রাখিয়া তাঁহার সঙ্গে সঙ্গে উচ্চৈঃস্বরে স্তোত্র পাঠ করিতে ছিলেন। এই কৰ্ম শেষ হইলে, তাহারা অষ্টোক্ষে দেবমূর্ত্তি সকলকে প্রণিপাত করিয়া অপর দুই বেদীতে গেল, গয়া বথাবিধানে বলি হোমাদি প্রদান করিল, 'আ' বিজির করিয়া কি মন্ত্র পড়িতে লাগিল। পাদ্রী সাহেব এক দৃষ্টে দৃষ্টিপাত করিয়া তাহাদের দেবার্চনার নিয়ম দেখিতে ছিলেন, পূজা শেষ হইলে একজন যাজক পাদ্রী সাহেবের সম্মুখে আসিয়া অঙ্গুলিনির্দেশ দ্বারা বৌদ্ধের প্রতিমাকে

দেখাইয়া কহিলেন, তোমাদের দেশে এরূপ প্রতিমাকে কি বলে? তাহাতে খৃষ্টান ধর্মোপদেশক উত্তর করিলেন, “নেই” অর্থাৎ আমরা এমন দেব মূর্তির আরাধনা করি না। রাজক বজ্র বেদী দেখাইয়া পূর্ববৎ জিজ্ঞাসা করিলেন, পাঙ্গী সাহেবও পূর্ববৎ উত্তর দিলেন। ধর্মোপদেশক এই কথার পর স্ব স্থানে প্রস্থান করিবার উদ্যোগ করিতে ছিলেন, এমন সময়ে আর একজন রাজক তাঁহার সম্মুখে আসিয়া কহিলেন, মহাশয়! আমেরিকা খণ্ডের লোকেরা প্রার্থনা করে কি না? জোন্স সাহেব ইহাতে প্রকৃষ্ট চিত্ত হইয়া হাঁটু পাতিয়া বসিলেন, আর উর্দ্ধমুখে নয়ন মুদ্রিত করিয়া করযোড় পূর্বক এক দৃষ্টে স্বর্গের প্রতি দৃষ্টিপাত্ করিতে লাগিলেন। এই চিত্ত দ্বারা জেপানীরা বুঝিতে পারিল, যে, আমেরিকানেরা সর্বোপরি স্বর্গের আরাধনা করে, অতএব রাজক সমস্ত্রমে তাঁহাকে পুনরায় জিজ্ঞাসা করিল, তবে কি তোমরা “টিয়েনের” আরাধনা কর, (জেপানী ভাষায় টিয়েন শব্দে স্বর্গ এবং স্বর্গ বুঝায়) ইহাতে পাঙ্গী সাহেব অঙ্গ ভঙ্গী দ্বারা উত্তর করিলেন, আমরা টিয়েন ব্যতীত অন্য কাহারও আরাধনা করি না। গমন কালে জোন্স সাহেব মনে মনে প্রার্থনা করিয়া কহিতে লাগিলেন, হে স্বর্গ! জেপানীদিগের অজ্ঞানাত্মকার দূর করিয়া সনাতন সত্য ধর্মের জ্যোতি প্রদান কর।

এইরূপ ক্রমোত্তোর পেরি হাকোডাডিতে কিয়দ্দিন থাকিয়া দেশীয় লোক দিগের রীতি নীতি আচার ব্যবহার সমুদায় অবগত হইলেন, পরে চিন দেশের সাজাই ও অন্যান্য জাহাজ করেক খান জাহাজ পাঠাইয়া অবশিষ্ট জাহাজ

সকল সঙ্গে লওত পুনরায় সাইমোডাতে আইলেন। সেখানে কমিসনারদিগের সহিত তাঁহার সাক্ষাত হয়, এবং সন্ধিপত্র ও বাণিজ্য বিষয়ক প্রস্তাব লইয়া অনেক কথোপকথন হয়, হাকোডাডি এবং সাইমোডাতে আমেরিকান দিগের কতদূর পর্য্যন্ত সীমা থাকিবে, তাহাও নিরূপিত হয়। তৎপরে ১৮৫৪ খৃঃাব্দের ২৮সে জুন দিবসে তিনি সেত্বান পরিভাগ করিয়া লুকু উপদ্বীপস্থ নাফা উপদ্বীপে গমন করেন। সাইমোডা এবং হাকোডাডির বৃত্তান্ত ঘে-রূপ বল। হইয়াছে, নাফার বৃত্তান্ত প্রায় সেইরূপ, অতএব গ্রন্থ বাছল্যভয়ে সেসকল কথা এতলে লেখা হইল না, কেবল ইহা বলিয়া এবিষয়ের উপ সংহার করি, কমোডোর পেরি দ্বিম কয়েক নাফাতে থাকিয়া, আমেরিকান দিগের জাপান সম্পর্ক বিষয়ে অনেক নূতন নিয়ম সংস্থাপন করিলেন, পরে কাণ্ডেন আর্বাট সাহেবের প্রতি সমস্ত জাহাজের কর্তৃত্ব ভার দিয়া আপনি স্বদেশে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন। দুই বৎসর দুই মাস তিনি ইউনাইটেড ফ্রেটস্ পরিভাগ করিয়া জাপানে আগমন করিয়াছিলেন, ১৮৫৫ শালের ২৩সে এপ্রিলে তিনি স্বদেশে প্রত্যাবৃত্ত হইলে, তথাকার কর্তৃ-পক্ষ বহু সমাদরের সহিত তাঁহাকে গ্রহণ করিল, জাপানে তাঁহার গমন সফল হইয়াছে বলিয়া দিন কয়েক রাজ্য মধ্যে মহাভোজ এবং মহাসমারোহ হইল।

কমোডোর পেরির জাপান যাত্রা পশ্চিম খণ্ডের ইন্ডিয়া-কমিসনার জাপানে বাণিজ্য সম্পর্কের প্রথম ইচ্ছা, তাঁহার পর কাণ্ডেন আদম্‌স জাপান গমন করিয়া সে স্বত্ব দৃঢ়ীকৃত করেন, এবং তদ্বারা অনেক নূতন বন্দবস্ত করি। এই নিয়ম নির্ধারণের পর রুবীয় ইংল্যান্ড প্রভৃতি

জেপান।

ইউরোপীয় লোকেরা জানেন বাণিজ্য সম্পর্ক আরও
করে। বাণিজ্য দ্বারা দেশের যত মহত্বপূর্ণকার এই
সভ্যতা বৃদ্ধি হয়, এমন আর কিছুতেই হয় না, জেপানের
এখন সে অবস্থা নাই, পূর্বাগেক সভ্যতা মহত্বতা এবং
উদারতা বৃদ্ধি হইয়াছে। পূর্বে যে জেপানের লোকেরা
অন্য দেশে গেলে একেবারে দেশ হইতে বহিষ্কৃত
হইত, তাহার এখন ইংলণ্ড এবং আমেরিকার প্রধান প্র-
ধান বিদ্যালয়ে বিদ্যাশিক্ষার্থ হাইতেছে, আর কিছুদিন
পরে আরও কত হইবে।

সমাপ্ত।



